फ्रांसिस पार्कमैन

यात्रा और शिकार

एस० आर० सुनेजा पब्लिकेशन्ज़, नई दिल्ली।

प्रकाशक :
राज सुनेजा
एस० आर० सुनेजा पब्लिकेशन्ज
नई दिल्ली

अनुवादक :
डा० सत्यकाम वर्मा

मूल्य : ४ रुपये
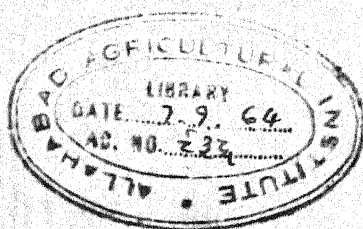
मुद्रक :
नील कमल प्रिंटर्स
(प्रा०) लिमिटेड, दिल्ली ६

विषय-सूची

१ : सीमान्त

सेंट लुई शहर में पिछली बसन्त में बहुत हल-चल रही। सन् १८४६ ई० के इन दिनों में अपना देश छोड़कर नये इलाकों की खोज में ओरेगन और कैलिफ़ोर्निया की ओर जाने वाले प्रवासी तो देश के कोने-कोने से वहाँ इकट्ठे हो रहे थे, सान्ता फ़े की ओर जाने वाले व्यापारी भी अपनी गाड़ियाँ और दूसरी साज-सज्जा तैयार करने के लिए भारी संख्या में वहाँ जमा हो गये थे। सब होटल खचाखच भरे हुए थे। बन्दूकें और घोड़ों की काठियाँ बनाने वाले लुहार लगातार काम करके यात्रियों के भिन्न-भिन्न दलों को हथियार और साज-सामान देने पर लगे हुए थे। भाफ़ से चलने वाली नावें घाटों से रवाना हो कर मिसूरी नदी में चलती हुईं यात्रियों से पूरी तरह लदी हुई थीं और सीमान्त की ओर बढ़ती जा रही थीं।

इनमें से ही एक नाव थी 'रैड्नौर'। वह अब टकराकर नष्ट हो चुकी है। परन्तु पिछली २८ अप्रैल को इसी नाव पर मैं अपने मित्र और सम्बन्धी क्विन्सी एडम्स शॉ के साथ राकी पर्वतमाला की यात्रा पर रवाना हुआ। हम यह यात्रा कुतूहल और मनोरंजन के विचार से कर रहे थे। किश्ती इतनी भर चुकी थी कि वह डोलने लगी और उसके दोनों ओर के खतरे के निशान बारी-बारी से डूबने लगे। उसके सबसे ऊपर के फ़र्श पर सान्ता फ़े के व्यापारियों की अनेक प्रकार की और अनेक सामानों से लदी गाड़ियाँ भरी हुई थीं। उसकी माल रखने की जगह पर भी अनेक प्रकार का सामान उसी जगह व्यापार के लिए भरा गया था। वहीं ओरेगन की ओर जाने वाले लोगों का सामान और उनकी प्रतिदिन की जरूरी चीजें भरी हुई थीं। इन चीजों में खच्चर, घोड़े, काठियाँ, जीनें और दूसरी अनेक प्रकार की चीजें भरी हुई थीं। मैदानों में इन चीजों की बहुत अधिक जरूरत रहती थी। इन सब चीजों के बीचों-बीच छिपी हुई थी एक फ्रांसीसी गाड़ी, जिसे देखते ही लगता था कि यह खच्चरों की मौत लाने वाली है। यहां से भी कुछ दूर परे किनारे पर एक तम्बू था। वहीं बहुत-सी पेटियाँ और ढोल आदि जमा थे। सारा सामान देखकर यह

नहीं लगता था, कि यह किसी खास भाव से जमा किया गया है। फिर भी यह सामान एक लम्बी और कठिन यात्रा के लिए इकट्ठा किया गया था। यहाँ से इस कठिन यात्रा पर धीरज वाले पाठक भी हमारे साथ ही बढ़ेंगे।

रैड्नोर के यात्री भी उस पर लदे सामान की ही भाँति अनेक प्रकार के थे। बड़े कमरे में सान्ता फ़े के व्यापारी, जुआरी, सटोरिये और अनेक प्रकार के साहसी लोग विद्यमान थे। नीचे के खुले आँगन में ओरेगन की ओर प्रवास करने वाले, पहाड़ी आदमी, नीग्रो, सेंट लुई की यात्रा से लौटने वाले कन्सास के आदिवासी भरे हुए थे।

इस प्रकार सामान और मनुष्यों से लदी हुई यह नाव सात-आठ दिन मिसूरी नदी की तेज़ धार में ऊपर की ओर बढ़ती ही गई। अनेक स्थानों पर इसे तले या बीच के टापुओं से बढ़े हुए ठूँठों से संघर्ष करना पड़ा। कुछ स्थानों पर यह दो-तीन घण्टे के लिए रेतीली जगहों में भी फँस जाती थी। जब हमने मिसूरी में प्रवेश किया था, तब तेज वर्षा हो रही थी। पर बाद में मौसम बिल्कुल साफ़ हो गया। अब नदी की चौड़ी और मचलती धारा, इसमें पड़ने वाली भँवरें, रेत के जमाव, उजाड़ और बनावटी टापू और जंगलों से लदे किनारे साफ़ दिखाई दे रहे थे। मिसूरी के बहने का मार्ग निरन्तर बदलता रहता है। एक ओर के किनारों को छोड़ कर यह दूसरी ओर नये किनारे काटती हुई बढ़ती है। इसकी धारा भी अपनी जगह बदलती रहती है। बीच के पुराने टापू मिट जाते हैं और उनकी जगह नये टापू बन जाते हैं। एक किनारे के जंगल मिटते दीखते हैं किन्तु दूसरी ओर नये जंगल नई मिट्टी पर बनने आरम्भ हो जाते हैं। इन सब परिवर्तनों के कारण इसके पानी में कीचड़ और रेत इतने अधिक मिल जाते हैं कि वसन्त जैसी मौसम में भी इसका पानी एकदम गँदला होता है। उसे गिलास में भर कर रखने पर कुछ ही क्षण में एक इंच तक मिट्टी तल पर जम जाती है। इस मौसम में नदी काफ़ी भर कर चल रही थी, किन्तु जब हम सर्दियों में लौटे तब इस में पानी काफ़ी उतर गया था। पानी उतरने पर इसके तले पर प्रकट होने वाले सभी खतरे साफ दीखने लगे थे। उस समय इसमें टूट कर गिरे हुए पेड़ों को देख कर बड़ा डर लगता था। कुछ जगह तो ये इतने अधिक जमा थे, जैसे सेना में अपनी रक्षा के लिये किसी मोर्चे पर इन्हें जमा किया हो। यह रेत में

गहरे गड़े थे। सब का रुख बहाव का ओर था। परिणाम यह कि ऊपर की ओर आने वाले जहाज़ों के लिए ये मौत की तरह मुँह बाये खड़े हुए थे। कोई भी अभागी नाव या स्टीमर ज्वार के समय इनके ऊपर से गुजरे तो ये उसे नदी के पेट में समा लेने को तैयार रहते थे।

पांच-छः दिन में ही हमें पश्चिम की ओर बढ़ने वाले काफ़िलों के समूह नज़र आने लगे। इण्डिपेण्डेंस नामक स्थान की ओर, जहाँ सबने इकट्ठे होना था। बढ़ते हुए प्रवासियों के अनेक जत्थे इधर-उधर नदी के किनारे खुले स्थानों पर पड़ाव डाले पड़े थे। जब हम इस इलाके के घाट पर पहुंचे, तब वर्षा हो रही थी। साँझ का समय था। यह मिलन-स्थान नदी से कुछ मील दूर था। यह स्थान मिसूरी प्रदेश के परले सिरे पर स्थित था। यहाँ का दृश्य बहुत ही आकर्षक था। यहाँ वे सभी बातें इकट्ठी देखने को मिल जाती थीं, जो इस उन्नतिशील जंगली इलाके की विशेषताएँ थीं। नदी के दलदली तट पर अपने बड़े-बड़े टोप पहने दास-से दीखने वाले तीस-चालीस स्पेनी लोग खड़े हुए हमारी ओर उजड्डों की तरह देख रहे थे। वे सान्ता फ़े की ओर जाने वाले दलों में से एक से सम्बद्ध थे। उन दलों की गाड़ियाँ नदी के किनारे कुछ ऊपर की ओर जमा थीं। इनके बीच जलती आग के के चारों ओर एड़ियों के बल बैठे हुए आदिवासियों का एक समूह था। ये आदिवासी मैक्सिको के आदिवासियों के दूर के सम्बन्धी थे। पहाड़ों की चोटी पर से ही लम्बे बालों और हरिण की खाल की पोशाकों वाले इक्के-दुक्के फ्रांसीसी शिकारी हमारी नाव को देख रहे थे। पास के ही एक तने पर तीन शिकारी बैठे थे। उनकी बन्दूकें उनके घुटनों पर टिकी हुई थीं। इनमें से सबसे अगला आदमी बहुत लम्बा-तगड़ा था। उसकी आँखें नीली और बड़ी थीं। चेहरे से उसकी बुद्धिमत्ता टपकती थी। निश्चय ही उन लोगों का प्रतिनिधि रहा होगा, जिन्होंने साहस और उद्यम के द्वारा लगातार बढ़कर पहले-पहल एलेघनी से पश्चिमी मैदानों तक जाने की राह दिखाई थी। इनकी बन्दूकें और कुल्हाड़ियाँ साथ-साथ काम में जुटी रहती थीं। वह भी ओरेगन की ओर जा रहा था। वह प्रदेश उसे इधर के सभी मैदानों से अधिक अनुकूल लगता था।

अगले दिन सुबह ही हम कन्सास पहुँचे। यह जगह मिसूरी नदी के मुहाने से लगभग पांच सौ मील ऊपर थी। हम यहीं पर उतरे। हमने अपना

सामान कर्नल चिक के पास ही छोड़ दिया। लट्ठों से बना उसका घर सराय जैसा ही था। वहां से हम वैस्टपोर्ट की ओर गये। आगे की यात्रा के लिए हमें वहाँ से खच्चर और घोड़े मिलने की आशा थी।

मई मास की यह सुबह बहुत ही सुन्दर और ताज़गी देने वाली थी। हमारी औघड़ राह जिन जंगलों में से होकर गुज़री थी, उनमें धूप खुलकर आ रही थी और अनेकों प्रकार के पक्षी चहचहा रहे थे। रास्ते में हम अपने पूरी तरह सजे-वजे पुराने साथी यात्री आदिवासी 'कन्सास' लोगों से मिले। ये अपने घरों की ओर लौट रहे थे। नाव पर ये कैसे भी लगते रहे हों. यहाँ, जंगलों में वे बहुत ही आकर्षक और सुन्दर लग रहे थे।

वैस्टपोर्ट में आदिवासी भरे हुए थे। इनके घरों और बाड़ों के साथ इनके दर्जनों छोटे-छोटे खच्चर बंधे हुए थे। यहाँ सभी जातियों के आदिवासी घूम-फिर रहे थे। इनमें सैक और फौक्स लोग थे, जिनके सिर मुंडे हुए और चेहरे रंगों से पुते हुए थे। इनमें ही शबानू और देलवारे लोग थे, जिन्होंने सूती कमीज़ें और पगड़ियाँ पहनी हुई थीं। व्यान्दोत लोगों की पोशाक गोरे लोगों जैसी ही थी। कुछ कन्सास लोग भी थे, जिन्होंने फटे-पुराने कम्बल ओढ़े हुए थे। ये सब सड़कों पर घूम रहे थे अथवा घरों और दूकानों में आ-जा रहे थे।

मैं सराय के दरवाज़े पर खड़ा हुआ था। उसी समय मुझे दूर से एक आकर्षक आदमी अपनी ओर सड़क पर आता दिखाई दिया। उसका चेहरा एकदम लाल था। उसकी दाढ़ी-मूँछ भी चमकीली लाल रंग की थी। उसके सिर पर एक ओर ऊपर गाँठ लगी एक गोल टोपी थी। ऐसी टोपी प्रायः स्कॉटलड के मजदूर पहना करते हैं। उसका कोट भी अजीब था। यह स्कॉट-लैंड की बनी सलेटी रंग की शाल से बना हुआ था और इसके चारों ओर उसके खुले धागे लटक रहे थे। उसके पाजामे खड्डी-बुने कपड़े से बने हुए थे। उसके जूते के नीचे कीलें ठुकी हुई थीं। इन सबके साथ ही था उसके मुँह के एक कोने में जमा हुआ छोटा-सा काला पाइप। वेशभूषा के इस तरह अजीब होने पर भी मैंने पहचान लिया कि ये ब्रिटिश सेना के कप्तान श्री क—हैं। उनके साथ के उनके भाई जैक और श्री र—। वे भी अंग्रेज़ ही थे। ये लोग शिकार के लिए इस महाद्वीप के आर-पार यात्रा करने निकले थे। साथियों

समेत इन्हें मैंने सेण्ट लुई में देखा था। इस समय वे कई दिन से वेस्टपोर्ट में ठहरे हुए थे। यहाँ रह कर एक ओर वे जाने की तैयारियाँ पूरी कर रहे थे, दूसरी ओर वे कुछ और साथियों के आ मिलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इस यात्रा के लिए उनके साथियों की संख्या काफ़ी कम थी। इस तरह का अकेला प्रयत्न खतरे से खाली न था। ओरेगन और कैलीफोर्निया की ओर जाने वाले प्रवासियों के दलों में से भी किसी एक के साथ वे मिल सकते थे। पर, वे केन्टुकी के लोगों से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखने को तैयार न थे।

कप्तान ने हम पर ज़ोर दिया कि हमें भी उनके साथ मिल कर एक दल के रूप में पहाड़ों की ओर बढ़ना चाहिए। प्रवासियों के साथ हमारी सहानुभूति भी अधिक न थी। अतः हमें इनके साथ जाना अधिक उचित लगा और हमने उसके लिये अपनी मंज़ूरी दे दी। हमारे ये होने वाले साथी लकड़ी के एक घर में टिके हुए थे। हमने देखा कि उस घर में चारों ओर काठियां, जीनें बन्दूकें, पिस्तौलें, दूरबीनें, चाकू आदि मैदानों के लायक सारा सामान ही—भरा पड़ा था। र—को प्रकृति-विज्ञान का शौक था। इस समय वे एक कठफोड़े की खाल भर रहे थे। कप्तान के भाई आयरलैंड के निवासी थे। इस समय वे फ़र्श पर बिखरे खोजी रस्से के टुकड़ों को जोड़ रहे थे। यह रस्सी राह में काम आनी थी। कप्तान ने बहुत प्रसन्नता के साथ हमें यात्रा की प्रत्येक चीज दिखाई। वह बोला, "आप जानते हैं कि हम पुराने घुमक्कड़ हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आज तक इन मैदानों की ओर कोई भी दल इससे अधिक तैयारी के साथ नहीं गया।" जिस खोजी शिकारी को उन्होंने नियुक्त किया था, उसका नाम सोरेल था। वह कनाडा का रहने वाला और गुस्सैल-सा लगता था। उनका गाड़ीवान सेण्ट लुई का रहने वाला एक अक्खड़ अमरीकी था। ये दोनों ही इस समय घर के बाहर ही टिके हुए थे। पास ही लकड़ी की एक घुड़साल बनी हुई थी, जिसमें कप्तान द्वारा बहुत ही सूझ-बूझ के साथ चुने हुए घोड़े और खच्चर बंधे थे।

वे अपने इन्तज़ाम पूरे करने लगे और हम भी पूरी सुविधा और तेज़ी के साथ अपने प्रबन्ध पूरे करने में जुट गए। प्रवासी यहां से कुल आठ या दस मील की दूरी पर ही हज़ार या कुछ अधिक संख्या में मैदानों में डेरा डाले पड़े थे। उनके नये दल इसी इण्डिपैन्डेन्स शहर में से होकर, उनसे मिलने के लिए,

एक के बाद एक गुज़र रहे थे। उनके लिए हमारे मित्र बहुत ही घृणा प्रगट करते थे। वे लोग बहुत घबराए हुये थे। उनकी सभाएँ होतीं, प्रस्ताव पास होते और नए-नए नियम बनाए जाते। किन्तु, वे मैदानों के पार की इस लम्बी यात्रा के लिए अपने नेता के चुनाव में एकमत न हो सकते। एक दिन कुछ फुर्सत पाकर मैं शहर की ओर निकल गया। शहर में भीड़ बहुत अधिक थी। प्रवासियों और सान्ता फे के व्यापारियों के लिए यात्रा की आवश्यक वस्तुएँ जुटाने के लिए यहां एक साथ ही बहुत-सी नई दुकानें खुल गई थीं। दूसरी ओर दर्जनों लुहारों की झोंपड़ियों से लगातार हथौड़ों की चोटें और गूंजें सुनाई दे रही थीं। वे लोग गाड़ियों की मरम्मत करने और घोड़ों और बैलों की नालें ठोकने में लगे हुए थे। गलियों और सड़कों पर आदमी, घोड़ों और खच्चरों की खूब भीड़ उमड़ रही थी। अभी मैं शहर में ही था, जब इलिनोइस के प्रवासियों की गाड़ियों का एक जत्था नगर में से गुज़रा और मुख्य सड़क पर ही रुक गया। ये लोग मैदानी जत्थों से मिलने के लिए बढ़ रहे थे। गाड़ियों पर ढके पर्दों में से झांकते हुए अनेक बच्चों के चेहरे बाहर दीख रहे थे। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर कोई भारी-भरकम औरतें घोड़े पर सवार होकर बढ़ रही थी। इनमें से किसी ने अपने धूप से तपे चेहरे को बचाने के लिए कोई पुराना छाता ताना हुआ था, तो किसी ने कोई पुरानी छोटी-सी छतरी तानी हुई थी। पुरुष गांव के रहने वाले और सभ्य लगते थे। वे अपने बैलों के पास खड़े थे। जब मैं उनके पास से गुज़रा तो मैंने तीन बूढ़ों को आपस में बहुत उत्साह के साथ बार-बार जन्म लेने के सिद्धान्त पर बात-चीत करते सुना। उनके हाथों में लम्बे चाबुक थे। परन्तु, सभी प्रवासी इस तरह के नहीं थे। उनमें से कुछ तो अपने इलाकों में जाति से बाहर निकाले हुए थे। वे असभ्य थे। मैं बहुत बार अपना देश छोड़कर नया देश खोजने वालों की भावना की और उनके अनेक प्रकार के उद्देश्यों को समझने की कोशिश करता रहा हूँ। मैं किसी निर्णय पर तो नहीं पहुँचा, पर इतनी बात निश्चित है कि चाहे ये लोग एक अच्छी ज़िन्दगी की आशा में बढ़ रहे हों, समाज के कानूनों के बन्धन को तोड़ने की इच्छा लेकर चल रहे हों, या फिर इसलिए अपना देश छोड़ रहे हों कि वे शांत जीवन पसन्द नहीं करते—इनमें से सभी लोग यात्रा की कठिनाइयों को पाकर बहुत अधिक पछताते हैं। पर, यह भी सच है कि जब ये लोग अपनी उम्मीदों

की मंज़िल पर पहुँच जाते हैं, तब ये इन कठिनाइयों से छुटकारा पाकर बहुत प्रसन्न भी होते हैं।

अगले सात या आठ दिनों में हमारी तैयारियाँ पूरी हो गईं। इसी बीच हमारे साथियों ने भी तैयारियाँ पूरी कर लीं। वैस्टपोर्ट से वे उक्ता गए थे। इसलिए उन्होंने आगे चल पड़ने का अपना इरादा हमें बताया। उन्होंने बताया कि वे हमारी कंसास नदी के घाट पर प्रतीक्षा करेंगे। इस निश्चय के अनुसार र—और गाड़ीवान गाड़ी और तम्बू आदि लेकर आगे चले गए। उनके कुछ ही पीछे घोड़ों आदि को साथ लिए हुए कप्तान और उसका भाई भी, सोरेल और साथ आ मिलने वाले बोईसफेर्ड नाम के पशु फंसाने वाले के साथ चल पड़े। इस यात्रा का आरम्भ ही बुरा हुआ। अपने दल के आगे-आगे घोड़े पर चढ़े हुए कप्तान वैस्टपोर्ट से अभी मील भर भी बाहर न गए होंगे कि अचानक ही एक भयंकर तूफान ने उन्हें आ घेरा। वे उसमें बुरी तरह भीग गए। कप्तान के पीछे-पीछे रस्सी से बंधा हुआ भैंसे के शिकार में काम आने वाला घोड़ा भी चल रहा था। तूफ़ान में ही उन्होंने जल्दी-जल्दी चलना शुरू किया, ताकि सात मील दूर र—द्वारा तैयार किए हुए डेरे तक जल्दी पहुँच सकें। परन्तु यह र—भी अजीब ही था। इसने जब तूफ़ान को आते देखा, तो जंगल में ही एक सुरक्षित जगह देखकर अपने तम्बू गाड़ दिए। उधर वर्षा में कप्तान उसे मीलों आगे ढूंढ़ रहे थे और इधर यह आराम से बैठे कॉफ़ी पी रहा था। बहुत देर बाद आँधी शान्त हुई। तब पशु फंसाने वाले व्यक्ति ने अपनी तेज़ निगाहों से तम्बू ढूंढ़ निकाला। जब वे पहुँचे तब तक र—कॉफ़ी पी चुका था और भैंसे की खाल से बने गलीचे पर बैठा पाइप पी रहा था। कप्तान बहुत ही सरल स्वभाव का था। उसने अपने दुर्भाग्य को बहुत धीरज के साथ सह लिया और अपने भाई के साथ मिलकर कॉफी के कुछ घूंट पी कर, अपने गीले कपड़ों में ही, सोने के लिए लेट गया।

हमारे साथ भी कम बुरी न बीती। हम कन्सास की ओर टट्टुओं का एक जोड़ा लिए बढ़ रहे थे। उसी समय तूफान टूट पड़ा। ऐसी भयंकर और लगातार चमकने वाली बिजली तथा इतनी बहरा कर देने वाली गरज मैंने जीवन में कभी न देखी थी। बहुत तेज़ गरज के साथ सीधी पड़ने वाली मूसलाधार बारिश के गिरने से कुछ भाफ़-सी धरती से उठी और चारों ओर इतना

धुन्ध छा गया कि जंगल छिप-सा गया। छोटी-छोटी धाराएँ इतनी भर कर चलने लगीं कि उन्हें पार करना कठिन हो गया। बहुत देर बाद कुछ दूरी पर उस वर्षा में से ही हमें कर्नल चिक का लट्ठों से बना मकान दिखाई दिया। उसने हमें सदा की भाँति स्वागत के साथ अपने यहाँ ठहराया। उसकी पत्नी यद्यपि लोगों की सभाओं आदि के कारण उकताई रहती थी, और कुछ कठोर स्वभाव की बन गई थी, पर इस समय उसने भी अपनी सहानुभूति कम न दिखाई। उसने हमें अपने भीगे हुए और बिगड़े हुए कपड़ों और सामान को ठीक करने के लिए हर प्रकार की सहूलियत दी। सूरज छिपने के साथ ही तूफ़ान शान्त हुआ। इस समय कर्नल के घर की ड्योढ़ी से नज़ारा बहुत ही अच्छा दिखाई दे रहा था। कर्नल का यह मकान एक ऊँची पहाड़ी पर था। फटते हुये बादलों में से सूरज की किरणें धाराओं के रूप में तेज़ बहने वाली मिसूरी नदी और फैले हुए बड़े जंगलों पर पूरी तरह बिछ गईं।

अगले दिन वैस्टपोर्ट लौटने पर हमें कप्तान का एक सन्देश मिला। इसे देने वह स्वयं आया था। पर यह जानकर कि हम कंसास गए हुए हैं, वह फौजेल नाम के अपने एक परिचित दुकानदार को यह सन्देश हम तक पहुँचाने के लिए दे गया। इस आदमी की शराब और ज़रूरी खुदरा सामान की दूकान थी। इस नगर में शराब कुछ अधिक मात्रा में ही पी जाती है। हरेक आदमी भरी हुई पिस्तौल भी साथ लिए रहता है। ऐसी हालत में परिणाम बुरे ही होते हैं। हम ज्यों ही उसकी दूकान के पास से गुज़रे हमें फौजेल का चौड़ा जर्मन चेहरा दरवाज़े से बाहर झाँकता नज़र आया। उसने बताया कि हमारे लिए कोई सन्देश है। साथ ही उसने शराब का घूँट भरने के लिए भी हमें निमन्त्रित किया। हमारे लिए उसकी शराब और उसका सन्देश दोनों ही आनन्द देने वाले न रहे। कप्तान हमें यह सूचना देने के लिए लौटा था कि र—ने पहले से निश्चित राह को छोड़कर दूसरी राह चुनने का फैसला किया है। उसी ने हमारे दल के आगे-आगे चलने की जिम्मेवारी ली हुई थी। अब उसने व्यापारियों की राह छोड़कर फोर्टलीवनवर्थ के उत्तर से होते हुए एक नई राह पर बढ़ने का निश्चय किया था। इसी राह पर पिछली गर्मियों में घुड़सवार सेनाएँ बढ़ी थीं। हालांकि हमसे बिना पूछे राह बदल देने की बात हमें बहुत अखरी, पर तो भी हम अपनी नाराजगी को छिपा कर फोर्टलीवन-

वर्थ में उनसे मिलने को तैयार हो गए। उन्होंने यही हमारी प्रतीक्षा करनी थी।

अपनी तैयारियाँ पूरी होने के बाद एक सुहावनी सुबह हमने अपनी यात्रा शुरू करने की कोशिश की। हमारा पहला ही कदम दुर्भाग्य से भरा था। अभी घोड़ों पर काठियां आदि कसी ही थीं कि गाड़ी में जुता एक टट्टू बिदक कर उछलने-कूदने लगा। उसने रस्सियां और चमड़े की पेटियां तोड़ डालीं। गाड़ी नदी में गिरते-गिरते बची। जब हमने देखा कि वह काबू में नहीं रहेगा तो हमने बूने द्वारा दिये गए एक दूसरे टट्टू को उसकी जगह जोत दिया। यह बूने महोदय वैस्टपोर्ट के ही थे और प्रसिद्ध नेता डेनियल बूने के पोते थे। मैदानी-यात्रा का यह पहला अनुभव अभी भूला भी न था कि एक नई मुसीबत आ पड़ी। अभी हम वैस्टपोर्ट से बहुत दूर न गए थे कि हमारी गाड़ी एक दलदली धार में फँस गई। हमें एक-दो घण्टे यहीं लग गए। बाद में तो ऐसी मुसीबतें रोज़ की ही बात बन गई।

—: ० :—
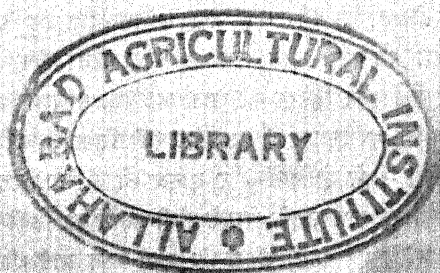
२ : आरम्भ

वैस्टपोर्ट के मिट्टी के घरों से निकल कर हम कुछ समय तक धूप-छाँह से भरी सँकरी राह से होकर जंगल में से गुज़रे। बहुत देर बाद हम खुली रोशनी में आये। यहाँ वह जंगल पीछे छूट गया था। कभी यह जंगल पश्चिमी किनारे से अन्धमहासागर तक—पूरे के पूरे महाद्वीप पर—फैला हुआ होता था। सामने पड़ने वाली कुछ झाड़ियों को छोड़कर जहाँ तक भी हमारी नज़र जाती थी, हरियाली के एक महासागर के रूप में, मैदान ही फैला हुआ था, जैसे यह आकाश तक मिलने उठ गया हो।

बसन्त का यह दिन बहुत सी सुहावना था। ऐसे दिन काम करने की बजाय मस्ती और मौज मनाने की इच्छा करती है। सारी कोमल भावनाएं ऐसे दिन उमड़ पड़ती हैं। झाड़ियों में गुज़रते हुए मैं अपने दल के आगे होकर चलने लगा। एक जगह हरी घास का टुकड़ा बिछा देखकर मैं अपना लोभ न रोक सका और घोड़े से उतर कर वहीं लेट गया। सभी पेड़-पौधे फूलों से लदे पड़े थे। कुछ नयी पत्तियां फूट रही थीं। जंगली सेवों और सेवती आदि के रंग बिरंगे फूलों के गुच्छे लदे पड़े थे। इन मैदानों और पहाड़ों के नज़ारे यद्यपि बहुत निखरे और सुन्दर न थे, फिर भी मुझे शहरी सजे-धजे बग़ीचों को पीछे छोड़ आने का अधिक दुःख न हुआ।

इसी समय हमारा दल भी झाड़ियों से बाहर आता दिखाई दिया। सबसे आगे हमारा शिकारी पथ-प्रदर्शक हेनरी शातिलों चल रहा था। वह एक अच्छा पहलवान दीखता था और एक मज़बूत व्यान्दोत टट्टू पर सवार था। उसने सफ़ेद कम्बल का बना कोट, ऊन का एक चौड़ा टोप, मोकास्सिन की खाल के रोएंदार जूते और हिरण की खाल का बना पाजामा आदि पहने हुए थे। पाजामे के पहुंचे झालरदार थे। उसने अपनी शिकारी छुरी कमर की पेटी में अटकाई हुई थी। उसने गोलियों और बारूद की थैलियां बग़ल में लटकाई हुई थीं और उसकी राइफ़ल उसके सामने ऊँची काठी पर टिकी हुई थी। उसके सारे सामान की भाँति यह काठी भी उसके बहुत काम आई थी और इसीलिये

काफी घिस चुकी थी। उसके ठीक पीछे शाँ एक लाल भूरे ठिगने घोड़े पर सवार था। वह एक और बड़े घोड़े की रास थामे बढ़ रहा था। उसकी साज-सजावट मुझ से मिलती जुलती थी। यह भेस, साज-सजावट के लिये न होकर काम-काजी ढंग से बनाया गया था। काठी स्पेनी ढंग की अत्ययन्त सादी और काले रंग की थी। उस में भारी पिस्तौलें लटकाने की जेबें भी बनी थीं। पीछे की ओर एक कम्बल लिपटा रखा था। लपेटी हुई एक लम्बी खोजी रस्सी घोड़े की गर्दन से बाँधकर उसी के एक ओर लटका दी गई थी। सात सेर से अधिक भारी राइफ़ल मेरे पास थी, किन्तु शाँ के पास दुनाली बन्दूक थी। इस समय की हमारी वेश-भूषा यद्यपि बहुत अच्छी न थी, फिर भी सभ्य ढंग की अवश्य थी। किन्तु जब हम यात्रा से लौटकर आये तब की हमारी वेश-भूषा इस के मुकाबिले बहुत ही बिगड़ी हुई थी। फ़लालैन की एक लाल कमीज ही हमने पहन रखी थी, जो कमर पर कसी पेटी के कारण फ्रॉक जैसी लग रही थी। बूटों की जगह हमने भी मोकास्सिन की ही खाल पहन ली थी। हमारी बाकी पोशाक किसी आदिवासी स्त्री द्वारा हिरण के सुखाये और तपाये चमड़े से बनी हुई थी। हमारी खच्चरों और गाड़ी को चलाने वाला देस्लारियर पीछे-पीछे अपनी गाड़ी को हलके कीचड़ में से होता हुआ बढ़ाता आ रहा था। वह कभी अपना पाइप पीता था और कभी मैदानी भाषा में एक गाला दुहराता था, "भगवान् के पवित्र बेटे!" ये शब्द वह तब कहता था, जब कोई टट्टू किसी गहरे नाले या खाई में उतरने से कतराता था। यह गाड़ी सफ़ेद कपड़े से चारों ओर से ढकी हुई थी। इस प्रकार अन्दर की चीज़ें सुरक्षित कर ली गई थीं। ऐसी गाड़ियां क्वीबेक के इलाके के बाज़ारों में दर्जनों की संख्या में इधर-उधर बंधी हुई मिल जाती थीं। इनमें हमारे खाने-पीने का सामान, तम्बू, गोली-बारूद, कम्बल और आदि-वासियों के लिए भेंटें आदि पड़ी थीं।

आदमी हम चार थे, पर पशु आठ! मैंने और शाँ ने तो एक-एक घोड़ा फालतू ले ही रखा था, पर गाड़ी के साथ भी हम एक फालतू टट्टू लेकर चल रहे थे। मुसीबत या दुर्घटना के समय इसकी आवश्यकता पड़ सकती थी।

पूरे दल के इस वर्णन के बाद यह भी उचित ही होगा, यदि अपने साथ चलने वाले दोनों साथियों के चरित्र का भी कुछ परिचय दे दूँ।

देस्लारियर कनाडा का रहने वाला था। उसमें जीन बेप्तिस्त की सभी

विशेषतायें मौजूद थीं। वह सदा आनन्द, प्रसन्न और अपने स्वामियों के प्रति नम्र रहता था। थकान, ठण्ड या कठिन मेहनत आदि कोई भी बात उसकी इस आदत में फ़र्क न डाल सकती थी। रात आने पर आग के पास बैठ कर वह पाइप सुलगा लेता और पूरे सन्तोष से भर कर कहानियां सुनाने लगता। इन मैदानों में तो जैसे उसकी जान बसती थी। हेनरी शातिलों इससे भिन्न स्वभाव का था। जब हम अभी सेंट लुई में ही थे, हमें फर कम्पनी के बहुत से आदमियों ने बड़ी सहानुभूति के साथ हमारे लायक एक पथ-प्रदर्शक और शिकारी ढूँढ़ देने का वायदा किया। एक दिन दोपहर बाद कम्पनी के दफ्तर में पहुँचने पर हमने एक लम्बा-चौड़ा और सजा-धजा आदमी बैठा देखा। उसका चेहरा बहुत अच्छा और सरल था। उसे देखते ही हम उसकी ओर खिच गये। हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब हमें बताया गया कि यही व्यक्ति हमारी पहाड़ी यात्रा में हमें राह दिखाने का काम करेगा। यह सेंट लुई के पास के ही एक छोटे से नगर में उत्पन्न हुआ था और पन्द्रह वर्ष की आयु से ही रॉकी पर्वतमाला के आस-पास घूमता रहा था। प्रायः अधिकांश समय इस कम्पनी ने ही उसे वहां के अपने अनेकों किलों में भैंसों का मांस-मुहैया करने के काम पर लगाये रखा था। शिकार के मामले में उसके मुकाबिले का एक ही आदमी था—सिमोनू! उसके साथ इसकी गहरी मित्रता थी। यह अभी एक दिन पहले ही पहाड़ों में चार साल बिताकर लौटा था। अगली यात्रा पर निकल पड़ने से पहले वह एक दिन की छुट्टी लेकर अपनी माँ से मिलने जाना चाहता था। उसकी आयु इस समय लगभग तीस वर्ष की थी। वह छः फुट लम्बा था। उसका शरीर बहुत ही सुन्दर और गठा हुआ था। इन्हीं मैदानों में उसने सब कुछ सीखा था। लिखने-पढ़ने में वह बिल्कुल कोरा था, किन्तु उसकी सहज बुद्धि और संस्कार स्त्रियों से भी अधिक तेज़ थे। उसके मर्दाने चेहरे से उसकी सचाई, सादगी और नरम-दिली साफ़-साफ़ झलकती थी। उसे दूसरों का चरित्र बारीकी से पहिचानने की आदत थी। उसमें कुछ ऐसी विशेषता थी कि वह किसी भी समाज में कोई ग़लती करने से अपने को बचा लेता था। वह अंग्रेज—अमरीकनों जैसे अशान्त स्वभाव का न था। वह आँखों के सामने के संसार को ही एक सचाई मान कर संतुष्ट रहता था। उसका सबसे बड़ा दोष ही यह था कि वह अत्यन्त सीधा-सादा और उदार था। इसी

कारण जीवन में अधिक बढ़ने और पनपने में उसकी रुचि न थी। इस पर भी उसके विषय में यह प्रसिद्ध था कि वह अपनी चीज़ों को चाहे कैसे ही बरते, दूसरों का सामान उसके हाथों में सदा सुरक्षित रहता था। इन पहाड़ों पर उसकी वीरता और निशानेबाज़ी दोनों ही गजब की रहती थीं। फिर भी यह आश्चर्य की ही बात है कि बात-बात पर बन्दूक का सहारा लेने वाले लोगों के बीच रह कर भी वह कभी किसी के साथ लड़ाई में न उलझा था। एकाध बार उसके भोले स्वभाव को ग़लत समझ कर उसका उलटा अर्थ लिया गया, किन्तु इस नासमझी का परिणाम इतना बुरा रहा कि फिर कभी किसी ने उसे ग़लत समझने की कोशिश न की ! उसके वीरतापूर्ण स्वभाव का परिचय इस बात से ही मिल जाता है कि उसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि उसने तीस से अधिक सलेटी रंग के भालू मारे हैं। वह इस बात का जीता-जागता सबूत है कि बिना किसी मदद के भी कोई कैसे बढ़ सकता है। शहर में या जंगल में मैं अपने सच्चे मित्र हेनरी से बढ़कर और किसी अधिक .अच्छे मनुष्य से न मिल पाया।

हम शीघ्र ही इन जंगलों और झाड़ियों को पार कर खुले मैदान में निकल आए। यहाँ कोई न कोई शावानू आदिवासी अपने छोटे से टट्टू पर चढ़ा हुआ गुज़रता दीखता। उसने सूती कमीज़ और चमकीला कमरबन्द पहने होते तथा एक रंगीन रूमाल अपने लम्बे बालों पर पीछे की ओर लटकता हुआ बाँधा होता। दोपहर के समय हम मेंढकों और कछुओं से भरी एक छोटी सी धारा के पास ही आराम के लिए रुक गये। यहां पर कभी आदिवासियों ने डेरा डाला था, जिसके निशान अब भी मौजूद थे। इससे हमें धूप से बचने के लिए जगह आसानी से मिल गई। इसके लिए हमें केवल एक-आध चादर या कम्बल ही पुराने खण्डहरों पर तानना पड़ा। छाया करने के बाद हम अपनी काठियां बिछाकर बैठ गये। शॉ ने पहली बार अपनी मन पसन्द आदिवासियों की चिलम जलाई। देस्लारियर बिछे हुये कोयलों पर ही बैठ गया। उसने अपनी आंखों को एक हाथ से ढका हुआ था और दूसरे हाथ में एक छोटी छड़ी पकड़ी हुई थी। इस छड़ी से ही सामने के बर्तन में तली जाती हुई चीज़ों को वह हिलाता जा रहा था। घोड़ों को पास की ही चरागाह में, बिखरी हुई झाड़ियों के बीच में, चरने के लिए छोड़ दिया गया था। हवा कुछ भारी

और मस्ती भरी थी, जैसे वसन्त छाई हो। पास की धारा और चरागाह में से अचानक ही हज़ारों मेंढक और जन्तु टर-टराने लगे।

अभी हम ठीक से बैठे भी न थे कि एक अतिथि आ पहुँचा। यह कोई बूढ़ा, कन्सास प्रदेश का आदिवासी था। उसकी पोशाक देखने से वह किसी खास हस्ती का आदमी मालूम होता था। उसका सिर मुंडा हुआ और लाल रंग से रंगा हुआ था। सिर के बीचोंबीच बचे हुए बालों के गुच्छे से चीलों के कुछ पंख और फनियर सांपों की दो या तीन पूंछें लटक रही थीं। उसकी गालों पर सिन्दूर मला हुआ था। उसके कानों में हरे शीशे के झुमके लटक रहे थे। सलेटी रंग के भालू के पंजों से बनी एक माला उसने गले में पहनी हुई थी और शंख और सीपी से बने अनेक हार उसकी छाती से लटक रहे थे। प्रणाम करने के लिए तेज़ी से हाथ मिलाकर उसने कन्धों से लटकता अपना लाल कम्बल नीचे गिरा दिया और स्वयं चौकड़ी मार कर धरती पर बैठ गया। हमने उसे शर्बत का एक गिलास दिया। उसने इसकी प्रशंसा की। तब वह हमें अपने बड़प्पन की बातें बताने लगा। वह यह भी बता रहा था कि उसने कितने पौनी आदिवासी मारे। तभी अचानक धारा पार करके किनारे से चढ़ता हुआ रंग-बिरंगे आदिवासियों का एक समूह हमारी ही ओर आता दिखाई दिया। वे सब जल्दी-जल्दी एक-दूसरे के पीछे बढ़ते गए। पहले आदमी थे फिर औरतें और फिर बच्चे! उनमें से कुछ घोड़ों पर सवार थे और कुछ पैदल चल रहे थे। पर सभी मैले-कुचैले और भद्दी हालत में थे। कुछ बूढ़ी औरतें छोटे-छोटे खच्चरों पर बैठी हुई थीं। उनमें से कुछ के पीछे साँप की सी आंखों वाले एक या दो बच्चे भी फटे हुए कम्बलों को पकड़े बैठे थे। कुछ लम्बे और पतले नौजवान हाथों में धनुष-बाण लिए पैदल चल रहे थे। कुछ लड़कियां भी साथ थीं, जिन्होंने कांच के मोती और लाल कपड़े पहने हुए थे, पर फिर भी जिनकी बदसूरती छिप न सकी थी। इन्हीं में कहीं-कहीं कोई ऐसा भी आदमी चल रहा था, जो हमारे ही अतिथि की भाँति अपने समुदाय के किसी खास पद का अधिकारी लगता था। ये लोग कंसास आदिवासियों में सबसे छोटी जाति के थे। अपने स्वामियों के भैंसों के शिकार के लिए चले जाने पर ये लोग वैस्टपोर्ट की ओर भीख माँगने जा रहे थे।

जब यह दरिद्र भीड़ गुज़र गई तब हमने अपने घोड़ों पर ज़ीनें और

काठियां कसीं और अगली यात्रा पर चल पड़े। धारा को पार करने के बाद हमें अपने बाईं ओर के जंगलों और नालों के परे कुछ नीची छतों वाले मकान दिखाई दिए। जंगली गुलाबों और बसंती फूलों के बीच से आगे बढ़ने पर हमें शावानू लोगों के मेथोडिस्ट मिशन के लकड़ी से बने गिरजे और स्कूल दिखाई दिए। यहाँ कुछ आदिवासी किसी धार्मिक मेले के लिए इकट्ठे हो रहे थे। कुछ अच्छी पोशाक पहने पचास-साठ लम्बे-चौड़े पुरुष वहां लकड़ियों की बैंचों पर पड़ों के नीचे बैठे थे। उनके घोड़े आस-पास के जंगले और कोठरियों के पास बंधे हुए थे। उनका मुखिया पार्कस था, जो देखने में पहलवान लगता था। वह वैस्टपोर्ट में स्थित अपनी व्यापार की जगह से अभी-अभी ही आया था। व्यापार की इस जगह को छोड़कर उसके पास एक लम्बा-चौड़ा खेत और काफी सारे दास भी थे। वास्तव में शावानू लोगों ने मिसूरी के सीमान्त पर रहने वाले किसी भी दूसरे आदिवासी कबीले की अपेक्षा अधिक तरक्की की है। ये लोग हमारे पुराने परिचित कंसास आदिवासियों से, शक्ल और चरित्र में एकदम भिन्न थे।

कुछ ही घण्टे की सवारी के बाद हम कंसास नदी के किनारे पहुँच गए। इसके किनारे के जंगल में बढ़ते हुए और रेत को पार करते हुए हमने वहां डेरा डाला, जहाँ लोअर देलावारे को रास्ता फटता है। हमारा तम्बू पहली बार जिस जगह गाड़ा गया, वह जगह जंगल के पास की चरागाह में थी। सब चीजें ठीक-ठिकाने रखने के बाद हमें खाने की चिन्ता लग गई। पास के ही एक लट्ठों के बने मकान की ड्योढ़ी में देलावारे जाति की एक भारी भरकम बुढ़िया बैठी थी। पास ही पानी बह रहा था। एक बहुत सुन्दर दोगली लड़की उसी की देख-रेख में दरवाजे के आस-पास उछलते-कूदते तीतरों के झुण्ड को दाना दे रही थी। हमने रुपया और तम्बाकू आदि के बदले तीतर लेने चाहे, पर वह किसी कीमत पर भी देने को तैयार न हुई। इसलिए मैंने अपनी राइफल सम्भाली और जंगल अथवा नदी में कोई शिकार फंसाने के लिए निकल पड़ा। चरागाह में अनेक चिड़ियाँ शोर करती फुदक रही थीं। परन्तु, निशाना साधने लायक उनमें से कोई भी न थी। केवल तीन गीध दिखाई दिए, जो साइकामोर के सूखे तने पर बैठे हुए थे। यह सूखा तना घनी हरी घास से अलग नदी पर बढ़ गया था। उन गीधों के सिर कंधों के

बीच छिपे हुए थे। लगता था कि वे पश्चिम से आने वाली हल्की-हल्की धूप को मस्ती से सेक रहे थे। उनमें कोई खास खिचाव मुझे न लगा। इसलिए मैंने भी इनके आनन्द में बाधा न डाली। बल्कि, मैं छिपते सूर्य के प्रकाश में प्रकृति की उस शोभा को देखने में डूब गया। जंगल की गुलाबी छाया में तेजी से बढ़ती हुई नदी का दृश्य जंगली, पर बहुत ही शान्ति देने वाला, लग रहा था।

जब मैं डेरे पर वापिस आया तो शॉ और एक बूढ़ा आदिवासी ज़मीन पर बैठे कुछ बातें कर रहे थे और बारी-बारी हुक्का पी रहे थे। बूढ़ा आदमी बता रहा था कि वह गोरों से प्यार करता है और उसे तम्बाकू भी बहुत अच्छा लगता है। उधर देसलारियर धरती पर ही टीन के थालों और तश्तरियों को फैला रहा था। क्योंकि कोई और चीज़ मिल नहीं सकी थी, इसलिए उसने नाश्ते के लिए हमारे सामने बिस्कुट और मांस सजा दिया। साथ ही काफ़ी का बड़ा बर्तन भी रख दिया। अपने चाकू निकाल कर हम खाने में जुट गये। अधिक हिस्सा समाप्त करने के बाद, बाकी बचा-खुचा हमने उस आदिवासी को दे दिया। इसी समय हमारा ध्यान घोड़ों की ओर गया। उनकी अगली टांगें बंधी हुई थीं और वे पेड़ों के बीच खड़े थे। वे इस समय बहुत निराश और उकताए हुए थे। इसीलिए उनकी लंगड़ी चाल ने हमारा ध्यान खींच लिया। लगता था जैसे उन्होंने जंगल की इस यात्रा के पहले अनुभव को अच्छा नहीं समझा। विशेषकर, मेरे घोड़े तो इस मैदानी ज़िन्दगी से डर ही गये लगते थे। उनमें से एक का नाम हेन्ड्रिक था। यह बहुत ही बलवान और परिश्रमी था चाबुक को छोड़कर वह किसी भी चीज़ के आगे नहीं झुकता था। इस समय यह भी हमारी ओर बहुत तिरस्कार-भरी नज़र से देख रहा था, मानों वह अपनी दुलत्तियों से बदला लेने की सोच रहा हो। दूसरे घोड़े का नाम पोन्टिक था। यह था तो सादी ही किस्म का पर अपने काम में काफी अच्छा था। इस समय यह भी अपना सिर लटकाए खड़ा था और इसकी सटाएँ दोनों ओर लटक रहीं थीं। मानों यह भी स्कूल भेजे जाने वाले किसी भारी-भरकम लड़के के समान उदास और दुःखी हो। उसकी होन-हार की पहचान बिलकुल सही होती थी। मैंने जब अन्तिम बार उसके विषय में कुछ सुना तो वह ओजिल्लाला वंश के एक बहादुर आदिवासी के आधीन

था और काक-जाति के आदिवासियों के विरुद्ध युद्ध में सम्मिलित हुआ था।

अंधेरा बढ़ने पर, जब चिड़ियों की आवाज़ों का स्थान झींगुरों की आवाज़ ने ले लिया, तब हमने भी तम्बू में आकर ज़मीन पर ही अपने कम्बल बिछाये और अपनी काठियों को सिरहाने रख कर लेट गये। इस मौसम में हमने पहली बार शहर से बाहर डेरा डाला था। हर आदमी ने तम्बू में अपना वही स्थान चुन लिया, जो उसे सारी यात्रा भर अपनाना था। देस्लारियर को गाड़ी मिली। वह उसमें बरसात में छिपकर भी सो सकता था और इस प्रकार अपने मालिकों से भी अधिक अच्छे बचाव में था।

यहाँ पर कंसास नदी शावानू और देलावारे नामक आदिवासियों के प्रदेशों की सीमा बनाती है। अगले दिन हमने यह नदी पार की। बहुत कठिनता से अपने घोड़ों और सामान को हम पार पहुँचा सके। अपनी गाड़ी भी हमें खाली करनी पड़ी ताकि दूसरे किनारे की सीधी चढ़ाई पर उसे चढ़ाया जा सके। इतवार का दिन था। दिन कुछ गर्म, उजला और शान्त था। चारों ओर देलावारे लोगों के छोटे-छोटे घरों और उजाड़ खेतों पर शान्ति छाई हुई थी। कहीं-कहीं छोटे जन्तुओं या कीड़ों की आवाज़ सुनाई देती थी। जब तब कोई आदिवासी घोड़े पर चढ़कर उधर से सभा-घर की ओर जाते हुए गुजरता या कोई बुढ़िया किसी टूटे-फूटे, लट्ठों से बने मकान के टूटे से दरवाज़े पर बैठी सुस्ताने का मज़ा लेती हुई दिखाई दे जाती थी। देलावारों के इस गांव में कोई घण्टी न थी, क्योंकि उनके यहां इसका रिवाज़ ही नहीं था। इस पर भी इस एकान्त और बेतरतीब बस्ती में भी हफ्ते के सातवें दिन की-सी वैसी ही शान्ति छाई हुई थी, जैसी न्यू हैम्पशायर के पर्वतों में बसे न्यू इंगलैंड के किसी गांव में अथवा वेर्मौण्ट के जंगलों में पाई जाती है।

यहां से फोर्ट लीवनवर्थ की ओर एक सैनिक-सड़क गई है। कुछ मील दूर तक इस सड़क के दोनों ओर देलावारे लोगों के मकान थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बने हुए हैं। इस इलाके में जंगली राह के किनारे लठ्ठों के बने ये छोटे-छोटे झोपड़ राह को आकर्षक बना रहे थे। यहां प्रकृति के नज़ारे भी कम सुन्दर न थे। उन्हें सजाने के लिये बाहरी सहायता की जरूरत न थी। बड़े-बड़े मैदानों और खाइयों का मिला-जुला रूप या अनेक छोटी-मोटी धाराओं के किनारे खुलने वाले उनके हिस्से, सदियों से इन्सान द्वारा सजाये गये, धरती

के टुकड़ों से कम लुभावने नहीं थे। उस अधखुले मौसम में भी यहाँ की ताज़गी पूरे उभार पर थी। जंगल में अंजीरों जैसे लाल फूलों के गुच्छे और दूसरे बहुत से, पूरब में अनजाने, फूल भी भरपूर लदे हुए थे। इनके साथ ही मैदान की हरियाली खिले हुए फूलों के रंगों से मिलकर रंग-बिरंगी हो उठी थी।

यह रात हमने एक पहाड़ी के पास के सोते के किनारे पर बिताई। अगले दिन सुबह हम फिर चल पड़े और दोपहर से पहले ही फोर्ट लीवनवर्थ पहुँच गये। यहां सड़क एक ऐसी धार के पार गई थी, जिसके दोनों ओर घने पेड़ लगे हुए थे। यह धार एक जंगली खड्ड के गहरे में बह रही थी। हम इसमें उतरने ही लगे थे कि हमें एक उलझनभरा-सा जत्था नीचे पानी पार करके अपनी ओर ऊपर आता दिखाई दिया। हमने रुक कर उन्हें गुजर जाने दिया। ये लोग देलावारे जाति के ही के थे, जो अभी-अभी लम्बे शिकार से लौट रहे थे। मर्द और औरतें—सभी घोड़ों पर सवार थे। उनके साथ ही बहुत से, सामान ढोने वाले, टट्टू भी थे। उन पर रोएंदार खालें, भैंसों की खालें तथा पतीली आदि घर के जरूरी सामान तथा कपड़े और हथियार लदे हुए थे। ये सभी चीज़ें बहुत ही मैली-कुचैली थीं, मानों ये बहुत अधिक काम में आई हों। इस सारे समूह के पीछे एक बूढ़ा घुड़सवार आ रहा था। हमसे बात करने के लिए वह रुक गया। वह एक काले से गठे हुए टट्टू पर चढ़ा हुआ था। उस टट्टू की सटा और पूंछ के बाल किन्हीं विशेष फलियों से बांधे हुए थे। उसके मुंह में लोहे की जंग खाई हुई स्पेनी लगाम पड़ी थी, जिसके दोनों ओर रास की जगह भैंसे की खाल की पेटियां बंधी हुई थीं। उसकी काठी नंगी थी। यह शायद किसी मैक्सिको निवासी से छीनी गई थी और स्पेनी तरीके की यह सूखी काठ की ही थी। इस पर सलेटी रंग के भालू की खाल मढ़ी हुई थी और दोनों ओर लकड़ी की बनी दो रकाबें लटक रही थीं। पेटियों के न होने के कारण एक खाल ही इस पर से होती उसके पेट के चारों ओर बंधी हुई थी। इस सवार का घना रंग और सांप की सी तेज आँखें साफ़ बता रही थीं कि वह आदिवासी है। उसने हरिण की खाल की कमीज़ पहनी हुई थी। यह उसके झालरदार पाजामों की ही भांति चर्बी की रगड़ और घिसने आदि के कारण काली पड़ चुकी थी। उसके सिर पर एक रूमाल

बंधा हुआ था। उसके सामने ही राइफ़ल टिकी हुई थी। इस हथियार के चलाने में देलावारे लोग बहुत सधे हुए माने गये हैं, जबकि इसके बोझिल होने के कारण दूसरे आदिवासी इसे साथ ले जाने में कतराते हैं।

उसने तुरन्त ही पूछा, "तुम्हारा सरदार कौन है?"

हेनरी ने हमारी ओर इशारा किया। उस वृद्ध ने अपनी आँखें एक क्षण के लिए हम पर गड़ा दीं और एकदम ही अपना निर्णय-सा देते हुए कहा, "बहुत बुरा! अभी बहुत जवान है।" इस टिप्पणी द्वारा हमारे प्रति अपमान दिखाकर वह हमें छोड़कर अपने लोगों के पीछे ही चला गया।

ये देलावारे लोग विजेता इरोक्वा के सहायक रहे थे। कभी ये विलियम पैन के भी शान्तिपूर्ण मित्र रहे थे। परन्तु, अब ये ही इन मैदानों के सबसे भयंकर योद्धा थे। अब ये बहुत दूर-दूर के उन कबीलों पर भी हमला करते हैं, जिनका नाम इनके पुरखों ने भी कभी न सुना होगा। इनकी लड़ाई में अब भी आदिवासियों का सा ही जोश और तरीका था। ये अपने योद्धाओं के दल रॉकी पर्वतमाला और मैक्सिको तक हमले के लिए भेजते हैं। इनके पड़ोसी और पुराने साथी शावानू लोग अब खेती पर गुज़र करते हैं और अच्छी बढ़ती पर हैं। पर, देलावारे लोग हर साल घटते चले जाते हैं, क्योंकि इन युद्धों में हर साल आदमी मारे जाते हैं।

इस दल को छोड़कर आगे बढ़ते ही हमने मिसूरी नदी के साथ-साथ बढ़ने वाले दाईं ओर फैले विशाल जंगलों को देखा। मिसूरी नदी यहाँ इन्हीं घने जंगलों के बीच से होकर बह रही है। नदी के मोड़ पर, सामने ही कुछ दूर हमें पेड़ों में से झाँकते हुए फ़ोर्ट लीवनवर्थ के कुछ ऊँचे निशान दिखाई दिये। हमारे और मिसूरी नदी के बीच एक हरी चरागाह वाला मैदान फैला हुआ था। इसी मैदान में एक झरने के किनारे के वृक्षों के पास ही कप्तान और उनके साथियों का तम्बू गड़ा हुआ था। उसके आस-पास ही उनके घोड़े चर रहे थे। पर कप्तान आदि स्वयं नहीं दीख रहे थे। उनकी खच्चरों को संभालने वाला, राइट वहीं गाड़ी के जुए पर बैठा गद्दी आदि की मरम्मत कर रहा था। बोइस्फ़ेर्ड तम्बू के दरवाजे के पास ही अपनी राइफ़ल साफ़ कर रहा था। सोरेल भी वहीं पर सुस्ता रहा था। बहुत ध्यान से देखने पर हमने कप्तान के भाई जैक को भी पहचान लिया। वह तम्बू में बैठा रस्सियाँ जोड़ने

के अपने पुराने काम में जुटा हुआ था। पहुँचने पर उसने अपने आयरिश लहजे में हमारा स्वागत किया और बताया कि कप्तान मछलियों के शिकार की ओर और र—सेना की ओर गये हैं। वे दोनों भी सूरज छिपने से पहले ही लौट आये। इसी बीच हमने भी उनके समीप ही अपना तम्बू गाड़ लिया था। भोजन के बाद एक सभा हुई और यह निश्चय हुआ कि यहां एक दिन और ठहर कर फिर सीमान्त की ओर कूच कर दिया जाय। यहां की भाषा में ऐसे कूच को "कूद जाना" भी कहते हैं। हमारी यह विचार-सभा एक हलके से प्रकाश में हुई। यह प्रकाश बहुत दूर पर मैदान में जलने वाली पिछली गर्मियों की सूखी घास की लपटों के कारण हो रहा था।

—: o :—

३ : फोर्ट लीवनवर्थ

अगली सुबह हम फोर्ट लीवनवर्थ की ओर चले। कर्नल कीर्नी अभी पहुँचे ही थे। इनसे मैं पहले सेण्ट लुई में भी परिचित हो चुका था। अब ये जनरल बन चुके हैं। इन्होंने अपने स्वभाव के अनुसार आगे बढ़कर हमारा आदर-सत्कार किया। यह स्थान कोई किला नहीं है। इसके चारों ओर सुरक्षा की दीवारें भी बनी हुई नहीं हैं। केवल दो बड़े मकान बने हुए हैं। यहाँ शान्ति विद्यमान है। इधर युद्ध की कोई अफ़वाह नहीं पहुँची है। घास का एक चौकोर मैदान है। उसके चारों ओर बैरकें और अधिकारियों के मकान बने हुए हैं। कुछ आदमी इसी जगह पर आ-जा रहे थे और कुछ वृक्षों के नीचे सुस्ता रहे थे। अब से कुछ सप्ताह बाद यहाँ की हालत पलटी हुई थी। उस समय यहाँ सान्ता फ़े की चढ़ाई पर जाने वाले सीमान्त के अनेकों खोजी जमा हुए थे।

सेना के पड़ाव से गुजरते हुए हम किक्कापू गाँव की ओर गये। यह यहाँ से ५-६ मील परे होगा। राह बड़ी अनिश्चित और सन्देह भरी थी। यह हमें मिसूरी के सीमान्त पर उठने वाली दोनों ओर से ढलवाँ पहाड़ियों तक ले गई। यहाँ से दाईं और बाईं ओर देखकर हम दो किस्म के विरोधी नजारों का मज़ा ले सकते थे। बाईं ओर मीलों दूर तक मैदान फैला हुआ था। इसमें टीले और खड्ड दूर से ही दीख रहे थे। अनेक खाइयाँ भी दीख रही थीं। या फिर दूर-दूर तक घास ही फैली नज़र आती थी। दूर सीमा पर उठने वाली पहाड़ियों पर वृक्षों की पंक्तियां भी धूप में चमकती नज़र आ रही थीं। इस सुन्दर दृश्य में खिचाव, मौसम की ताज़गी और जलवायु की अनुकूलता के कारण, और भी बढ़ गया था। हमारे नीचे, दाईं ओर टूटे और उजाड़ जंगलों का ही फैलाव था। हम हरे और सूखे पेड़ों की चोटियाँ साफ़-साफ़ देख सकते थे। इनमें कुछ तने खड़े थे, कुछ झुके हुए थे और बवण्डर में गिर कर ढेरों के रूप में जमा हो गये थे। उनसे परे, उनकी शाखा में से झांकने पर, मिसूरी का मचलता हुआ गदला पानी साफ़ पहचाना जा सकता था। परले किनारे की ओर इसकी धार अधिक तेज़ थी।

यहाँ से रास्ता अंदर की ओर मुड़ गया था। एक खुली चरागाह में आते ही हमने एक ऊँची ज़मीन पर कुछ मकान देखे। बहुत से आदमी इन के चारों ओर खड़े थे। किक्कापू गाँव के व्यापारी की ये दुकानें, मकान और घुड़साल थे। इस समय वह उस बस्ती के आधे से अधिक लोगों से घिरा हुआ था। उन लोगों ने अपने दर्जनों छोटे, कमज़ोर और उपेक्षित टट्टू बाड़ के जंगले और बाहरी कोठरियों के पास बांधे हुए थे और वे स्वयं दूकान में या आस-पास जमा थे। इनमें सभी रंग के चेहरे मौजूद थे—लाल, हरे, सफेद और काले। सभी के चेहरे अजब तरह से घुले-मिले और अनेक प्रकार के थे। सूती कमीजें, लाल-नीले कम्बल, पीतल के बुन्दे और विशेष दानों वाले हार आदि उन लोगों के शरीर पर काफ़ी संख्या में दिखाई दे रहे थे। व्यापारी की आँखें नीली और चेहरा चौड़ा था। उसका वेश और उसका व्यवहार उसे ठेठ सीमान्त का ही बता रहे थे। इस समय उसके चारों ओर आदमी और स्त्रियाँ ग्राहकों के रूप में जमा थे और पेटियों आदि पर बैठे थे। इस समय उसकी आँखें बिल्ली की सी लग रही थीं।

गाँव यहां से अधिक दूर न था। उसे देखते ही उसके निवासियों की दुर्भाग्य और उदासी से भरी हालत का साफ़-साफ़ पता चल जाता था। उसका अनुमान करने के लिए जंगल की घाटी में से बहनेवाली किसी पतली सी तेज़ धारा की कल्पना कीजिए जो कभी गिरे हुए पेड़ों या लट्ठों के नीचे छिपती चल रही हो और कभी खुले मैदान में बहने लगती हो, या एक छोटी झील के रूप में बदल जाती हो। इस धारा के किनारे पर ही पेड़ों के बीच में जगह साफ़ करके बनाये हुए छोटे-छोटे लट्ठों के घरों की कल्पना भी कीजिए, जो बिल्कुल ही टूटे-फूटे और लापरवाही से रखे हुए हों। इन मकानों को आपस में पतली-सी पगडण्डियाँ ही एक दूसरे से मिलाती थीं। यहां हमें कभी कोई छुटा हुआ बछड़ा या कोई पालतू सूअर अथवा टट्टू मिल जाता था, जिसका स्वामी अपने ही घर के आगे लेटा हुआ धूप सेक रहा होता था। ऐसे लोग पास जाने पर हमें लापरवाही और सन्देह की निगाह से देखते थे। कुछ आगे बढ़ने पर हमें इन लोगों के पड़ौसी पोत्तावत्तामी जाति के लोगों के घर मिले। उनके घरों को 'पुक्वी' कहते हैं। उनके घर इन लोगों के घरों से अधिक अच्छी दशा में थे।

अन्त में तेज़ गर्मी और उमस से परेशान होकर और थक कर हम अपने मित्र-व्यापारी के ही पास लौट आये। इस समय तक उसके चारों ओर की भीड़ कम हो गई थी। अब वह आराम कर रहा था। उसने हमें पुराने फ्रांसीसी तरीके के अपने सफेद और हरे रंग के मकान में अन्दर बुलाया और एक सजे-धजे कमरे में ले गया। खिड़कियों के परदे गिराकर धूप से बचाव कर दिया गया। किसी घाटी की ही भाँति कमरा भी ठण्डा था। इसके फर्श पर गलीचा बिछा हुआ था। इसकी सी सजावट इस इलाके में पाने की आशा नहीं की जा सकती। सोफे, कुर्सियां, मेजें और किताबों की छोटी अलमारी आदि सभी चीजें पूरबी इलाके के सभ्य घरों की ही भाँति थीं। एक-दो चीजें ऐसी भी पड़ी थीं, जिनसे इस इलाके की सभ्यता की झलक भी मिल जाती थी। एक भरी हुई बन्द पिस्तौल सामने अंगीठी पर पड़ी थी। इसी तरह, किताबों की अलमारी के शीशे में से दीख रहा था कि मिल्टन की पुस्तकों के ऊपर ही एक बहुत खतरनाक चमकती छुरी रखी थी।

हमारा मेज़बान कुछ देर के लिये बाहर गया और जब लौटा तो वह ठण्डा पानी, गिलास और शराब की एक बोतल साथ लेता आया था। इस भयंकर गर्मी में ये चीजें निश्चय ही सबसे अधिक अच्छी थीं। इसके कुछ ही देर बाद एक बहुत ही भली और हँसती हुई औरत आई वह यूरोपीय और अमरीकी खून की मिली जुली निशानी थी। निश्चय ही वह आज से एक-दो साल पहले बहुत सुन्दर रही होगी। उसने हमें बताया कि हमारे लिये साथ के कमरे में भोजन तैयार था। हमारा स्वागत करने वाली यह गृह-स्वामिनी जीवन के आनन्द से ही परिचित थी। उसे किसी भी चिन्ता से मतलब न था। हम भोजन के समय मछलियों के शिकार एवं किले के अधिकारियों के जीवन की घटनाएँ सुनने में लगे हुए थे और वह वहीं बैठ कर हमारा सत्कार कर रही थी। काफ़ी देर बाद इस सत्कार-प्रेमी व्यापारी और उसकी मित्र से विदाई लेकर हम फिर से छावनी लौट आये।

शॉ अपने डेरे की ओर चला गया, पर मैं जनरल कीर्नी से मिलने के लिये रुक गया। वह अब भी मेज़ पर बैठा था। उसके साथ ही हमारा साथी कप्तान भी बैठा था। उसकी वेशभूषा इस समय वैसी ही थी, जैसी हमने वैस्टपोर्ट में देखी थी। हाँ, काला पाइप इस समय जरूर एक ओर रखा

हुआ था। वह अपनी टोपी हाथ में घुमा रहा था और यात्रा में अपनी घुड़सवारी और कभी-कभी होने वाले भैंसे के शिकार की बात सुनाता जा रहा था। वहां र—भी बैठा था। उसकी पोशाक अधिक अच्छी थी। इस समय हमने अंतिम बार सभ्यता के आनन्द चखे और इसी खुशी में, अपनी विदाई के ग़म को भुलाने के लिये शराब पी। तब फिर से घोड़ों पर चढ़कर अपने डेरों पर वापिस लौट आये। यहाँ अगले दिन के कूच की तैयारी पूरी हो चुकी थी।

—:०:—

४ : कूच

समुद्र-पार के हमारे साथी यात्री इस यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार थे। उनकी गाड़ी में छह टट्टू जुते हुए थे। उसमें कम से कम छह महीने के लिए सामान भरा हुआ था। इनके अलावा गोली-बारूद भी काफी मात्रा में था। कुछ राइफ़लें, छोटी शिकारी बन्दूकें, रस्सियां, काठियाँ, निजू सामान और अन्य कई प्रकार की छोटी-मोटी चीज़ें भी लदी हुई थीं। इतनी अधिक चीज़ों के कारण कठिनाई भी होती है। उनमें से हर एक के पास दूरबीन और दिशा देखने वाला यन्त्र भी था। साथ ही, हर-एक ने एक-एक बड़ी अंग्रेज़ी दुनाली बन्दूक भी ज़ीन में, सैनिकों के समान ही, लटका रखी थी।

तेईस मई की पौ फटने तक हम नाश्ते से निबट चुके थे। तम्बू उखाड़ कर घोड़ों को कसा जा चुका था और यात्रा की सब तैयारी पूरी हो चुकी थी। देस्लारियर ने टट्टुओं को उठकर आगे चलने के लिए आवाज़ दी। हमारे मित्रों का गाड़ीवान राइट बहुत कोशिश के बाद अपने पशुओं को चलाने में सफल हुआ। गाड़ियों के चलते ही और सब यात्री भी पीछे-पीछे चल पड़े। इस प्रकार हमने बहुत बड़े अरसे के लिये बिस्तरों और घर के सुख आदि को छोड़ दिया। यह दिन बहुत ही अच्छा और महत्वपूर्ण था, पर मुझे और शॉ को कुछ सन्देह थे, जो बाद में चल कर सच्चे सिद्ध हुए। हमें उसी समय पता चला कि यद्यपि र—ने इस रास्ते को हमसे बिना पूछे खुद ही चुना था, पर सारे दल में से एक भी व्यक्ति इस रास्ते से परिचित न था। इस प्रकार से बढ़ने का परिणाम एक-दम ही सामने आ गया। उसकी योजना के अनुसार हमें पिछले वर्ष जनरल कीर्नी के नेतृत्व में फोर्ट लारामी जाने वाली कुछ सैनिक टुकड़ियों की राह पर चलना था। इस तरह वह ओरेगन की ओर जाने वाले यात्रियों की प्लाट् नदी के पास से जाने वाली बड़ी सड़क तक पहुँचना चाहता था। हम एक-दो घण्टे तक इसी तरह चलते रहे। इसी समय सामने परिचित मकानों का एक समूह दिखाई दिया। अपनी बाड़ के ऊपर से ही किक्कापू के व्यापारी ने हमें सम्बोधन करके पूछा, "कहो किधर जा रहे हो ?" जब हमने

देखा कि हम रॉकी पर्वत-माला के रास्ते से विपरीत दिशा में मीलों दूर निकल गए हैं, और अपनी मंज़िल की ओर एक इंच भी नहीं बढ़े, तो हममें से बहुतों ने उल्टी-सीधी बातें कहीं। इस व्यापारी ने हमें सीधा रास्ता बताया और सूर्य की ओर मुख करके हम मैदानों की ओर रास्ता खोजते बढ़ने लगे। हमें छोटे और बड़े पेड़ों में से राह खोजनी पड़ी, झरने और जोहड़ पार करने पड़े, और मीलों तक फैले हुए हरे-भरे मैदानों में से गुज़रना पड़ा। ये मैदान बहुत अधिक जंगली थे। शायद मात्सेप्पा को भी इतने जंगली मैदानों में से गुज़रना न पड़ा होगा।

"न मनुष्य और न पशु,
न खुर के निशान और न पद-चिन्ह,
उस फैली जंगली धरती पर दीखते थे;
न कोई यात्रा का चिन्ह था, न किसी मेहनत का,
जैसे हवा भी गूंगी हो उठी हो।"

आगे-आगे बढ़ते हुए जब हम इन बड़े मैदानों में से एक से पार हुए। पीछे की ओर मुड़कर देखने पर हमें मील भर से भी अधिक दूर तक बिखरे हुए घुड़सवार आते दिखाई दिए। इस सारे समूह के अन्त में सफ़ेद छत वाली बैलगाड़ियां आ रही थीं। कप्तान ने खुशी में चिल्लाकर कहा, "आखिर हम यहाँ आ ही पहुंचे हैं।" सच यह था कि यहाँ आकर हमें घुड़सवारों की एक बहुत बड़ी राह मिल गई थी। हम बड़ी प्रसन्नता के साथ इस राह पर बढ़ गये। इस समय हमारे भाव पहले से काफ़ी ठीक हो गये थे। सांझ के समय हमने एक ऊँचे टीले पर अपना डेरा जमाया। इससे नीचे की ओर एक धारा लम्बी घास में से होती हुई बह रही थी। अंधेरा बढ़ने लगा। हमने घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दिया। हेनरी ने चेतावनी देते हुए कहा, "आँधी चलने वाली है; इसलिये तम्बू गहरे करके गाड़ो।" हमने उसका कहना मानकर तम्बू को अधिक से अधिक सुरक्षित कर लिया। इस समय तक आकाश बिल्कुल पलट गया था हवा में सिलाब की गन्ध से हमें यह पता चल गया था कि दिन के साफ़ आकाश और सूर्य की गर्मी के बाद आने वाली रात बहुत ही तूफ़ानी बन कर आयेगी। इस समय मैदान भी नया रूप धारण कर उठा था। इसके टीले बादलों की छाया में अधिक काले और गहरे रंग के हो

उठे थे। जल्दी ही कुछ दूरी पर बादलों की गरज सुनाई देने लगी। अपने शिविर के पास की ढलान के नीचे, घास के एक मैदान में, हमने घोड़ों की अगली टांगें जकड़ कर उन्हें बांध दिया। अभी हम तम्बू में पहुँच भी न पाये थे कि वर्षा शुरू हो गई। तम्बू के दरवाज़े पर बैठ कर हम कप्तान को देखने लगे। वह अपना लम्बा चोगा पहने, इस वर्षा में भी, घोड़ों के बीच घूम रहा था। उसे यह भय सता रहा था कि कहीं उसका कोई प्रिय घोड़ा भाग न जाय या उसके साथ कोई और दुर्घटना न हो जाय! उसकी निगाह दूर मैदान में दिखाई देने वाले तीन भेड़ियों की ओर लगी हुई थी; जैसे उसे उनकी ओर से कोई भय था!

अगली सुबह हम एक-दो मील भी न गये होंगे कि अत्यन्त फैले हुए जंगल दिखाई दिये। इनके बीच में से एक चौड़ी और गहरी धारा बह रही थी। इसमें कीचड़ मिला पानी अधिक था; इसीलिये धोखे का डर भी अधिक था। देस्लारियर गाड़ी को लिए आगे-आगे चल रहा था। उसने अपना पाइप झटकाया और टट्टुओं पर चाबुक और गालियों की बौछार करने लगा। उसने गाड़ी नदी में धंसा दी, पर वह बीच में ही फँस कर रह गई। वह स्वयं घुटनों गहरे पानी में उतर पड़ा। चाबुकों की मार और भगवान् की दया से वह टट्टुओं को उस दलदल में से बाहर निकालने में समर्थ हो गया। तभी हमारे साथियों की गाड़ी भी किनारे पर आ पहुँची। पर वह रुक गई।

कप्तान का ध्यान धारा की ओर था। वह बोला, "मेरी राय में—"

उसकी बात काट कर र—चिल्ला पड़ा, "बढ़ते चलो!"

परन्तु गाड़ीवान राइट अभी तक अपना मत स्थिर न कर सका था। वह अब भी एक जुते हुए टट्टू पर ही बैठा हुआ कुछ सोच रहा था और उसी दशा में सीटी बजा रहा था।

कप्तान ने अपनी बात फिर पूरी की, "मेरी राय में हमें सामान उतार कर गाड़ी को हलका कर देना चाहिए। मैं शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि अगर हमने ऐसे ही धारा पार करने की कोशिश की तो हम फँस जायेंगे।"

उसके छोटे भाई जैक ने भी तुरन्त हामी भरी, "हाँ, हम फँस जायेंगे!" और पूर्ण निश्चय के साथ उसने अपना सर हिला दिया।

विरोध करते हुए जिद्दी र—फिर चिल्ला पड़ा, "आगे बढ़ो! बढ़ते

चलो !"

अपने साथियों की इस हरकत को देखते हुए हम प्रसन्न से बैठे थे। हमारी ओर देख कर कप्तान ने कहा, "अच्छा ! मैं तो केवल सलाह ही दे सकता हूँ। अगर किसी को नहीं माननी तो न माने।"

इस बीच राइट अपना इरादा बना चुका था। उसने तुरन्त ही गालियों की बौछार शुरू कर दी। देस्लारियर ने फ्रैंच भाषा में जो कुछ कहा था, राइट की गालियां भी उससे मिलती जुलती ही थीं। पर ऐसा लगता था कि छोटे मोटे पटाकों के बाद अब जैसे कोई तोप गोले उगलने लगी हो। इसके साथ ही उसने अपने खच्चरों को मुक्के भी मारने शुरू किये और वे बहुत जल्दी ही कीचड़ में धँस पड़े। गाड़ी उनके पीछे घिसटती रही। कुछ देर को लगा कि शायद गाड़ी पार न हो पाएगी। परन्तु, तभी राइट अपनी काठी पर जमकर एक पागल की भाँति गालियों और चाबुक की बौछार करने लगा। इन छोटे-छोटे खच्चरों पर नदी पार जाने का भरोसा ही और कौन कर सकता था ? इस कठिन मौके पर इन सब खच्चरों को मिलकर काम करना चाहिये था, पर इसी समय ये एक दूसरे को धक्का देकर गाड़ी से अलग हो गये और धारा के दूसरे किनारे पर फिर से इकट्ठे हो गए। गाड़ी धुरी तक कीचड़ में धंस गई थी और हर क्षण अधिक धँसती जा रही थी। इसे खाली करने के अलावा और कोई चारा नहीं रह गया था। तब इसके नीचे से कीचड़ खाली करके तथा झाड़ियें और शाखें आदि बिछाकर गाड़ी को निकालने का रास्ता तैयार करना जरूरी था। यह सब मेहनत करने पर बहुत देर बाद ही गाड़ी बाहर आ सकी। अगले पखवाड़े में इस तरह की कोई न कोई रुकावट दिन में चार पांच बार आ ही जाती थी। इसीलिए प्लाट् नदी की ओर हमारी चाल बहुत धीमी रही।

छः-सात मील और आगे जाकर हमने दोपहर बिताने के लिए पड़ाव डाला। यात्रा फिर शुरू करने से पहले जब सब घोड़ों को खोल कर पानी पीने भेजा गया, तो मेरा घर लौटने के लिए उतावला घोड़ा—पौन्टियक—एक दम ही उछल कर धारा के पार चला गया और पुराने इलाकों की ओर तेजी से दौड़ने लगा। मैं अपने दूसरे घोड़े पर चढ़कर उसके पीछे-पीछे भागा। एक छोटा चक्कर काटकर मैं उसके आगे निकल गया और उसे लौटा लाने की

आशा करने लगा। पर वह तभी बहुत लम्बी छुलांगें मारता हुआ मैदान में बहुत दूर तक निकल गया और थोड़ी देर बाद फिर से मेरे पास लौट आया। मैंने बार-बार उसे पकड़ना चाहा पर नतीजा वही रहा। पौन्टियक इस मैदान से उकता गया था। इसलिए मैंने एक और उपाय बरतने का निश्चय किया। मैं उसके पीछे धीरे-धीरे चलने लगा। मुझे आशा थी कि मैं उसकी गर्दन से लटकने वाली खोजी रस्सी को उसके काफी दूर से ही पकड़ लूँगा। मेरा यह पीछा मज़ेदार होता गया, क्योंकि मीलों तक मैं उस दुष्ट को बिना चौकन्ना किए उसके पीछे चलता गया और धीरे-धीरे उसके नज़दीक आता गया। अन्त में मेरा घोड़ा उसके इतने पास पहुँच गया कि उसकी पूँछ हिलने से उसकी नाक को छूने लगी। मैं लगाम खींचने की अपेक्षा धीरे से धरती पर उतर गया। उतरते समय मेरी बन्दूक काठी से टकरा गई और इसकी आवाज़ से चौंक कर वह भाग खड़ा हुआ। घोड़े पर फिर से चढ़ कर मैंने मन ही मन कहा,—"मेरे मित्र, अब अगर ऐसा किया तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा।"

यहां से लीवनवर्थ का किला चालीस मील दूर था। मैंने वहां तक उसका पीछा करने का फैसला किया। मैंने अकेले ही बिना भोजन किए रात बिताने का निश्चय किया और सुबह होते ही फिर आगे बढ़ने का इरादा बनाया। अब भी एक आशा बाकी थी। जहाँ हमारी गाड़ी कीचड़ में धँस गई थी वह जगह सामने ही थी। हो सकता है इस दौड़ के कारण पौन्टियक प्यासा हो उठा हो और वह पानी पीने के लिए रुक गया हो। जितना हो सकता था, मैं उतना उसके पास होकर चल रहा था। पर साथ ही मैं उसे किसी प्रकार चौकाना नहीं चाहता था। परिणाम मेरी आशा के अनुकूल ही हुआ, क्योंकि वह पेड़ों में छिपकर बढ़ता हुआ पानी के पास तक जाकर रुक गया था। उतरकर अपने घोड़े हेन्ड्रिक को थामे-थामे कीचड़ में से पार जाकर मैंने बहुत संतोष के साथ पौन्टियक की खोजी रस्सी उठाली और उसे बाँह पर तीन बार लपेट कर कस लिया। दूसरे घोड़े पर चढ़ते हुए मैंने मन ही मन कहा,—"अब तुम ज़रा भाग कर देखो।" पर पौन्टियक लौटने पर तुरन्त राज़ी न हुआ। हेन्ड्रिक भी लौटने के लिए राज़ी न था। उसे मेरा विवश करना अच्छा न लगा। वह यह समझ कर प्रसन्न था कि हम घर की ओर लौट रहे हैं। अब उसे चाबुक लगते ही होश आ गई। वह फिर से खुशी-खुशी डेरे की ओर, पौन्टियक

को पीछे-पीछे घसीटते हुए बढ़ने लगा। एक-दो घण्टे बाद सूरज के छिपते समय मैंने मैदान के एक टीले पर गढ़े तम्बुओं को देखा। यह एक जंगल के पीछे दिखाई दे रहे थे। इनके पास ही एक चरागाह में घोड़े चर रहे थे। वहाँ जैक चौकड़ी मार कर बैठा हुआ रस्सियां जोड़ रहा था और बाकी सब घास पर लेटे हुए तम्बाकू पी रहे या कहानियां सुन-सुना रहे थे। उस रात हमने भेड़ियों के समूह का एक संगीत सुना, जो अब तक के ऐसे सब संगीतों से अच्छा था। सुबह हमने उन भेड़ियों में से एक को तम्बुओं के पास ही घोड़ों के बीचों-बीच बैठे देखा। वह अपनी सलेटी रंग की आँखों से हमारी ओर देख रहा था। पर, अपनी ओर बन्दूक तानी जाती देख कर वह तेज़ी से उछला और एक दम भाग निकला।

अगले एक या दो दिन का वर्णन मैं छोड़ रहा हूँ, क्योंकि उन दिनों कोई खास बात नहीं घटी। अगर कभी मेरे किसी पाठक का दिल इन मैदानों को देखने का करे, और वह प्लाट् का यही "सबसे बढ़िया" रास्ता अपने लिए चुने, तो मैं विश्वास दिलाते हुए उसे कहूँगा कि वह तुरन्त ही अपनी कल्पना के लोक में पहुँचने की उम्मीद न रखे। उसे अपनी कल्पना के 'महान अमरीकी रेगिस्तान' में पहुँचने से पहले कुछ नीरस और भयावह भाग भी पार करना होगा। यह रेगिस्तान एक उजाड़-बियावान प्रदेश है। यहाँ भैंसों और आदि-वासियों का पीछा किया जा सकता है। सभ्यता यहाँ के आदिवासियों से कोसों दूर रहती है। इससे पहले का इलाका कुछ अधिक फैला हुआ और उपजाऊ है, और दूर सीमान्त तक सैंकड़ों मील में फैला हुआ है। यह इलाका ही इस मैदान के आकर्षक रूप को बताता है। इसी इलाके ने ही अनेकों यात्रियों, चित्रकारों, कवियों और उपन्यासकारों की कल्पनाओं को रंगीनी दी है। वे लोग कभी इससे आगे न बढ़े होंगे। अगर कोई दर्शक चित्रकार की सी नज़र रखता हो तो वह यहां पर अपनी साधना का समय बहुत चाव के साथ बिता सकता है। यहाँ के नजारे बहुत अच्छे तो नहीं हैं, पर तो भी उनमें सुन्दरता और आनन्द ज़रूर है। यहां समतल मैदान इतने फैले हुए हैं कि उन्हें एक नजर में पूरा आंका भी नहीं जा सकता। ऊँची-नीची हरियाली ऐसी लगती है जैसे समुद्र में कुछ स्थिर टीले उठे हुए हों। यहां नदियों की धारें, जंगलों से घिरी हुई और बिखरी हुई अमराइयों में से बहती हुई, बहुत बड़ी संख्या में

मिलती हैं। ऐसा यात्री भले ही कितना ही उत्साही हो, पर कुछ जगह उसका उत्साह भी बुरी तरह टूट जायगा। उसकी गाड़ियाँ कीचड़ में धँस जायँगी। उसके घोड़े बन्धन तुड़ाकर भाग जायेंगे। जुआ टूट जायेगा और धुरी की लकड़ी कमज़ोर साबित हो जाएगी। प्रायः उसे बहुत घने काले कीचड़ पर ही सोना मिलेगा। भोजन के रूप में उसे बिस्कुटों और नमकीन चीजों पर ही सन्तोष करना होगा। क्योंकि चाहे यह बात अजीब ही लगे, इस इलाके में शिकार बहुत कम मिलता है। आगे बढ़ने पर, ऐसा यात्री, अपनी राह की घास में से चमकते हुए बारहसिंगे के बड़े-बड़े सींगों को भी चमकता हुआ देखेगा। और कुछ आगे चलकर उसे भैंसों की बड़ी-बड़ी सफेद खोपड़ियाँ भी पड़ी हुई मिलेंगी। ये भैंसे कभी इसी उजाड़ प्रदेश में अनेकों की संख्या में घूमा करते थे। हो सकता है कि ऐसा यात्री हमारे ही समान यहां पूरे पन्द्रह दिन तक घूमता रहे और हिरण के खुर बराबर भी कोई चीज उसे देखने को न मिले। बसन्त के दिनों में यहाँ मैदानी मुर्गी तक भी मिलनी कठिन होती है। परन्तु इन सब कमियों को पूरा करने के लिए उसे यहाँ दूसरे असंख्य जन्तु घेरते हुए मिलेंगे। रात के समय भेड़िये उसे अपने संगीत से मुग्ध करेंगे और दिन के समय वे उसके आस-पास, बन्दूक के निशाने की पहुँच में ही, मँडराते हुए दिखाई देंगे। उसका घोड़ा कभी-कभी अचानक ही बैंजर नामक जन्तु की माँद में खुर फंसा बैठेगा। उसे चारों तरफ दलदल और कीचड़ में से टर्राते हुये हजारों मेंढ़कों की आवाज़ें आएंगी। ये मेंढ़क हर रंग, आकार और लम्बाई चौड़ाई के मिलेंगे। यहां घोड़े के पाँवों के नीचे से चुपचाप निकलते हुए या फिर रात के समय तम्बू में सरकते हुये सैंकड़ों साँप मिलेंगे। इसके साथ ही मंडराते और भिनभिनाते असंख्यों मच्छर उसकी पलकों से नींद को भगा देंगे। जब कभी वह तपती धूप में फैले हुये मैदान की लम्बी यात्रा के बाद बहुत प्यासा होकर किसी जोहड़ के किनारे पानी पीने के लिए उतरेगा तो वह देखेगा कि उसके प्याले के तले पर अनेकों मेंढ़कों के अण्डे या छोटे बच्चे हरकत कर रहे हैं। इस सबके साथ ही वह यह भी पायेगा कि प्रतिदिन सुबह एक तेज काटती हुई धूप उसे सताया करेगी और हर शाम को चार बजे के लगभग उसे लगातार एक तूफान उठता और बरसता मिलेगा।

एक दिन सुबह की थका देने वाली यात्रा के बाद दोपहर को सुस्ताने के

लिए हम खुले मैंदान में ही रुक गये। कोई भी पेड़ दिखाई नहीं दे रहा था। पर पास ही के एक खड्ड में एक चश्मा अवश्य बह रहा था। वह बल खाता हुआ और कहीं-कहीं रुके हुए पानी के गड्ढे बनाता हुआ बढ़ रहा था। कहीं उसके तल में कीचड़ जमा हुआ था। इस प्रकार वह एक बड़ी हलकी सी धार के रूप में छोटी-छोटी झाड़ियों के बीच से होता हुआ और लम्बी घास की जड़ों को छूता हुआ आगे बढ़ रहा था। दिन बहुत ही गर्मी भरा और कठोर था। घोड़े और खच्चर मैंदान में ही अपनी सुस्ती मिटाने के लिए लोट-पोट हो रहे थे। या फिर नीचे की झाड़ियों में चर रहे थे। हम भोजन कर चुके थे। देस्लारियर अपना पाइप पीता हुआ घास पर ही घुटनों के बल बैंठा हुआ था और बर्तनों को साफ़ कर रहा था। आगे बढ़ने का इशारा मिलने से पहले कुछ आराम कर लेने की नीयत से शॉ वहीं गाड़ी की छाया में लेटा आराम कर रहा था। हेनरी सोने से पहले सांपों के निशान देख कर निश्चिन्त हो जाना चाहता था, क्योंकि उसे इनसे ही सब से अधिक डर लगता था। उसने गाड़ी के पास जब कुछ सन्देह पैदा करने वाले बिल देखे तो उसके मुख से अनेकों गालियां निकलने लगीं। मैं गाड़ी के पहिये के पास ही पड़ने वाली एक हल्की-सी छाया में बैंठा घोड़े के पाँवों में बांधने वाली रस्सियों को ठीक कर रहा था, ताकि पौन्टियक की पिछली रात को तोड़ी हुई रस्सियों को उनसे बदल सकूँ। हमारे मित्रों का डेरा हमसे कुछ ही दूरी पर था। वहाँ भी इसी प्रकार की सुस्ती छायी हुई थी।

साँप के बिलों को देखना छोड़कर ऊपर को सिर उठाते हुए हेनरी ने पुकारा—"अरे ! यह तो हमारे कप्तान आ रहे हैं।"

कप्तान हमारे पास आकर चुपचाप खड़ा हो गया और हमें देखने लगा।

अन्त में वह बोला, "पार्कमैन ! ज़रा उधर शॉ को देखो। वह गाड़ी के नीचे सो रहा है। उसके कंधे पर गाड़ी की धुरी से लगातार मैला तेल टपक रहा है।"

यह सुन कर शॉ उठ पड़ा। उसकी आँखें अधखुली थीं। इशारे के स्थान को छूकर उसने देखा कि उसकी लाल कमीज़ चिकनाई से भर गई है।

कप्तान ने हंसते हुए कहा, 'जब वह आदिवासी औरतों के बीच जायेगा, तब अच्छा न लगेगा। क्यों, यह बात ठीक है न ?

तब वह भी गाड़ी के नीचे सरक आया और कहानियाँ सुनाने लगा। उसके पास कहानियों का अटूट भंडार था। रह-रह कर वह घोड़ों की ओर देखता रहता था। अन्त में वह बहुत तेज़ी से उछल पड़ा और बोला, "देखो, वह घोड़ा उधर पहाड़ों की ओर भागा जा रहा है। अरे, वह भाग निकला शॉ! यह तुम्हारा ही बड़ा घोड़ा है। नहीं, नहीं; यह तुम्हारा नहीं है। यह जैक का घोड़ा है। जैक! जैक!" यह सुन कर जैक उछला और हमें खोई-खोई नज़रों से देखने लगा।

कप्तान गरजा, "जाओ, अपना घोड़ा पकड़ लाओ; नहीं तो वह खो जाएगा।"

जैक तुरन्त ही घास पर भाग निकला। पाजामे उसके पैरों में अटकने लगे। कप्तान बहुत उत्सुकता से उसे देखता रहा। अन्त में, घोड़ा पकड़े जाने के बाद वह चैन से बैठ गया। अब उसके चेहरे पर चिन्ता और गम्भीरता छा चुकी थी।

वह बोला, "मैं तुम्हें समझा दूँ कि ऐसी बात हमें बहुत महंगी पड़ेगी। एक दिन इसी तरह हम हर घोड़े को गायब पायेंगे और तब हमारी हालत बहुत बुरी हो जाएगी। मुझे अब भरोसा हो गया है कि हमें बारी बारी से घोड़ों पर पहरा देना होगा, खास कर जब भी हम डेरा डालें! मान लो, अगर सौ पौनी एक साथ ही हल्ला बोल दें, और इन घाटियों में से उछल कर अपने कपड़े फहराते हुए सामने आ जाएं, तब क्या होगा? दो, मिनट में ही ये सारे घोड़े आंखों से ओझल हो जाएंगे।" हमने कप्तान को सुझाया कि अगर सौ पौनी आ गये, तो निगरानी करने वाले के साथ हम सब को भी वे कुछ ही देर में मिटा देंगे।

कप्तान बात बचा कर फिर बोला, "खैर, कुछ भी हो! हमारा सारा ढांचा ही गड़बड़ है। मुझे इस बात पर पूरा विश्वास है। हमारा सारा रंग ढंग सैनिक तरीके का कतई नहीं है। जिस तरह से थोड़ी-थोड़ी दूर पर बिखरे हुए हम चलते हैं, उस तरह चलने से कोई भी शत्रु आगे चलने वाले को समाप्त भी कर दे, तो वह हमारे आने से पहले ही भाग जाएगा।"

शॉ बोला, "अभी हम दुश्मनों के इलाके में नहीं पहुँचे। जब हम उधर पहुँचेंगे, तब साथ-साथ यात्रा करनी आरम्भ कर देंगे।"

कप्तान बोला, "फिर डेरे में ही पड़े-पड़े हम पर हमले की सम्भावना है। अगर हमारे पहरेदार न हों, और हम बेतरतीब ढंग से डेरा डाला करें, तो हमें कभी भी अचानक खतरे का सामना करना पड़ सकता है। मेरे मत में हमें डेरा एक गोलाई में डालना चाहिए और बीच में आग सुलगानी चाहिए। हमें पहरेदार खड़े करने चाहिएं और उनके बीच पहचान का रोज़ ही कोई नया शब्द चुन लेना चाहिए। इसके साथ ही हमारे एक दो आदमी दल के आगे-आगे चलने चाहिएं, ताकि वे कुछ आगे बढ़ कर डेरे की जगह चुन लिया करें और दुश्मन के पास होने पर खतरे की सूचना दे दिया करें। यह मेरा निजी राय है। मैं जबरदस्ती मनवाना नहीं चाहता। मैंने तो सलाह देना उचित समझा। अब आप जानो, जैसी आपकी मर्ज़ी हो।"

लगता था कि उसे यह सबसे ज्यादा पसन्द था कि दो आदमी दल के आगे-आगे चलते रहें। इस बात पर कोई भी आदमी उसका साथ देने को तैयार न था। इसलिए उस दोपहर बाद उसने अकेले ही आगे-आगे चलने की ठान ली। चलते हुए उसने मुझे भी अपने साथ चलने को पुकारा। हम दोनों ही साथ-साथ निकल पड़े और एक या दो मील आगे तक निकल गये। कप्तान पिछले बीस साल की सैनिक सेवा में बहुत कुछ सीख चुका था। वह स्वभाव से आनन्दी-जीव था। इसलिए उसके साथ चलने का अपना ही मज़ा था। वह एक या दो घण्टे तक लगातार कहानियाँ सुनाता रहा और मज़ाकें करता रहा। हमने जब पीछे की ओर देखा, तो मैदान फैला हुआ नज़र आया। कोई भी घुड़सवार या गाड़ी दिखाई न दी।

कप्तान बोला, "मेरे विचार में हम दोनों को तब तक रुक जाना चाहिए, जब तक सब लोग हम से न आ मिलें।"

मेरी भी यही राय थी। सामने काफ़ी घने जंगल थे। उनके बीच में से होती हुई एक छोटी नदी बह रही थी। इसे पार करके हम लोग दूसरी ओर की एक समतल चरागाह पर आ निकले। यह एक ओर पेड़ों से घिरी हुई थी। हमने अपने घोड़े झाड़ियों के साथ बाँध दिये और वहीं घास पर बैठ गये। यहाँ बैठ कर मैं अपनी नई बंदूक की खासियत कप्तान को समझाने लगा। बहुत देर बाद कुछ दूरी पर, पेड़ों के पीछे से, आने वाले लोगों की आवाज़ सुनाई देने लगी।

कप्तान बोला, "उधर वे आ रहे हैं। आओ चल कर देखें कि वे लोग धारा किस तरह पार करते हैं?"

हम घोड़ों पर चढ़ कर धारा तक आये। यहाँ से पगडंडी इस धारा के पार गई थी। धारा पेड़ों से भरे गहरे खड्ड से हो कर बह रही थी। जब हम ने नीचे की ओर देखा तो कुछ घबराये हुए घुड़सवार नदी पार कर रहे थे। इन सब हमारे साथियों के साथ ही चार सैनिक भी चले आ रहे थे।

शॉ सब से पहले अपने घोड़े को चाबुक मारता हुआ किनारे पर चढ़ आया। उसका चेहरा गुस्से से भरा था। सबसे पहले उसने र—के लिए गाली निकाली, जो सबसे पीछे-पीछे चलता आ रहा था। इसकी वेवकूफी के कारण ही हम लोग रास्ता बिल्कुल भूल गये थे। हम प्लाट नदी की ओर न बढ़ कर, इयोवा आदिवासियों की ओर चल पड़े थे। यह बात हमें उन सैनिकों से पता चली। यह लोग बहुत दिन पहले लीवनवर्थ किले से निकल भागे थे। इन्होंने हमें बताया कि अच्छा होगा यदि हम उत्तर की ओर तब तक बढ़ते रहें जब तक ओरेगन के प्रवासियों द्वारा बनाई हुई राह तक न पहुँच जाएं। वे लोग इसी साल इस राह से गुजरे थे।

इस प्रकार बहुत बुरी मानसिक हालत में हम यहां डेरा डाल कर रुके। सेना के भगोड़े अधिक देर नहीं रुक सकते थे। इसलिए वे लोग तुरन्त ही आगे बढ़ गए। अगले दिन सेंट जोसफ़ की राह पकड़ कर हमने अपने घोड़ों का रुख लारामी किले की ओर मोड़ दिया। यह किला यहां से, सात सौ मील के लगभग, पश्चिम की ओर था।

—:o:—

५ : महानोल

ओरेगन और कैलीफोर्निया के प्रवासियों ने इंडिपैंडेन्स के पास के अपने डेरों में ही यह खबर सुनी कि सेंट जोसफ़ से और भी कई दल उत्तर की ओर चलने वाले हैं। उनका ख्याल था कि ये लोग मोर्मन जाति के थे। इनकी संख्या तेईस सौ के लगभग थी। यह बात सुनते ही सब में चिन्ता की एक लहर-सी दौड़ गई। इलिनोइस और मिसूरी के लोग इन प्रवासियों में सब से अधिक थे। उनका इन लोगों से कभी अच्छा सम्बन्ध न रहा था। ये लोग सारे देश में अपने झगड़ों और खून खराबी के कारण बदनाम थे। अपने इलाकों में भी ये इसी प्रकार बदनाम थे। कोई भी नहीं कह सकता था कि जब इस प्रकार के दो शत्रु दल इन मैदानों में एक दूसरे के मुकाबले में लड़ेंगे तब क्या परिणाम होगा ? ऐसे खूंखार और भयंकर दलों पर न सेना का वश चलता है और न कानून का ! औरतों और बच्चों ने चिल्लाना शुरू कर दिया। आदमी भी कम घबराये हुए नहीं थे। मुझे बाद में पता चला कि उन्होंने जनरल कीर्नी से अपने कुछ सैनिक प्लाट नदी तक भेजने के लिए प्रार्थना की थी। यह प्रार्थना नहीं मानी गई। बाद में साबित हुआ कि इसके माने जाने का कोई कारण भी न था। सेंट जोसफ़ से आने वाले प्रवासी भी भले ईसाई थे और वे स्वयं मोर्मन लोगों से घृणा करते थे। मोर्मन संतों के कुछ परिवार इस मौसम में इसी राह से बढ़े अवश्य, किन्तु वे इन प्रवासियों के जाने की प्रतीक्षा बहुत दिन तक करने के बाद ही गये। उन्हें भी इन सभ्य कहलाने वाले लोगों से डर था।

अब हम सेंट जोसफ़ की राह पर चल रहे थे। यह साफ़ हो गया कि ये बड़े दल हम से कुछ ही दिन के सफ़र के फासले पर, आगे-आगे, चल रहे थे। हम ने भी उन्हें मोर्मन ही समझा और हमें भी उनसे भय लगता रहा। यात्रा बहुत उकता देने वाली थी। एक दिन हम लगातार चार घण्टे, बिना एक भी झाड़ी या वृक्ष देखे, चलते रहे। चारों ओर जिधर भी देखते थे नई फूटती हुई घास का हरा मैदान और छोटे-छोटे टीले ही दिखाई देते थे। कहीं-

कहीं कौआ, गीध आदि अवश्य दिखाई दे जाते थे ।

हम एक दूसरे से पूछने लगे, "आज की रात भोजन और पानी का प्रबन्ध कैसे होगा।" दिन छिपने ही वाला था और पानी पास में न था। कुछ देर बाद दाहिनी ओर, काफी दूर पर, एक हरी सी चोटी दिखाई दी। यह एक पेड़ की चोटी थी, जो कि मैदान के एक टीले के पीछे से दीख रही थी। रास्ता छोड़ कर हम इस की ओर जल्दी-जल्दी बढ़े। यहाँ पहुँच कर हमने जाना कि यहाँ बहुत से पेड़ों और झाड़ियों से घिरे हुए कुछ जोहड़ एक खड्ड में थे। हम ने इस पास के एक टीले पर डेरा डाल दिया।

शॉ और मैं तम्बू में बैठे थे। तभी देस्लारियर ने आकर अपना चेहरा दरवाजे से अन्दर झुका कर और अपनी आंखें फैला कर हमें शाम का भोजन तैयार होने की सूचना दी। भोजन के लिए टीन के प्याले, रकाबियां और चम्मच रखे गये थे और इन सब के बीच में, घास पर ही, कॉफी का बर्तन भी रख दिया गया था। भोजन जल्दी ही समाप्त हो गया। परन्तु, हैनरी बहुत देर तक उसी तरह चौकड़ी मारे कॉफी पीता रहा। इन मैदानों में कॉफी का प्रयोग बहुत अधिक होता है और हेनरी को यह अधिक प्यारी लगती थी। वह इसे मीठे या दूध के बिना ही पीना पसन्द करता था। इस मौके पर यह उसे बहुत अधिक पसन्द आई, क्यों कि यह बहुत गाढ़ी और काले रंग की थी।

छिपता हुआ सूरज बहुत ही लुभावना था। नीचे की चरागाह में छोटे-छोटे वृक्षों के बीच फैले हुए जोहड़ों का पानी इस की लाली से लाल हो उठा था।

शॉ बोला, "मुझे आज रात नहाना है। देस्लारियर, क्या नीचे कोई तैरने का प्रबन्ध हो सकता है ?"

देस्लारियर ने कन्धे हिलाते हुए टूटी-फूटी अंग्रेजी में, अपने मालिक की इच्छा को पूरा करने की भावना से, कहा, "मुझे पता नहीं। फिर भी, आपकी जैसी इच्छा हो।"

मैंने उसके पांव की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसके जूते की ओर देखो।" जूते पानी में डूबकर काले कीचड़ से लिपट गए थे।

शॉ ने कहा, "आओ हम खुद चल कर देखेंगे।"

हम साथ-साथ चल पड़े। झाड़ियों के पास पहुँचते ही कुछ दूरी पर हमें धरती धोखा देती लगी। जगह-जगह कीचड़ भरा हुआ था। बड़ी कठिनता से लम्बी घास की जड़ों पर पांव रखते हम बढ़े। लगता था जैसे कीचड़ के समुद्र में छोटे-छोटे टापुओं पर चल रहे हों। एक भी ग़लत कदम हमारे जूतों का भी वही हाल कर सकता था, जो देस्लारियर के जूतों का हुआ था। बात कुछ कठिन दिखाई दी। हम अलग-अलग दिशाओं में बंट कर चलने लगे। शाँ दाहिनी ओर से बढ़ा और मैं बाईं ओर से। अन्त में मैं झाड़ियों के किनारे तक आ गया। ये झाड़ियाँ पानी में पैदा होने वाली किस्म की थीं और इनके फूल भी गुच्छों में खिले हुए थे। इनके बीच-बीच में घास की कोई एक-आध जड़ भी दिखाई दे जाती थी। यहां कीचड़ एक दम काला और गहरा था। मैंने कठिनता से, कूद कर ही, इसे पार किया। तब मैं इन झाड़ियों में से जैसे-तैसे पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ने लगा। अब मैं एक धारा के किनारे पहुँच गया था। यह धारा कीचड़ में से होकर बह रही थी और कुल चार उंगल गहरी थी। मेरे यहां पहुँचते ही यहाँ की शान्ति टूट गई। एक बहुत बड़ा हरा मेंढ़क अजीब आवाज़ में टर्राया और बहुत तेज़ी के साथ किनारे से उछला। उस के फैले हुए पंजे पानी के ऊपर चमके और ज्यों ही उसने उन्हें ऊपर को उठा कर झटका दिया, मैंने उसे बहुत तेज़ी से पानी की गहराई में जाते देखा। वहाँ से कुछ बुलबुले उठते दिखाई दिये। अपने बुजुर्ग का अनुकरण करते हुए कुछ छोटे-छोटे चित्तीदार मेंढ़क भी उछल कर पानी में कूद गए। तभी तीन छोटे-छोटे केकड़े भी पास के पौधों की जड़ों से उतर कर पानी में घुस गए। इसी समय काली और पीली धारी वाला एक सांप भी किनारे से सरका और दूसरी ओर निकल गया। यहीं, जमा हुए पानी में, पड़े एक पत्थर को मैंने गलती से हिला दिया और उसके नीचे से सैंकड़ों छोटे-छोटे मेंढ़क-बच्चे निकल पड़े।

शाँ दूर से ही पूछने लगा, "क्या जहां तुम खड़े हो, वहां नहाने का कोई मौका है?"

मेरा उत्तर बहुत उत्साहजनक नहीं था। अब मैं लौट कर अपने साथी के साथ-साथ नई खोज में बढ़ने लगा। दाईं ओर कुछ दूरी पर ही पेड़ों और झाड़ियों से घिरी एक ऊँची जगह थी, जहां से ढलान एक दम ही पानी की

ओर झुक गई थी। वहाँ हमें सफलता की अधिक आशा थी। इस लिए हम इधर ही चल दिए। जब हम यहाँ पहुँचे तो हमें पानी और पहाड़ी के बीच में राह खोजनी कठिन दिखाई दी। यहां कुछ छोटे-छोटे पेड़ अंगूरों की बेलों से उलझ कर छाये हुए थे। हल्की-हल्की रोशनी में बढ़ते हुए हम जब-तब किसी पुरानी मीठे फलों वाली झाड़ी को पकड़ बैठते। इस प्रकार सहारा ढूंढ़ते हुए शॉ कुछ आगे चल रहा था। अचानक मुझे उसकी चीख सुनाई दी। मैंने देखा वह एक हाथ से एक शाखा थामे पानी में धन्स गया था। उसका ध्यान पानी में तैरते हुए पांच फुट लम्बे एक सांप पर लगा हुआ था। यह सांप काले और हरे रंग की चित्तियों से भरा हुआ था और पानी के पार जा रहा था। इसे देखते हुए शॉ को अपना पांव खींचना याद न रहा। हमारे हाथ में न कोई छड़ी थी और न कोई पत्थर। हम उसे यूं ही चुप-चाप देखते रहे और कुछ देर बाद फिर आगे बढ़ने लगे। हमें अपने धीरज का नतीजा भी जल्दी मिल गया। कुछ ही दूर जाकर हमें घास का एक छोटा सा टापू मिला, जो झाड़ियों से घिरा हुआ था। यह और भी किस्मत की बात थी कि यहां काई, घास, या झाड़ियों की शाखा आदि पानी पर छाई हुई नहीं थी। कुछ गज़ तक पानी बिल्कुल साफ़ और उजला था। हमने एक छड़ी के सहारे देखा कि यह चार फुट गहरा था। हम ने कुछ पानी हाथ में लेकर देखा। यह काफी साफ़ था। हम इस में नहा सकते थे। इस लिए हमने नहाने का निश्चय किया। परन्तु, नहाते समय अचानक ही हज़ारों बड़े-बड़े मच्छर चारों ओर कीचड़ में से उड़ कर मंडराने लगे और अपने हज़ारों डंकों से सताने लगे। जैसे-तैसे हम वहां से पूरी ताकत और तेज़ी से भाग निकले।

हम अपने तम्बुओं की ओर लौटे। नहा कर हम ताज़ा हो चुके थे। पिछले दिनों की गरमी के कारण यह नहाना ज़रूरी भी हो गया था।

शॉ बोला, "कप्तान की ओर देखो ! उसे क्या हो गया है ?" कप्तान मैदान में कुछ दूरी पर अपनी जगह पर ही खड़े-खड़े अपने टोप को बहुत तेज़ी से अपने सिर के चारों ओर घुमा रहा था। कभी वह एक पांव उठाता था, तो कभी दूसरा। पहले वह बहुत ही घबरा कर ज़मीन की ओर देख रहा था। और तब, बहुत ही अपमान-जनक नज़र और घबराये हुए चेहरे से ऊपर की ओर ताकने लगा, जैसे किसी न दिखाई देने वाले दुश्मन को खोज रहा हो।

हम ने उसे आवाज़ देकर बात पूछनी चाही। पर उसने उस न दिखाई देने वाले दुश्मन की ओर गालियों की बौछार के रूप में ही हमें उत्तर दिया। जब हम उसके पास पहुँचे तो ऐसा लगा, जैसे एक साथ ही मधुमक्खियों के बीसियों छत्तों ने हमला बोल दिया हो। हमें कानों में एक भयंकर गूंज सुनाई दी। छोटे-छोटे काले कीड़े ऊपर आकाश में भरे पड़े थे और उनमें से हज़ारों कीड़े बहुत नीचे होकर उड़ रहे थे।

कप्तान हमें घबराता हुआ देखकर बोला, "घबराओ नहीं, ये कीड़े डसते नहीं।"

यह सुनते ही मैंने अपने टोप के सहारे एक कीड़े को नीचे गिरा लिया और देखा कि यह टिड्डी ही थी, कुछ और नहीं। बहुत झुक कर देखने पर पता चला कि सारी धरती ही जैसे इन के छेदों से भरी पड़ी थी।

हम इस जगह से जल्दी ही विदा हुए और ऊँचे टीले से होकर अपने तम्बुओं तक आए। हमने यहाँ देखा कि देस्लारियर की जलाई आग अब तक भी बुझी न थी। हम इस के चारों ओर बैठ गए और शॉ ने सब को यह बताया कि हमारे नहाने के लिए कैसी सहूलियत मौजूद है? उसने कप्तान को सुबह नाश्ते से पहले हर हालत में वहां जाने की सलाह दी। कप्तान उन कीड़ों से अब तक परेशान था। उसने फिर हाथ मार कर एक कीड़े से अपने को छुड़ाया। उसने कहा कि वह ऐसी बात को सम्भव नहीं मानता। इस समय तक हमें भी अपने सिरों के ऊपर ऐसी आवाज़ सुनाई देने लगी, जैसे सैकड़ों गोलियाँ सरसराती और भिन-भिनाती हुई हमारे सिरों पर से गुज़र रही हों। अचानक ही पहले मेरे माथे पर किसी कीड़े का डंक चुभा, फिर गर्दन पर, और तब सभी दिशाओं से जैसे बहुत-से पंजे मुझ पर गढ़ने शुरू हो गए। मानों पंजों वाला कोई जानवर मेरे सारे बदन पर ही अपने हाथ फेर कर कुछ खोज रहा हो। मैंने कीड़ा पकड़ा और आग में डाल दिया। हमारे दल के सभी लोग अपने-अपने डेरों में खिसक गए और अपने तम्बुओं के दरवाज़े बन्द करके इस हमले से बचने की आशा करने लगे। पर यह सब व्यर्थ साबित हुआ। सुबह होने तक यह कीड़े तम्बू में घुस कर हमें सताते ही रहे। सुबह हमने अपने कम्बल उतारकर देखा कि उनमें सैकड़ों कीड़े चिपटे हुए थे। उठते ही हमारी निगाह में पहली बात यह आई कि देस्लारियर

तलने की बाटी को खाली कर रहा था। इसे उसने हत्थे से पकड़ कर बहुत दूर पर थामा हुआ था। लगता था कि उसने इसे रात भर आग पर रख दिया था और बहुत-से कीड़े जल कर इसमें जमा हो गए थे। आग के कारण और भी सैकड़ों कीड़े जल कर राख में गिर पड़े थे।

घोड़ों और टट्टुओं को चरने के लिए खुला छोड़ दिया गया था। हम अभी नाश्ते के लिए आराम से बैठे ही थे कि हेनरी और कप्तान ने हमें चौंका दिया। उन्होंने हमें किसी खतरे की चेतावनी दी। देखने पर पता चला कि सारे-के-सारे—तेईस—पशु ग़ायब थे। ये सभी हमारे पुराने इलाकों की ओर लौट चले थे। इनके आगे-आगे मेरा घोड़ा पौंटियक चल रहा था, जो कि स्वयं सुधारा नहीं जा सकता था। वह अपने बँधे हुए अगले पांवों के साथ ही उछल-उछल कर बहुत तेज भागता हुआ जा रहा था। हम में से तीन या चार आदमी उनका रास्ता काटने के लिए ओस से भरी घास में से होकर तेज़ी से उनका पीछा करने लगे। एक मील से भी अधिक दौड़ने के बाद शॉ ने एक घोड़े को पकड़ लिया। उसने उसकी लटकने वाली रस्सी को उसकी लगाम से ही बाँध दिया और खुद उसकी पीठ पर जा चढ़ा। उसे लेकर वह सब घोड़ों से आगे जा निकला। अब हम उन सब को इकट्ठा करके अपने डेरों तक वापिस लाए। तब सबने अपने-अपने घोड़ों को कस कर तयारी की। कुछ घोड़ों ने अपनी अगली टाँगों की रस्सियाँ तोड़ दी थीं, इसलिए कुछ लोगों की गालियाँ भी सुनाई दीं। इस प्रकार बन्धनों में ही भाग जाने से कुछ की रस्सियां बहुत अधिक घिस गई थीं।

चलने में हमें कुछ देर हो गई। दोपहर बाद बहुत जल्दी ही हमें डेरे भी डालने पड़े, क्योंकि आँधी और वर्षा का एक बहुत ज़ोरदार झोंका आ गया था। इस तूफ़ान में ही हमने बहुत कठिनता से अपने तम्बू गाड़े। सारी रात यह तूफ़ान गरजता और बरसता रहा। सुबह के उजाले में हमने यह देखा कि मूसलाधार बारिश का स्थान हल्की-छल्की बूँदा-बाँदी ने ले लिया था। दोपहर के लगभग मौसम अच्छा होने के आसार बहुत कम थे, लेकिन हमने आगे बढ़ना शुरू कर दिया।

इस खुले मैदान में हवा बिल्कुल गुमसुम थी। बादल ऐसे दीखते थे, जैसे रुई के अम्बार हों जहां भी नीला आकाश दीखता था, वहीं कुछ न कुछ धुंध

और गीलापन सा भी नज़र आता था। सूरज की धूप इतनी तेज़ और गरम थी कि उसे बर्दाश्त करना कठिन था। हमारा दल धीरे-धीरे इस समाप्त न होने वाली मैदानी सतह पर बढ़ता जा रहा था। घोड़े कीचड़ में धंसते हुए अपने सिर नीचे लटकाए बढ़ रहे थे। सभी आदमी काठियों पर आराम से बैठे थे। आखिर, शाम होते-होते फिर से वही पुराने परिचित बरसने वाले घने काले बादल चारों ओर आसमान में जमा होगए और दूर पर उनके गरजने की आवाज़ चारों ओर मैदान में फैलती हुई सुनाई दी। दोपहर बाद की यात्रा में ऐसी आवाज़ एक परिचित बात ही बन गई थी। कुछ ही मिनटों में सारा आकाश इन बादलों से बुरी तरह घिर गया और सामने का मैदान तथा कहीं-कहीं दीखने वाले पेड़ों के समूह इस काले अंधेरे में गाढ़े रंगों में बदलते दिखाई दिए। तभी सबसे घने बादल में से ज़ोर की बिजली चमकी। मैदान एक कोने से दूसरे कोने तक जैसे काँप उठा। इसके साथ ही एक लम्बी गरज की आवाज़ सुनाई दी। तभी वर्षा की गन्ध लिए वायु का एक तेज़ झोंका आया और उसने हमारे आसपास की घास को झुका दिया।

शॉ बहुत तेजी से अपने दूसरे घोड़े को साथ लेता हुआ आगे बढ़ा और चिल्लाया, "आगे बढ़ो! हमें इसी समय बढ़ चलना चाहिए।" सारा दल ही तेज़ी से बढ़ चला और सामने के वृक्षों तक आ गया। यहाँ आकर हमने देखा कि इनके परे एक बड़ी चरागाह मौजूद थी। हम बहुत जल्दी ज़मीन पर उतर पड़े। इस घबराहट में हमारी काठियों को भी नुकसान पहुंचा। सबने ही नीचे उतर कर घोड़ों के पाँव जाँचे और उनकी रस्सियाँ फिर से ठीक से बाँधीं। अब उन्हें चरने के लिए खुला छोड़ दिया गया। ज्यों ही गाड़ियाँ इस जगह पर पहुँची हमने तम्बुओं के बाँस लेकर उन्हें गाड़ना शुरू किया। आंधी आने से पहले हम उसके स्वागत की तैयारी कर चुके थे। रात के अंधेरे जैसी आंधी घिर आयी। हमारे पास के वृक्षों में वर्षा की तेज़ आवाज़ सुनाई देने लगी।

हम अपने तम्बू में ही बैठे थे। अपना चौड़ा टोप कानों तक लटकाये और वर्षा से चमकते अपने कंधे आगे बढ़ाते हुए देस्लारियर ने अपना सिर झुका कर पूछा, "क्या आप अभी तुरन्त खाना चाहेंगे? मुझे विश्वास है कि मैं आग जला लूंगा। मैं कोशिश कर देखता हूं।"

"तुम खाने की परवाह मत करो। आओ, तुम भी अन्दर आ जाओ।"

यह सुनकर वह दरवाज़े से कुछ अन्दर आकर बैठ गया, क्योंकि उसकी दृष्टि में अधिक आगे आना उचित न होता। हमारा तम्बू ऐसी मूसलाधार बारिश के मुकाबले के लिए कोई बहुत अच्छी जगह न थी। वर्षा इसमें सीधी तो नहीं घुस सकती थी, पर कपड़े से छन-छन कर हमें यह अच्छी तरह गीला अवश्य कर रही थी। हम अपनी-अपनी काठियों पर उदास चेहरों के साथ बैठे रहे और हमारे टोपों पर से गिरता हुआ पानी हमारी गालों से होकर बहता रहा। मेरा रबड़ का बना बरसाती कोट बारिश से भीग कर बीसियों धारें बहा रहा था। शॉ का कम्बल से बना कोट स्पंज की तरह पानी से भर गया था। इससे भी अधिक बुरा तो तब लगा, जब हमने देखा कि तम्बू में अनेक छोटे-छोटे गड्डों में पानी भरना शुरू हो गया था। एक बाँस के पास तो इतना पानी भर गया था कि उससे सारे तम्बू को ही खतरा होने लगा था। हमें लगा कि रात आराम से बितानी कठिन होगी। सूरज छिपने के बाद यह तूफ़ान अचानक वैसे ही रुक गया, जैसे शुरू हुआ था। अचानक ही लाल आकाश का एक कोना साफ हो गया। मैदान के पश्चिम की ओर से उजली किरणें चारों ओर फैल गईं। सूर्य की ये लाल-लाल किरणें पानी पर बिखर गईं और गिरती हुई बूंदों में से झांकती हुईं सतरंगी-सी दिखाई देने लगीं। तम्बू के अन्दर का पानी भी धरती ने सोख लिया।

परन्तु हमारी आशा धोखा दे गई। अभी रात पूरी न उतरी थी कि फिर से वही तूफ़ान फूट पड़ा। पूरबी किनारे जैसा तूफ़ान यहाँ नहीं होता। यहां यह अधिक भयंकर होता है। हमारे ही सिरों पर बहुत तेज़ गरज के साथ यह फूट पड़ा और सारे मैदान पर गरजने लगा, मानों चारों ओर ही यह अजीब कड़क के साथ घूम गया हो। सारी रात बिजली कड़कती रही और सामने के पेड़ उसके प्रकाश में चमकते रहे। इसकी चमक में चारों ओर का फैला हुआ मैदान साफ़ दिखाई दे जाता था। इसके मिटते ही ऐसा लगता था जैसे हम अंधेरे की किसी दीवार से घेर लिए गये हों।

इसने हमें अधिक परेशान न किया। कभी-कभी हमें एक बहुत तेज़ आवाज़ चौंका देती थी। इससे हमें बिजली की गड़गड़ाहट और वर्षा की गिरती हुई तेज़ बाढ़ का ध्यान हो जाता था। ज़मीन पर रबड़ के कपड़े बिछाकर और कंबल

ओढ़ कर हम सो रहे थे। बहुत देर तक तो हम पानी से बचे रहे। पर जब पानी बहुत अधिक इकट्ठा हो गया, तब वह बाहर भी न निकल सका। इस लिए रात खतम होने पर हम अनजाने ही वर्षा के बनाए एक छोटे से जोहड़ में लेटे हुए थे।

सुबह जगने पर हमने देखा कि आसार कुछ अच्छे न थे। वर्षा बहुत तेज़ तो न थी, पर फिर भी लगातार हमारे तम्बू पर गिर ही रही थी। हमने अपने कम्बल उतारे। उनका हर रेशा पानी की बूदों से भरा हुआ था। हम अच्छे मौसम की इन्तज़ार करने लगे। मैदान पर बादल अब भी काले और गहरे रंग के होकर छाए हुए थे। धरती की हालत भी आसमान से अधिक अच्छी न थी। चारों ओर पानी के जोहड़ ही जोहड़ दिखाई देते थे। घास तो जैसे समाप्त ही हो गई थी। हमारे घोड़ों और टट्टूओं ने चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ बना दिया था। हम से कुछ दूर ही अकेला और सुनसान सा एक तम्बू, हमारे साथियों का खड़ा था, जैसे वह मातम से भरा हुआ हो। उनकी गाड़ियाँ भी उसी तरह भीगी खड़ी थीं। कप्तान घोड़ों की देख भाल करके लौट रहा था। कोहरे और वर्षा में से होकर वह अपने लबादे को कंधे पर डाले, पाईप सुलगाए हुए, अपने भाई जैक के साथ-साथ चल रहा था। उसका पाईप उसकी मूछों के नीचे ऐसा चमक रहा था, मानों खुदाई से निकली कोई पुरानी चीज़ हो।

दोपहर को आकाश साफ़ हुआ। हम आधा फ़ुट गहरे कीचड़ में से होते हुए बढ़ने लगे। उस रात हम पर वर्षा की कृपा ही रही।

अगले दिन, दोपहर बाद, हम धीरे-धीरे बढ़ रहे थे। हमारे दाईं ओर एक छोटा सा जंगल था। जैक कुछ आगे-आगे चल रहा था। वह चुप था, मानों वह जीवन भर बोला ही न हो। तभी अचानक वह मुड़ा और जंगल की ओर इशारा करके अपने भाई की ओर गरज कर बोला, "अरे बिल ! सामने गाय दिखाई दे रही है।"

तुरन्त ही कप्तान अपने भाई को साथ लेकर आगे बढ़ गया और गाय को पकड़ने की कोशिश करने लगा। पर गाय जैसे उनके इरादे को पहचान गई थी। वह पास के वृक्षों में जा छिपी। र—भी उनसे जा मिला। उन तीनों ने उसे खदेड़ कर बाहर निकाला। हम देखते रहे कि किस तरह

उन तीनों ने उसे घेरने और उसकी नाक में नथ फंसाने का यत्न किया। यह काम वे खोजी रस्सियों से ही कर रहे थे। इसके बाद थक-हार कर उन्होंने हल्के तरीके बरते और प्यार से गाय को दल में वापिस ले आए। इसके तुरन्त बाद ही फिर, हर रोज़ के सामान, आँधी आ गई। हवा इतनी तेज़ चल रही थी कि मैदान पर धारें भी, उसी दिशा में, सीधी पड़ने लगीं। घोड़ों ने अपनी पूछें आंधी की ओर करलीं और सिर झुका कर खड़े हो गए। वे इस हमले को चुप्पी और सहनशीलता के साथ सहने लगे। हमने भी अपने सिर अपने कंधों के बीच झुका लिए और सामने की ओर झुक गए, ताकि हमारी पीठें बारिश के बोझ को सहलें और हमारी रक्षा हो सके। इसी बीच इस गड़बड़ का लाभ उठाकर वह गाय भाग निकली। कप्तान को दुःख हुआ वह भी आंधी और तूफ़ान की परवाह न करके, अपनी टोपी को थोड़ा आगे की ओर झुकाकर एक बड़ी पिस्तौल लेकर उसके पीछे-पीछे पूरी तेज़ी से निकल गया। कुछ देर के लिए हमें वे दोनों ही दिखाई न दिए। धुंध और वर्षा ने एक परदा सा खड़ा कर दिया था। बहुत देर बाद हमें कप्तान की आवाज़ सुनाई दी और हमने उसे तूफान में से उछलते आते देखा। वह बहुत सधा हुआ घुड़ सवार लग रहा था। अपने बचाने के लिए उसने हाथ ऊँचा उठाकर पिस्तौल पकड़ी हुई थी। उसके चेहरे पर चिन्ता और उत्तेजना छाई हुई थी। गाय उसके आगे-आगे चल रही थी। साफ लगता था कि अब भी मौका मिलते ही वह भाग जाएगी। कप्तान हमें आगे बढ़कर उसे सम्भालने को कह रहा था। पर, वर्षा की धार हमारी पीठ पर इतनी तेज़ी से गिर रही थी, कि हमें अपने सिर उठाने में भी डर लगता था। हमें डर था कि कहीं और पानी हमें तंग न करे। इसीलिए हम बिना हिले-डुले वैसे ही बैठे रहे और कप्तान की ओर देखते हुए उसकी उतावली हरकतों पर हंसते रहे। इसी समय गाय फिर एक बार उछली और भाग निकली। कप्तान ने भी अपनी पिस्तौल फिर मज़बूती से पकड़ी, घोड़े को ऐड़ लगाई और उसके पीछे भाग निकला। इस बार उसका इरादा कुछ अधिक बुरा था। कुछ ही देर में हमें वर्षा के कारण हल्की पड़ी हुई गोली चलने की एक आवाज़ सुनाई दी और तभी शिकारी अपने शिकार के साथ आता हुआ दिखाई दिया। गाय घायल हो चुकी थी और इसीलिए लाचार थी। थोड़ी ही देर बाद आंधी का

जोर कम हुआ और हम आगे बढ़ चले। गाय जैक के पीछे-पीछे बहुत पीड़ा के साथ चल रही थी। कप्तान ने उसे जैक के सपुर्द किया था। वह स्वयं आगे-आगे खोजी के रूप में चल रहा था। हम एक धारा के बाद आने वाली सामने के पेड़ों की एक लम्बी कतार के पास से गुजर रहे थे। उसी समय कप्तान हमारी ओर दौड़ता हुआ आया। वह बहुत उत्तेजित था। पर फिर भी हंस रहा था।

वह हम से बोला, "गाय को वहीं छोड़ दो। सामने उसके मालिक आ रहे दीखते हैं।"

सच ही, पेड़ों के पास पहुंचते ही, हमने उनके पीछे एक सफ़ेद बड़े तम्बू जैसी कोई चीज देखी। पास जाने पर हमें पता चला कि वह, मोर्मन लोगों का डेरा न होकर, एक सफ़ेद चट्टान थी, जो राह के बीच ही खुले मदान में खड़ी हुई थी। अब फिर से गाय को अपनी जगह पर लाया गया। वह डेरा पड़ने तक हमारे साथ-साथ चलती रही। तब र—ने उसके दिल के पास अपनी दोनाली बन्दूक तान कर एक-एक करके दोनों गोलियां दाग दीं। तब उस गाय को काटा गया और यात्रा के सामान में उसके मांस को भी जोड़ लिया गया।

अगले एक दो दिन में ही हम 'महा-नील' (बिग ब्लू) नदी तक पहुंच गए। इस इलाके की सभी नदियां ऐसे बड़े नामों से ही पुकारी जाती हैं। यूं तो हमने सारे दिन भर ही छोटी-मोटी धाराएं और गड्डे पार किए थे, परन्तु इस नदी के किनारे के जंगलों को पार करते हुए हम ने जाना कि हमारे सामने अभी बहुत कठिन मौके आने थे। यह धारा वर्षा के कारण भर कर चौड़ी गहरी और तेज होकर बह रही थी।

अभी हम यहां पहुँचे ही थे कि र—ने अपने कपड़े उतारे और पानी में कूद गया। रस्सी को दाँतों में दबाए, तैर कर या चल कर, वह पानी में बढ़ने लगा। हम उसकी ओर उत्सुकता से देखने लगे कि आखिर उसका उद्देश्य क्या है? तभी हमने उसे चिल्लाते सुना, "इस रस्सी को उस ठूंठ पर लपेट दो। सोरेल, तुम सुन रहे हो। बोईस्फोर्ड, जरा इधर ध्यान दो। तुम कुछ लोग इधर आ जाओ और मुझे सहायता दो!" जिन आदमियों को ये हुक्म दिए गए, उन में से किसी ने भी इन पर ध्यान नहीं दिया, यद्यपि इन्हें बिना रुके लगातार दिया गया था। हेनरी ने काम समझाना शुरू किया और सब काम तरीके से

होने लगा। अब भी र—की तेज़ आवाज़ लगातार सुनाई दे रही थी और वह बहुत अधिक हलचल में लगा हुआ था। उसके हुक्म कोई ताल-मेल न रखते थे और सब की हँसी का कारण बन रहे थे। जब उसने देखा कि कोई भी उसकी बात नहीं सुन रहा, तब उसने भी अपना रुख बदल लिया। जो आदमी जिस काम पर लगा हुआ था, उस ने उसे ठीक वही काम करने के लिए कहना शुरू किया। उसे मुहम्मद और पहाड़ की कहानी शायद याद थी। शॉ हँस पड़ा। र—ने जब यह देखा तो घृणा से भरकर वह कुछ बोलने लगा, पर तभी वह चुप पड़ गया।

आखिर फट्टों की नाव तैयार हो गई। हमने अपना सारा सामान उस पर लाद दिया। हर-एक ने अपनी बन्दूकें अपने-अपने पास रखीं। सोरेल, राइट, आदि चारों सहायकों ने चारों कोनों को सम्हाल लिया, ताकि फट्टे अलग न हो जाएं और वे इसके साथ ही तैरने लगे। कुछ ही देर में हमारा सारा सामान इस मचलते पानी पर तैरने लगा। किनारे पर बैठे हम परिणाम की इंतजार कर रहे थे। तभी हमने देखा कि दूसरे किनारे यह नाव बहुत आसानी से लग गई। खाली गाड़ी भी आसानी से पार हो गई। घोड़ों पर चढ़कर हम भी पार आ गए। दूसरे पशुओं को तैर कर पार होने के लिए खुला छोड़ दिया गया।

—:o:—
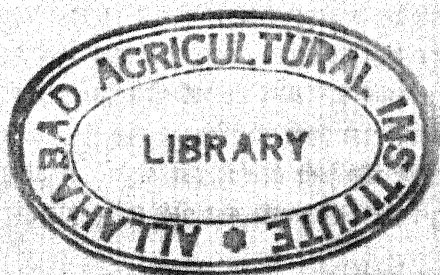
६ : प्लाट् नदी और रेगिस्तान

अब सेंट जोसफ की बनायी राह अन्त पर ही थी। हमारी यह यात्रा बहुत एकान्तपूर्ण रही थी पर, तेईस मई को हम उस चौराहे पर आ पहुंचे, जहां हमारी राह ओरेगन को जाने वाले अन्य यात्रियों की राह से मिलकर एक हो गई थी। यहां से हमारा एकान्त समाप्त हुआ। उस दिन बहुत देर तक लकड़ी और पानी को ढूंढ़ने के लिए हम निरर्थक ही बढ़ते रहे। अन्त में, साँझ के समय हमें किरणों से चमकता हुआ एक छोटा-सा जोहड़, पेड़ों और झाड़ियों से घिरा हुआ, दिखाई दिया। पानी एक खड्ड की तह में था और चारों ओर मैदान एक समुद्र की भाँति फैला हुआ था। हमने इसके पास ही अपने तम्बू गाड़ दिये। इससे पहले ही हेनरी ने बहुत दूर एक टीले पर कुछ खास चीज़ देख ली थी। परन्तु, सांझ के धुंधलके में कुछ भी साफ़ देखा नहीं जा सकता था। खाने के बाद हम आग के चारों ओर लेट गए। तभी हमारे कानों में बहुत दूर से हँसी-ठठ्ठे की एक विचित्र सी आवाज़ आई। बहुत सी औरतें और मर्द हँस रहे थे। पिछले आठ दिनों से हमने एक भी मनुष्य नहीं देखा था। इस लिए किसी भी ऐसी आवाज़ को समीप पा कर हमारे मन में बहुत अधिक उत्सुकता जगनी स्वाभाविक थी।

अंधेरा होने पर सामने की पहाड़ी से एक पीले से चेहरे वाला घुड़सवार उतरा और जोहड़ पार करता हुआ हम तक आया। उस ने एक बड़ा लबादा पहना हुआ था और उस के चौड़े टोप से कानों के पास ओस की कुछ बूंदें जमा होकर टपक रही थीं। इसके पीछे ही मज़बूत और अच्छे ढाँचे वाला बुद्धिमान् दिखाई देने वाला पुरुष आया। उसने बताया कि वह प्रवासियों के एक दल का एक अन्य नेता था। उनका दल यहां से एक मील आगे पड़ाव डाले पड़ा था। उनके साथ बीस गाड़ियां थीं। उनके बाकी बचे हुए दल ने अभी महानील नदी पार नहीं की थी। वे लोग एक स्त्री के बच्चा होने की प्रतीक्षा कर रहे थे और इसी बीच आपसी झगड़ों में उलझ रहे थे। यही वे पहले यात्री थे, जिन्हें हमने पहली बार पीछे छोड़ा, हालाकि हमें सारी यात्रा

भर बहुत से यात्रियों के निशान दिखाई देते रहे थे। कभी-कभी हमें राह में एक ऐसी कब्र दीख जाती, जो किसी व्यक्ति के बीमारी या किसी और रूप में मरने पर खड़ी की गई होती थी। धरती अधिकतर फटी हुई और भेड़ियों के निशानों से भरी हुई थी। कुछ लोग इन के हमलों से बच गए थे। एक सुबह हमें एक छोटी-सी पहाड़ी की चोटी पर एक लकड़ी की तख्ती दिखाई दी। ऊपर चढ़ कर हमने इस पर लोहे से दाग़े हुए ये शब्द पढ़े :

मेरी ऐलिस, ७ मई १८४५ को मरी, आयु दो मास" !

इस प्रकार के निशान उस राह में मिलने एक आम बात थे।

सुबह डेरा उठाने में हमें कुछ देर हो गई। अभी हम कुछ ही दूर गए होंगे जब हमने अपने सामने क्षितिज के पास बहुत सी चीज़ों को बराबर फासले पर, कुछ कुछ दूरी पर, मैदान की सतह पर ही चलते हुए पाया। इसी समय बीच में एक टीला आ गया और सामने का नज़ारा दीखना बंद हो गया। हम इसी टीले पर चढ़े। अब हमें अपने बिल्कुल सामने ही यात्रियों का एक लम्बा काफ़िला दिखाई दिया। उनकी सफेद और भारी गाड़ियाँ बहुत हल्के-हल्के चल रही थीं और पीछे पशुओं का समूह चल रहा था। पांच-छह पीले चेहरे वाले मिसूरी-निवासी घोड़ों पर चढ़े हुए आपस में गाली-गलौच कर रहे थे। उनके शरीर बड़े नपे-तुले और सधे हुए थे। उन्होंने किसी घरेलू दर्जी के बने हुए कपड़े पहन रखे थे। हमारे पास पहुँचने पर उन्होंने हमसे पूछा, "तुम्हारा क्या हाल है ? तुम ओरेगन जा रहे हो या कैलिफोर्निया ?"

हम ज्यों ही उनकी गाड़ियों के पास से होकर गुज़रे, कुछ बच्चे पर्दा हटा कर हमें झांकने लगे। सामने की ओर बैठी, चिन्ताओं से दबी और पतली-दुबली मातायें या भारी-भरकम लड़कियाँ अपना-अपना काम छोड़ कर, हमें उत्सुकता से देखने लगीं। हर गाड़ी के साथ ही उसका स्वामी चल रहा था। वह अपने, भारी बोझे से लदे बैलों को इस लम्बी यात्रा के लिए हौसला दे रहा था। इन सब लोगों में बहुत घबराहट और बेचैनी फैली हुई थी। इनमें कुछ लोग अविवाहित भी थे। वे हमें बढ़ता हुआ देखते और फिर अपनी धीमी चाल से बढ़ती गाड़ियों को देखते। कुछ ऐसे भी थे जो बिल्कुल ही बढ़ना नहीं चाहते थे, क्यों कि पिछले साथी अभी आकर साथ नहीं मिले थे। कुछ ऐसे भी लोग थे, जो अपने चुने नेता के विरुद्ध आवाज़ उठा रहे थे

और उसे हटाना चाहत थे। यह बात बड़ी उम्मीदें रखने वाले कुछ लोगों के कारण अधिक बढ़ गई थी, क्योंकि वे स्वयं नेता बनना चाहते थे। औरतों का दिल कभी-कभी घर जाने की ओर हो उठता था, क्योंकि वह सामने के रेगिस्तान और असभ्य इलाके से डरने लगी थीं।

हमने इस दल को भी बहुत पीछे छोड़ा और यह आशा की कि अब इनसे फिर न मिलना होगा। तभी हमारे साथियों की गाड़ी कीचड़ भरे एक गड्ढे में इस तरह धँस गई कि उसे निकलने में घंटों लग गए। तब तक पिछले साथी भी हमारे बहुत पास तक आ पहुँचे। आने वाली हर गाड़ी उस कीचड़ में से धँस कर निकलती रही। इस समय दोपहर हो चुकी थी। इस स्थान पर छाया और पानी मौजूद थे। हमने बहुत सन्तोष के साथ देखा कि वे लोग यहीं डेरा डालना चाहते थे। जल्दी ही उनकी गाड़ियाँ एक घेरे के रूप में खड़ी हो गयीं। पशुओं को चरागाह में खुला छोड़ दिया गया और अपने उदास और दुःखी चेहरे लिए आदमी लकड़ी और पानी की चिन्ता में इधर उधर घूमने लगे। उन्हें इसमें बहुत कम सफलता मिली। जब हम कुछ आगे बढ़ आए तो मैंने एक बहुत लम्बे आदमी को लड़खड़ाती चाल में आते देखा। वह अपने प्याले में पड़े पानी को बड़े सन्तोष से देख रहा था। उस की आवाज में नाक का स्वर भी मिला हुआ था।

उसने कहा, "इधर देखो! इसमें जानवर ही जानवर भरे हुए हैं।"

जब उसने हाथ फैलाकर दिखाया तो प्याले में काई और कीड़े बहुत अधिक भरे हुए थे।

सामने की छोटी-सी पहाड़ी में चढ़ कर हम पीछे की चरागाह में साफ़ देख सकते थे कि प्रवासियों के पिछले डेरे में कुछ गड़-बड़ मच रही थी। आदमी एक तरफ इकट्ठे होकर कुछ बहस कर रहे थे। हम लोगों में से र— अपनी जगह से गायब था। कप्तान ने बताया कि वह अपने घोड़े की नाल ठीक कराने के लिए पीछे रुक गया है। हमें अनुभव हुआ कि कुछ न कुछ गड़बड़ जरूर है। फिर भी हम बढ़ते रहे और अच्छे पानी की एक धारा के पास आकर भोजन और आराम के लिए रुक गए। अब तक भी र— न लौटा था। अन्त में बहुत दूरी पर अपने घोड़े समेत वह आता दिखाई दिया। उसके पीछे ही पीछे एक बहुत बड़ी कोई सफ़ेद-सी चीज भी आती दिखाई दी।

"वह यह सफेद-सा सामान क्या साथ ला रहा है ?"

कुछ ही देर बाद यह भेद खुल गया। एक के पीछे एक चार गाड़ियाँ और उनके बैल पहाड़ी पर से धीमे-धीमे उतरते हुए साफ़ दिखाई देने लगे। सबसे आगे र— शाही सवारी की भाँति चल रहा था। लगता है घोड़े की नाल ठुकवाते हुए प्रवासियों का झगड़ा कुछ अधिक तेज हो गया था। कुछ लोग आगे बढ़ना चाहते थे और कुछ रुक जाना चाहते थे। कुछ ऐसे भी थे जो लौटना अधिक अच्छा समझते थे। उनके कप्तान कीर्सले ने हिम्मत हार दी और वह बोला, "अच्छा अगर तुम में से मेरे साथ कोई आगे चलना चाहे तो वह चल सकता है।"

दस आदमियों, एक स्त्री और एक बच्चे के अलावा चार गाड़ियाँ इस दल में थीं। र— ने अपनी शरारती आदत के कारण इन सब को हमारे साथ चलने के लिए निमंत्रण दे दिया। लगता है उसके सामने इन को साथ लेने का एक बड़ा कारण यह था कि उसे आदिवासियों के हमले का खतरा था; नहीं तो वह ऐसे बोझ को साथ न लेता। हर तरह से हमारा शान्ति के साथ आगे बढ़ना जारी रहा। हमारे नये साथी बहुत ही खुले दिल वाले और बुद्धिमान् थे। वे कुछ असभ्य ज़रूर थे। पर तो भी उनमें कोई और बुराई न थी। उनसे साथ न चलने की बात कहने का प्रश्न ही नहीं था। मैंने कीर्सले से केवल इतना ही कहा कि अगर उनके बैल हमारे खच्चरों के साथ-साथ न चल सकें, तो उन्हें पीछे छूट जाना पड़ेगा, क्योंकि अब हम अधिक देरी सहने को तैयार न थे। उसने तुरन्त ही विश्वास दिलाया कि वह ऐसा कोई अन्तर नहीं पड़ने देगा और उसके बैल सदा साथ-साथ ही चलेंगे।

अगले दिन हमारे साथियों की गाड़ी की धुरी टूट गई और एक चश्मे में फँसकर उसका सारा सामान नीचे आ गिरा। इसके कारण हमारा पूरा दिन बरबाद हो गया। इस बीच हमारे नये साथी अपनी राह पर बढ़ते रहे और वे इतनी तेजी से चले कि हमें उनसे मिलने में पूरा एक सप्ताह लग गया। तब हमने उन्हें प्लाट् नदी के किनारे-किनारे बढ़ते हुए एक दिन पा लिया। पर, इस बीच बहुत-सी और भी बातें हमारे साथ बीत चुकी थीं।

यह डर था कि यात्रा की ऐसी मंजिल पर कहीं पौनी आदिवासी हम पर हमला करके हमें लूट न लें। इस लिए हमने बारी-बारी से रात में पहरा

लगाना शुरू किया। पहरे को तीन हिस्सों में बाँटा गया और रात के हर हिस्से के लिए दो आदमी तैनात किए गए। देस्लारियर और मेरी बारी साथ-साथ थी। हम सैनिकों जैसे इधर उधर घूम कर परेड नहीं करते थे। फिर भी, हमारे नियम बहुत कठिन थे। हम दोनों कम्बल ओढ़ कर आग के पास बैठ जाते और देस्लारियर पहरे के साथ-साथ रसोई का काम भी करता रहता था। वह किसी हिरण का सिर उबालकर नाश्ते की तैयारी करने की चिन्ता में रहता था। इस पर भी हम बहुत सावधान रहते थे और दूसरों से अधिक चौकन्ने गिने जाते थे। और लोग अक्सर अपनी बन्दूक ज़मीन पर रखकर, कम्बल में लिपट कर, अपने घर या किसी और बात के ख्याल में उलझकर, बेखबर हो जाते थे। यह बात इस इलाके के लिए ठीक भी मानी जा सकती थी। क्योंकि यहाँ के आदिवासी केवल घोड़े और टट्टुओं को छोड़कर और कुछ नहीं लूटते थे। हालांकि पौनी लोगों का अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता था। यहाँ से आगे पश्चिम की ओर पहरा कुछ अधिक चौकन्ना होना चाहिए। पहरेदार को आग के पास बैठकर अपने को प्रकाश में नहीं लाना चाहिए, क्योंकि वहाँ के निशानेबाज़ आदिवासी ऐसे समय अँधेरे से ही तीर या गोली निशाना साधकर दाग देते हैं।

अपने डेरे के इन पहरों में जो कहानियां सुनने को मिलती थीं, उनमें से बोईसफर्ड की कहानी अधिक अच्छी थी। उसने बताया कि एक बार वह ब्लैकफुट लोगों के प्रदेश में अपने कुछ साथियों के साथ पशु फँसा रहा था। पहरेदार ने सब बात समझकर अपने को आग से कुछ दूर छिपा रखा था। वह चारों ओर ध्यान से देखता रहा। बहुत देर बाद उसने एक शक्ल चुपके से आग की ओर आती देखी। उसने तुरन्त गोली दाग दी। परन्तु, राइफल के घोड़े की तेज़ आवाज़ ने उस ब्लैकफुट आदिवासी को और भी अधिक चौकन्ना कर दिया। उसने अपना बाण आवाज़ की दिशा में ही छोड़ दिया। उसका निशाना इतना सही था कि उसका तीर पहरेदार के गले में से होता हुआ निकल गया। और तब, एक ऊँची आवाज़ के साथ वह आदिवासी भाग गया।

मैंने अपने पहरे के साथी की ओर देखा। वह आग पर झुककर फूँक मार रहा था। मुझे लगा कि कठिनाई के समय शायद वह अच्छा सहायक साबित नहीं होगा।

मैंने कहा, "देस्लारियर। अगर पौनी लोगों ने हम पर हमला किया तो क्या तुम भाग जाओगे!"

उसने बड़े निश्चय के साथ जवाब दिया, "हाँ जी, ज़रूर!"

इसी समय भौंकने, गुर्राने, चीखने और चिल्लाने की सैकड़ों मिल-जुली आवाज़ें चारों ओर से आने लगीं। ये आवाज़ें बहुत पास से ही आ रही थीं, मानों बहुत से भेड़िये, उनकी स्त्रियें, और उनके बच्चे आदि एक साथ ही इकट्ठे हो गए हों। मेरे साथी ने वहीं से देखकर हँसना शुरू किया। वह उनकी आवाज़ों की नकल उतारने लगा। इसके मुकाबले में भेड़ियों की आवाज़ें और तेज़ हो गईं। लगता था उनका बड़ा गवैया हमारे साथी की आवाज़ से नाराज़ हो गया था। ऐसा लगता था जैसे सबसे पहले कुछ दूर पर बैठा हुआ वह गवैया गाता था और तब उसके ये साथी गाने लगते थे। वह एक छोटा और किसी को नुकसान न पहुँचाने वाला जानवर था। उसकी जाति की यह आदत है कि वे घोड़ों के बीच में घुसकर उनकी भैंसों की खालों की बनी रस्सियों को चबा जाते हैं। इस मैदान में दूसरे जानवर कुछ अधिक खूँखार होते हैं, खासकर सलेटी रंग के भेड़िये, जिनकी तेज़ चीख थोड़ी-थोड़ी देर बाद पास या दूर से सुनाई दे जाती थी।

अन्त में मुझे नींद आ गई। जब जागा तो देखा कि मेरा साथी भी सो रहा था। इस नियम के टूटने से मुझे डर हुआ और इच्छा हुई कि उसे चौकन्ना करने के लिए उठाकर जगाऊँ। पर, मैंने उसे कुछ देर सोने दिया, ताकि बाद में मैं उसे डाँट सकूँ। जब-तब मैं घोड़ों में जाकर देख आता था कि सब ठीक है या नहीं? रात बहुत ठंडी, अंधियारी और गीली थी। घास पर ओस की बूँदें पड़ी हुई थीं। यहाँ से कुछ ही गज़ की दूरी पर तम्बू दिखाई दे रहे थे। घोड़ों के अलावा यहाँ कुछ और न दिखाई देता था। वे भी सोते हुए तेज साँस ले रहे थे, करवट बदल रहे थे, या घास चर रहे थे। बहुत दूर अंधियारे मैदान में एक जगह कुछ लाल-सी रोशनी धीरे-धीरे बढ़ती दिखाई दी, जैसे कहीं आग जल उठी हो। कुछ देर बाद चाँद एक बड़ी लाल थाली के रूप में ऊपर उठ आया। कुहरे में से वह और भी बड़ा दिखाई देता था। यह धीरे-धीरे ऊपर उठता गया। कुछ छोटे-छोटे बादल इसकी राह में आए और हट गए। ज्यों-ज्यों इसकी रोशनी बढ़ती गई, पशुओं की पास में उठने वाली चिल्लाहट भी

बढ़ती गई। मानो पशुओं को इस नए घुस आने वाले चाँद से कुछ भय था। इस स्थान पर इस समय कुछ ऐसा खिचाव और डर मिला-जुला था जो स्वयं में अद्भुत था। मीलों दूर तक या तो मैं जग हुआ था या ये चिल्लाने वाले पशु !

कुछ दिन बाद हम प्लाट् नामक नदी के पास पहुँचे। सुबह ही हमारे पास दो घुड़सवार पहुँचे। हम उन्हें उत्सुकता और चाव से देखने लगे। ऐसे एकान्त में इस प्रकार का अचानक सामना सदा ही अजीब उत्तेजना भर देता है। वे गोरे ही थे, हालाँकि वहाँ के रिवाज के अनुसार उनके पास राईफल नहीं थी।

हैनरी ने उन्हें देखकर कहा, "मूर्ख ! मैदानों में कहीं इस तरह भी बढ़ा जाता है। अगर कहीं पौनी तुम्हें ऐसे देख लें तो यूँ ही समाप्त कर दें।"

पौनियों ने उन्हें लगभग पकड़ ही लिया था, अगर हम ही पहुँच न जाते। मैं और शॉ उनमें से टर्नर नाम के एक आदमी को जानते थे। उसे हमने वेस्ट पोर्ट में देखा था। वे दोनों एक प्रवासी दल के सदस्य थे, जो हमसे कुछ आगे चल रहा था। अपनी बन्दूकें छोड़कर वे कुछ बिछड़े हुए बैलों को देखने निकले थे। यह उनके अनजानपन और जल्दबाज़ी को सूचित करता था। उनकी यह लापरवाही उन्हें बहुत महँगी पड़ी। हमारे आने से कुछ ही देर पहले उन्हें पाँच छह आदिवासियों ने घेर लिया और उन्हें निहत्था पाकर उनमें से एक ने टर्नर के घोड़े की लगाम पकड़कर उसे उतरने पर लाचार किया। उसके पास एक भी हथियार न था, पर उसके साथी ने अचानक ही जेब से पिस्तौल निकाली और तान दी। इस पर पौनी कुछ सहम गए। तभी उन्हें कुछ दूर पर हम पहुँचते हुए दिखाई दिए। हमें देखते ही उनका सारा दल भाग गया। अब भी टर्नर की यह ज़िद थी कि वह आगे ही जाएगा। उसे छोड़ने के काफी देर बाद साँझ के समय उस उजाड़ और ऊसर मैदान में हम अचानक ही पौनियों की एक बड़ी राह को पा गए। वे इस राह से अपने गाँवों से दक्षिण की ओर शिकार की जगहों तक जाया करते थे। हर गर्मी के मौसम में यहाँ से उनके असभ्य मर्द, औरत, बच्चों और घोड़ों, खच्चर आदि का समूह हज़ारों की संख्या में अपने हथियारों और साज-सामान के साथ गुज़रता है। उनके पास सैकड़ों भयंकर कुत्ते भी होते हैं, जिन्हें ठीक से भौंकना भी नहीं आता और जो भेड़ियों की तरह ही चिल्लाते हैं। पौनी लोगों के स्थायी गाँव प्लाट् के निचले

हिस्से में बसे हुए हैं। गर्मियों की मौसम में इनके बहुत से निवासी शिकार और लूटमार के लिए मैदानों में निकल जाते हैं। इनके कत्ल और डाके के काम इतने भयंकर होते हैं कि सरकार को इन्हें पूरी तरह दण्ड देना चाहिए। पिछले साल डाकोटा जाति के एक वीर ने इन गाँवों में अकेले ही तूफ़ान मचा दिया था। वह एक अन्धेरी रात में अकेला ही इन गाँवों में घुस आया और एक घर की छत पर, बाहर की ओर से, चढ़ गया। सब सो रहे थे और वह चिमनी की राह से धीरे से अन्दर कूद पड़ा। उसने अपनी कृपाण निकाली और आग तेज़ करके अपने शिकारों को चुन-चुनकर, एक-एक कर, उन्हें मारने और उनका सिर उतारने लगा। इसी समय एक बच्चा अचानक ही चीख पड़ा। वह वीर इस घर से भागा और उसने सियू लोगों की तरह युद्ध के समय की आवाज़ की। उसने अपना नाम लेकर अपनी जीत की घोषणा की और अंधेरे में ही मैदान की ओर भाग निकला। उसके जाने पर सारे गाँव में भगदड़ मच गई। कुत्ते भौंकने और चीखने लगे, औरतें रोने लगीं और गुस्से से भरे वीर हुंकार भरने लगे।

हमें बाद में पता चला कि हमारे मित्र कीर्सले को भी एक ऐसी ही छोटी घटना में सफलता मिली। वह और उसके साथी जंगल से अच्छा परिचय रखते थे और बन्दूक चलाने में भी चतुर थे। परन्तु, इस मैदान पर जैसे वह सब कुछ भूल-सा गए थे। उनमें से कभी किसी नें यहाँ के जंगली भैंसों को न देखा था। उन्हें उसकी आदत और शक्ल के बारे में बहुत कम मालूम था। प्लाट् पर पहुँचने के अगले दिन जब उन्होंने कुछ दूरी के एक टीले पर कुछ शाखें हिलती देखीं, तो सावधान हो गए। कीर्सले ने उनसे कहा, "सब अपनी रायफ़लें निकाल लो। हमें शाम के भोजन के लिए ताज़ा मांस मिलने वाला है।"

यह लोभ काफ़ी बड़ा था। लगभग दस आदमी अपनी गड़ियाँ छोड़कर तेज़ी से निकल पड़े। कुछ घोड़ों पर और कुछ पैदल ही इन ख्याली भैंसों की ओर बढ़ गए। इसी बीच एक छोटे टीले ने बीच में आकर परला नज़ारा आँखों से छिपा दिया। आध घण्टा दौड़ने और पीछा करने के बाद उन्होंने खुद को लगभग तीस पौनियों से घिरा हुआ पाया। वे घबराहट और अचरज में डूब गये। पौनी लोगों के पास धनुष-बाण ही थे इसलिए वे अपनी अन्तिम घड़ी

पास समझकर घबरा गए, क्योंकि उन्हें पता था कि ऐसे मौके पर उनकी क्या हालत होती ? उन्होंने बहुत ही दोस्ती भरे वचन बोलने शुरू किए और बहुत प्रेम से हाथ मिलाने के लिये आगे बढ़े। मिसूरी के हमारे ये दोस्त भी झगड़ा बच जाने के कारण बहुत खुश थे।

अब हमारे सामने छोटी-छोटी रेतीली पहाड़ियाँ क्षितिज पर फैली हुई दीखने लगीं। उस दिन हम दस घंटे तक घोड़ों पर चढ़कर बढ़ते रहे। उन छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच खड्डों तक पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो गया था। आखिर हम एक चोटी पर पहुँच गए। यहाँ से हमें सामने ही प्लाट् की घाटी दिखाई दे रही थी। हमने घोड़ों की लगामें खींचीं और खुशी से सामने के नज़ारे को देखने लगे। यह बहुत ही अच्छी बात थी। हमारी उम्मीदों और कल्पना को इसने जगा दिया, हालाँकि कोई खास बात अब भी सामने न थी। कोई भी सुन्दर या महत्त्व की चीज हमारे सामने न थी। केवल एक लम्बा चौड़ा मैदान, उसका एकान्त और जंगली वातावरण ही हमारे सामने फैला था। मीलों तक एक बड़ी झील के समान फैला हुआ मैदान हमारे सामने था। प्लाट् नदी छोटी-मोटी धारों में बट कर इसमें से गुजर रही थी, या फिर कहीं-कहीं छोटे-से छायादार टापुओं के रूप में पेड़ों का छोटा सा जंगल दिखाई दे जाता था। इस उजाड़ मैदान में यही कुछ अच्छे नजारे थे। सामने कोई भी जिन्दा चीज नहीं दिखाई दे रही थी। कहीं कुछ छिपकलियों जैसे छोटे जन्तु इधर-उधर दौड़ते अवश्य दिखाई दे जाते थे।

यात्रा का कठिन भाग हमने पार कर लिया था। पर अब भी हम लारामी के किले से चार सौ मील दूर थे और हमारा तीन सप्ताह से अधिक का रास्ता बाकी था। इस सारे समय हम एक लम्बे सँकरे और रेतीले मैदान में से गुज़-रते हुए राकी पर्वतमाला तक पहुँचे। हमारे दोनों ओर छोटी-छोटी रेतीली पहाड़ियाँ कहीं-कहीं बहुत जंगली रूप धारण कर गई थीं और काफ़ी दूर तक फैली चली गई थीं। इनके परे सैकड़ों मील का एक उजाड़ और अनगाहा मैदान एक ओर अरकंसास तक और दूसरी ओर मिसूरी नदी तक फैला हुआ चला गया था। हमारे आगे और पीछे इस उजाड़ मैदान में दूर-दूर तक कोई भी फर्क न दीखता था। कभी यह धूप में चमकता हुआ तपी हुई रेत का समुद्र बन जाता, तो कभी लम्बी खुरदरी घास से ढका हुआ मैदान। इधर-उधर

भैंसों की खोपड़ियाँ और हड्डियाँ बहुत अधिक बिखरी पड़ी थीं। यह मैदान हज़ारों भैंसों ने एक साथ ही गाहा था। प्राय: इसमें कहीं-कहीं गोल गड्ढे पड़े हुए थे। यहाँ भैंसों ने गरमी में लोट लगाई थी। हर घाटी और नाले में अच्छी बनी हुई पगडंडियाँ उतर रही थीं, जो कि पास की पहाड़ियों से आई थीं। यहाँ ही दिन में दो बार नियम से भैंसों के जत्थे प्लाट् नदी में पानी पीने आते थे। नदी बहुत फैली हुई थी, पर इसमें पानी एक पतली चादर के रूप में फैला था। यह आधा मील चौड़ी और डेढ़-दो फुट गहरी थी। इसके किनारे नीचे तथा झाड़ी और पेड़ों से रहित थे। रेत बहुत गीली और पानी में बहुत अधिक मिली हुई थी। चुल्लू भर पानी पीने पर भी दाँतों में रेत की किरकिरी अनुभव होती थी। हालांकि यह खुला और नंगा मैदान उकता देने वाला और भयंकर लगता है, तो भी यहाँ के जंगली जानवर, असभ्य आदमी और दूसरे जंगली दृश्य इस घाटी को किसी भी यात्री के लिए लुभावना और चाव भरा बना देते हैं। इन मैदानों का शायद ही कोई यात्री यहाँ के अपने घोड़े और राइफल के आनन्द को भूल पाता होगा।

सुबह जल्दी ही हम प्लाट् नदी के किनारे पहुँच गए। बहुत से असभ्य लोगों का एक जत्था हम तक आया। इनमें से हर कोई नंगे पाँव था और हर एक अपने घोड़े को रस्सी से थाम कर चल रहा था। उनकी वेशभूषा बहुत ही थोड़ी चीजों की थी: एक छोटी कमर-पेटी और घिसा हुआ चिथड़े जैसा भैंसे की खाल का कंधे पर पड़ा एक कपड़ा ही उनके शरीर पर था। हरएक का सिर मुंडा हुआ था। केवल माथे से चोटी की जगह तक ही थोड़े से बाल बचे हुए थे, जैसे किसी मादा भेड़िये की पीठ के बाल हों। हरएक के हाथ में धनुष-बाण था और हरएक के घोड़े पर शिकार से प्राप्त भैंसों का सुखाया हुआ मांस लदा हुआ था। मैदान के अर्धसभ्य आदिवासियों के बाद ये ही आदिवासी हमें पहले-पहल दिखाई दिए। ये उनसे एकदम भिन्न थे।

ये वे ही पौनी थे, जिन्हें कीर्सले पहले ही मिल चुका था। ये लोग पास के मैदान में ही शिकार खेलने वाले एक बड़े दल में से थे। यह बहुत तेजी से हमारे तम्बुओं से एक फ़र्लांग के अन्दर ही अन्दर होकर गुज़रे। पर, इन्होंने अपनी शरारत भरी आदत को भुलाकर, इस मौके पर, न हमारी ओर देखा, न रुके। मैं कुछ दूर बढ़कर उनसे मिलने गया और उनके सरदार से कुछ बातें

कीं। उसे मैंने पावभर तम्बाकू भेंट दिया। इस अचानक मिलने वाली भेंट के लिए उसने बहुत धन्यवाद दिया। हमसे कुछ आगे चलने वाले प्रवासियों के एक दल पर इन्होंने या इनके कुछ साथियों ने भयंकर हमला किया था। उनमें से कुछ दूरी पर पिछड़े हुए दो आदमियों को इन्होंने घेर लिया। वे लोग घोड़ों को एड़ लगाकर भाग निकले। इस पर पौनियों ने आवज़ें कसनी शुरू कीं और उनमें से पिछले की पीठ अपने बानों से छेद दी। अगला साथी भागकर अपने दल के पास इस खबर को ले गया। डरे हुए उन प्रवासियों ने बहुत दिन तक वहीं डेरा डाले रखा और अपने मरे हुए साथी को खोजने भी कोई न निकला।

हमारे न्यू इंग्लैंड का जलवायु यहाँ से कुछ मिलता-जुलता था। जैसे, इसी सुबह धूप कुछ तेज और हवा घुटी-घुटी सी थी। सूर्य चढ़ रहा था पर उसकी धूप सताने वाली न थी। इसी समय अचानक ही पश्चिम की ओर बादलों का एक काला अम्बार उठा और एकदम ही हम पर ओले और वर्षा गिराने लगा। ऐसे लगा जैसे सुइयों भरी आँधी आई हो। इस समय घोड़ों की हालत देखने लायक थी। वे बहुत ही नाराज़-से होकर अपनी छोटी छोटी पूँछें दबाए काँप रहे थे। छोटे भेड़ियों की-सी आवज़ करता हुआ वह तूफान हम पर से गुज़रता रहा। राइट् के टट्टुओं की लम्बी कतार पर इस आँधी की बुरी मार पड़ी। वे एक घेरे में बँध गए, जैसे सर्दियों के तूफान में बर्फ के इलाके के पक्षी इकट्ठे हो जाते हैं। इस तरह कुछ देर तक अपने घोड़ों की पीठ पर झुके हुए हम लोग वैसे ही खड़े रहे। हम बोल तक न सकते थे। हालाँकि, इस हालत में भी कप्तान ने एक बार हमारी ओर देखना चाहा। उसका चेहरा एक दम लाल था और उसकी पेशियाँ बड़ी खिची हुई थीं। लगता था जैसे उसने बुरी साईत में घर छोड़ने के अपने इरादे को ही गालियाँ दी हों। वह ऐसे ही कुछ फुस-फुसाया। यह सिलसिला बहुत देर तक जारी न रहा। इसके दबते ही हमने अपने तम्बू गाड़ दिए और बादलों से घिरा बाकी दिन उन्हीं तम्बुओं में बिताया। हमारे प्रवासी साथी भी पास में ही अपना तम्बू डाले पड़े थे। अपना काम पहले सम्हाल लेने के कारण हमने आस-पास मिलने वाली तमाम लकड़ी जमा कर ली थी और, इसलिए केवल हमारे ही डेरे की आग तेज़ी से जल रही थी। इसी बीच इस आग के चारों ओर कुछ मैले और असभ्य-से लोग जमा हो गए। वर्षा में भीग कर वे लोग काँप रहे थे। इनमें से दो-तीन आदमी राकी

पर्वतमाला में पशु फँसाने के काम के कारण या फिर कम्पनी की नौकरी में आदिवासियों के गाँवों में व्यापार करने के कारण आधे असभ्य-से ही लग रहे थे। ये सब ही कनाडा से आए दीखते थे। इनके सख्त, झुर्रीदार चेहरे और छोटी-छोटी मूँछें इनकी छोटी सी टोपियों के नीचे बड़े अजीब से दीख रहे थे। लगता था कि ये भी बहुत बुरे लोग हैं। इनमें से बहुत से होते भी बहुत बुरे हैं।

अगले रोज हम कीर्सले की गाड़ियों से जा मिले। इसके बाद के एक-दो सप्ताह तक हम साथ-साथ चले। इस साथ का एक लाभ भी था कि अब हमें पहरे के लिए जल्दी-जल्दी नहीं जागना पड़ता था। अधिक आदमी होने के कारण अब बारी कुछ देर से आती थी।

—:०:—

७ : भैंसा

प्लाट् नदी के किनारे चार दिन बीत गये, पर हमें कोई भी भैंसा दिखाई न दिया। निशानों से साफ़ था कि पिछले साल वे बहुत बड़ी संख्या में रहे होंगे। जंगल में पेड़ बहुत ही कम थे। फिर भी हमें एक ऐसी लकड़ी मिल गई जो बहुत अच्छी तरह जलती थी और जिसका कोई बुरा असर न होता था। एक दिन सुबह ही गाड़ियाँ चल पड़ीं। मैं और शॉ घोड़ों पर सवार हो गए थे, पर हेनरी बुझते हुए अंगारों के पास अब भी बैठा हुआ था। पास ही उसका मज़बूत ब्यांदोत जाति का टट्टू उसके पास ही खड़ा हुआ हमारी ओर देख रहा था। अन्त में हेनरी उठा और उसने अपने टट्टू की गर्दन थपथपायी, तब वह इस पर चढ़ गया, पर उसका हृदय प्रसन्न न था। इस टट्टू के गुणों के कारण उसने इस का नाम 'पांच सौ डालर' रख दिया था।

"हेनरी, क्या बात है ?"

"ओह ! मुझे अकेलापन खल रहा है। मैं यहाँ कभी नहीं आया। पर उधर मैदानों और दूसरी जगहों पर मैंने चारों ओर भैंसे ही भैंसे देखे हैं। यहां तो जैसे कुछ है ही नहीं।"

साँझ से पहले उसने और मैंने एक हिरण की खोज में अपना दल छोड़ा और आगे निकल गए। बहुत दूर पर, शायद दाहिनी ओर, एक या दो मील दूर हमें बहुत बड़ी-बड़ी सफ़ेद गाड़ियाँ और घुड़सवारों की छोटी-छोटी पंक्तियाँ दिखाई देने लगीं। वे सब इतना धीरे-धीरे चल रहे थे, जैसे बिल्कुल ही न बढ़ रहे हों। बाईं ओर नंगी, जली हुई और सुनसान रेतीली पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। सामने का फैला मैदान लम्बी लहराती घास से हरा-भरा था। यह घास हमारे घोड़ों के पेटों को छू रही थी। हवा के झोंकों से यह खूब लहरा रही थी और इसके बीच में हिरण और भेड़िये इधर-उधर घूमते फिर रहे थे। भेड़ियों की पीठों के बाल, उनके उछलने पर, कभी-कभी दीख जाते थे। हिरण अपनी अजब उत्सुकता में कभी-कभी हमारे पास तक आ जाते थे। उनके छोटे सींग और सफ़ेद गले घास में से दिखाई दे जाते थे, विशेषकर, जब वे हमारी

ओर अपनी काली-काली आँखों से देखने लगते।

मैं घोड़े से उतरा और भेड़ियों पर निशाना साधकर शिकार का मज़ा लेने लगा। हेनरी इधर-उधर के इलाके पर नज़र दौड़ा रहा था। बहुत देर बाद वह एकाएक चिल्लाया और मुझे घोड़े पर सवार होने को कहने लगा। उसने रेतीली पहाड़ियों की ओर इशारा किया। हमारे सामने एक-डेढ़ मील दूर दो काली सी शाखें एक पहाड़ी पर से गुज़रती दिखाई दीं और उसकी चमकती चोटी चोटी के पीछे जा छिपीं। हेनरी ने अपने घोड़े को चाबुक लगाई और बढ़ने के लिये आवाज़ दी। मैं उसके पीछे-पीछे चलता हुआ उन पहाड़ियों की ओर तेज़ी से बढ़ने लगा।

उन पहाड़ियों में से एक रास्ता एक गहरी घाटी में उतर रहा था। मैदान की ओर यह अधिक चौड़ा था। हम इस राह पर बढ़े। आगे बढ़ने पर हमने चारों ओर ऐसी ही छोटी-छोटी पहाड़ियों से अपने को घिरा पाया। इनमें से आधी से अधिक पहाड़ियों की ढलवाँ पीठें नंगी थीं, जबकि बाकी हिस्से पर छोटी-मोटी घास के गुच्छे नज़र आ जाते थे। कहीं-कहीं छोटे-मोटे कँटीले पौधे भी दिखाई दे जाते थे। इस इलाके में अनेकों छोटी-मोटी खाइयाँ थीं। ज्योंही आकाश में अँधेरा छाने लगा और बादलों से भरी हवा चलने लगी, झाड़ियाँ और चोटियाँ अधिक भयंकर और उजाड़ लगने लगीं। पर हेनरी के चेहरे पर उत्सुकता ही उत्सुकता नज़र आ रही थी। उसने अपनी काठी के नीचे की खाल में से एक बाल उखाड़ा और हवा में उड़ा दिया। इससे हवा का रुख पता चल गया। यह हमारे सामने की ओर उड़ गया। शिकार भी हमारे सामने की ओर ही था। इसलिए उस तक पहुँचने के लिए हमें अपनी चाल बहुत तेज़ करनी आवश्यक थी।

हम इस घाटी से धीरे-धीरे ऊपर चढ़े और खड्डों को पार करते हुए साँप जैसी टेढ़ी-मेढ़ी एक दूसरी घाटी में पहुँच गए। इसमें उतर कर हम पूरी तरह छिप गए। हम फिर ऊपर चढ़े और साथ की झाड़ियों में कुछ खोजते रहे। इसी समय अचानक हेनरी ने लगाम खींची और नीचे उतर पड़ा। लगभग दो फर्लांग दूर एक पहाड़ी पर भैंसों का एक जलूस सा चल रहा था। सभी बहुत धीरे-धीरे और उदास से बढ़ रहे थे। इनके पीछे दूर के एक गड्ढे से और भी भैंसे एक दूसरी हरी पहाड़ी पर चढ़ने लगे। तब एक बड़ा सा

सिर, अपने टूटे हुए सींगों के साथ, पास की एक घाटी से ऊपर निकला। तब बहुत धीरे-धीरे शाही चाल से एक-एक करके बहुत से जानवर आने लगे और अपने शत्रु से बिल्कुल बेखबर होकर घाटी पार करने लगे। तुरन्त ही हेनरी जमीन पर लेटकर घास और झाड़ियों में से होता हुआ अपने बेखबर शिकार की ओर बढ़ने लगा। उसके पास मेरी और उसकी अपनी दोनों बन्दूकें थीं। वह जल्दी ही मेरी नजर से ओझल हो गया। भैंसे अब भी निकलते आ रहे थे। कुछ देर तक चारों ओर चुप्पी छाई रही। मैं अपने घोड़े पर बैठा सोचता रहा कि वह क्या करना चाहता है? तभी अचानक दोनों बन्दूकों से गोली छूटने की आवाजें आईं और भैंसों की वह लम्बी कतार सामने की पहाड़ी पर से तुरन्त ही बिखर कर ओझल हो गई। अब हेनरी उठ खड़ा हुआ और उनकी ओर देखने लगा।

मैंने कहा, "तुम निशाना चूक गये हो।"

हेनरी ने कहा, "हाँ! आओ, चलो, चलें!" वह घाटी में उतरा और नये सिरे से बन्दूकें भर कर घोड़े पर सवार हो गया।

हम पहाड़ियों तक भैंसों के पीछे-पीछे चले। जब तक हम चोटी पर पहुँचे, भैंसे आँखों से ओझल हो चुके थे। परन्तु, कुछ दूरी पर घास में एक मरा हुआ पशु पड़ा था और उससे कुछ दूर एक और मौत से लड़ रहा था। हेनरी ने मेरा ध्यान खींचते हुए कहा, "तुमने देखा, मैं उस पर निशाना चूक गया हूँ!"

उसने करीब डेढ़ सौ गज दूर से गोलियां चलाई थीं और दोनों ही गोलियाँ उनके फेफड़ों में से पार हो गई थीं। भैंसे के शिकार में यही निशाना सबसे अच्छा माना जाता है।

अँधेरा बढ़ चला और साथ ही आँधी बढ़ती नजर आने लगी। हमने अपने घोड़ों को इन शिकारों के सींगों से बांध दिया। हेनरी तुरन्त ही चीर-फाड़ के काम में बहुत सुघड़ तरीके से लग गया। मैं भी उसकी नकल करने लगा। जब मैंने वह मांस अपने घोड़े की पीठ से बाँधना चाहा, तो वह डर और घृणा से कुछ बिदका। मांस बाँधने के लिए हम एक फालतू रस्सी काठी के पिछली ओर बाँधे रखते थे। बहुत देर बाद हम इस कठिनाई को पार कर पाए और तब इस नये भोजन के बोझ को, चुने हुए हिस्सों के रूप में, लेकर

हम चल पड़े। अभी हम लौट कर कुछ ही घाटियाँ पार कर पाये होंगे कि एकदम मूसलाधार वर्षा के झोंके पर झोंके सामने से हमारे चेहरों पर टकराने लगे। अभी सूर्य छिपने में एक घंटा बाकी था। फिर भी अँधेरा एकदम बहुत घना हो गया था। जमा देने वाले इस आँधी और तूफ़ान ने हमारी खाल को एकदम ही सुन्न कर दिया। पर हमारे घोड़ों की तेज़ और भारी चाल ने हमारी गरमी बनाए रखी। हम उन्हें इस तेज़ वर्षा में भी अपने चाबुकों से तेज़ चलने पर विवश करते रहे। यहाँ मैदान बहुत कठोर और समतल हो गया था। सामने हर ओर मैदानी कुत्तों की बनाई पगडण्डियाँ और उनकी मांदों के पास ताज़ा मिट्टी के ढेर बहुत अधिक दिखाई देने लगे। लगता था जैसे किसी खेत में सैकड़ों छोटी-छोटी पहाड़ियाँ खड़ी हों! इस पर भी न तो भौंकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी और ना ही किसी कुत्ते की नाक निकलती दीख रही थी। लगता था सभी अपनी माँदों के अन्दर गहरे चले गए हों। हमें उनकी सूखी और आराम देने वाली जगहों से ईर्ष्या होने लगी। घंटा भर बहुत कठिन सवारी करने के बाद हमें आँधी में से झाँकते हुए अपने तम्बू दिखाई देने लगे। उनके एक ओर से हवा ने उन्हें झुका दिया था, तो दूसरी ओर से वे फूल रहे थे। दूरी पर बँधे हुए घोड़े और खच्चर काँपते हुए एक दूसरे से सटकर खड़े हुए थे। ऊपर के तीन सूखे हुए पेड़ों में से गुज़रती हवा की सीटियाँ सुनाई दे रही थीं। एक संरक्षक की भाँति शॉ अपने तम्बू के दरवाज़े पर काठी डाले बैठा था और आराम से अपना पाइप पी रहा था। हमने माँस का बोझ उसके सामने ही जमीन पर उतार कर रखा। पर वह उसे देखकर चुप रह गया। इसके बाद आने वाली रात बहुत अंधेरी और भयंकर थी। पर अगली सुबह धूप इतनी अच्छी और सुहानी थी कि कप्तान ने भी भैंसे के शिकार पर जाने की चाह दिखाई। भैंसे नदी के किनारे इन मैदानों में अपनी मूर्खता के कारण इधर-उधर घूमते रहते थे। यह था प्लाट् के किनारे का वातावरण!

कप्तान को अचानक ही जो शिकार की सूझी, यह सब मौसम की वजह से ही नहीं था। वह सदा ही अपने शिकारी होने का दावा भरता था। पहली दोपहर को भी वह अपने कुछ साथियों के साथ शिकार पर निकला था, पर परिणाम में उन्हें अपने सबसे अच्छे घोड़े की हानि सहनी पड़ी। सौरेल ने

एक भैंसे का पीछा करते हुए उसे बुरी तरह घायल कर दिया था। कप्तान को अपने यूरोप के ढंग की ही घुड़सवारी का पता था, इसलिए सौरेल के इस प्रकार शिकारी ढंग पर खाई और खड्डों में से घोड़ा दौड़ाने को उसने अच्छी निगाह से न देखा। सौरेल की यह आदत राकी पर्वतमाला में इसी प्रकार घोड़ा दौड़ाने के कारण पड़ी थी। दुर्भाग्य से यह घोड़ा र— का था और सौरेल को उससे बहुत अधिक घृणा थी। लगता है कप्तान ने खुद भी एक भैंसे का पीछा करने की कोशिश की। हालाँकि वह अच्छा घुड़सवार था, पर तो भी जमीन के ऊबड़-खाबड़ होने के कारण वह जल्दी ही हिम्मत हार बैठा। उसे ऐसी जमीन से बहुत घृणा थी।

अगले दिन सुबह जब हम सैर से लौटे तो हेनरी चिल्लाया, "लारामी किले से ये दोनों—पैंपिन और, फ्रैडरिक—आए हैं।" हमें बहुत दिन से इस मिलन की इन्तजार थी। पैंपिन उस किले का मालिक था। वह भैंसों की खालों और बीवर जन्तुओं के व्यापार के लिए नदी की राह आया था। ये चीजें उसने पिछली सदियों के व्यापार में कमाई थीं। मेरे थैले में एक पत्र उसके नाम था, जो मैं उसे देना चाहता था। इसलिए हेनरी को उनकी नावें रुकवाने को कहकर मैं चिट्ठियाँ लेने के लिए अपनी गाड़ी की ओर चल पड़ा। गाड़ियाँ हमसे चार मील आगे चली गई थीं। आधे घंटे में मैं पत्र लेकर बहुत तेज चाल से वापिस लौटा। रास्ते में मैंने बहुत से आँधी के मारे टूटे हुए वृक्ष देखे और उनके पास से गुजरते हुए आदमियों और घोड़ों की पंक्तियाँ देखीं। यहाँ आने पर मुझे अजीब जमघट के दर्शन हुए। कुल किश्तियाँ ग्यारह थीं और वे सभी खालों से लदी हुई थीं। सब को किनारे से बाँध दिया गया था, ताकि तेज धार में वे बह न जाएँ। उनके खेनेवाले नाविक मैक्सिको के लोग थे। उनके असभ्य चेहरे मुझे देखने के लिए ऊपर उठ गए। एक किश्ती में बीचोंबीच पैंपिन सामान ढकने वाले तिरपाल पर बैठा हुआ था। वह मजबूत और डीलडौल वाले शरीर का था। उसकी आँखें चमकीली और सलेटी रंग की थीं। फ्रेडरिक भी अपने स्वामी के पास ही खड़ा था। वह भी लम्बा और कठोर ढाँचे वाला था। इनको छोड़कर कुछ पहाड़ी आदमी भी इस दल में थे, जिनमें से कुछ किश्तियों में ही लेटे हुए थे और कुछ किनारे पर टहल रहे थे कुछ ने आदिवासियों के समान भैंसों की खालें रंगकर ओढ़ी हुई थीं।

थी। एक की गालों पर लाल रंग का पाउडर मला हुआ था। ये सब दोगले थे, हालांकि उनमें फ्रांसीसी खून अधिक लगता था। उनमें से कुछ की आँखें आदिवासियों की तरह साँप-की-सी लगती थीं। कुछ भी हो वे सभी अपने को लाल रंग वाले आदिवासियों में खपा देने के लिए उत्सुक दीखते थे।

मैंने उस धनी—पैंपिन—से हाथ मिलाए और पत्र दिया। इसके बाद तुरन्त ही नावें धारा में बढ़ गईं। उन्हें जल्दी करनी आवश्यक थी, क्योंकि लारामी किले से अब तक की यात्रा पहले ही एक महीने से अधिक समय ले चुकी थी और नदी भी हर रोज़ उथली होती जा रही थी। दिन में पचासों बार नाव ज़मीन में फँस जाती थी। सच तो यह है कि प्लाट् नदी में प्रत्येक नाव खेने वाले को अपना आधा समय इन्हीं रेतीली उलझनों में बिताना पड़ता है। इनमें से स्वतन्त्र नाविकों की दो नावें इसी तरह उथले में उलझ गई थीं और इस प्रकार, सारे समूह से अलग हो गई थीं। यह घटना पौनी लोगों के गाँव के पास की है। उन लोगों ने इन्हें अकेला पाकर एकदम ही घेर लिया और इनकी हर चीज़ लूट कर ले गए। जाते-जाते मज़ाक के तौर पर वे इनके नाविकों और व्यापारियों को नाव पर बाँध कर डाल गए और छड़ियों से अच्छी मरम्मत कर गए।

हमने उस रात नदी के किनारे ही डेरा डाला। हमारे साथी प्रवासियों में एक बड़ा लड़का था, जिसकी आयु लगभग अठारह वर्ष की रही होगी। उसका सिर काफ़ी बड़ा और गोल-मटोल था। उसके चेहरे का रंग भी बुखार के बार-बार हमलों के कारण फीका पड़ गया था। टोप को वह ठोड़ी के नीचे कसकर पहना करता था। उसका शरीर ठिगना और गठीला था, परन्तु उसकी टाँगें ज़रूरत से ज्यादा लम्बी थीं। मैंने साँझ के समय उसे पहाड़ी पर खूब लम्बे-लम्बे डगों से चढ़ते देखा। वहाँ वह पहाड़ी की चोटी पर खड़ा हुआ बहुत अजीब लग रहा था। कुछ ही क्षण में हमें पहाड़ी के पीछे से उसके चीखने की आवाज़ सुनाई दी। हम में से कुछ साथी अपनी बदूकें सँभाले उसे बचाने के लिए दौड़ पड़े। उनका ख्याल था कि या तो उसे किसी आदिवासी ने धर दबोचा है या किसी काले भालू ने। सच यह था कि उसने खुशी के मारे वैसा शोर किया था। वह दो भेड़ियों के बच्चों के पीछे उनकी माँद तक दौड़ता गया था और वहाँ अपने घुटनों के बल झुककर

एक कुत्ते की भाँति उनकी घात में बैठा था।

सुबह होने से पहले ही इस लड़के ने एक नई गड़बड़ पैदा कर दी। आधी रात के समय पहरे की ज़िम्मेवारी उसकी थी। पर, पहरे पर आते ही उसने अपने सोने के लिए एक गाड़ी के नीचे कुछ बोरियाँ बिछा लीं और उन पर अपना सिर टिका कर आँखें बन्द करके सो गया। हमारे डेरे का पहरेदार यह सोचकर कि उसे दूसरी ओर से कोई वास्ता नहीं, अपने घोड़ों और खच्चरों की देखभाल से ही सन्तुष्ट रहा। उसने बताया कि रात को भेड़ियों का शोर कुछ अधिक था, पर इस पर भी किसी गड़बड़ का डर न था। पर, सुबह होते ही किसी भी घोड़े या अन्य पशुओं के खुर आदि का एक भी निशान वहाँ न बचा था। वह लड़का जब सो रहा था, तब भेड़िए घोड़ों की रस्सियों को काटकर उन्हें भगा चुके थे।

इस प्रकार हमें प्रवासियों साथ के यात्रा करने के र—के निश्चय का मज़ा चखना मिला। अब उन्हें इसी हालत में छोड़कर बढ़ जाना अच्छा न था। इसलिए हमने कुछ देर रुककर उनके पशुओं को ढूँढना अच्छा समझा। शायद पाठक यह जानना चाहें कि उस टौम नाम के लड़के को क्या दण्ड मिला? मैदानों में यात्रा के कानून के अनुसार ऐसे आदमी को अपने घोड़े की लगाम पकड़कर सारे दिन पैदल चलना चाहिए। हमें अपने साथियों पर गुस्सा आया कि उन्होंने उसे ऐसा कोई भी दण्ड नहीं दिया। पर यह भी सच है कि अगर वह हमारे दल में होता तो हम भी उसे कोई दण्ड न दे पाते। मज़ा तो यह था कि हमारे साथियों ने उसे दण्ड देने की बजाय उसकी अयोग्यता के कारण उसे पहरे से कतई छुट्टी दे दी। इसलिए अब वह खूब डटकर सोने लगा। ऐसा इनाम किसी भी प्रकार अच्छा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि इससे बाकी पहरेदारों का हौसला टूट जाता है। कौन चाहता है कि इस प्रकार अपनी नींद से जागकर कोई भी ऐसे कठिन पहरे के लिए तैनात किया जाए और अपनी नींद के अच्छे तीन घण्टे इस पहरे पर बिताए? खासकर तब, जब कि दूसरे खुर्राटे भर रहे हों।

अगले दिन अचानक ही एक शोर गूँज गया—"भैंसा! भैंसा!"

हमने देखा कि सामने एक बड़ा भैंसा अकेला ही घूम रहा था, जैसे उसे किसी भी साथी से नफ़रत हो। सम्भव था कि पहाड़ी के पीछे की ओर और

भी भैंसे हों। डेरे के नीरस और सुस्ती भरे जीवन से घबराकर मैं और शॉ अपने घोड़ों की काठियाँ कसकर और पिस्तौलें सँभालकर हेनरी के साथ शिकार की खोज में बढ़ गए। हेनरी का इरादा खुद शिकार का नहीं था। वह हमें मदद भर देना चाहता था। उसने अपनी बंदूक साथ रखी हुई थी, पर हम उन्हें बोझ समझकर पीछे छोड़ आए थे। हम पाँच-छः मील तक बढ़ते रहे, पर भेड़ियों, साँपों और मैदानी कुत्तों को छोड़कर हमें कुछ भी दिखाई न दिया।

शॉ ने कहा, "इस तरह तो काम नहीं चलेगा।"

"क्या ? कैसे काम नहीं चलेगा ?"

"एक तो यहाँ जंगल नहीं है और दूसरा यहाँ की ज़मीन ऐसी नुकीली घास से भरी है कि कोई भी घायल हो जाए। मेरे विचार में आज शाम तक हममें से कोई न कोई घायल अवश्य होगा।"

उसके इस विचार में कुछ सत्य था, क्योंकि यहाँ की ज़मीन घुड़दौड़ के लिए कोई विशेष अच्छी न थी। हम ज्यों-ज्यों आगे बढ़े यह और भी खराब होती गई। बाद में तो खाइयों, घाटियों और खड्डों से इस तरह भर गई कि इसे पार करना बहुत कठिन हो गया। अन्त में अपने से एक मील आगे हमने भैंसों का एक जत्था देखा। एक हरी ढलान पर कुछ भैंसे चर रहे थे, जबकि बाकी भैंसे नीचे के एक चौड़े खड्ड में इकट्ठे होकर आराम कर रहे थे। हम अपने को छिपाते हुए, कुछ घूमकर, उनकी ओर बढ़े और तब उनसे दो सौ गज़ की दूरी पर ही हम पहाड़ी पर चढ़ आए। यहाँ से हमें वे साफ़ दिखाई दे रहे थे। एक चट्टान के पीछे हम उतर पड़े और छिपकर अपनी पिस्तौल जाँचने लगे। फिर से घोड़ों पर चढ़कर हम पहाड़ी पार करके उनकी ओर एक तेज चाल से बढ़े। उन्हें भी अचानक ही हम से खतरा हो गया। जो पहाड़ी पर थे वे नीचे उतर पड़े और जो नीचे थे वे एक झुण्ड में इकट्ठे हो गए। तब वे सब मिलकर उछलते हुए एक-दूसरे से टकराते आगे बढ़ने लगे। हमने भी अपने घोड़ों को एड़ लगाई और पूरी चाल से उनका पीछा किया। ज्यों ही यह जत्था डर के कारण तोड़ता-फोड़ता आगे-आगे भागता हुआ एक दर्रे के पास पहुँचा, हम भी इसके पीछे-पीछे पहुँच गए। धूल के अंबार के कारण हमारी साँस घुट रही थी। हम उनके जितना ही समीप आये, उनका डर और उनकी

चाल उतनी ही बढ़ती गई। हमारे घोड़ों के लिए यह काम बिल्कुल नया था। इसलिए वे बहुत डरे हुए लग रहे थे। नज़दीक पहुँचने पर घबरा कर इधर-उधर बिदकने लगे। वे इन जानवरों में घुसने से कनरा रहे थे। अब ये भैंसे छोटी-छोटी टुकड़ियों में बँटकर अलग-अलग दिशाओं में भागने लगे। इस समय शॉ न जाने किधर छिप गया। हम दोनों ही एक-दूसरे के विषय में कुछ न जान पाए। मेरा घोड़ा पौंटियक इन पहाड़ियों के उतार-चढ़ाव पर एक जंगली हाथी की तरह बढ़ रहा था। उसके ज़ोरदार खुर जमीन पर हथौड़ों की तरह पड़ रहे थे। उसमें उत्सुकता और डर दोनों मिले-जुले थे। वह सामने के डरे हुए जत्थे को घेरने के लिए उतावला था, पर पास आते ही निराश होकर एक ओर को मुड़ जाता था। हमारे सामने के ये विद्रोही जानवर बहुत अच्छे नहीं लग रहे थे। उनकी सटाएँ और उनके सर्दियों में बढ़ आने वाले पीठ के बाल कम होते जा रहे थे। उनकी खाल खुरदरी हो चुकी थी। दौड़ते हुए उनके कुछ बाल हवा में भी मिल जाते थे। बहुत देर बाद मैंने अपने घोड़े को एक भैंसे के पीछे लगा दिया। मैंने बहुत कोशिश की कि मेरा घोड़ा इसकी बग़ल में पहुँच सके। पर, नाकाम रहने पर मैंने दूर से ही भैंसे पर गोली दाग़ दी, हालाँकि मेरी जगह बहुत अच्छी न थी। इस गोली की आवाज़ से मेरा घोड़ा इतना अधिक डरा कि मैं अपने शिकार से फिर पीछे पड़ गया। मेरी गोली भैंसे की पीठ में बहुत पीछे लगी थी, इसलिए उसे कुछ अधिक हानि न हुई। भैंसे को मारने के लिए कुछ खास जगहों पर निशाना साधना होता है, नहीं तो शिकार साफ़ बच निकलता है। यह जत्था पहाड़ी की चोटी पर बढ़ने लगा। मैं भी इसका पीछा करता रहा। जब मेरा घोड़ा पहाड़ी के दूसरी ओर उतरने लगा तो मैंने देखा कि दाईं ओर हेनरी और शॉ भी आराम से एक खड्ड में उतर रहे हैं। हमारे सामने की अगली पहाड़ी के पीछे सारे भैंसे छिपते जा रहे थे। उनकी छोटी-छोटी पूँछें तनी हुई थीं और उनके खुर धूल में से चमक रहे थे।

इसी समय मैंने शॉ और हेनरी को देखा। वे मुझे पुकार रहे थे। इस दशा में घोड़े का रोकना बहुत ही कठिन था, क्योंकि वह बहुत तेज़ी में था। मेरे पास उसे रोकने के लिए वैसे साधन भी न थे, क्योंकि मैं रास का एक ज़रूरी हिस्सा डेरे पर ही छोड़ आया था। मुँह में फँसाए जाने वाले इस हिस्से के बिना उसे एकदम रोकना कठिन था। मेरा घोड़ा इतना मज़बूत और कठोर

था कि शायद ही कभी कोई घोड़ा उससे अधिक इन मैदानों और खड्डों में दौड़ा होगा। परन्तु इस नए शिकार के नज़ारे ने उसे डर से भर दिया और इसीलिए जब वह पूरी तेज़ी पर होता तो उसे रोकना कठिन होता था। पहाड़ी की चोटी पर पहुँच कर मुझे भैंसों का निशान तक भी दिखाई न दिया। वे सब पहाड़ियों और खड्डों में छिप चुके थे। मैंने अपनी पिस्तौलें फिर से भरीं और जब तक उन्हें सामने की एक तलहटी में घूमते हुए फिर से न देख लिया, बढ़ता ही रहा। इस समय तक इन भैंसों का डर कुछ कम हो गया था। मेरा घोड़ा इनके बीच घुस गया। वे इधर-उधर बिखर गए और मुझे फिर से उनका पीछा करना पड़ा। बारह के लगभग भैंसे मेरे सामने पहाड़ियों पर चढ़ रहे थे और उनके चढ़ाव-उतार पर अपने भारी-भरकस शरीर को लेकर बढ़ रहे थे। एड़ और चाबुक लगाने पर भी मेरे घोड़े ने पीछा करने में आना-कानी की। पर कुछ दूरी पर एक भैंसा अपने जत्थे से कुछ पीछे पड़ गया। मैंने बहुत कठिनाई से अपने घोड़े को उसके कुछ पास तक पहुँचने पर मजबूर किया। भैंसे की पीठ पर पसीना आया हुआ था, वह तेज़ साँसें ले रहा था और उसकी जीभ फुट भर नीचे तक लटक रही थी। धीरे-धीरे मैं उससे आगे बढ़ गया और घोड़े को उसके साथ चलाने लगा। अचानक ही भैंसे ने अपनी चाल धीमी कर दी और हमारी ओर घूमकर गुस्से और बेचैनी के साथ अपने भारी-भरकम सिर और सींगों को नीचे झुकाकर हमले के लिए तैयार हो गया। मेरा घोड़ा डर के मारे एक तरफ़ उछल गया। मैं लगभग नीचे गिर ही गया था, क्योंकि ऐसे झटके के लिए तैयार न था। मैंने अपनी पिस्तौल घोड़े के सिर पर दागी। पर, उसी समय भैंसा फिर से भागने लगा। मैंने अपनी गोली उसी पर दाग दी। तब मैंने फिर से लगाम खींची और अपने साथियों से मिलने का निश्चय किया। समय बहुत अधिक हो गया था। घोड़ा पूरी तरह साँस नहीं ले पा रहा था। उसके पासों में पसीना बुरी तरह छूट रहा था। मैं खुद भी अनुभव कर रहा था, जैसे गरम पानी में भीग गया हूँ। भविष्य में कभी बदला लेने का इरादा करके मैं अपनी जगह और राह की बात सोचने लगा। मेरी यह खोज ऐसी ही थी, जैसे महान सागर में कोई जहाज़ निशान खोजना चाहे। मुझे खयाल न था कि मैं कितने मील और किस दिशा में भागता आया हूँ। मेरे चारों ओर यह विस्तृत मैदान टीलों और खाइयों के रूप में फैला हुआ

था। एक भी पहचाना निशान मुझे दिखाई न दे रहा था। मेरे गले में दिशा देखने की एक घड़ी लटकी हुई थी। मैंने उत्तर की ओर बढ़ने का निश्चय किया। मैं यह नहीं जानता था कि प्लाट् यहाँ से अपना रास्ता बदल लेती है। इसलिए मैं दो घण्टे तक इसी दिशा में बढ़ता रहा। ज्यों-ज्यों मैं आगे बढ़ता गया, मैदान का रंग बदलता गया। अब खाइयाँ कुछ छोटी और हलकी थीं, पर प्लाट् नदी या किसी आदमी का कोई भी निशान दिखाई नहीं दिया। चारों ओर जंगल-ही-जंगल फैला हुआ दिखाई दे रहा था और मैं अपने उद्देश्य से हमेशा की भाँति दूर था। अब मुझे अपने ही भटक जाने का डर हुआ और घोड़े पर चढ़े-ही-चढ़े मैंने अपने सारे जंगल के ज्ञान को बटोर कर उसका लाभ उठाना चाहा, ताकि मैं इस आफ़त से बच सकूँ। मुझे सूझा कि इस समय भैंसे ही मुझे रास्ता दिखा सकते हैं। अचानक ही मुझे उनके द्वारा बनाया हुआ, नदी की ओर जाने वाला, एक रास्ता मिल गया। मेरी राह से यह एकदम दाईं ओर मुड़ गया था। ज्यों ही मैंने घोड़े को इस दिशा में मोड़ा, उसके खड़े कानों और स्वतन्त्र चाल ने मुझे बता दिया कि मेरी दिशा बिल्कुल ठीक थी।

इस बीच मेरी यह खोज अकेली ही रही थी। इस सारे इलाके में चारों तरफ भैंसे-ही-भैंसे अनगिनत रूप में, फैले हुए दिखाई दे रहे थे। नर, मादा और कट्टों के रूप में कतारें बाँधकर झुंड के झुंड सामने की ढलानों पर इकट्ठे थे। वे दाएँ और बाएँ पहाड़ियों पर चढ़ रहे थे। सामने के पीले से टीले पर उनके काले-काले निशान ही दिखाई दे रहे थे। कभी-कभी किसी खुर्राट अकेले बूढ़े भैंसे को मैं चौंका देता था। वह या तो चर रहा होता या सो रहा होता था। मेरे समीप पहुँचते ही वे उछल पड़ते, मेरी ओर जड़-से बनकर देखने लगते और तब एकदम भाग जाते। यहाँ हिरण भी बहुत अधिक थे। भैंसों के पास रहने पर वे भी तन जाते हैं। वे मुझे देखने के लिए रुकते, अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से कुछ देर देखते, पर तभी अचानक ही कुलाँचें भरकर सामने के फैले हुए मैदान पर निकल कर आराम करने लगते। मानों वे भी किसी घुड़-दौड़ के घोड़े हों। यहाँ के बुरे दीखने वाले भेड़िये भी अपनी खड्डों और रेतीली खाइयों से मुझे झाँकने लगे। मुझे मैदानी कुत्तों के गाँवों में से कई बार गुजरना पड़ा। वे अपनी माँद के सामने बैठे होते थे और अक्सर भौंकते रहते

थे। हर चीख के साथ उनकी पूँछ उठ जाती थी। ये मैदानी कुत्ते अपने साथियों के चुनाव में बहुत सधे हुए नहीं होते। इनके घेरे में ही सैंकड़ों साँप और छोटे-छोटे, गोल आँखों वाले, उल्लू इनके पड़ोसियों की भाँति बसे रहते हैं। यह मैदान जीवन से भरा-पूरा लगता है। मैं बार-बार पशुओं से भरी हुई पहाड़ियों को देखता जाता था। मुझे लगा कि मैंने कुछ घुड़सवार देखे हैं। जब मैं पास पहुँचा तो आदिवासियों के आने की मेरी उम्मीद और डर मिट गया। सामने भैंसों का जत्था था, उनका नहीं ! इन सारे पशुओं में एक भी आदमी की शक्ल दिखाई न दी।

जब मैं भैंसों की राह पर मुड़ा, तब मैदान बदला हुआ नज़र आने लगा। कहीं-कहीं कोई एक-आध भेड़िया नज़र आ जाता। वे दाईं या बाईं ओर बिना देखे कुछ इस तरह दौड़ जाते, जैसे उन्होंने कोई अपराध किया हो। चिन्ताओं के हट जाने के कारण अब मैं अपने चारों ओर की चीजों को अधिक अच्छी तरह देख सकता था। मैंने पहली बार अनुभव किया कि यहाँ से पूरब की ओर पाये जाने वाले किसी भी जन्तु की अपेक्षा यहाँ के जन्तु काफी भिन्न थे। बड़ी-बड़ी तितलियाँ मेरे घोड़े के सिर पर ही उड़ रही थीं। यहाँ की टिड्डियाँ भी काफ़ी चमकदार थीं। ये ऐसे-ऐसे पौधों पर मंडरा रही थीं, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा था। सैंकड़ों छिपकलियाँ और गिरगिटें इधर से उधर दौड़ती फिर रही थीं। लगता था जैसे बिजली कौंध गई हो।

नदी से मैं बहुत दूर निकल चुका था। भैंसों के इस रास्ते पर मुझे काफी अधिक दौड़ना पड़ा। तब कहीं जाकर मुझे एक टीले की चोटी पर से चमकती हुई प्लाट् नदी नज़र आई। चारों ओर रेतीले तट फैले हुए थे। इससे कुछ पार चमकती हुई पहाड़ियों की एक कतार दिखाई दे रही थी। वह मानों आकाश तक उठी हुई थी। जहाँ मैं खड़ा था वहाँ से दूर-दूर तक कहीं भी एक भी पेड़-पौधा या कोई आदमी दिखाई न देता था। चारों ओर धूप से तपी हुई भूमि ही नज़र आती थी। नदी से कुछ ही दूर मुझे पगडंडी मिल गई। अभी तक हमारा दल उधर से गुजरा न था, इसलिए मैं दाईं ओर मुड़ कर उनसे मिलने चला। घोड़े की तेज चाल ने बता दिया कि मेरा रास्ता ठीक था। सुबह डेरा छोड़ते हुए मैं कुछ बीमार था। अब इस छह-सात घंटे की घुड़-दौड़ ने मुझे बिल्कुल थका दिया। इसलिए मैंने घोड़े को रोक कर

उसकी काठी खोल दी और उसकी रस्सी को हाथ से बाँध कर मैं, काठी का सिरहाना बना कर, वहीं सो गया और अपने दल के आने की प्रतीक्षा करने लगा। इस बीच मेरा मन उन घावों पर विचार करता रहा, जो मेरे घोड़े ने इस बीच पाए थे। कुछ देर बाद सफेद गाड़ियाँ मैदान में दूर से आती हुई दिखाई दीं। लगभग उसी समय सामने की पहाड़ियों से दो घुड़सवार उतरते दिखाई दिए। ये दोनों हेनरी और शॉ थे, जिन्होंने सुबह कुछ देर तक मुझे ढूँढने के बाद एक ऊँची पहाड़ी पर खड़े होकर मेरी प्रतीक्षा करनी उचित समझी। वे भी अपने घोड़ों को बाँधकर सो गये थे, ताकि मैं भी उन्हें पहचान सकूँ। हमें प्रवासियों से पता चला कि खोये हुए पशु दोपहर तक मिल गए थे। साँझ होने से पहले-पहले हम आठ मील का रास्ता और तै कर चुके थे। आज जब मैं अपनी डायरी खोलता हूँ तो मुझे ये शब्द उस दिन के सम्बन्ध में लिखे मिलते हैं।

"जून ७, १८४६—चार आदमी गायब हैं—र—सोरेल, तथा दो प्रवासी साथी,—वे सुबह एक भैंसे के पीछे के लिए निकले थे. पर अब तक भी नहीं लौटे हैं। पता नहीं वे जीवित हैं या नहीं ?"

मुझे याद है कि इस अवसर पर हमारी एक सभा हुई थी। हम आग के चारों ओर इकट्ठे हुए, क्योंकि हेनरी आग पर ही गोलियाँ ढालने में लगा हुआ था। आजकल ऐसे प्रत्येक कठिन अवसर पर वह ही हमारी एकमात्र शरण होता था। कप्तान अपना भारी चेहरा लिए हुए हेनरी के पास पहुँचा। जैक के चेहरे से भी यह उदासी साफ़ झलक रही थी। वह कप्तान के पीछे ही चल रहा था। तभी प्रवासी भी अपनी-अपनी गाड़ियों में से आकर इसी जगह पर इकट्ठे हो गए। उनके ग़ायब होने के विषय में कई प्रकार की बातें बताई गईं। एक दो प्रवासियों ने बताया कि उन्होंने पशुओं का पीछा करते हुए उन्हें कुछ दूरी पर कुछ और आदिवासियों द्वारा घेरे और पीछा किए जाते हुए देखा था। वे लोग पहाड़ियों में भेड़ियों जैसे दौड़ रहे थे इस बात को सुन कर कप्तान का चेहरा और भी उदास हो गया और वह बोला, "ऐसे जंगली इलाके में से होकर यात्रा करना सचमुच खतरनाक है।" जैक ने भी इस राय में हामी भरी। हेनरी ने कुछ भी सम्मति न दी। उसने केवल इतना ही कहा, "हो सकता है वह भैंसे की खोज में

बहुत दूर निकल गया हो; या किसी आदिवासी ने उसे मार डाला हो, या वह गुम हो गया हो ! मैं कुछ नहीं कह सकता ।"

सुनने वालों को इतनी टिप्पणी से ही संतुष्ट रहना पड़ा । प्रवासी अपने बिछुड़े साथियों के विषय में जानना तो चाहते थे, पर वे इस घटना से भयभीत हुए न लगते थे । वे अपनी-अपनी गाड़ियों की ओर लौट गए । कप्तान भी कुछ सोचता हुआ अपने तम्बू में चला गया । शॉ और मैं भी अपने तम्बू में लौट आए ।

— :o: —

८ : साथियों से विदाई

आठ जून के दिन दोपहर ग्यारह बजे हम प्लाट् नदी के दक्षिणी मोड़ पर पहुँचे। इसे यहीं से पार किया जाता है। राह में मीलों तक रेगिस्तान ही फैला हुआ था। उसमें कहीं भी हरयाली न थी। बीच-बीच में कुछ पहाड़ियाँ घास से ढकी हुई सिर उठाए दीख पड़ती थीं। पर इनके बीच में धूप में चमकती रेत ही फैली हुई थी। मैदान की ही सतह पर बहने वाली नदी भी रेत का ही फैलाव मात्र दीखती थी। यह आधा मील चौड़ी थी। इसमें पानी बह अवश्य रहा था, पर इतना कम था कि नीचे का तला छिप नहीं पा रहा था। इतनी चौड़ी होने के कारण इसकी गहराई कहीं भी डेढ़ फुट से अधिक नहीं है। इसके किनारे रुक कर हमने कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और भैंसे के माँस का भोजन पकाया। दूसरे किनारे बहुत दूर पर एक हरी-भरी चरागाह थी जहाँ हमें प्रवासियों के एक डेरे के बहुत से तम्बू और गाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। हम अपने बिल्कुल सामने पानी के किनारे कुछ मनुष्यों और पशुओं को साफ़-साफ़ देख रहे थे। इसी समय चार या पाँच घुड़सवार नदी में घुसे और दस मिनट में इसे पार करके ढीली रेत के दूसरे किनारे पर चढ़ आए। उन लोगों के चेहरे बड़े भद्दे लग रहे थे। वे पतले थे और उनकी खाल का रंग धूप के कारण गाढ़ा पड़ चुका था। उनके चेहरों से चिन्ता का बोझ टपक रहा था। उनके ओठ तने हुए थे। उनके लिए चिन्ता का कारण भी था। उन्हें यहाँ डेरा डाले तीन दिन हो चुके थे। आते ही पहली रात उनके एक सौ तेईस पशु भेड़ियों द्वारा भगा दिये गये थे। यह उनके पहरेदारों की असावधानी के कारण ही हुआ था। ऐसी भयंकर और निराशा देने वाली दुर्घटना उनके साथ पहली ही बार न घटी थी। इन बेचारों ने जब से अपने इलाके छोड़े, तब से ही कोई न कोई दुर्भाग्य इन पर टूटता रहा। इनके दल के बहुत सारे लोग मर चुके थे। एक साथी को पोनियों ने मार डाला था। एक ही सप्ताह पहले डाकोटा लोगों ने इनके सारे अच्छे-अच्छे घोड़े लूट लिए थे। अब इनके पास बहुत ही थोड़े घोड़े रह गए थे। जो थे, वे भी बहुत घटिया किस्म के थे। उन्होंने हमें

बताया कि एक दिन साँझ के समय इस नदी के किनारे उन्होंने डेरा डाला था और अपने बैल, गाय आदि चरागाह में खुले छोड़ दिए थे। उनके घोड़े इस से भी कुछ दूर चर रहे थे। अचानक ही इसी समय उन्हें सामने की पहाड़ियों पर आदिवासियों के घुड़सवार जत्थे घिरते दिखाई दिए। ये लोग संख्या में छः सौ से अधिक ही थे। एक बड़े शोर के साथ ये डेरे पर टूट पड़े और प्रवासियों को डराते हुए उनसे कुछ गज़ दूर तक आ पहुँचे। तभी अचानक इन्होंने घोड़ों को घेर लिया और पाँच मिनट में ही अपने इस शिकार को लेकर सामने की पहाड़ियों के दर्रों से निकल कर गायब हो गए।

अभी ये लोग हमें अपनी हालत बता ही रहे थे कि कुछ और लोग भी हम तक आते दिखाई दिए। ये कोई और न थे; र—और उनके साथी ही थे, जोकि किसी दुर्भाग्य के शिकार तो न हुए थे, पर जो शिकार की खोज में बहुत दूर अवश्य निकल गए थे। उनके कहने के अनुसार उन्हें कोई आदिवासी तो न दिखाई दिया, पर भैंसे लाखों की संख्या में ज़रूर दिखाई दिए। र—और सोरेल के घोड़ों की पीठ पर काफ़ी मांस लटक रहा था।

प्रवासियों ने नदी फिर से पार की और चले गए। हमने भी उनके पीछे चलने की तैयारी की। शुरू में बैलों वाली गाड़ी किनारे की रेत में धँस गई और बहुत धीरे-धीरे बढ़ने लगी। कभी-कभी तो बैलों के खुर पानी से अछूते ही रह जाते थे और कभी, अगले ही क्षण, कुछ गहरी पानी की धार में धँसे होते। वे किनारे से बहुत धीरे-धीरे बढ़ने लगे और बहुत देर बाद नदी के बीच में दिखाई दिए। इससे अधिक कठिन मौका हमारी खच्चरों की गाड़ी के लिए था, क्योंकि वह ऐसी तेज़ धार को पार करने के लायक न थी। हम इसे चिन्ता से तब तक देखते रहे जब तक कि यह पानी में बहुत दूर पहुँचकर एक सफेद निशान के रूप में न दीखने लगी। यह रेत में फँस गई थी। खच्चरों के पाँव सँभल नहीं पा रहे थे और पहिए भी गहरे से गहरे धँसते जा रहे थे। धीरे-धीरे पानी गाड़ी के तले पर आना शुरू हुआ और उसने तमाम चीज़ों को गीला करना शुरू कर दिया। इधर के किनारे पर खड़े हम तुरन्त ही इसे निकालने को बढ़े। तमाम मर्द पानी में कूद पड़े और खच्चरों के साथ ताकत लगाकर उन्होंने बड़ी कठिनता से इस गाड़ी को बाहर निकाला और दूसरी ओर पहुँचाया।

जब हम दूसरे किनारे पर पहुँचे तो कुछ असभ्य-से लोगों ने हमें घेर लिया। वे भद्दे और बड़े डील-डौल के न थे, पर तो भी कठिन परिश्रम के कारण कठोर अवश्य हो गए थे। अपनी शक्ति का अपने इलाकों में कोई उपयोग न देखकर, वे इन मैदानों में निकल आए थे। उनमें यहाँ की कठि-नाइयों से हौसला और शक्ति और अधिक बढ़ गई। कभी यही हौसला और शक्ति उनके जर्मन पुरखों के अन्दर भी थी, जब उन्होंने अपने जंगलों से निकलकर यूरोप पर छाते हुए सारे रोमन साम्राज्य को हथिया लिया था। इसके एक पखवाड़े बाद, जब हम लारामी किले में रुके हुए थे, यह दल भी उधर से गुज़रा। उनका एक भी खोया हुआ पशु वापिस न मिला था, हालाँकि वह उनकी खोज में एक सप्ताह तक वहीं रुके रहे थे। उन्हें लाचार होकर अपने सामान और खाने-पीने की चीजों को पीछे छोड़ना पड़ा। अगली यात्रा के लिए उन्हें गायों और बछड़ों को गाड़ियों में जोतना पड़ा। इस यात्रा का सबसे कठिन हिस्सा अब भी बचा हुआ था।

यह बात ध्यान देने के योग्य है कि इस जगह हमें कई बार पुराने ढंग की कुछ टूटी-फूटी मेज़ें या सनावर की लकड़ी का कुछ और सामान यहाँ पड़ा हुआ मिल जाता था। इनमें से बहुत चीज़ें उस जमाने की थीं, जब अमरीका अंग्रेजों के चंगुल में फँसा एक उपनिवेश था। शायद यह सामान इंगलैंड से लाया गया था। यह अपने स्वामियों के भाग्य के साथ-साथ कभी एलेथनी को पार कर ओहियो या केन्टुकी ले जाया गया था और तब वहाँ से इलिनोइस अथवा मिसूरी की ओर गया था। अब यही सामान इन ओरेगन जानेवाले यात्रियों की गाड़ियों में समा गया। परन्तु, रास्ते की कठिनाइयाँ कभी कोई नहीं सोच पाता है। ये ही मनपसंद निशानियाँ जल्दी ही धूप के कारण इन गरम मैदानों में खराब हो जाती हैं।

हमने अपनी यात्रा फिर शुरू की। अभी हम मील भर भी न गए होंगे कि पीछे से र—चिल्ला उठा, "आज हम यहीं डेरा डालेंगे।"

"तुम क्यों डेरा डालना चाहते हो? अभी तो तीन भी नहीं बजे। सूर्य की ओर देखो।"

"हम तो यहीं रुकेंगे।"

हमारे हिस्से में इतना ही उत्तर मिला। देस्लारियर पहले ही काफ़ी आगे

अपनी गाड़ी ले जा चुका था। दूसरी गाड़ियों को रास्ते से हटता देखकर उसने भी अपनी गाड़ी उधर ही मोड़नी शुरू की। हमने पीछे से आवाज दी, "देस्लारियर ! तुम बढ़ते रहो !" और वह छोटी गाड़ी फिर से बढ़ने लगी। ज्यों-ही हम कुछ आगे बढ़े, हमें अपने पीछे अपने साथियों की गाड़ी टूटने और उसके रुकने की आवाज सुनाई दी। हमने सुना राइट् अपने खच्चरों पर सैंकड़ों गालियों की बौछार कर रहा था। शायद उसका गुस्सा किसी और पर था, पर वह उसे इन असहाय जानवरों पर निकाल रहा था।

इस प्रकार की कोई न कोई घटना होती ही रहती थी। हमारा अंग्रेज दोस्त र—हमें हर तरह से तंग करने का इरादा किए हुए था। उसकी हम से सहानुभूति न थी। वह जानता था कि हमें यात्रा निपटाने की जल्दी थी, पर वह इसे जानकर लम्बा डाल रहा था। इसीलिए वह कहीं भी कभी भी बिना सोचे समझे डेरा डालने की जिद्द कर बैठता था। कभी कहता था कि पन्द्रह मील का सफर दिन भर में बहुत होता है, तो कभी कुछ और कहता। हमने जब देखा कि हमारी इच्छा कभी मानी नहीं जाती, तब हमने अपनी राह तय करने की जिम्मेवारी अपने हाथ में ले ली। हम र—की घृणा को स्वीकार करके भी आगे आगे बढ़ने लगे और जहाँ भी मुनासिब समझते डेरा डाल लेते। हमें इस बात की अधिक परवाह न थी कि हमारे साथी वहीं डेरा डालते हैं या नहीं ? हालाँकि वे लोग अपने गुस्से से भरे और उदास चेहरे लिए हमारे आस-पास ही अपना तम्बू गाड़ते थे।

इस तरह से साथ-साथ यात्रा करना हमारी रुचि के अनुकूल न था। इस लिए हमने अलग होने की तैयारी शुरू कर दी। हमने अगली सुबह बहुत जल्दी ही डेरा छोड़ने का निश्चय किया और लारामी किले तक बहुत जल्दी और तेजी से, चार पाँच दिन में ही पहुँच जाने का निश्चय किया। कप्तान तुरन्त ही घोड़ा दौड़ाता हुआ हम तक आया। हमने अपनी बात उसे समझा दी।

उसने कहा, "सच कहता हूँ, यह अजीब यात्रा है।" उसके दिमाग में यह बात समा गई थी कि हम लोग दल को छोड़कर जा रहे हैं। उसकी नजर में यह बात यात्रा के इस मौके पर बहुत खतरनाक थी। उसने हमें सुझाया कि हम कुल चार थे और उसके दल में अब भी सोलह आदमी थे। क्योंकि हम

आगे-आगे चलेंगे, इसलिए सारी मुसीबतें भी हम पर ही टूटेंगी। उसका चेहरा अब भी ढीला न पड़ा और वह अपनी पुरानी बात को दोहराता हुआ फिर से अपने साथियों से सलाह के लिए उनकी ओर मुड़ गया। अगली सुबह सूर्य निकलने से पहले ही हमारा तम्बू उखाड़ा जा चुका था। हमने अपने अच्छे घोड़े गाड़ी में जोते और चल पड़े। चलने से पहले हमने अपने मित्रों और प्रवासियों से विदाई के लिए हाथ मिलाए। उन सबने हमारी यात्रा की सुरक्षा के लिए अपनी शुभकामना प्रकट की। हो सकता है उनमें से कुछ के दिल में यह भाव भी रहा हो कि अगर हम पर आदिवासी टूट पड़ें तो अधिक अच्छा होगा। कप्तान और उसका भाई एक पहाड़ी की चोटी पर अपने लबादों में लिपटे खड़े थे। वे इतने धुंधले से दीख रहे थे जैसे वह कुहरे की आत्माएं हों, उनकी निगाह घोड़ों के समूह पर लगी हुई थी। हम ज्यों ही उनके नीचे से निकले हमने अलविदा कहते हुए उनकी ओर हाथ हिलाए। कप्तान ने बहुत ही अच्छी तरह से हमें प्रणाम किया। जैक ने भी उसकी नकल असफलता से करनी चाही।

लगभग पाँच मिनट में ही हम पहाड़ियों की तलहटी तक पहुँच गए। पर यहाँ हमें रुकना पड़ गया। मेरा घोड़ा हेन्ड्रिक गाड़ी में जुता हुआ था। वह आगे न बढ़ने की कसम खा चुका था। देस्लारियर ने हर तरह से उसे मारपीट कर बढ़ाने की कोशिश की, पर वह थक-हारकर रह गया। लगता था, जैसे घोड़ा एक चट्टान बनकर रह गया था और अपने दुश्मन की ओर बड़े गुस्से से देख रहा था। बदले का मौका मिलते ही वह इतने जोर से उछला कि गाड़ीवान बहुत कठिनता से हवा में उछलने से बच सका। यह काम कोई फ्रांसीसी आदमी ही कर सकता था। तब शॉ और उसने दोनों ओर से घोड़ों को पीटकर ठीक करना चाहा। घोड़ा पहले तो कुछ देर चुप खड़ा रहा, पर जब वह अधिक मार न खा सका तो उसने उछलना-कूदना शुरू कर दिया। इससे गाड़ी और उसमें पड़े सामान को खतरा हो गया। हमने पीछे डेरे पर निगाह डाली। वह पूरी तरह से दिखाई दे रहा था। हमारे साथी हमारी ही नकल करके अपने तम्बुओं को उखाड़ रहे थे और पशुओं को इकट्ठा कर रहे थे।

मैं बोल पड़ा, "इसे गाड़ी से अलग कर दो।" मैंने अपनी काठी पौंटियक

से उतारकर हेन्ड्रिक पर रखी। पौंटियक को गाड़ी में जोत दिया गया। अब देस्लारियर ने फिर से आगे बढ़ने की आवाज दी। पौंटियक पहाड़ी पर ऐसे चढ़ने लगा, जैसे उसके पीछे बँधी गाड़ी का बोझ एक पंख जितना हो। हमने चोटी पर चढ़कर देखा कि हमारे साथियों की गाड़ियाँ अभी चलनी ही शुरू हुई थीं। हमें तनिक भी डर नहीं था कि वे हमें पार कर जाएँगे।

राह छोड़कर हम इस इलाके में से सीधा बढ़ने लगे। नदी की मुख्य धारा तक पहुँचने के लिए हमने सबसे छोटी और सीधी पगडंडी पकड़ी। तुरन्त ही एक गहरी घाटी हमारे सामने आ पड़ी। हम इसके किनारे-किनारे बढ़कर कम ढलान वाली जगह तक पहुँचे और तब इसमें बहुत हौले-हौले उतर पड़े। 'ऐश हॉलो' नाम की वन घाटियों के बाद हम दोपहर बिताने के लिए वर्षा के पानी के एक जौहड़ के पास रुके। पर तुरन्त ही फिर हम बढ़ चले और साँझ होने से पहले-पहले यहाँ से दक्षिण की ओर प्लाट् नदी के किनारे की घाटियों में उतर पड़े। हमारे घोड़े रेत में गिट्टों तक धँसकर चलने लगे। सूरज आग की तरह तप रहा था। हवा में मक्खियाँ और मच्छर भरे पड़े थे।

अन्त में हम प्लाट् पर पहुँच गए। इसके किनारे पाँच-छः मील तक चलने के बाद, ठीक सूरज छिपने के समय हमने एक बड़ी चरागाह में सैकड़ों पशु और उनके पीछे प्रवासियों के अनेकों डेरे देखे। उनमें से कुछ लोग संदेह में डूबकर हमसे मिलने बढ़ आए। जब उन्होंने देखा कि हम सभी उनसे अलग शक्ल और लिबास लिए पहाड़ियों में से निकल रहे हैं और हमारी संख्या भी चार से अधिक नहीं है तब उन्होंने समझा कि हम खूँखार मोर्मन लोगों में से ही हैं। वे इन लोगों से मुकाबला न करना चाहते थे। जब हमने उन्हें अपना असली परिचय दिया, तब उन्होंने खुले दिल से हमारा स्वागत किया। उन्होंने इस बात पर अचरज प्रगट किया कि इतने थोड़े लोगों का कोई दल इतने बड़े इलाके में बढ़ने का साहस कैसे कर सकता है ? हालाँकि आदिवासी और पशु फँसाने वाले इससे भी छोटे दलों में निकलते हैं। उन लोगों की गाड़ियों की संख्या पचास के लगभग रही होगी। चारों ओर तम्बू गड़े हुए थे। इस प्रकार एक घेरा सा बनाया हुआ था। हम उनके खेमे तक गए। उनके घोड़े तम्बुओं के घेरे में ही बँधे हुए थे। चारों ओर जलती हुई आग की

हलकी-हलकी रोशनी चमक रही थी और बच्चों और औरतों की शकलें दिखाई दे रही थीं। इस प्रकार का पारिवारिक दृश्य बहुत ही खिंचाव से भरा था। परन्तु, हम उन लोगों के सवालों की बौछार से तंग आकर वहाँ से बहुत जल्दी ही निकल आए। उनके मुकाबले में उत्तरी अमरीकनों की उत्सुकता भी कम ही ठहरती है। उन्होंने हम से नाम, धाम और उद्देश्य आदि सब कुछ विस्तार से पूछा। जब उन्होंने हमारे काम-धंधे के बारे में पूछा, तो हमें बड़ा अजीब लगा। उसे लोगों की नज़र में ऐसे इलाके में घूमने का मतलब केवल रुपया बटोरना हो सकता है। इस पर भी हमें वे लोग अच्छे लगे। वे साफ़ दिल, उदार और सभ्य थे, हालाँकि वे सीमान्त के कम असभ्य इलाके से ही आ रहे थे।

हम उनसे एक मील आगे बढ़ कर डेरे के लिए रुके। पहरे के लिए हमारे पास आदमी नहीं थे और उससे थकान भी अधिक होती। इसलिए हमने आदिवासियों का ध्यान बचाने के लिए अपनी आग बुझा दी और घोड़ों को अपने आस-पास चारों ओर बाँध लिया। इस प्रकार सुबह होने तक हम निश्चित होकर सोते रहे। अगले तीन दिन तक हम बिना रुके बढ़ते रहे। तीसरी शाम हमने 'स्कॉट्स ब्लफ़' नाम के सोते के पास डेरा डाला।

हेनरी और मैं सुबह जल्दी ही निकल पड़े और इस सोते के पश्चिम की ओर निकलकर मैदान में बढ़ने लगे। तुरन्त ही हमारी निगाह में सामने कुछ मील दूर की पहाड़ियों पर से उतरती हुई भैंसों की एक कतार दिखाई दी। हेनरी ने अपने घोड़े की लगाम खींची और मैदान के पार बहुत सधी हुई निगाह से झाँकते हुए उसमें असल बात खोज निकाली। वह बोला, "ये आदिवासी हैं! लगता है बूढ़े स्मोक के गाँव के लोग हों। आओ, हम चलें! मेरे प्यारे घोड़े बढ़ो!" और, तब घोड़े की पीठ पर झुकते हुए तेजी से आगे बढ़ने लगा। मैं भी उसकी बगल में होता हुआ बढ़ा। बहुत जल्दी मैदान में लगभग दो मील पर एक काली शाखा-सी हिलती दिखाई दी। यह शक्ल बड़ी-से-बड़ी होती गई और तब एक आदमी और घोड़े के रूप में बदल गई। हमने देखा कि एक नंगा आदिवासी पूरी तेज़ी से हमारी ओर बढ़ा आ रहा था। हमसे एक फलाँग की दूरी तक पहुँचकर उसने एक गोल चक्कर काटा और मैदान पर कुछ अजीब भेद-भरे निशान-से बनाए। हेनरी ने अपने घोड़े को भी

वैसे ही चक्कर काटने के लिए मजबूर किया। उसने उन इशारों को समझाते हुए बताया कि यह आदिवासी सरदार स्मोक का ही गाँव था। उस आदिवासी के बढ़ने पर हम उसकी प्रतीक्षा के लिए रुक गए। इसी समय वह अचानक ही छिप गया, जैसे वह धरती में कहीं डूब गया हो। तभी वह एक बहुत गहरी घाटी में से ऊपर आया। पहले उसके घोड़े का सिर उठता हुआ दिखाई दिया। तब घोड़ा और घुड़सवार दोनों ही हम तक आए। उसने ज्योंही लगाम खींची, घोड़ा तुरन्त रुक गया। तब हाथ मिलाने और मित्रता जताने का काम शुरू हुआ। मुझे आज अपने उस अतिथि का नाम भूल गया है। अपने लोगों में वह कोई बड़ा आदमी भी नहीं था। पर तो भी अपनी हस्ती और साज़-सामान की दृष्टि से वह डाकोटा जाति का एक अच्छा योद्धा था। उसकी पोशाक सादी ही थी। अपने और लोगों की भाँति वह छः फुट लम्बा था। उसके शरीर का ढाँचा बहुत ही सुन्दर और मज़बूती से गठा हुआ था। उसकी खाल भी बहुत ही साफ़ और कोमल थी। उसने कोई भी रंग नहीं मले हुए थे। उसका सिर नंगा और बाल पीछे को बँधे हुए थे। उनके बीच में एक पक्षी की हड्डियों से बनी सीटी सजावट के लिए लटकाई हुई थी। उसके सिर के पीछे से पीतल की चमकती हुई कई छोटी-बड़ी गोल रकाबियों की एक माला लटक रही थी। यह ज़ेवर काफ़ी भारी था। इसे डाकोटा लोग अधिक पहनते हैं और इसके लिए वे लोग व्यापारियों को अच्छी खासी कीमत देने को तैयार रहते हैं। उसकी छाती और बाहें नंगी थीं। उनपर ढकी हुई भैंसे की खाल उसकी कमर तक खिसक आई थी और कमर-पेटी के सहारे टिक गई थी। उसके पाँव में मोकास्सिन के जूते पड़े थे। यही थी उसकी वेशभूषा! हथियारों के नाम पर उसके पास कुत्ते की खाल से बना तरकस पीठ पर लटक रहा था और एक बहुत ही मज़बूत धनुष उसके हाथ में था। उसके घोड़े की रास में लोहे की लगाम न थी। घोड़े के जबड़े के चारों ओर बालों की बनी एक रस्सी बँधी हुई थी। यही उसकी लगाम थी। उसकी काठी सादी खाल से ढकी और लकड़ी की बनी थी। आगे और पीछे दोनों ओर लकड़ी की ऊँचाई डेढ़-डेढ़ फुट थी। इस तरह से युद्ध में योद्धा अपनी जगह पर पूरी तरह जमा रहता था। उसे कोई भी बात वहाँ से हिला नहीं सकती थी।

अपने नये साथी के साथ बढ़ते हुए हमने एक पहाड़ी की चोटी पर घेरा बनाकर बैठे हुए उसकी जाति के बहुत से आदिवासियों को देखा। पास ही की एक खड्ड में से मर्दों, औरतों और बच्चों का, घर के बाँसों आदि को ढोने वाले घोड़ों के साथ आनेवाला, एक जलूस इसी समय जा रहा था। उस सारी सुबह आगे बढ़ते हुए हमने ऐसे ही लम्बे-लम्बे असभ्य लोगों को अपने आस-पास से गुज़रते हुए पाया। दोपहर के समय हम हौर्स क्रीक (घोड़ों की धारा) पर पहुँचे। आदिवासी भी हमसे कुछ पहले ही वहाँ पहुँचे थे। धारा के दूसरे किनारे एक बहुत डील-डौल और ताकत वाला आदमी खड़ा था। वह लगभग नंगा था और उसने अपने हाथ में एक सफ़ेद घोड़े की लगाम थामी हुई थी। पास पहुँचते हुए वह हमें देख रहा था। यही था वह सरदार, जिसे हेनरी ने 'स्मोक' (धुआँ) के रूप में परिचित कराया था। ठीक उसके पीछे उसकी सबसे छोटी और प्यारी स्त्री एक खच्चर पर बैठी हुई थी। उस खच्चर पर सफ़ेद खाल ढकी हुई थी, जो काले और सफ़ेद रंग के दानों से जड़ी थी। उसके चारों किनारे धातुओं के बने हल्के-हल्के ज़ेवर लटक रहे थे, जो चलते हुए बजते थे। वह लड़की बहुत ही हलके और साफ़ रंग की थी। उसके गालों पर हल्का-सा पराग मला हुआ था। वह हमें देखकर मुस्करा रही थी। उसने हाथ में अपने वीर पति का लम्बा भाला उठाया हुआ था, जिसके ऊपर पंख लगे हुए थे। उसकी गोल सफ़ेद ढाल खच्चर के एक ओर लटकी हुई थी और हुक्का पीठ की ओर लटक रहा था। उस लड़की की पोशाक एक हिरण की खाल से बनी थी, जिसे उस इलाके की एक खास प्रकार की मिट्टी से सफ़ेद बना दिया गया था। इस पर पत्थर और दाने आदि कई प्रकार की शक्लों में सजाए गए थे और चारों ओर झालरें लटक रही थीं। इस सरदार के पास ही कुछ ऐसे लोग भी खड़े थे, जो ऊँचे दर्जे के थे और जिनके कंधों से भैंसों की सफेद खालें लटक रही थीं। वे लोग हमें बहुत उदासी से देख रहे थे। इनके पीछे कई एकड़ ज़मीन में छोटे-छोटे डेरे पड़े हुए थे। यहाँ सैनिक, स्त्रियाँ और बच्चे मक्खियों की तरह भिनभिना रहे थे। हर रंग और कद के सैकड़ों कुत्ते इधर-उधर दौड़ रहे थे। पास की एक चौड़ी और उथली धारा में बहुत से लड़के, लड़कियाँ और स्त्रियाँ चीखती चिल्लाती और हँसती हुई खेल रही थीं। उसी समय प्रवासियों का एक लम्बा जलूस अपनी भारी

भरकम गाड़ियों के साथ धारा पार करता हुआ नज़र आया। ये लोग, जिन आदिवासियों के डेरों के पास से गुज़रे, उन्हें ही इन्होंने अगले ही कुछ दिनों में समाप्त कर देना था।

यह डेरा केवल दोपहर के लिए ही डाला गया था। कोई भी तम्बू या घर गाड़ा नहीं गया था। उनके ढकने के चमड़े के कपड़े और लम्बे-लम्बे बाँस इधर-उधर हथियारों और घर के सामान के बीच बिखरे पड़े थे। हर सुस्ताने वाले सैनिक की पत्नी ने उसके लिए छाया करने का प्रबन्ध कर दिया था, और इसके लिए उसने दो एक बाँसों पर खाल के कपड़े को ढक दिया था। इस छाया में हर सैनिक अपनी प्रिय जवान पत्नी के साथ हँसी-मज़ाक करता हुआ बैठा था। उसके सामने उसके ओहदे का चिह्न, उसकी भैंसे की खाल से बनी ढाल, दवाइयों की संदूकड़ी, धनुष-बाण, भाला और हुक्का आदि तीन बाँसों को जोड़कर बनाई हुई एक तिपाई पर टिके हुए थे। कुत्तों के बाद सबसे ज़्यादा शोर मचाने और हलचल करने का काम बूढ़ी औरतों का था, जो चुड़ैलों से कम बुरी न दीखती थीं। उनके बाल खुले हुए और हवा में उड़ रहे थे। एक आध चिथड़े-नुमा छोटा-सा भैंसे की खाल का टुकड़ा ही उनके शरीर को ढक रहा था। उन पर कृपा का मौका दो पीढ़ियाँ पहले ही बीत चुका था। अब डेरे के सबसे कठिन कामों का बोझ उनके कंधों पर ही था। उन्हें घोड़ों की काठियाँ बाँधनी होती थीं। मकान गाड़ने होते थे। बिस्तर बिछाना और शिकारियों के लिए मांस पकाना भी उनका ही काम माना जाता था। इन बूढ़ी औरतों की फटी हुई आवाज़ों, कुत्तों के शोर और लड़कियों और बच्चों के चिल्लाने के और हँसने से एक ओर बड़ा शोर उठ रहा था और दूसरी ओर सैनिक बहुत शांत होकर पड़े थे। इस सबके कारण वह वातावरण बहुत ही लुभावना हो उठा था।

हमने आदिवासियों के इस डेरे के पास ही अपना डेरा डाला और उनके बहुत से सरदारों और सैनिकों को दावत पर बुलाया। हमने उनके सामने बिस्कुट और काफ़ी रखी। वे आधा घेरा बनाकर सामने ही बैठे और उन्होंने यह सब कुछ बहुत जल्दी समाप्त कर दिया। जब हम दोपहर बाद की यात्रा के लिए आगे बढ़े तो बाद में आने वाले हमारे कुछ अतिथि हमारे साथ हो लिए। इनमें से एक बहुत ही भारी भरकम आदमी था, जिसको उसके डील-

डौल और चरित्र के कुछ गुणों के कारण 'लाकोशों' कहा जाता था। हौग (सुअर) नाम का यह आदमी अपने छोटे से खच्चर पर चढ़ा हुआ था, जो इसके बोझ को सह नहीं पा रहा था। फिर भी यह अपनी टाँगों के सहारे से ही चलता जा रहा था। यह आदमी कोई सरदार न था, ना ही उसने ज़िन्दगी में कभी ऐसा बनने की कोशिश की। वह न सैनिक था और न शिकारी, क्योंकि वह मोटा और सुस्त था। वह गाँवों में सबसे धनी आदमी था। डाकोटा लोगों में धन-दौलत घोड़ों से गिनी जाती है और इस आदमी ने अपने पास तीस से अधिक घोड़े इकट्ठे कर लिए थे। यह घोड़े उसकी अपनी ज़रूरत से दस गुणा अधिक थे। फिर भी और अधिक घोड़े बटोरने की उसकी हवस अभी बाकी थी। अपना खच्चर तेज़ी से मुझ तक बढ़ाते हुए पास आकर उसने मुझे हिलाया और समझाया कि वह मेरा विश्वास-योग्य मित्र है। तब उसने बहुत से इशारे करने शुरू किए। उसके चेहरे पर खुशी और मुस्कान थी। उसकी छोटी-छोटी आँखों में हल्की-सी चमक दिखाई दे रही थी। मैं आदिवासियों की इशारों की भाषा तो नहीं जानता था, पर तो भी कुछ अनुमान ज़रूर कर लिया। पूरी बात समझने के लिए मैंने हेनरी को पास बुला लिया।

लगता है वह मुझ से विवाह का एक सौदा पटाना चाहता था। मेरा घोड़ा लेकर वह अपनी लड़की देना चाहता था। मैंने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इसके बाद वह हँसी मज़ाक करता हुआ, अपने कपड़ों को सँभालकर, फिर पीछे की ओर मुड़ गया।

हमने उस रात एक ऐसी जगह डेरा डाला, जहाँ प्लाट् नदी दो ऊँची चोटियों के बीच होकर बहती थी। वह यहाँ भी मैली और तेज़ धार वाली ही थी, पर इसके किनारे पेड़ उगे हुए थे। धारा और पहाड़ी के बीच के हिस्से में कुछ घास भी उगी हुई थी। इस जगह पर आने से पहले हमने देखा कि दाईं ओर लगभग दो तीन मील दूर कुछ प्रवासियों ने डेरा डाला हुआ है। आदिवासी भी हमारे पास की ही एक पहाड़ी पर इकट्ठे हो रहे थे। उन्हें आशा थी कि पहले ही की भाँति उन्हें हमसे बहुत कुछ खाने-पीने को मिलेगा। हमारे सामने के स्वाभाविक नज़ारे में चारों ओर शान्ति थी। केवल नदी की धारा का शोर ही उसे तोड़ रहा था। पेड़ों की मुड़ी-तुड़ी शाखों के बीच में से हमने 'ब्लैक हिल्स' नाम की पहाड़ियों की चोटी पर छिपते हुए सूरज की

रंगीनी को देखा। इसके रंग से नदी भी लाल हो उठी थी। हमारा सफ़ेद तम्बू भी इसके लाल रंग में रंग चुका था। सामने की उजाड़ चोटियाँ भी इसी रंग में रंग उठी थीं, जैसे उनपर आग लग गई हो। यह रंगीनी तुरन्त समाप्त हो गई। हमारी आग की रोशनी को छोड़कर और कोई रोशनी बाकी न बची। हम अपने कम्बलों में लिपटकर तम्बाकू पीते और बातें करते हुए आधी रात तक वैसे ही आग के चारों ओर लेटे रहे।

हमने अगली सुबह धूप से तपता हुआ मैदान पार किया। प्लाट् नदी के इस किनारे पर बहुत सारे फूली लकड़ी के पेड़ लगे हुए थे। उनमें से होते हुए हमने सामने, बहुत दूर पर, एक मकान-सा देखा। पास आकर हमें इसकी लम्बाई-चौड़ाई से इसके लठ्ठों का बना एक बड़ा मकान होने का अनुमान हुआ। यह एक व्यापार की जगह थी, जिसपर दो व्यापारियों का निजी अधिकार था। इसे पुराने व्यापार केन्द्रों की भाँति एक गोल दायरे वाले किले के रूप में बनाया गया था, जिसमें रहने के कमरे और दूकान आदि का सारा प्रबन्ध अन्दर ही अन्दर, था। इसकी दो ओर ही बनी हुई थीं। इस जगह पर अब रक्षा का काम नहीं होता था। ऐसे ही लकड़ी के बने घर सीमान्त प्रदेश में आगे बढ़ने के साथ-साथ आदिवासियों के विरुद्ध रक्षा का अच्छा काम देते रहे हैं। इस किले के पास ही दो और भी लकड़ियों के घर गाड़े हुए थे। उनके लट्ठों पर तेज़ धूप पड़ रही थी। उनमें एक बूढ़ी औरत को छोड़कर कोई भी ज़िन्दा चीज़ दिखाई न दे रही थी। उस औरत ने पास के एक डेरे में से अपना सिर बाहर निकाल कर झाँका। इसके साथ ही चार-पाँच कुत्तों के बच्चे और एक आदमी दरवाज़े में से बाहर आया। यह काली आँखों वाला कोई फ्रांसीसी था। उसकी पोशाक अजब तरीके की थी। उसके काले घुँघराले बाल बीच में से चीर निकाले हुए थे और कंधों पर लटक रहे थे। उसने धुएँ पर सुखाई हिरण की खाल की कमीज़ पहनी हुई थी, जिसपर रंगे हुए दानों से बहुत कुछ काढ़ा हुआ था। उसके जूते भी उसी प्रकार बहुत सजे हुए थे। उसकी जुराबों पर से झालर लटक रही थी। यह रिचर्ड था। जैसा हमें हेनरी ने बताया। यह बहुत ही मजबूत, पहलवान और साहसी था, हालाँकि इसका शरीर ठिगना ही था। उसके शरीर या वेश में कोई भी चीज़ फालतू न थी। उसका अंग-अंग बहुत गठा हुआ और सख्त था। उसके शरीर की हर पेशी अपनी लचक

और मज़बूती में तनी हुई थी। लगता था कि कठोरता और मज़बूती का वह एक शरीरधारी पुतला था।

रिचर्ड ने हमारे घोड़े नवाहा जाति के एक दास को दिए। वह बहुत ही नीच-सा दिखाई देने वाला आदमी था और उसे मैक्सिको की सीमा से बन्दी बनाया गया था। हमारी बन्दूकों आदि को बहुत नम्रता पूर्वक किनारे रखवा कर, वह हमें अपने घर के मुख्य कमरे में ले गया। यह कमरा दस फुट लम्बा और चौड़ा था। इसकी दीवारों और फर्श काली मिट्टी से पुते हुए थे और छत लकड़ी से ढकी हुई थी। मैदान से लाई गई चार चपटी चट्टानों के सहारे एक बड़ी भट्टी बनाई गई थी। आदिवासियों-का-सा-धनुष और तरकस भी वहीं लटका हुआ था। राकी पर्वत-माला की और भी बहुत अच्छी चीज़ें वहाँ पड़ी हुई थीं। आदिवासियों की दवाइयों का एक थैला, चिलम और तम्बाकू की थैली आदि, दीवार पर लटके हुए थे। बन्दूकें एक कोने में टिकी हुई थीं। कोई खास सामान सजावट के लिए न था। एक छोटी सी चारपाई पर भैंसे की खाल ढकी हुई थी और इस पर एक दोगली स्त्री आराम कर रही थी। उसके बाल दोनों कनपटियों पर गुच्छे के रूप में इकट्ठे थे और उसके गाल पराग से लाल थे। वहीं पर और भी दो-तीन पहाड़ी आदमी फर्श पर ही चौकड़ी मारे बैठे थे। उनका वेश भी रिचर्ड के समान ही था। इनमें सबसे अधिक खिचाव वाला एक आदिवासी लड़का लग रहा था। वह नंगा था। उसका चेहरा सुन्दर था। उसका बदन हलका और चुस्त था। वह दरवाज़े के पास के कोने में आराम से बैठा था। उसका एक भी अंग रत्तीभर भी हिल नहीं रहा था। उसकी आँखें एक-दम जड़ी हुई सी थीं। वह किसी आदमी को नहीं देख रहा था। बल्कि, ऐसा लगता था कि जैसे वह अपने सामने की अंगीठी को देख रहा हो।

इन मैदानों में अपने मित्रों के साथ तम्बाकू पीने की बात छोड़ी नहीं जा सकती, फिर चाहे वह मित्र आदिवासी हो या गोरा। इस लिए दीवार से चिलम उतारी गई और उसमें तम्बाकू और शोंगसाशा मिलाकर डाले गए। तब इसे सुलगाकर घेरे में बैठे सभी आदमियों को बारी-बारी से दिया गया। सभी ने इस में से कुछ कश खींचे। इस प्रकार आधा घण्टा वहाँ बिताकर हमने छुट्टी ली। हमने विदा होते हुए अपने इन नये मित्रों को मील भर दूर

नदी के पास के अपने डेरे पर काफ़ी पीने के लिए निमंत्रित किया।

इस समय तक हम भी बड़े उजड्ड-से लगने लगे थे। हमारे कपड़े चिथड़े-चिथड़े हो चुके थे। इस पर मज़ा यह कि बदलने के लिए हमारे पास बहुत कम चीज़ें थीं। यहाँ से लारामी किला अब भी सात मील दूर था। वहाँ इस हालत में सभ्य कहे जाने वाले लोगों के बीच जाने में हमें लाज आई। इसलिए नदी के किनारे रुक कर हमने अच्छी तरह सज धजकर तैयार होने का निश्चय किया। हमने पेड़ों पर छोटे-छोटे शीशे लटकाए और अपनी दाढ़ी-मूँछ साफ़ की। यह काम हम पिछले डेढ़ महीने से न कर पाए थे। हम प्लाट् नदी में खूब अच्छी तरह नहाए। पानी बहुत मैला था और किनारे पर पीला कीचड़ भरा हुआ था। तो भी हमें नहाना ज़रूरी था। इसके लिए हमने पेड़ों की शाखा आदि इकट्ठी करके एक जगह पानी जमा कर लिया और उसमें नहाए। रिचर्ड के घर से उसकी किसी स्त्री द्वारा बनाए चमकीले जूते भी हमने पहन लिए। और भी जो कुछ अदला-बदली कर सकते थे हमने की। हम अपने आप को और भी अधिक आदर के लायक बनाकर अपने मेहमानों की इंतज़ार करने लगे। वे आए और चाय आदि पी। बाद में तम्बाकू पीकर हमने उन्हें विदाई दी। इसके बाद हमने अपने घोड़ों को लारामी किले की ओर मोड़ दिया।

हमें चलते हुए एक घंटा हो गया था। इस समय हमारे सामने एक ऊसर पहाड़ी आ गई, जिससे आगे की राह दीखनी बन्द हो गई। इसे पार करते ही हमें एक धारा मिली, जो प्लाट् नदी में ही मिलती थी। इस धारा के पार एक चरागाह दिखाई दी, जिसमें जगह-जगह झाड़ियाँ उगी हुई थीं। यहीं पर एक ओर, जहाँ दो धारें एक साथ मिलती थीं, किले की नीची दीवारें दिखाई दीं। यह लारामी किला नहीं था। यह एक और किला था, जो अब लारामी किले के बन जाने के कारण उजाड़ हो गया था और गिरने की हालत में था। कुछ ही देर बाद आगे बढ़ने पर पहाड़ियों के बीच से झाँकता हुआ लारामी किला साफ़ दिखाई देने लगा। धारा के बाईं ओर इसकी ऊँची नींवें, दीवारें और परकोटे दिखाई देने लगे। इसके पीछे की ओर ऊँची और उजाड़ पहाड़ियाँ मौजूद थीं। इन पहाड़ियों से भी पीछे सात हज़ार फुट ऊँची 'ब्लैक हिल्स' की पहाड़ियाँ नज़र आ रही थीं।

हमने लारामी धारा को किले के सामने की एक जगह से पार करने की

कोशिश की। यहाँ धारा बहुत भरकर और तेज़ी से चल रही थी। हम इसके किनारे के साथ-साथ बढ़कर पार करने का एक अच्छा स्थान खोजने लगे। उधर किले की दीवार पर हमें देखने के लिए कुछ आदमी चढ़ आए। हैनरी ने बोदूँ को दूर से ही पहचान लिया और अपने इस परिचित को पहचानते ही उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। वह बोला, "इधर वह बोदूँ दूरबीन लेकर खड़ा है और उधर बूढ़ा वास्किस, टकर, और मैं आदि खड़े हैं। सच ही, वहाँ सीमौनू भी खड़ा है।" सीमौनू उसका अपना मित्र था। यही वह दूसरा व्यक्ति था, जो हेनरी के मुकाबले में दूसरा अच्छा शिकारी था।

हमने जल्दी ही नदी पार करने की जगह ढूँढ ली। हेनरी ने हमें रास्ता दिखाया। उसका टट्टू नदी तक बहुत ही शांति से बढ़ता गया। धारा में भी वह उसी शान्ति के साथ चुपचाप उतर पड़ा। हम भी उसके पीछे-पीछे चले। पानी हमारी काठियों तक बढ़ आया था पर हमारे घोड़े बड़ी आसानी से पार हो गए। छोटे-छोटे खच्चर तेज़ धारा के साथ गाड़ी समेत ही बहने लगे, परन्तु हमारे देखते-देखते उन्होंने नदी के तल के पत्थरों पर पाँव जमाकर, जैसे-तैसे तेज धार का मुकाबला करते हुए, बड़ी कठिनता से नदी पार की। अन्त में सभी बड़ी सुरक्षापूर्वक किनारे आ पहुँचे। तब हमने एक छोटा-सा मैदान पार किया। एक खड्ड में उतर कर ज्यों ही ऊपर चढ़े, हमने अपने को लारामी किले के दरवाज़े के सामने पाया। इस दरवाज़े के ऊपर ही एक बहुत बड़ा बुर्ज बना हुआ था, जिसे रक्षा के उद्देश्य से बनाया गया था।

—:o:—

६ : लारामी किले के नज़ारे

आज उस बात को एक साल से भी अधिक बीत गया है, पर फिर भी लारामी किले और उसके निवासियों की जब भी याद आती है, ऐसा लगता है जैसे वह कोई सचाई न होकर पुराने समय का सपनों भरा कल्पना का कोई चित्र हो। इस सभ्य कहलाने वाले संसार से वहाँ का संसार कतई भिन्न था। वे ऊँचे-लम्बे आदिवासी भैंसों की खाल से बने अपने कपड़े पहने इधर से उधर भागते फिर रहे थे या फिर मकानों की ऊँची-नीची छतों पर पूरी बेफ़िक्री से आराम कर रहे थे। अनेक स्त्रियाँ सजी-धजी अपने-अपने कमरों के सामने झुंड बाँध कर बैठी थीं। उनके दोगले बच्चे उनके सामने ही किले के हर कोने में भागते फिर रहे थे। इनको छोड़कर और लोगों में पशु फँसाने वाले, व्यापारी और नौकर-चाकर आदि अपने-अपने काम में या आनन्द मनाने में लगे हुए थे। यह था उस समय का किले का दृश्य।

जब हम दरवाज़े पर पहुँचे, पहले-पहल हमारा स्वागत अच्छे ढंग से न हुआ। उन लोगों ने हमें अविश्वास और संदेह की निगाह से देखा। तब हेनरी ने उन्हें बताया कि हम व्यापारी नहीं हैं। हमने वहाँ के अधिकारी को उनके मालिक-व्यापारियों का एक परिचय-पत्र दिया। उसने इसे लेकर इधर-उधर पलटा और जैसे-तैसे पढ़ने की कोशिश की। पर वह बेचारा इस विद्या में कतई कोरा था। इस लिए उसने वहाँ के लेखक से सहायता ली। लेखक का नाम मौफैलों था। वह पतला-दुबला हँसमुख फ्रांसीसी युवक था। पत्र सुनते ही लगा कि धीरे-धीरे बोर्दू ने अपनी जिम्मेवारी को पूरी तरह पहचानना और अनुभव करना शुरू कर दिया। यद्यपि उसके स्वागत की भावना में कोई कमी न थी, पर तो भी वह ऐसे मौके पर अधिकारी के रूप में पूरा न उतरता था। स्वागत की सारी रस्मों को छोड़ कर, एक-आध शब्द भी बिना बोले, उसने तुरन्त ही इधर-उधर दौड़कर हमारे लिए प्रबन्ध करना शुरू कर दिया। हम उसके पीछे-पीछे दरवाज़े के दूसरी ओर बने हुए जंगले और सीढ़ियों की तारीफ़ करते हुए चलने लगे। उसने हमें इशारा किया कि अच्छा

होगा यदि इस जंगले के साथ ही हम अपने घोड़े बाँध दें। ऐसा कहकर वह सीढ़ियाँ चढ़ने लगा और एक छज्जे पर जाकर रुक गया। यह जगह साफ़ न थी। उसने पाँव की ठोकर से दरवाज़ा खोला। हमें वह बड़ा कमरा पूरी तरह दीखने लगा। यह कमरा किसी अनाज भंडार की अपेक्षा अधिक सजा हुआ लगा। इसमें थोड़ा-सा ही सामान था। एक हल्की-सी चारपाई बिना बिस्तर के पड़ी थी, दो कुर्सियाँ, दराजों वाली एक मेज, पानी लाने की एक बाल्टी और तम्बाकू के काटने के लिये एक फट्टा भी वहाँ पड़े हुए थे। दीवार पर एक ओर पीतल का बना हुआ क्रॉस लटका हुआ था और उसके पास ही एक बहुत ताज़ा खोपड़ी लटक रही थी। इस खोपड़ी पर गज़ भर लम्बे बाल लटक रहे थे। मैं बाद में बताऊँगा कि यह दुःखदायक निशानी किस बात की थी? इसका सम्बन्ध बाद की घटनाओं से बैठता है।

लारामी किले में हमारा यह कमरा ही सबसे अच्छा हिस्सा था। यहाँ का असली मालिक पैंपिन जब भी यहाँ होता तो वह इस कमरे में ही रहता था। उसके चले जाने पर अधिकार बोदू के हाथ में आ जाता था। बोदू ठिगना पर गठीले शरीर का आदमी था। वह अपने इस नये अधिकार को पाकर कुछ फूल गया था। अब उसने भैंसों की खालें मँगाने के लिए चिल्लाना शुरू किया। इन्हें लाकर फ़र्श पर बिछाया गया और हमारे बिस्तर तैयार किए गए। आज तक राह में हमें जितनी बार सोना पड़ा, उनसे आज का बिस्तर अधिक आरामदेह था। अपने कमरे को ठीक-ठाक करने के बाद हम बाहर छज्जे पर निकल आए, ताकि बहुत देर से अपनी कल्पना में बसाये इस लारामी किले को आराम से देख सकें। आखिर हम यहाँ पहुँचे भी तो बहुत दिन बाद और अनेक कठिनाइयों को पार करके! हमारे नीचे एक चौकोर जगह में छोटे-छोटे कमरे, एक घेरे में, बने हुए थे। उन सबके दरवाज़े इस बीच के चौकोर मैदान की ओर ही खुलते थे। इन सब का प्रयोग अलग-अलग उद्देश्य से होता था। परन्तु इन में बहुत से किले में काम करने वाले नौकरों के रहने के थे। उन नौकरों की पत्नियों की संख्या भी उनके बराबर ही थी। उन्हें यहाँ अपनी पत्नियों को साथ रखने की खुली छूट थी। हमारे सामने ही दरवाज़े का बुर्ज दिखाई देता था। इस पर तेज़ी से दौड़ते हुए घोड़े की एक तस्वीर बनी हुई थी। तख्तों पर ही बनी हुई यह तस्वीर लाल रंग से बनाई गई थी और इससे

उतनी ही शूरवीरता और चतुरता टपकती थी, जितनी कि आदिवासी अपने भैंसों की खालों के कपड़े और मकान बनाते हुए दिखाते थे। इस सारे इलाके में ही ऐसे दीखता था, जैसे हर कोई अपने-अपने काम में लगा हुआ हो। वास्किस एक बूढ़ा व्यापारी था। उस की बहुत सारी गाड़ियाँ पहाड़ों में स्थित एक बहुत दूर की दूकान के लिए सामान लेकर जाने ही वाली थीं। कनाडा निवासी नौकर इस यात्रा के लिए पूरी तेज़ी के साथ जुटे हुए थे। पास ही खड़े एक-दो आदिवासी उन्हें बहुत गम्भीर होकर देख रहे थे, जैसे उन्हें कोई चिन्ता ही न हो।

यह किला 'अमरीकी फर कम्पनी' की दूकानों में से एक है। इस इलाके के आदिवासियों के साथ तमाम व्यापार इसी के ज़रिये से होता है। यहाँ इसके अधिकारियों का अपना ही शासन चलता है। अमरीका की केन्द्रीय सरकार का अधिकार यहाँ कम चलता है। जिन दिनों हम वहाँ पर थे, सरकारी सैनिकों की चौकियाँ सात सौ मील दूर, पूर्व की ओर थीं। यह छोटा-सा किला धूप में सुखाई ईंटों से बना हुआ है। बाहर से चौकोना-सा दीखता था। इसकी नीवें और परकोटे मिट्टी के ही बने हुए थे। सामने के दोनों कोनों पर दो बुर्ज भी बने हुए थे। परकोटों की ऊँचाई पन्द्रह फुट के लगभग होगी और उन पर लकड़ी का एक और जंगला लगा हुआ था। अन्दर के मकानों की छतें सैनिकों के खड़ा होकर गोला-बारी करने का काम देती थीं। यह मकान दीवारों से एकदम सटकर बने थे। किले के अन्दर का हिस्सा कुछ भागों में बँटा हुआ है। एक ओर एक चौकोना हिस्सा चारों ओर बने भंडारों, दफ्तरों और रहने के घरों से भरा हुआ है। दूसरे हिस्से में एक तंग जगह पर घुड़साल बनी हुई है, जिसके चारों ओर मिट्टी की ऊँची-ऊँची की दीवारें हैं। यहाँ रात के समय अथवा आदिवासियों से खतरा होने पर, घोड़े और खच्चर इकट्ठे करके बाँध दिए जाते हैं। बड़े दरवाज़े में दो रास्ते हैं। उनके बीच में एक गोल ढका हुआ छोटा-सा रास्ता है। एक-एक छोटी-सी खिड़की ज़मीन से कुछ ऊँचाई पर अगल-बगल से इस बीच के रास्ते में खुलती है। यह पास के कमरे की खिड़की है। इस लिए बीच का रास्ता बंद हो जाने पर भी कोई आदमी बाहर ही खड़ा होकर कमरे के अन्दर वाले लोगों से, इस छोटी खिड़की के द्वारा, बातचीत कर सकता है। इस तरह जिन आदिवासियों पर सन्देह होता है, उन्हें

अन्दर आने से रोका जा सकता है। ऐसे लोगों को व्यापार के लिए किले के अन्दर नहीं आने दिया जाता। जब भी खतरा होता है, सारे दरवाज़े बन्द करके इस खिड़की की राह से ही काम लिया जाता है। और दूकानों पर भले ही खतरे की यह बात निश्चित हो, परन्तु इस किले में यह बात उतनी निश्चित नहीं है। इस के पड़ोस में ही बहुत बार आदमी मार दिए जाते हैं, पर तो भी यहाँ के लोगों को आदिवासियों के हमले का कोई खास खतरा नहीं होता।

हम अपने इन नये कमरों में अभी बहुत देर तक निश्चित होकर आराम नहीं कर पाए थे कि एकदम ही चुपके से किसी ने हमारे कमरे का दरवाज़ा खोला। एक काला चेहरा और दो चमकती आँखें हमें देख रही थीं। तभी एक लाल बांह और कंधा अन्दर घुस आया और उसके साथ ही एक लम्बा चौड़ा आदिवासी अन्दर आ गया। उसने हमें अपने हाथों से हिलाया और प्रणाम किया। वह फर्श पर ही बैठ गया। उसके पीछे और भी बहुत सारे लोग आए और बहुत धीरे-धीरे आराम से अपनी-अपनी जगह चुन कर बैठ गए। उन्होंने हमारे सामने आधा घेरा बना लिया। ऐसे समय चिलम सुलगाकर हर एक के हाथ में देनी होती है। इस समय भी वे लोग हमसे यही उम्मीद लेकर आए थे। किले में रहने वाली औरतों के पिता, भाई या दूसरे सम्बन्धी ही इस समय हमारे मेहमान बन कर आए थे। उन्हें इस किले में रहने और आराम से अपने दिन बिताने की छूट दे दी गई थी। और भी दो-तीन आदमी बीच में चले आए। वे छोटी उमर के थे और अपनी उमर या कारनामों की कमी के कारण उन्हें कोई भी महत्त्व का दर्जा प्राप्त न था। ऐसे समय बूढ़ों और सैनिकों के साथ बैठने में उन्हें लाज आती थी। इस लिए वे अपनी आँखें हम पर से बिना हटाए भी वहीं अलग होकर खड़े रहे। उनकी गालों पर पराग मला हुआ था, उनके कानों में शंख के बने झुमके लटके हुए थे और उनकी गर्दनों में दानों से बनी मालाएँ पड़ी हुई थीं। उन्होंने आज तक न तो शिकारी के रूप में प्रसिद्धि पाई थी और न ही किसी आदमी को मार कर इज़्ज़त पाई थी। इस लिए उन्हें आदर न दिया जाता था और इसी लिए ये कुछ अधिक शरमीले बने हुए थे। इन दर्शकों के कारण हमें कुछ कठिनाई अनुभव हुई। वे हमारे कमरे की हर चीज़ देखने पर तुले हुए थे। उनकी आँखें हमारे सामान और हमारी पोशाकों को जाँचने में लगी हुई थीं। बहुत से लोग यह बात नहीं

मानते, पर तो भी इन आदिवासियों की उत्सुकता प्रायः सबसे अधिक उन चीज़ों के बारे में रहती है, जिन्हें वे अच्छी तरह पहचानते हैं। जिन बातों को वे नहीं जानते उनकी तरफ़ से वे बेख़बर रहते हैं। जिन चीज़ों की वे कल्पना भी नहीं कर सकते, उनके विषय में वे जानने का यत्न भी नहीं करते। आश्चर्य में डूब कर वे केवल उसे एक 'महान् औषधि' ही मानते हैं। जिस भी चीज़ को यह नाम दे दिया जाए, आदिवासी उसकी ओर से बिल्कुल बेफिक्र हो जाता है। ये लोग कभी भी अनुमान और कल्पना का सहारा लेकर नई बात सोचने की कोशिश नहीं करते। अपनी घिसी-पिटी पुरानी बातों को ही सोचते रहते हैं। उनकी आत्मा जैसे सो चुकी है। उन्हें कोई भी धर्म-प्रचारक या सुधारक नहीं जगा सकता। कम-से-कम अब तक तो जगाने में कोई सफल नहीं हुआ है।

साँझ होते समय जब हम छत पर से ही चारों ओर के उजाड़ मैदान को देख रहे थे, हमने, बहुत दूर पर एक झुंड-सा देखा। जैसे लकड़ी की कई छोटी-सी इमारतें हमारे सामने के मैदान में पश्चिम की ओर कुछ दूरी पर खड़ी हों। ऊपर की ओर उन पर जैसे कुछ बोझ लदा हुआ था और नीचे हड्डियों जैसी कोई सफेद चीज़ चमक रही थी। यह डाकोटा सरदारों के शवों के गाड़े जाने की जगह थी। उनकी निशानियाँ, उनके मरने के बाद, इस किले के पास ही रख दी जाती हैं ताकि शत्रुओं के हाथों में पड़ने से बची रह सकें। फिर भी अनेक बार ऐसा हुआ है कि काक जाति के आदिवासियों के लड़ाकू दलों ने इस इलाके पर हमला करते हुए इन इमारतनुमा ढाँचों को उखाड़ फेंका और उनमें से उन सरदारों के शरीरों को निकाल कर फेंक दिया। डाकोटा लोग बहुत थोड़ी संख्या में होने के कारण यहीं से अपने पुरखों के निशानों को उखाड़ा जाता हुआ देखते रहे और अपमान का कड़वा घूँट पीकर रह गए। ज़मीन पर पड़ी हुई सफेद चीज़ें भैंसों की खोपड़ियां थीं, जिन्हें इन कब्रगाहों के आसपास घेरे में सजा दिया जाता था। इन मैदानों का यही रिवाज है।

रात की हल्की रोशनी में हमने पहचाना कि पचास या साठ घोड़े किले के पास तक आ गए। ये घोड़े इस बस्ती के ही थे। दिन में इन्हें नीचे की चरागाहों में हथियारबन्द रखवालों के साथ चरने के लिए भेजा गया था और इस समय ये घुड़साल में लौटकर आ रहे थे। इसी समय बड़ा दरवाजा खुला।

इसके पास ही एक कनाडा निवासी पहरेदार के रूप में खड़ा था। उसकी भौंहों के बाल सलेटी से रंग के थे। उसकी कमर-पेटी में सैनिकों जैसी ही एक पिस्तौल लटक रही थी। उसका साथी एक घोड़े पर सवार था। उसकी बंदूक उसके सामने की काठी पर टिकी हुई थी। उसके लम्बे बाल उसके चेहरे के सामने की ओर उड़ रहे थे। और वह सबसे पीछे-पीछे चलता हुआ सबको चढ़ने के लिए कह रहा था। कुछ ही क्षण में घुड़साल का तंग दरवाज़ा सबके लिए खोल दिया गया। जंगली घोड़े दुलत्तियाँ झाड़ते हुए और एक दूसरे को काटते हुए, अशान्त होकर वहाँ जमा हो गए।

तभी एक कनाडियन ने एक बेतुकी-सी घण्टी बजाई। यह हमें शाम के भोजन की सूचना देने के लिए बजाई गई थी। भोजन हमें एक नीचे के कमरे में बहुत भद्दी मेज़ पर परोसा गया। इसमें रोटी और भैंसे का सूखा मांस शामिल था। इसके खाने से दांत मज़बूत हो सकते थे। भोजन के इस दौर में इस बस्ती के बड़े-बड़े लोग और स्वामी बैठे। हेनरी को भी इसमें आदरपूर्वक बिठाया गया। भोजन करने के बाद हमारे उठते ही इसी मेज़ पर एक बार फिर खाना परोसा गया। इस बार रोटी नहीं दी गई। यह भोजन शिकारियों, पशु फंसाने वालों आदि मंझले वर्ग के लोगों के लिए परोसा गया था। बचे-खुचे आदिवासियों और कनाडियन नौकरों को अपने-अपने कमरे में ही खाने के लिए सूखा मांस दे दिया गया था। यह सब अन्दरूनी बात बताते हुए यहाँ मैं उन दिनों वहाँ सुनी गई एक बात बताये बिना न रहूँगा।

कभी यहाँ पियेर् नाम का एक बूढ़ा नौकर था। उसका काम भोजन के समय लोगों को भंडार से मांस निकालकर देना होता था। दया और सहानुभूति के कारण वह मांस के सबसे अच्छे और मोटे हिस्सों को अपने साथियों में बाँट देता था। यहाँ के अधिकारी की निगाह से यह बात बहुत दिन तक बच न सकी। वह इस बात पर बहुत ही बिगड़ उठा। उसने जिस किसी भाँति इस बात को रोकने का निश्चय कर लिया। अन्त में उसने एक उपाय सोचा। यह उपाय उसकी रुचि के मुताबिक था। मांस के कमरे के साथ ही मिट्टी की दीवार से अलग किया हुआ एक और कमरा था। यहाँ पर रोएँदार खालें इकट्ठी की जाती थीं। इस कमरे का किले से सम्बन्ध एक चौकोन झरोखे के द्वारा ही था। यह झरोखा भी उस मिट्टी की दीवार में ही था। यह कमरा

बिल्कुल अँधेरा था। एक शाम बिना किसी के देखे ही अधिकारी मांस वाले कमरे में घुसा और इस छेद के द्वारा इस अँधेरी कोठरी में घुस गया तथा खालों आदि में छिप कर बैठ गया। तभी अपनी लालटेन लेकर पियेर् बुड़बुड़ाता हुआ वहाँ आया और मांस के टुकड़ों को खींचने लगा। उसने सबसे अच्छे टुकड़े, सदा की भाँति काटे। तभी अचानक ही उसे एक गूँजती-सी भूत की आवाज़ अन्दर के कमरे से आती हुई सुनाई दी, "पियेर, पियेर् ! इस मोटे मांस को छोड़ दो। केवल पतला मांस ही लो।" उसके हाथ से मांस गिर गया और वह किले में, अन्दर की ओर, चिल्लाता और चीख़ता हुआ भागा। भंडार में भूत को देख कर वह बहुत डर गया था। वह दहलीज़ पर ही गिर पड़ा और बेहोश हो गया। दूसरे कनाडियन नौकर उसे बचाने के लिए दौड़े। कुछ ने उसे उठाया और कुछ दो लकड़ियों का क्रास बनाकर अन्दर से भूत को भगाने के लिए गए। इसी समय वह अधिकारी भी बड़ा उदास चेहरा लिए हुए दरवाज़े पर आ पहुँचा। उसे होश में लाने के लिए स्वामी ने सारी बात साफ़ करनी उचित समझी। पर यह बात उसी के विरुद्ध जा पड़ी।

अगली सुबह हम वास्किस और मे नाम के व्यापारियों से बात करते हुए दरवाज़ों के बीच में ही बैठे हुए थे। ये दोनों व्यापारी और मौंथिलों ही ऐसे व्यक्ति थे, जो इस किले में रहने वाले लोगों में से कुछ पढ़े-लिखे थे। मे हमें यात्री कैकलों के विषय में कुछ बता ही रहा था कि तभी एक भद्दी सूरत का ठिगना चिथड़ों में लिपटा आदिवासी तेज़ी से घोड़ा दौड़ाता हुआ, किले में हम तक आ गया। पूछे जाने पर उसने बताया कि स्मोक नाम के आदिवासी सरदार का गाँव पास तक ही आ गया था। कुछ ही मिनट बाद हमें सामने नदी के पास की पहाड़ी चोटियों पर कुछ घुड़सवार असभ्य लोगों की बेतरतीबी भीड़ इकट्ठी होती हुई दिखाई दी। मे ने अपनी कहानी समाप्त की। तब तक वह सारा गाँव ही लारामी धारा तक उतर कर उसे पार करने लगा था। मैं नदी के किनारे तक चला गया। यह धारा काफी चौड़ी है और तीन या चार फुट गहरी और तेज़ बहने वाली है। काफी दूर तक कुत्ते, घोड़े और आदिवासियों से यह धारा घिरी हुई थी। मकान बनाने वाले तम्बू और लम्बे बाँस घोड़ों पर लदे हुए थे। उनका बोझिल हिस्सा आगे की ओर घोड़ों की पीठ पर बँधा हुआ था। दोनों तरफ दो या तीन बल्लियाँ बँधी हुई थीं। दूसरा

किनारा नीचे की ओर लटक रहा था। इस तरह घोड़ों की पीठ पर सामान लादने के लिए एक काठी जैसी बन गई थी। घोड़ों से कुछ ही पीछे एक टोकरी इन बल्लियों के बीच में लटका दी गई थी। उसे मज़बूती से बाँधा गया था। इस टोकरी में बहुत-सा घरेलू सामान, कुत्तों के पिल्ले, छोटे बच्चे, अथवा कोई बहुत ही बूढ़ा आदमी बैठा दिया जाता था। ऐसी बहुत-सी गाड़ियाँ इस समय नदी से पार आ रही थीं। उनके साथ ही अनगिनत कुत्ते भी आ रहे थे। उन पर भी छोटी-छोटी ऐसी ही गाड़ियाँ-सी बना दी गई थीं। इनके पीछे अपने घोड़ों पर ही बैठे हुए सैनिक लोग आ रहे थे। उनके साथ ही घोड़े की पीठ पर बिल्ली की सी आँखों वाले कुछ छोटे बच्चे भी बैठे थे। औरतें खच्चरों पर ढोए हुए सामान पर ही बैठी हुई पार आ रही थीं, हालाँकि घोड़ों पर पहले ही बहुत ज़्यादा बोझ लदा हुआ था। चारों ओर बहुत ही गड़बड़-झाला सा मचा हुआ था। सब कुत्ते साथ मिलकर चिल्ला और भौंक रहे थे। कुत्तों के छोटे पिल्ले इन गाड़ियों में बैठे उदासी से गुर्रा रहे थे, क्योंकि नदी का पानी उन तक पहुँच रहा था। काली आँखों वाले छोटे बच्चे अपनी टोकरी के किनारों को पकड़े बैठे हुए थे और पानी को इतना पास आते देखकर चौकन्ने हो गए थे। चेहरे पर पानी के टकराते ही वे घबरा जाते थे। कुछ कुत्ते अपने बोझों के साथ ही धारा में बह गए थे। वे बहुत करुणाजनक स्वर में चिल्ला रहे थे। उन्हें पकड़ने के लिए बुढ़िया औरतें उन्हें खींच लाती थीं। जो घोड़ा किनारे पर पहुँचता गया, धीरे-धीरे वह ऊपर चढ़ने लगा। बाद में खुले घोड़े और उनके बछड़े ऊपर चढ़ने लगे। खुले होने के कारण वे अक्सर भीड़ में से तेज़ी से बढ़ने लगते। उनके पीछे-पीछे बूढ़ी औरतें चिल्लाती हुई दौड़ रही थीं। उत्तेजना से ऐसे मौके पर ऐसा करना उनका स्वभाव ही था। भारी-भरकम जवान औरतें खूब सज-धज कर किनारे पर इधर-उधर खड़ी थीं और हर एक ने अपने हाथ में अपने स्वामी का भाला पकड़ा हुआ था। यह एक निशानी के तौर पर था, ताकि प्रत्येक गृहस्थी का सामान एक साथ ही इकट्ठा हो सके। कुछ ही क्षण में यह भीड़ फिर खिसकने लगी। प्रत्येक परिवार अपने घोड़ों और सामान के साथ किले के पीछे के मैदान तक कतार बाँधकर चलता आया। यहाँ पहुँच कर आधे घण्टे के अन्दर ही अन्दर कोई साठ-सत्तर मकान खड़े हो गए। उनके सैकड़ों घोड़े आसपास के मैदानों में चर रहे थे और उनके

कुत्ते इधर-उधर घूमते फिर रहे थे। किला योद्धाओं से भर गया और बच्चे दीवारों के नीचे लगातार चीखते-चिल्लाते भाग रहे थे।

अभी ये नये आने वाले लोग आकर पहुँचे ही थे कि बोर्दू अपनी पत्नी की ओर चिल्लाता हुआ आया और दूरबीन माँगने लगा। उसकी आज्ञाकारिणी पत्नी 'मारी' एक आदर्श पत्नी थी। वह तुरन्त ही दूरबीन ले आई और बोर्दू उसे लेकर परकोटे पर चढ़ गया। पूर्व की ओर देखते हुए उसने कहा कि और भी परिवार आ रहे हैं। कुछ ही क्षण बीतने के बाद साफ़ दिखाई देने लगा कि प्रवासियों का भारी जलूस पहाड़ियों में से होकर लगातार बढ़ता आ रहा था। वे नदी तक आए और बिना रुके या मुड़े वे एकदम इस के पार आ गए और इधर के किनारे पर धीरे-धीरे चढ़ते हुए किले और आदिवासियों के गाँव की ओर बढ़ने लगे। परन्तु, यहाँ से लगभग दो फर्लांग दूर ही एक अच्छी जगह पाकर उन्होंने घेरा डाल लिया और अपनी गाड़ियाँ रोक दीं। कुछ समय तक हमारी शान्ति में कोई अन्तर न पड़ा। प्रवासी अपना घेरा डालने की तैयारी करते रहे। अपना काम खत्म करते ही उन्होंने किले पर जैसे एक साथ ही धावा बोल दिया। चौड़े किनारों वाले टोप पहने, पतली शक्ल और घूरती हुई आँखों वाले आदमियों की एक भीड़ दरवाज़े पर जमा हो गई। लम्बे और भद्दे दीखने वाले ये आदमी खड्डी का बुना कपड़ा पहने हुए थे। उनकी औरतों के चेहरे मुरझाए हुए और शरीर पतले थे। वे भी वहाँ जमा हो गई थीं। लगता था जैसे सभी उत्सुकता से वहाँ खिंचे चले आए थे और जैसे उन्होंने किले का कोना-कोना लूट लेना हो। इस सब बात को देखकर हम घबरा गए और अपने कमरे में लौट आए। हमें आशा थी कि इस कमरे में हमें शान्ति अवश्य मिलेगी। आने वाले इन लोगों ने अपनी पूछ-ताछ पूरे उत्साह के साथ जारी रखी। उन्होंने हर कमरे और कोठी में घुसकर उसे अच्छी तरह देखा, हालाँकि उनमें रहने वाली औरतें बहुत घबरा गई थीं। उन्होंने पुरुषों के हर कमरे को यहाँ तक कि 'मारी' और वहाँ के मालिक के मकान को भी, जैसे तह तक छान डालने का निश्चय कर रखा था। अन्त में हमारे दरवाज़े पर भी बहुत से लोगों का एक जत्था आया। पर, हमने उन्हें किसी प्रकार का बढ़ावा न दिया।

अपनी उत्सुकता शान्त करने के बाद वे अपने काम-काज के लिए आगे

बढ़े। आदमी अपनी अगली यात्रा के लिए सामान खरीदने में लग गए। वे या तो इस सामान को पैसों के बदले खरीद रहे थे, या उसके बदले अपनी कुछ फालतू चीज़ों को दे रहे थे।

इन प्रवासियों को पशु फँसाने वालों और व्यापारियों से खास घृणा थी, क्योंकि ये उन्हें दोगला मानते थे। ये उन्हें फ्रांसीसी आदिवासी के नाम से पुकारते थे। किसी कारण वे यह मानते थे कि ये लोग उनके प्रति किसी प्रकार की शुभ-भावना नहीं रखते थे। इनमें से कुछ का तो यह विश्वास भी था कि फ्रांसीसी लोग उन पर हमला करने के लिए आदिवासियों को उकसाते रहते थे। डेरे पर पहुँच कर हमें वहाँ फैले हुए गड़बड़-झाले और अनिश्चय के ही दर्शन हुए। लगता था कि लोग जैसे स्वयं पर से विश्वास खो बैठे थे। वे बौखलाए हुए और अचरज में पड़े हुए थे। लगता था जैसे जंगल में भटके हुए कुछ स्कूल के लड़के इकट्ठे हों। उन सबके ही अन्दर कुछ इस प्रकार की भावना भरी हुई थी कि उनके पास बहुत देर तक ठहरना कठिन था। ऐसे जंगल के रहने वालों के लिए जंगल ही अच्छा रहता है इस दूर के रेतीले मैदान में ऐसे आदमी हमेशा ही चक्कर में पड़ जाते हैं। ऐसे लोग पहाड़ी आदमियों से कतई भिन्न होते हैं। उनका यह अन्तर वैसा ही होता है जैसा किसी छोटी नाव खेने वाले कनाडियन और किसी जहाज के अमरीकी नाविक का। इस पर भी मैं और मेरा साथी प्रवासियों की इस दशा का कारण खोजने में सफल न हुए। ऐसा उनकी कायरता के कारण न था। ये लोग बहुत वीर थे, पर, एकदम असभ्य और मैदान के हालात से अनजान थे। ये न तो इस इलाके और न ही यहाँ के निवासियों के बारे में अधिक जानते थे। उन्हें अब तक काफी दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा था और इससे भी अधिक दुर्भाग्य आ पड़ने की उन्हें उम्मीद थी। उन्होंने सारे रास्ते भर न तो मनुष्यता को ठीक से मापा था और न ही अपनी चतुराई का पूरा प्रयोग किया था।

उन लोगों ने हमें भी सन्देह की दृष्टि से ही देखा। अजनबी होने के कारण उन्होंने हमें अपना शत्रु समझा। जब हमने देखा कि हमें सीसे की गोलियाँ और कुछ और जरूरी चीजें चाहिएं तो हम उन लोगों के डेरे की ओर गए। बहुत झिझक, सन्देह और आनाकानी के बाद कहीं सौदा तय हुआ और शर्तें निश्चित हुईं। तब प्रवासी सामान लेने अन्दर गया। पर कुछ

देर बाद जब हम उसकी प्रतीक्षा करते थक गए और उसे ढूंढने लगे, तो हम ने देखा कि वह अपनी गाड़ी के जुए पर बैठा है। हमें पहुँचता हुआ देखकर वह बोल उठा, "देखो, आगन्तुक ! मुझे लगता है मैं यह सौदा नहीं कर सकूँगा।"

लगता है सौदे की जगह से ही उसका कोई साथी उसके पीछे-पीछे उसके साथ ही चला आया था। उसने उसे यह समझा दिया था कि हम उसे ठगना चाहते थे, और यह भी कि अच्छा होगा यदि वह हमसे सौदा न करे। प्रवासियों की घबराहट और डर से भरी यह मानसिक हालत उन्हीं के लिए कभी-कभी खतरे का कारण बन जाती थी। आदिवासियों के सामने यदि आत्मविश्वास और बहादुरी के साथ बहुत सावधान रहकर कोई बात की जाए तो वे लोग अच्छे पड़ौसियों की भाँति व्यवहार करते हैं। परन्तु यह सब इस पर आधारित है कि आप उनमें कितना आदर या डर जगा देते हैं। अगर आपने उनके सामने अनिश्चय या डर दिखाया तो आप निश्चय ही उन्हें भयंकर शत्रु के रूप में बदला हुआ पाएँगे। डाकोटा लोगों ने उनकी इस घबराहट को अच्छी तरह भाँप लिया और तुरन्त उसका लाभ उठाया। उन्होंने बहुत बढ़ा-चढ़ाकर अपनी माँगें रखनी शुरू कर दीं। उनकी यह आदत ही बन चुकी है कि किले के पास आने वाले हर दल के पास जाकर वह दावत माँगते हैं। स्मोक का सारा गाँव इसी इरादे से बहुत दिनों की लम्बी यात्रा करके इस किले के पास तक आया था। कॉफी के एक प्याले और दो-तीन बिस्कुटों को पाकर ही वे खुश हो जाते थे। उनके दावत माँगने पर ये प्रवासी मना नहीं कर सकते थे।

सूर्य छिपने के समय आदिवासियों का गाँव उजाड़ हो चुका था। हम बूढ़े आदमियों, सैनिकों और बच्चों से मिले। वे खूब सज-धजकर प्रवासियों के डेरे की ओर जा रहे थे। उनके चेहरे पर उम्मीद झलक रही थी। वहाँ जाकर वे आधा घेरा बनाकर बैठ गए। स्मोक सबसे बीच में बैठा। उसके दोनों ओर सैनिक बैठे। उनसे परे जवानों और लड़कों की बारी आई। और, सबसे अन्तिम हिस्से पर औरतों और बच्चों को बिठाया गया। जल्दी-से-जल्दी बिस्कुट और कॉफी निपटा दिए गए। प्रवासी फटी आँखों से इनको देखते रह गए। लारामी किले पर जाने वाले हर दल के साथ यही कुछ

दोहराया जाता था। आदिवासियों की हरकतें और उम्मीदें रोज़ ही बढ़ती जा रही थीं। एक शाम को केवल शरारत के कारण ही उन्होंने जिन प्यालों में चाय पी, उन्हें तोड़ डाला। इस बात से प्रवासी इतने निराश हुए कि उनमें से कुछ ने अपनी बन्दूकें उठा लीं और उस भीड़ को खत्म करने पर तुल गए। जब हम इस इलाके से लौटे तब डाकोटा लोगों की यह आदत और हरकतें कुछ अधिक ही बढ़ गई थीं। वे लोग प्रवासियों को नष्ट कर देने की धमकियाँ देने लगे थे और एक दल पर तो उन्होंने गोली भी चला दी थी। इस प्रदेश में सेना और सैनिक कानून को स्थिर करने की बहुत ज़रूरत है। अगर लारामी किले या उसके आसपास जल्दी ही फौजें तैनात न की गईं तो यात्री सदा ही इस प्रकार के भयंकर खतरों के शिकार होते रहेंगे।

डाकोटा या सियू जाति के ओजिल्लाला और ब्रूल तथा और कई वर्ग एकदम असभ्य हैं। सभ्यता का उनपर कोई भी असर नहीं हुआ। उनमें से एक भी आदमी न तो यूरोप की कोई भाषा बोल सकता है और न ही कभी किसी अमरीकी बस्ती में गया है। जब प्रवासियों ने इस राह से ओरेगन की तरफ जाना शुरू किया, तब से एक-दो साल पहले तक इन आदिवासियों ने कहीं भी किसी भी गोरे को काम करते न देखा था। उनकी दृष्टि में केवल वे ही गोरे आए थे, जो अमरीकी फर कम्पनी के इन व्यापार केन्द्रों में काम करते थे। आदिवासी लोग उन्हें बुद्धिमान् समझते थे, पर अपने से कम! वे लोग भी आदिवासियों की भाँति ही चमड़े के घरों में और भैंसों के मांस पर जीवित रहते थे। परन्तु, जब अपने बैलों और गाड़ियों के साथ इन प्रवासियों ने उनके इलाके पर हमला-सा बोल दिया तब उनके अचरज का ठिकाना न रहा। वे सोच भी नहीं सकते थे कि इस धरती पर इतने अधिक गोरे आदमी रहते होंगे। अब धीरे-धीरे उनके अचरज का स्थान अपमान की भावना लेती जा रही है। यदि सावधानी न बरती गई तो परिणाम बहुत अधिक अफसोस-नाक होगा।

हमें आदिवासियों के घर को अन्दर से देखने की इच्छा थी। मैं और शॉ दोनों ही अक्सर उनके गाँव में जाया करते थे। सच तो यह है कि हम प्रायः हर शाम उनके यहाँ जाते थे। शॉ ने स्वयं को डाक्टर के रूप में परिचित कराया था। इसलिए हमें वह एक बहाना मिला हुआ था। अपनी रोज़ की

इस सैर का परिचय देने के लिए मैं एक दिन की घटना को ही बयान करना काफ़ी समझता हूँ। अभी सूरज छिपा ही था। घोड़े घुड़साल में बन्द किए जा रहे थे। इसी समय 'मैदानी मुर्गा' नाम का युवक कुछ लड़कियों को लिए हुए दरवाज़े पर आया। वह अच्छा खासा छैल-छबीला था। उसने उन लड़कियों के साथ एक चक्कर काटते हुए रास रचाना शुरू किया। जब उसने एक लम्बी और लहरदार तान शुरू की तो उन लड़कियों ने भी एक दुःखभरी तान उसमें मिलानी शुरू की। एक मकान के दरवाज़े के बाहर ही लड़के, लड़कियाँ और जवान सुस्ती में बैठे हँस खेल रहे थे। उन पर उदासी-भरी निगाह डालता हुआ एक सजा-धजा सैनिक खड़ा था। उसका मुँह काले रंग से पुता हुआ था। यह इस बात की निशानी थी कि उसने किसी पोनी जाति के आदमी का सिर काट लिया है। इनको पार कर हम आगे बढ़े। यहाँ हमें अपने और लाल होते पश्चिमी आसमान के बीच में बहुत बड़े और ऊँचे डेरे दीखने लगे। हम तुरन्त ही स्मोक के घर चले गए। यह किसी भी अन्य मकान से अच्छा न था। बल्कि, यह कुछ खराब ही था। प्रजातन्त्र मानने वाली इस जाति में सरदार को कभी ऊँचा स्थान नहीं मिलता। एक भैंसे की खाल पर स्मोक चौकड़ी मारे बैठा था। उसने हमें देखते ही बहुत प्यार से प्रणाम किया। निश्चय ही ऐसा शाँ के डाक्टर होने के कारण किया गया था। इस घर में चारों ओर बहुत सी औरतें और बच्चे बैठे थे। शाँ के मरीज़ों की शिकायत प्रायः आँखों की सूजन के सम्बन्ध में होती थी, जो कि धूप लगने से हो जाती थी। इस प्रकार की बीमारी का इलाज वह सफलता से कर लेता था। वह अपने साथ होमियोपैथिक दवाइयों का एक बक्सा भी लाया था। ओजिल्लाला लोगों में इलाज का यह नुकसान न पहुँचाने वाला तरीका लेकर सबसे पहले पहुँचने वाला व्यक्ति शायद वह ही था। हमारे लिए सामने ही एक खाल बिछा दी गई। अभी हम उस पर बैठे ही थे कि एक मरीज़ हाज़िर हो गया। यह सरदार की ही लड़की थी। उसे गाँव की सबसे अच्छी दीखने वाली लड़की कहा जा सकता था। डाक्टर के साथ बहुत खुला व्यवहार होने के कारण उसने अपने को डाक्टर के हाथों में पूरी तरह छोड़ दिया और उसके हर इलाज को सहने लगी। शाँ अपना काम करता रहा और वह उसे देखकर सारे समय हँसती रही। शायद इन आदिवासी

औरतों को मुस्कराना आता ही नहीं। इस रोगी को विदा करने के बाद एक और नमूना सामने आया। यह बुढ़िया बहुत ही कमज़ोर और बुरी दीखने वाली थी। यह सबसे अँधेरे कोने में बैठी दर्द के मारे आगे-पीछे झुक रही थी और दोनों आँखों पर हथेलियाँ रखकर उन्हें रोशनी से बचा रही थी। स्मोक के कहते ही वह बड़े अनमने भाव से आगे आगई और उसने अपनी आँखें दिखाईं। सूजन के कारण उसकी आँखें छिप ही गई थीं। डाक्टर ने ज्योंही अपना हाथ उस पर मज़बूती से रखा तो वह दुःख से रोने लगी। वह दर्द के मारे परेशान थी। इसीलिए वह अपना तमाम धीरज खो बैठी। पर डाक्टर अपना असर बैठाना चाहता था। वह बहुत देर बाद अपनी मनपसन्द का इलाज करने के बाद सफल हो पाया।

अपना काम पूरा करने के बाद उसने कहा, "यह बड़ी अजीब बात है कि मैं अपने साथ स्पेनी मक्खियाँ लाना भूल गया हूँ। हमें इनकी इस सूजन का इलाज करने के लिए कोई दूसरी उत्तेजना देने वाली चीज़ रखनी ही चाहिए।"

ऐसी किसी चीज़ के अभाव में उसने आग में से एक जलता हुआ लाल अंगारा लिया और उस बुढ़िया की कनपटी पर रख दिया। इससे एक ज़बरदस्त छाला पड़ गया। वह बहुत तेज़ी से चीखी और सब लोग हँस पड़े।

अभी यह सब कुछ हो ही रहा था कि सरदार की सबसे बड़ी पत्नी कमरे में आई। उसने हाथ में लकड़ी का हथौड़ा पकड़ा हुआ था। इसका अगला हिस्सा पत्थर का बना हुआ था। और भी ऐसे बहुत से हथियार न्यू इंगलैंड में मिलने वाले पत्थरों से बने हुए हथियारों जैसे लगते थे। इसके हत्थे पर खाल मढ़ी हुई थी। मैंने एक कोने में कुछ देर पहले छोटे-छोटे काले पिल्लों को भैंस की खाल में छिपे हुए पाया था। इस आने वाली बुढ़िया ने उन्हें एकदम ही तंग कर दिया। उसने उनमें से एक के पिछले पांव पकड़े और खींचकर दरवाज़े के बाहर ले गई। वहां उसने उसके सिर पर यह हथौड़ा मार कर उसे मार डाला। मुझे यह पता था कि यह सब किस लिए हो रहा है। इसलिए मैंने पीछे के छेद से अगली बातों को देखना चाहा। वह औरत उस कुत्ते को टाँगों से पकड़कर एक जलती हुई आग पर इधर से उधर घुमा रही थी। कुछ देर बाद उसके सारे बाल झड़ गये। इसके बाद उसने अपना

चाकू नंगा किया और उसके छोटे-छोटे टुकड़े करके एक पतीली में डालने लगी। कुछ ही क्षण में हमारे सामने एक बड़ी सी थाली में परोसकर यह स्वादु मांस लाया गया! कोई भी डाकोटा जाति का व्यक्ति अपने अतिथि का सबसे बड़ा सत्कार कुत्ते का मांस परोसकर ही करता है। यह दावत सबसे बड़ी दावत गिनी जाती है। मुझे पता था कि ऐसी दावत को मना करना उनका अपमान समझा जाएगा। इसलिए हमने उस छोटे से कुत्ते के मांस को शायद उसके अनजान बाप के देखते ही देखते खाना शुरू कर दिया। इस बीच स्मोक अपने बड़े हुक्के को तैयार करता रहा। हमारे भोजन समाप्त करते ही उसने इसे जलवा दिया और अब यह हुक्का हरएक के हाथ में से होकर गुज़रने लगा। यह सब हो जाने के बाद हमने उनसे छुट्टी ली और बिना किसी दिखावे के वहाँ से विदा होकर किले के दरवाजे पर आ पहुँचे। वहाँ हमें अपना परिचय देकर ही अन्दर आना मिला।
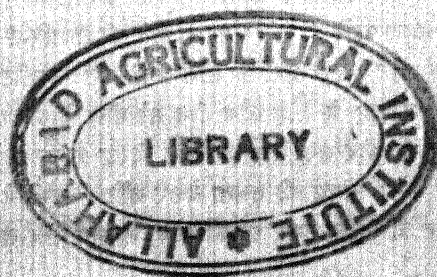
१० : युद्ध की तैयारियाँ

सन् १८४६ की गर्मियाँ डाकोटा लोगों के लिए युद्ध की तैयारियों की बहार बनकर आईं। पश्चिम की तरफ के सभी डाकोटा जाति के लोग इन तैयारियों में लगे हुए थे। कारण यह है कि सन् १८४५ में उन्हें अपने दुश्मनों के हाथों कई बार मार खानी पड़ी। युद्ध करने वाले लोगों के बहुत से दल बाहर हमले के लिये भेजे गये थे। उनमें से बहुत से समाप्त हो गए थे और बहुत से हारकर टूटे-फूटे दिल से वापिस लौटे। इस प्रकार सारी जाति ही दुःख में डूबी हुई थी। शेष में से दस योद्धा 'नाग' जाति के इलाके की ओर गए थे, जिनका नेतृत्व 'बवंडर' नाम के नायक के एक बेटे ने किया था। लारामी के मैदानों को पार करते हुए उन्हें अपने से अधिक दुश्मनों का सामना करना पड़ा। वे घेर लिए गए और उनका हर आदमी मार दिया गया। यह हरकत करने के बाद नाग जाति के लोग अधिक चौकन्ने हो गए और डाकोटा लोगों के क्रोध से डरने लगे। उन्होंने कत्ल किए हुए उस आदमी का सिर वापिस भेजकर संधि की इच्छा प्रकट की। इसके लिए साथ में उन्होंने इसके साथ ही उसके सम्बन्धियों और जाति-भाइयों के लिए कुछ तम्बाकू भेजा। उन्होंने बूढ़े व्यापारी वास्किस को मंझोलिये के रूप में चुना। हमारे कमरे में जो खोपड़ी टंगी थी, उसका यही भेद था।

पर 'बवंडर' इस बात पर राज़ी न हुआ। हालांकि उसका स्वभाव उसके नाम से मेल नहीं खाता था, तो भी वह आदिवासी था और अपनी आत्मा की गहराई से नाग जाति के लोगों से घृणा करता था। खोपड़ी के वापिस आने से बहुत पहले ही उसने बदला लेने की तैयारियाँ पूरी कर ली थीं। उसने तम्बाकू और दूसरी भेंटों के साथ अपने दूत डाकोटा जाति के सभी वर्गों के पास भेज दिए थे। ये लोग तीन सौ मील के अन्दर रहने वाले सभी लोगों के पास गए और उन्हें नाग जाति के विरुद्ध इकट्ठा होने के लिए एक विशेष स्थान और समय की सूचना देकर लौटे। सभी ने यह योजना एकदम स्वीकार कर ली। इस समय अनेकों गाँव, लगभग पाँच-छह हज़ार की

आबादी के साथ, धीरे-धीरे मैदानों में से होकर बढ़ रहे थे और लाबोंते के डेरे की ओर मिलने के निश्चित स्थान पर पहुँचने का यत्न कर रहे थे। यह स्थान प्लाट् नदी के किनारे पर था। वहाँ पर उन्होंने युद्ध की सारी रस्में, विशेष समारोह के साथ, पूरी करनी थीं। तब योजना के अनुसार एक हजार योद्धा शत्रु के इलाके की ओर भेजे जाने थे। इस सब तयारी का परिणाम क्या हुआ? यह बात आगे बताऊँगा।

मैं इस सब बात को सुनकर बहुत खुश हुआ। मैं इस इलाके में आदिवासियों के चरित्र को समझने के लिए ही आया था। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये यह ज़रूरी था कि मैं उनके बीच में उनके जैसा ही बनकर रहूँ। मैंने किसी गाँव में रहने की उनसे प्रार्थना की और स्वयं को किसी एक घर का सदस्य बनाने की पेशकश की। यहाँ से यह सब चर्चा प्रायः इस संबन्ध में ही रहेगी कि वे लोग कैसे बढ़े और उनके रास्ते में कैसे-कैसे वे रुकावटे आई जिनकी आशा भी न थी?

हमने निश्चय किया कि लाबोंते के डेरे के इस सम्मिलन को देखने से किसी प्रकार भी चूकना न चाहिए। हमारे सोचे अनुसार देस्लारियर को किले में हमारे घोड़ों और साज़ सामान की रखवाली करनी थी। हमें अपने साथ सबसे रद्दी जानवर और अपने हथियार ले जाने थे। इस बात की पूरी सम्भावना थी कि एक-दूसरे को न जानने वाले और दूर-दूर से आकर मिलने वाले इन लोगों में ईर्ष्या और लड़ाइयाँ पैदा हो जाएँगी। ये लोग पहले ही काफ़ी असभ्य थे। इस लिए हमें सावधान रहना ज़रूरी था कि कहीं हम भी कोई ऐसी भावना उनमें भड़काने के कारण न बन जाएँ। हमारी योजना तो ऐसी ही थी, पर हमारा दुर्भाग्य यह था कि हम इस रूप में लाबोंते के शिविर को न देख पाए। एक सुबह एक जवान आदिवासी हमारे किले में आया और हमारे लिए दुर्भाग्य की बात साथ ले आया। यह नया आने वाला आदमी बहुत ही साफ़-सुथरा आदिवासी था। उसका चेहरा पराग से पुता हुआ था। उसके सिर पर मैदानी मुर्ग़े की पूँछ बंधी हुई थी। यह मुर्गा राकी पर्वतमाला के पूर्व की ओर देखने में नहीं मिलता। उसके कानों में शंख के बने झुमके लटक रहे थे और उसने एक चमकीला लाल कम्बल अपने शरीर पर लपेटा हुआ था। उसके हाथ में अमरीकी सैनिकों की एक तलवार थी। पर यह

दिखावे के लिए ही थी, क्योंकि इन मैदानों की लड़ाइयों में छुरी, बन्दूक और धनुष-बाण का ही प्रयोग होता है। बाहर जाते हुए कोई भी बिना हथियार के नहीं जाता। इस आदिवासी की पीठ पर भी धनुष-बाण लटके हुए थे। इस वेश में पीले घोड़े पर चढ़ा हुआ, अत्यधिक शान अनुभव करने वाला, यह युवक 'घोड़ा' नाम से प्रसिद्ध था। यह दरवाज़े तक आया। न वह दाएँ मुड़ा और न बाएँ। वह सीधा ही उस दिशा में बढ़ गया जहाँ औरतें अपने दोगले बच्चों को लेकर बैठी थीं। उसने तिरछी निगाहों से उन्हें देखा। यह आदमी जो खबर लाया था वह आगे आनेवाली घटनाओं को बुरा बना देने वाली साबित हुई। वह हेनरी की पत्नी से बहुत बचपन से गहरे सम्बंधों में बँधा हुआ था। आज वह बहुत सख्त बीमार थी। वह और उसके बच्चे 'बवंडर' के ही गांव में थे। वह जगह यहाँ से कुछ दिन के सफ़र की दूरी पर थी। हेनरी की इच्छा थी कि वह मरने से पहले पत्नी के दर्शन कर सके और अगर हो सके तो अपने बच्चों की देखभाल और सहायता का प्रबन्ध कर सके। वह बच्चों को बहुत प्यार करता था। उसे अपनी इस इच्छा को पूरा करने से रोकना बहुत बुरा होता। इसलिए हमने स्मोक के गांव में अपने को शामिल करने का इरादा छोड़ दिया और 'बवंडर' के गाँवों में मिलने और उसके साथ शिविर की निश्चित जगह तक बढ़ने का निश्चय किया। मैं बहुत हफ़्तों से हल्का-हल्का सा बीमार चला आ रहा था। किले में पहुंचने के तीसरे ही दिन, जागते समय, मुझे बहुत जबरदस्त पीड़ा अनुभव हुई और उतना ही नुकसान अनुभव हुआ, जितना किसी सेना को बड़ी लड़ाई हारने पर होता है। डेढ़ दिन में ही मैं बहुत कमज़ोर हो गया। अब मैं बिना तकलीफ़ के घूम-फिर भी नहीं सकता था। मेरे पास कोई डाक्टर भी नहीं था। ना ही मुझे बीमारी के लायक खुराक चुननी मिल सकती थी। इसलिए मैंने अपने को भगवान् के सहारे छोड़ दिया और कष्ट की बिना परवाह किए अपनी बची-खुची ताकत को प्रयोग करने का निश्चय किया। इस प्रकार हम 'बवंडर' के गाँवों की ओर बीस जून को चल पड़े। हालांकि मेरे पास ऊँचे किनारों वाली पहाड़ी काठी थी, तो भी मैं घोड़े की पीठ पर बड़ी कठिनता से जमकर रह सका। किला छोड़ने से पहले हमने लम्बे बालों वाले एक कनाडियन—रेमन्ड—को नियुक्त कर लिया। उसका चेहरा उल्लू जैसा था और देस्लारियर के चेहरे से वह मुकाबला कर

रहा था। हमने केवल इसे ही नये साथी के रूप में नहीं पाया, बल्कि रेनल नाम का एक दोगला व्यापारी भी हमारे साथ हो लिया। उसकी पत्नी मार्गोत और उसके दो भतीजे भी हमारे साथ थे। इनके साथा ही 'घोड़ा' नामक आदिवासी सुन्दर युवक और भाई—'तूफ़ान'—भी हमारे साथ थे। इस सब साथ को लेकर हम मैदान में पहुँचे और घिसी पिटी पगडंडी को छोड़कर उजाड़ पहाड़ियों को पार करने लगे। इन पहाड़ियों ने लारामी धारा की घाटी को चारों ओर से घेरा हुआ था। आदिवासी और गोरे, कुल मिलाकर, हम आठ आदमी और एक औरत थे।

व्यापारी रेनल अत्यन्त पतला, दुबला और स्वार्थ का पुतला था। उसने अपने हाथ में घोड़ा नाम के आदिवासी की सैनिकों वाली तलवार पकड़ी हुई थी और वह व्यर्थ की सैनिक चहल-कदमी करके आनन्द ले रहा था। वास्तव में आधे से अधिक जीवन आदिवासियों में बिताने के कारण उसने, आदतें ही नहीं, भाव भी उनके ही अपना लिए थे। उसकी पत्नी मार्गोत ढाई मन से अधिक भारी शरीर वाली एक मादा जानवर कही जा सकती थी। वह भी घोड़ों के पीछे बँधी टोकरी में बैठी हुई चल रही थी। उसी टोकरी में, उसके भारी-भरकम बोझ के अलावा और भी बहुत-सा सामान पड़ा था। खोजी रस्सी को पकड़े हुए वह अपने पीछे-पीछे एक लादू घोड़े को चला रही थी जिस पर उनके घर ढकने वाली खालें लदी हुई थीं। देस्लारियर हमारी गाड़ी के साथ-साथ-चल रहा था और रेमंड पीछे-पीछे खाली घोड़ों को खदेड़ता हुआ चला आ रहा था। दोनों आदिवासी अशान्त थे। अपने हाथों में धनुष और तीर-तरकशों को सम्भाले वे पहाड़ियों पर जल्दी-जल्दी बढ़ रहे थे। वे किसी भेड़िये या हिरण को घनी झाड़ियों में से चौंका देते थे। मैं और शॉ इस असभ्य जलूस के आगे-आगे चल रहे थे। कपड़े न रहने पर हमने भी पशु-फँसाने वालों जैसी हिरण की खाल की वेशभूषा पहन ली थी। हेनरी सबसे आगे-आगे चल रहा था। एक के बाद दूसरी पहाड़ियों, खड्डों आदि को पार करते हुए हम एक ऐसे प्रदेश में से गुज़रे जो बिल्कुल उजाड़, फटा-फटा और झुलसा हुआ था तथा जिसमें हमारे परिचित पौधों में से एक भी पौधा नहीं उगा था। हाँ, यहाँ अनेकों औषधियाँ अवश्य लगी थीं। खासकर एबूसिन्थ नाम का पौधा हर ढलान पर लगा हुआ था। दूसरी ओर कीकर की

फलियाँ हर घाटी में लटक रही थीं। काफी देर बाद हम एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़े। हमारे घोड़े आग जलाने वाले पत्थरों तथा लाल आदि अन्य अनेक पत्थरों पर से होते हुए शिखर तक पहुँचे। हमने लारामी धारा के जंगली तटों की ओर देखा। यह धारा हमसे बहुत दूर एक बल-खाते साँप की तरह बहुत पतली और तंग-सी होकर इधर-उधर बिखरे हुए फूली लकड़ी वाले और नींबू की किस्म के पेड़ों में से होकर बह रही थी। पर्वतों की चूने जैसी सफ़ेद चोटियाँ जंगलों और चरागाहों की हरी-भरी घाटियों से घिरी हुई लगती थीं। इन्हीं के बीच से होकर हम बढ़े और रात का डेरा नदी किनारे डाला। सुबह हमने नदी के साथ-साथ एक विस्तृत घास के मैदान को पार किया। सामने एक बगीचा था और उसकी छाया में ही एक पुराने व्यापारी-केन्द्र के मकानों के निशान बचे हुए थे। यह अमराई जंगली गुलाबों से भरी हुई थी। उनकी सुन्दर सुगन्ध हमें अपने घरों की याद दिला रही थी। हम ज्योंही पेड़ों से बाहर निकले। एक चार फुट लम्बा और आदमी की भुजा जितना मोटा सांप सामने चट्टान पर कुंडली मारे बैठा दिखाई दिया। वह हमें देखकर फुफकार रहा था। पास के कुछ पेड़ों में से एक खरगोश, जो हमारे इलाके के खरगोश से दुगुने आकार का रहा होगा, उछलकर सामने आ कूदा। 'कल्यू' नाम के पक्षी हमारे सिरों के ऊपर ही शोर करते हुए मँडरा रहे थे और मांदों के आगे बैठे अनेकों छोटे-छोटे मैदानी कुत्ते हमारी ओर देखकर भौंक रहे थे। अचानक ही एक हिरण सामने की झाड़ियों में से उछला। उसने हमारी ओर उत्सुकता से देखा। और, तब अपनी सफेद पूँछ खड़ी करके इस तरह से उसने जम्हाई ली, जैसे वह कोई शिकारी कुत्ता हो। हमारे दोनों आदिवासी युवक साथियों ने एक सफेद भेड़िया एक खड्ड में देख लिया। यह बछड़े जितना बड़ा रहा होगा। वे चीखते हुए उसके पीछे भाग पड़े। किन्तु वह भेड़िया धारा में कूद कर पार चला गया। तभी गोली चलने की आवाज आई। पर, गोली उसके सिर के ऊपर से ही निकल गई थी। वह सीधी चढ़ाई पर जैसे-तैसे चढ़ ही गया। मजाक करने के लिए जैसे वह कुछ पत्थर और मिट्टी भी नदी में सरका कर गिराता गया। कुछ थोड़ा आगे चलने पर हमने धारा के दूसरे किनारे, इस इलाके की दृष्टि से, एक अजीब दृश्य देखा : सामने के वृक्षों के समूह में से लगभग दो सौ बारहसिंगों का जत्था चरागाह में निकल आया।

चलते हुए उनके सींग एक दूसरे से टकरा रहे थे। हमें देखते ही वे भाग खड़े हुए और सामने के खुले स्थानों में से होते हुए पेड़ों के समूहों में और बिखरी हुई अमराइयों में जा छिपे। हमारे बाईं ओर एक उजाड़ और ऊसर मैदान क्षितिज तक फैला हुआ था। हमारे दाईं ओर एक गहरी खाई थी, जिसके तल में लारामी धारा बह रही थी। आखिर हम इस सीधी ढलान के एक किनारे पर पहुँच गए। हमारे सामने एक संकरी घाटी बहुत लम्बी घास और बिरले वृक्षों के साथ मील भर तक फैली हुई थी। धारा इसी के साथ-साथ बह रही थी। दूसरे किनारे पर पहुँचकर हम रुके और हमने वहीं डेरा डाल लिया। वहाँ एक बड़ा-सा पेड़ अपनी शाखाओं को फैलाए हुए खड़ा था। हमने उसी के नीचे अपना तम्बू गाड़ा। हमारे सामने आधा-सा घेरा बनाती हुई लारामी धारा, सामने की सफेद ऊँची चोटियों के नीचे से होती हुई, बहती जा रही थी। हमारे दाईं ओर काफ़ी घने छोटे-छोटे वृक्षों के समूह थे। सामने की चोटियाँ भी झाड़ियों से आधी ढकी हुई थीं। हमारे पीछे की ओर भी, हरे मैदान में, कहीं-कहीं फूली लकड़ी के बड़े वृक्ष बिखरे हुए थे। इनमें से मील भर दूर से आने वाला कोई भी दुश्मन या दोस्त साफ दिखाई दे सकता था। हमने यहाँ कुछ दिन रहने और 'बवंडर' के आने की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया; क्योंकि यदि वह लाबोंने शिविर की ओर गया ही तो वह इधर से होकर ही जाएगा। उसे खोजने के लिए आगे जाना अधिक उचित न था। यह सारा प्रदेश कटा फटा था। साथ ही उसकी स्थिति और हरकतों का भी कुछ निश्चय न था। इसके अलावा हमारे घोड़े बहुत थक चुके थे और मेरी अपनी हालत यात्रा करने के योग्य न थी। यहाँ हमें घास, पानी और मछली काफ़ी मात्रा में मिल सकती थी। छोटा-मोटा शिकार, बारहसिंगे और हिरण आदि के रूप में, मिल सकता था, हालाँकि भैंसे यहाँ नहीं थे। हमारे संतोष में एक ही कमी थी। हमारे पीछे की ओर झाड़ियों और सूखी घास, का एक लम्बा चौड़ा मैदान था। इसमें घुसना बहुत खतरनाक था। इसमें फनियर साँपों के अनेकों बिल मौजूद थे। हेनरी ने 'घोड़े' को आगे भेज दिया, ताकि वह उसकी पत्नी तक संदेश ले जा सके और वह अपने सम्बन्धियों समेत, सारे गाँव को पीछे छोड़कर, जल्दी से जल्दी हमारे डेरे तक पहुँच सके।

हमारा दैनिक कार्यक्रम इतना नियमित चलने लगा, जैसे हमारी कोई

अच्छी जमी हुई गृहस्थी हो। पुराना वृक्ष बीचों-बीच में था। हमारी राइफ़लें उसी के तने के सहारे टिकी रहती थीं और हमारी काठियाँ उसके चारों ओर जमीन पर पड़ी रहती थीं। इसकी ऊबड़-खाबड़ जड़ें कुछ इस प्रकार मुड़ी हुई थीं कि हम उन्हें आराम कुर्सियों के रूप में प्रयोग कर सकते थे और इस की छाया में आराम से बैठकर पढ़ सकते और तम्बाकू पी सकते थे। परन्तु, इन सबसे बढ़कर खाने का समय हमारे लिए सबसे अधिक चाव-भरा होता था। भोजन के लिए सामान भी बहुतायत से मिल जाता था। कोई न कोई बारहसिंगा या हिरण अवश्य ही किसी झाड़ी से कूदकर आ निकलता और उसकी पीठ और कमर इस तने के साथ टिक जाती। मुझे वह डेरा अब भी एक सैनिक डेरे की भाँति याद आता है : वह पुराना वृक्ष, सफेद तम्बू, उसकी छाया में सोता हुआ शॉ और नदी की धारा के किनारे रेनल का छोटा-सा घर। रेनल का घर एक चूल्हे जैसा दिखाई देता था। वह फटी-पुरानी भैंसों की खालों से ढकी हुई बल्लियों से बना था। उसका एक पासा खुला हुआ था। दरवाज़े के साथ बारूद का डिब्बा और गोलियों का थैला लटक रहे थे। साथ ही उसका लम्बा लाल हुक्का और तरकस तथा धनुष-बाण भी लटक रहे थे। रेनल स्वयं, रंग को छोड़कर, बाकी सब बातों में आदिवासियों जैसा ही था। वह भी भैंसे का शिकार पुराने हथियारों के साथ करना चाहता था। इस सब के बीच अँधेरे में, अपने भारी-भरकम बोझे को घर के साज-समान, रोएँदार खालों, कम्बलों और रंगे हुए चमड़े आदि के बीच छिपाए बैठी, श्रीमती मार्गोत पहचानी जा सकती थी। यहाँ वह सुबह से शाम तक बैठी रहती थी। मोटापे और सुस्ती से वह भरपूर थी। उसका पति या तो चिलम पीता रहता, हमसे छोटी-मोटी भेंटें माँगता रहता, या अपने झूठे कार-नामों की कहानियाँ सुनाता रहता। वह कभी-कभी इन मैदानी इलाकों के अनुकूल कोई स्वादभरी चीज पकाने में व्यस्त भी रहता। रेनल अपने काम में मँजा हुआ था। देस्लारियर और वह मिलकर रसोई का काम निपटाते थे। उधर रेमंड भैंसे की सफेद खाल बिछाकर भोजन का सामान परोसता। चाय और भोजन का सामान इसी खाल पर फैला दिया जाता और तब वह हमें हमारे तम्बू में आकर बहुत नम्रता से तैयारी की सूचना देता। क्षण भर तक हम उल्लू जैसी उसकी गोल-गोल आँखों को देखते रहते। और कुछ वह हमें कहने

आता उसे भूल जाता। पर, तब वह बहुत हिम्मत से याद करके हमें बताता कि खाना तैयार हो चुका है। सूरज छिपने के समय घोड़े वापिस बुला लिए जाते। इस घड़ी यह जंगली और एकान्त वातावरण एक नया ही रूप धारण कर लेता। घोड़े सारा दिन-भर पास की चरागाह में चरते रहते, पर शाम के समय उन्हें डेरे के पास ही बाँध दिया जाता। मैदान अँधेरे में ढकता जाता और हम आग के चारों ओर बैठकर बातें करते रहते। तब हमें नींद आने लगती। अपनी काठियाँ जमीन पर ही फैला कर अपने कम्बलों में लिपटे हुए उस आग के चारों ओर सो जाते। हमने कोई पहरेदार नहीं खड़ा किया, क्योंकि अब हम काफी सुस्त हो चुके थे। इस पर भी हेनरी भरी हुई रायफल अपनी बगल में रखकर सोता था। बिना बात के भी सावधानी बरतना उसके वीर स्वभाव का अंग बन चुका था। हमें जब-तब इस बात का संकेत मिलता रहता था कि वहाँ हमारी दशा बहुत सुरक्षित नहीं थी। काक जाति की बहुत सी लड़ाकू टुकड़ियाँ हमारे आस-पास के इलाके में ही थीं और उनमें से एक यहाँ से कुछ ही दिन पहले गुजरी थी। उन्होंने एक पेड़ की छाल उखाड़कर उस पर कुछ चित्रों के द्वारा एक बात लिखी थी। इसका सार यह था कि उन्होंने अपने शत्रु डाकोटा लोगों के इलाके पर हमला किया है और अब वे इनसे मुकाबले की आशा रखते हैं। एक सुबह हमने सारे इलाके को धुन्ध से घिरा हुआ पाया। शाँ और हेनरी घोड़ों पर चढ़कर कुछ दूर तक गए और एक विशेष खबर लेकर लौटे। उन्होंने हमारे डेरे से कुछ ही दूरी पर तीस घुड़सवारों की एक ताजा पैंड़ के निशान देखे। वे लोग न तो गोरे हो सकते थे और ना ही डाकोटा; क्योंकि हमें किसी भी ऐसे दल के पास होने की खबर न थी। निश्चय ही ये लोग काक जाति के थे। इस धुन्ध के कारण ही हम एक कठिन युद्ध से बच सके। अगर वे हमें देख लेते तो वे हम पर और हमारे आदिवासी साथियों पर निश्चय ही हमला कर देते। इस बारे में हमें जो संदेह था भी वह एक-दो दिन बाद ही मिट गया। क्योंकि तब दो तीन डाकोटा जाति के लोग हम तक आए। उन्होंने उसी सुबह एक घाटी में छिपकर काक जाति के लोगों को जाते हुए देखा और गिना था। उन्होंने बताया कि जब तक वे चुगवाटर नाम की जगह तक न चले गए, तब तक इन्होंने उन्हें अपनी निगाह में रखकर उनका पीछा किया। वहाँ काक लोगों ने डाकोटा जाति के पांच

मृत शरीरों को ज़मीन से खोदकर निकाला और उन्हें शत्रुओं की रीति के अनुसार पेड़ से बाँधकर लटका दिया। तब उन्हें अपनी बन्दूकों से दाग कर कण-कण में उड़ दिया।

हमारा डेरा एकदम सुरक्षित भले ही नहीं था, तो भी यहाँ काफ़ी आराम था। कम-से-कम शाँ के लिए तो यह बात ठीक थी। मैं तो बीमारी और अपने इरादों में देरी होने के कारण बहुत दु:खी था। ज्यों ही अपनी बीमारी से उबरने के कुछ लक्षण मुझे दिखाई दिए, मैं मैदान में हथियारों से सजकर निकलने लगा। कभी शाँ के साथ धारा में नहाने जाता अथवा पड़ोस के मैदानी कुत्तों की बस्ती में जाकर एक झूठ-मूठ का युद्ध खड़ा कर देता। रात के समय आग के चारों ओर बैठ कर हम आदिवासियों की अस्थिरता और अनिश्चय के लिए उन्हें कोसने लगते और 'बवंडर' और उसके साथियों को गालियां देने लगते। अन्त में हमारे लिए यह बात असह्य हो गई।

मैंने कहा, "कल सुबह मैं किले की ओर जाऊँगा और देखूँगा कि क्या नई खबर है।"

उसी शाम काफ़ी देर बाद, जब आग बुझने वाली थी और सभी लोग सो चुके थे, बहुत दूर से अँधेरे में से ही चीखने की एक आवाज़ सुनाई दी। हेनरी आवाज़ को पहचान कर उछल पड़ा और उसने उसका उत्तर दिया। हमारा मित्र 'घोड़ा' हमारे बीच आ गया। वह अभी-अभी गाँव की ओर से अपना काम पूरा करके लौटा था। उसने आकर बहुत ठंडे दिल से अपनी घोड़ी बाँध दी और बिना एक भी शब्द बोले खाना शुरू कर दिया। पर, उसकी यह बेफिक्री हमें बहुत खलने लगी। गाँव के सम्बन्ध में पूछने पर उसने बताया कि वह यहां से दक्षिण की ओर पचास मील दूर था और वह इतना धीमे धीमे बढ़ रहा था कि यहाँ पहुँचते उसे एक सप्ताह से कम नहीं लगेगा। तब हेनरी की पत्नी के विषय में पूछने पर उसने बताया कि वह जितना भी जल्दी संभव है, उतनी तेज़ चाल से महतो तातोका और उसके बाकी भाइयों के साथ आ रही है। पर, शायद वह हम तक पहुँच नहीं सकेगी, क्योंकि वह मरने-ही वाली है और हर घड़ी हेनरी के बारे में पूछती रहती है। हेनरी का सभ्य चेहरा भी इस खबर को सुनकर उदास हो गया और लटक गया। उसने हमसे पूछा कि अगर हम खुशी से उसे जाने दें, तो वह सुबह ही उसकी खोज में चल

पड़ेगा। इस पर शॉ ने उसके साथ चलने को कहा।

हमने सुबह होते ही अपने घोड़ों की काठियाँ कसीं। रेनल ने अपने को अकेला छोड़ देने का विरोध किया। हम लोगों के जाने के बाद उसके पास दो कनाडा निवासी और दो आदिवासी ही रह जाते, खासकर जबकि शत्रु इतना पास था। उसकी शिकायतों का ख्याल न करके हमने उसे छोड़ा और चुग वाटर के मुहाने तक आकर अलग-अलग हो गए। शॉ और हेनरी दाईं ओर मुड़ गए, जबकि मैं किले की तरफ़ मुड़ चला। अपने साथी और उसकी दुर्भाग्य से मारी पत्नी के बारे में कुछ कहने से पहले मैं लारामी किले की कुछ बात कहना चाहूँगा। यह हमसे अठारह मील से अधिक दूर न था और मैं यहाँ तीन घंटे में ही पहुँच गया। एक सिकुड़ी-सी आकृति वाला कनाडावासी, सफ़ेद पोशाक में ऊपर से नीचे तक ढका हुआ, बड़े दरवाज़े के बीचों-बीच खड़ा था। उसने अपना ठिगना-सा जंगली घोड़ा लगाम से पकड़ा हुआ था। इसे कभी उसने जंगल से ही पकड़ा था। उसके अपने अंग बहुत ही गठे हुए थे। उसकी आँखें साँप जैसी चमक रही थीं। अपने सिर के चारों ओर उसने वह सफ़ेद कपड़ा इस तरह लपेटा हुआ था, जैसे वह कपूचिन सम्प्रदाय का कोई साधु हो। उसका मुख पुराने चमड़े के टुकड़े जैसा लगता था और उसके होंठ सारे मुख पर फैले हुए लगते थे। उसने अपना लम्बा और झुर्रीदार हाथ फैलाकर स्वागत किया। ऐसा स्वागत किसी साधारण आदिवासी के स्वागत से अधिक स्नेह वाला था। वह मेरा मित्र था। हमने कभी आपस में घोड़े बदले थे। पाल नाम के इस व्यक्ति ने अपने को सम्मानित समझकर हर जगह यह घोषणा की थी कि गोरे आदमी बहुत अच्छे दिल के होते हैं। वह स्वयं मिसूरी के डाकोटा लोगों में से एक था और दोगले दुभाषिये 'पियेर् दोरियों' नाम के प्रसिद्ध आदमी का बेटा था। इसके पिता का वर्णन इर्विंग की 'आस्तोरिया' नाम की पुस्तक में बार-बार आया है। उसने बताया कि वह रिचर्ड के व्यापार-घर की ओर अपना घोड़ा, किन्हीं प्रवासियों को, बेचने ले जा रहा था। वे वहाँ डेरा डाले पड़े थे। उसने मुझ से भी साथ चलने के लिए कहा। हमने साथ-साथ ही धारा पार की। पाल अपने जंगली घोड़े को पीछे-पीछे घसीटता ला रहा था। हमने जब सामने के रतीले मैदानों को पार किया, तब उसने बात करनी शुरू की। वह एक प्रकार से अपने को मिला-जुला नागरिक अनुभव करता था।

वह गोरों की बस्तियों में भी गया था और हजारों मील के दायरे में बसे आदिवासियों की अनेकों जातियों को शान्ति और युद्ध के दिनों में भी उसने देखा था। वह फ्रांसीसी भाषा की एक बोली और अंग्रेजी का एक बिगड़ा रूप बोल लेता था। पर, तो भी वह पूरा आदिवासी ही था। जब वह अपनी जाति के शत्रुओं के विरुद्ध कारनामों का वर्णन कर रहा था, तो उसकी आँखें एक अजीब चमक से चमक उठी थीं। उसने बताया कि मिसूरी के ऊपरी इलाके में 'होहे' लोगों के एक गाँव को किस तरह डाकोटा जाति के लोगों ने, उसके आदमियों, औरतों और बच्चों को मारकर, मिटा दिया है और अब किस प्रकार बहुत अधिक संख्या में होने के कारण उन्होंने सोलह बहादुर देलावारे जवानों को मार डाला है। उन लोगों ने अपने शत्रुओं की भीड़ में फँस कर भी अन्तिम आदमी तक लड़कर कट जाना अधिक अच्छा समझा। उसने एक बात और भी मुझे बताई, जिसपर मैंने तब तक विश्वास न किया जब तक और कई जगहों से सुनकर मेरा संदेह दूर न हुआ।

छः साल पहले जिम बेकवर्थ नाम का, फ्रेंच, अमरीकी और नीग्रो खून से मिला जुला, दोगला आदमी फर कम्पनी की नौकरी में रहकर काक जाति के एक बड़े गाँव में व्यापार करता था। वह पिछली गर्मियों में सैंट लुई में भी आया था। वह बहुत ही असभ्य, धोखेबाज, खूँखार और बेईमान किस्म का आदमी था। ऐसा बुरा चरित्र इस इलाके में किसी और का नहीं सुना गया। वह किसी भी सोते हुए आदमी को कत्ल कर सकता था और कोई भी नीच-से-नीच काम करने को तैयार रहता था। एक बार जब वह काक लोगों के गाँव में था, ब्लैकफुट (कृष्णपाद) लोगों की तीस-चालीस की संख्या की एक टुकड़ी चुपचाप सरकती हुई आई और इक्के-दुक्के घूमते हुए लोगों को मारकर सारे घोड़ों को भगा ले गई। काक जाति के योद्धा उनके पीछे-पीछे भागे और एक स्थान पर उन्होंने उन्हें घेर लिया। ऐसे मौके पर शत्रुओं ने अपने चारों ओर लट्ठों का एक आधा घेरा (परकोटा) सा बना लिया। वे इन लोगों के आने की प्रतीक्षा करने लगे। बल्लियों और छड़ियों से चार-पाँच फुट ऊँची बनाई गई दीवार उनकी रक्षा कर रही थी। काक जाति के लोग इससे भी ऊँची जगह लाँघकर अपने शत्रुओं का नामों-निशान मिटा सकते थे, पर तो भी उन्होंने इस छोटे-से किले को पार करना असम्भव समझा। युद्ध के नियमों

के मुताबिक वे इसे पार करना बहुत बुरा समझते थे। चीखते और चिल्लाते हुए और एक ओर से दूसरी ओर शैतान के अवतार के रूप में घूमते हुए वे गोलियों और बाणों की बौछार इस जंगले के ऊपर से करते रहे। परन्तु अन्दर के लोगों में से एक भी घायल न हुआ। हां उनकी गोलियों से काक जाति के कुछ हमलावर जरूर मारे गए। एक दो घंटे तक मूर्खों के ढंग की यह लड़ाई चलती रही। जब-तब काक जाति का कोई वीर योद्धा युद्ध का गीत गाता हुआ और अपने को सबसे अधिक वीर बताता हुआ आगे बढ़ता और कुल्हाड़ी लेकर सामने के जंगले को काटने की कोशिश करता। अपने मित्रों की तरफ़ पीछे लौटते हुए उसपर पीछे से बाणों से वर्षा होती और वह गिर कर मर जाता। इस पर भी सबने मिलकर कोई हमला न किया। कृष्णपाद लोग अपने इस बेड़े में सुरक्षित रहे।

अन्त में बेकवर्थ का धैर्य टूटा और उसने काक जाति के लोगों से कहा, 'तुम सब लोग निरे मूर्ख और बुद्धू हो। आओ, अगर तुम में से कोई बहादुर है तो मेरे साथ आए। मैं तुम्हें बताऊँगा कि इनसे कैसे लड़ना है!' उसने पशु फंसानेवालों जैसी अपनी पोशाक उतार दी और नंगे बदन, आदिवासियों के समान ही, आगे बढ़ने लगा। उसने अपनी राइफल जमीन पर ही रख दी और एक हल्की-सी कुल्हाड़ी हाथ में लेकर बढ़ा। वह मैदान में दाहिनी ओर एक खड्ड में छिपता हुआ आगे दौड़ा और तब चट्टानों के पीछे से चढ़ते हुए उनके पीछे की ओर पहुँच गया। चालीस या पचास लड़ाकू युवक भी उसके पीछे-पीछे गए। नीचे से आने वाली चीख और चिल्लाहट से वह समझ गया कि कृष्णपाद लोग उसके बिल्कुल नीचे ही थे। आगे दौड़कर उसने एक बड़ी चट्टान को पकड़ा और उनके बीच कूद पड़ा। कूदने के साथ ही उसने एक आदमी को उसके लम्बे बालों से पकड़ लिया और नीचे गिराकर खींचते हुए उसका गला काट डाला। उसने तब एक दूसरे आदमी की कमर पेटी खींचकर एक बहुत भयंकर धक्का मारा और उसके पांव पकड़कर बहुत जोर के साथ काक जाति का जयघोष किया। उसने अपने चारों ओर अपना कुल्हाड़ा कुछ इस तरह चलाया कि कृष्णपाद लोगों के बीच में से उसने रास्ता साफ़ कर दिया। अगर वह चाहता, तो लकड़ियों के बने हुए किले की दीवार को लांघकर अपने को बचा सकता था। परन्तु यह जरूरी नहीं था, क्योंकि उसके दल

के लड़ाकू सैनिक उसकी आवाज सुनकर अपने शत्रुओं में एक-एक करके कूदने लगे। सामने की ओर से भी उसके दल के लोगों ने नारे के उत्तर में नारे लगाए और तुरन्त ही बढ़ चले। इस नकली किले के अन्दर जो लड़ाई हुई वह भयंकर थी। कुछ देर तक तो घिरे हुए लोग छेड़े हुए चीते की भाँति बहुत खूँखार होकर लड़े, पर कुछ ही देर बाद उनमें से एक-एक आदमी मारा जा चुका था और उनके कुचले हुए शरीर वहीं बिखरे पड़े थे। उनमें से एक भी भाग न सका।

पाल ने अपनी कहानी जब तक समाप्त की, हमें रिचर्ड का व्यापारी किला दिखाई देने लगा। इसके चारों ओर अनेक किस्म के आदमियों की भीड़ लगी हुई थी और इसके कुछ ही दूरी पर सामने की ओर प्रवासियों का एक खेमा गड़ा हुआ था।

मैंने कहा, "पाल तुम्हारे मिनिकौंग्यू घर किधर हैं ?"

पाल ने उत्तर दिया, 'अभी तक तो नहीं आए। हो सकता है कल तक आ जाएँ।"

मिसूरी से चले हुए डाकोटा लोगों के दो बड़े-बड़े गाँव, तीन सौ मील की यात्रा करके, युद्ध में शामिल होने के लिए आज ही रिचर्ड के डेरे तक पहुँचने वाले थे। पर, अब तक भी उनके पहुँचने का कोई निशान न था। इसलिए एक बहुत ही शोर-शराबे वाली, शराब में मस्त, भीड़ में से होते हुए मैं बल्लियों और गारे से बने हुए एक मकान में घुसा। इस किले में यही सब से बड़ा मकान था। यहाँ अनेक जातियों और रँगों के लोग जमा थे। सभी ने थोड़ी बहुत शराब पी हुई थी। कैलिफ़ोर्निया के कुछ प्रवासियों को यात्रा की इस अन्तिम मंज़िल में पता चला कि उनके पास सामान कुछ अधिक है, जो उनके लिए बोझ साबित हो रहा है। इसलिए उन्होंने इसका बड़ा हिस्सा व्यापारियों को बेच दिया या यूँ ही फेंक दिया। परन्तु मिसूरी की शराब के बोझ को हल्का करने के लिए उन्होंने उसे औंधा होकर पीना ही उचित समझा। यहाँ कमजोर-सी औरतें अपने बिस्तरों पर लेटी हुई थीं। कुछ मैक्सिको वासी धनुष और बाण लिए बैठे थे। कुछ आदिवासी शराब के नशे में चूर थे। कुछ लम्बे बालों वाले पशु-फँसाने वाले कनाडा निवासी और अमरीका के जंगलों के निवासी अपनी पिस्तौल और छुरी लटकाए हुए यहाँ जमा थे। कमरे के बीचों-

बीच एक बहुत लम्बा और पतला आदमी ऊन का एक भद्दा कोट पहने हुए खड़ा सारे इकट्ठे लोगों को जैसे कोई भाषण दे रहा था। वह एक हाथ को हवा में हिला रहा था और दूसरे में उसने शराब की बोतल कसकर पकड़ी हुई थी। इस बोतल को वह हर मिनट अपने होठों से लगा रहा था हालाँकि यह बहुत पहले ही खाली हो चुकी थी। रिचर्ड ने इस आदमी से मेरा परिचय कराया। इसका नाम कर्नल र — था। कभी यह अपने दल का नेता रहा था। कर्नल ने मेरी कमीज़ के कालर पकड़ते हुए अपनी हैसियत मुझ पर जतानी शुरू की। उसने बताया कि उसके आदमियों ने बग़ावत करके उसे नेतागीरी से हटा दिया है। फिर भी लोग उसके दिमाग़ के कायल थे। संक्षेप में, अब भी वही उनका सच्चा नेता था। इधर कर्नल बोल रहा था और उधर मैं चारों ओर जमा असभ्य लोगों को देख रहा था। सच यह था कि वह ऐसे लोगों का नेतृत्व रेगिस्तानी मैदान की इतनी बड़ी यात्रा के बीच करने के लिए तैयार न था। बाकी लोगों में से डेनियल बर्न नाम के प्रसिद्ध व्यक्ति के तीन पोते खड़े थे। उन्होंने अपने मशहूर दादा के गुणों को पूरी तरह पाया था। वे कद में लम्बे थे। पर उनमें अपने दादा जैसी शान्ति और धीरज दिखाई न देता था।

इस दल के लोगों को इस समय के महीनों बाद एक बहुत भयंकर दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा। कैलिफोर्निया से बहुत दिन बाद लौटते हुए जर्नेल कीर्नी इस बात की खबर लाया था। पहाड़ों के बीच वे गहरी बर्फ में फँस गए थे। ठण्ड और भूख से तंग आकर, उन्होंने एक दूसरे के मांस को खाकर, अपना गुज़र किया।

इस गड़बड़झाले से मैं उकता गया। मैंने पाल को बुलाया और वहाँ से निकल चलने को कहा। पाल धूप में किले की दीवार के नीचे बैठा आराम कर रहा था। वह उछला और घोड़े पर सवार हो कर मेरे साथ लारामी किले की ओर चल पड़ा। जब हम वहाँ पहुँचे, तो दरवाजे से एक आदमी बाहर निकल रहा था। उसकी पीठ पर बोझ था और कंधे पर राइफल रखी थी। कुछ लोग उसके चारों ओर इकट्ठे होकर उससे विदाई के लिए हाथ मिला रहे थे। मैंने अचरज किया कि कैसे एक आदमी अकेला ही पैदल इस लम्बे रेतीले मैदान की यात्रा पर निकल पड़ा है? परन्तु, मुझे उसी समय इस बात

का उत्तर मिल गया। उस कनाडा निवासी का नाम पैरो था। वह वहाँ के स्वामी से लड़ बैठा था और अब उसका किले में रहना असंभव था। अपने अधिकार के मद में आकर बोदू ने उसे गाली दी थी और उसने उत्तर में घूसों से उसकी मरम्मत कर दी थी। दोनों ही किले के बीचों-बीच एक दूसरे से जूझ पड़े। एक ही क्षण में बोदू नीचे आ गिरा। अब वह गुस्से में आए हुए इस कनाडा-निवासी के रहम पर था। अगर इसी समय उसका साला—एक आदिवासी—बीच में न आ पड़ता, और उसके दुश्मन को पकड़ न लेता, तो शायद बोदू के साथ बुरी बीतती। पैरों उस आदिवासी के हाथों से छूट गया। तब दोनों ही गोरे अपने-अपने कमरों से बन्दूकें लेने के लिए भागे। जब बोदू ने अपने दरवाज़े से कनाडा निवासी को हाथ में बन्दूक लिए हुए और मैदान के बीचों-बीच खड़े होकर लड़ाई के लिए ललकारते हुए सुना, तो उसका दिल जवाब दे गया। उसने अधिक उचित समझा कि वह कमरे में ही छिपा रहे। बचाने वाले बूढ़े आदिवासी ने भी अपने बहनोई की कायरता से घबरा कर उसे बार-बार, मैदान में निकल कर, गोरे लोगों के तरीके से लड़ने के लिए उकसाया। बोदू की पत्नी ने भी अपना अपमान अनुभव करके अपने स्वामी को बार-बार कुत्ते और बूढ़ी औरत के समान बताया। पर, इस सब का कोई भी असर न हुआ। बोदू की कायरता उसके साहस पर जीत गई थी। अब वह हिलने को तैयार न था। नीचे पैरों अपने कायर स्वामी के लिए बुरी-बुरी गालियों की बौछार करता जा रहा था। इस सबसे हारकर उसने सूखे मांस का एक गट्ठर बांधा और अपनी पीठ पर लाद कर, मिसूरी में स्थित, पियेर किले की ओर चल पड़ा। रास्ता रेगिस्तानी प्रदेश में से होकर जाता था और तीन सौ मील से भी अधिक लम्बा था। राह में आदिवासियों का खतरा था। पर तो भी वह अकेला, पैदल ही, चल पड़ा।

उस रात मैं किले में ही रहा। सुबह होते ही नाश्ता करके मैं बाहर निकल ही रहा था कि मैंने एक आदिवासी को दरवाजे का सहारा लेकर खड़े पाया। उस समय मैं एक व्यापारी से बातें कर रहा था। यह आदिवासी बड़ा लम्बा, मजबूत और भारी-भरकम था। मेरे लिए यह अजनबी था। मैंने उसके विषय में पूछा कि वह कौन है? व्यापारी ने बताया कि उसका नाम 'बवंडर' है। वह ही डाकोटा लोगों की युद्ध की सारी तैयारी के लिए जिम्मेवार था। इन

लोगों का, आपस में एक दूसरे की जान लेना, धर्म-सा ही बन गया है। अपने घरों में शान्तिपूर्वक रहने और भैंसों की खालों का व्यापार करने की बजाय ये लोग आपस में लड़ने को ही अपना धर्म समझ बैठे हैं।

उस व्यापारी की इस राय से इस देश के सभी गोरे सहमत थे। वे सभी लोग इनके आपसी युद्धों से घबराते थे, क्योंकि इससे उनके व्यापार पर बुरा असर पड़ता था। किले तक आने के लिए 'बवंडर' ने अपना गाँव एक दिन पहले ही छोड़ा था। उसका युद्ध का उत्साह शुरू से अब तक ठंडा न पड़ा था। अपने पुत्र की मृत्यु का बदला लेने के लिए ये लम्बी और उलझी हुई तैयारियाँ उसके दिल को उकता देने वाली सिद्ध हो रही थीं। उसी सुबह बोर्दू ने उसे भेंटें आदि देकर खुश किया और तब उसे समझाया कि अगर वह युद्ध पर गया, तो उसके घोड़े तक नष्ट हो जाएँगे और वह गोरे लोगों से व्यापार के लिए भैंसे आदि नहीं मार सकेगा। उसने यह भी कहा कि अच्छा होगा, यदि वह युद्ध जैसी मूर्खता भरी बात का ख्याल भी न लाए और अपने घरों में रहकर एक बुद्धिमान् पुरुष की भाँति आराम से अपना जीवन बिताए। इस बात से 'बवंडर' का अपना इरादा डोल गया था। अब वह एक बच्चे की भाँति अपने को इरादों से थका हुआ अनुभव करने लगा। बोर्दू ने बड़े निश्चय के साथ यह भविष्यवाणी की थी कि अब वह युद्ध के लिए नहीं जाएगा। मनुष्यता से मुझे भी प्यार था, पर साथ ही आदिवासियों का युद्ध देखने की मेरी उत्सुकता भी कम न थी। मैं इस मौके को, और उसके लिए होने वाली तैयारियों को, देखने से चूकना नहीं चाहता था। 'बवंडर' ने जो आग लगाई थी, अब वह चारों ओर फैल चुकी थी। डाकोटा जाति के पश्चिम के लोग युद्ध के लिए कमर कसे हुए थे और मुझे उस व्यापारी से पता चला कि उनके छः बड़े-बड़े गाँव एक छोटी नदी के किनारे, यहाँ से चालीस मील की दूरी पर ही, जमा हो भी चुके थे। प्रतिदिन ही ये, अपने इस आक्रमण में सहायता देने के लिए, महान् आत्मा (परमात्मा) की प्रार्थना कर रहे थे। यह व्यापारी उनसे कुछ ही समय पहले विदा होकर आया था और लाबोंते डेरे की ओर उनका प्रतिनिधि बनकर जा रहा था। उसके कहने के अनुसार यदि उन लोगों को वहाँ भैंसे मिलने की उमीद बनी रही तो वे वहाँ अवश्य ही एक हफ़्ते के अन्दर ही अन्दर पहुँच जाएँगे। मुझे भैंसों की यह शर्त अच्छी न लगी; क्योंकि

इस मौसम में ग्रासपास भैंसे होते भी बहुत कम थे। मिनिकोंग्यू लोगों के दो गाँव भी पास ही डेरा डाले हुए थे। दोपहर के समय रिचर्ड के किले से आने वाले एक आदिवासी ने बताया कि वे आपस में लड़भिड़ कर अपने खेमे उखाड़कर फिर से अपने-अपने इलाकों को लौटने लगे थे। यह सब हुआ प्रवासियों की शराब के कारण। उन लोगों ने सारी शराब स्वयं पीनी असंभव समझ कर, बची-खुची, उन आदिवासियों में बाँट दी। इसका परिणाम जानने के लिए किसी पैग़म्बर की जरूरत न थी। बारूद में आग लगाने के लिए एक चिनगारी काफ़ी होती है। वही बात यहाँ भी हुई। वह युद्ध के उस उद्देश्य को भूल गए, जिसके कारण वे यहाँ इकट्ठे हुए थे और आपस में लड़ने पर उतारू हो गए। उनकी दशा बिगड़े हुए बच्चों की भाँति हो गई। उनके भाव बहुत गिरे हुए थे। शराब के इस शोर-शराबे में उनके कुछ आदमी मारे भी गए। सुबह होते ही छोटी-छोटी टुकड़ियों में मिसूरी के अपने-अपने इलाकों की ओर वे लौटने लगे। मुझे लगा कि जिस बड़े मिलन के लिए यह सब लम्बी तैयारियाँ और उत्सव हो रहे थे, जैसे वह मिलन अब कभी न हो सकेगा। लगता था कि अब आदिवासियों को अपने भयंकर रूप में देखने का यह मौका फिर कभी न मिल पाएगा। इस सब बात के बीच मैंने यह भुला दिया कि मैं भी युद्ध की दशा में अपने को एक बहुत बड़े खतरे में डाल बैठता। इस बात को सोचकर मैंने भी अपने मन को तसल्ली दी और अपने डेरे तक यह खबर पहुँचाने की तैयारी करने लगा।

मैंने अपना घोड़ा पकड़ा। मुझे यह देखकर अचरज हुआ कि चट्टानों पर चढ़ते हुए मेरे घोड़े के एक खुर में चोट लग गई थी और उसकी नाल भी उखड़ गई थी। लारामी किले में इन घोड़ों की नाल लगाने का काम पन्द्रह रुपये हर पैर के हिसाब से होता था। मैंने हैंड्रिक नाम के अपने घोड़े को घुड़साल में एक खम्बे से बांधा और रूबिदू नाम के लुहार को बुलाया। वह घोड़े के खुर को अपने घुटने फँसाकर हथौड़ी और रेती लेकर अपने काम में जुट गया। मैं यह सब कुछ देखने में लगा था, कि मुझे पीछे से एक अजीब-सी आवाज सुनाई दी।

कोई कह रहा था, "हम में से दो और खत्म हो गए। खैर अब भी हमारे बहुत से लोग बचे हुए हैं। मैं और मियास अभी कल ही पहाड़ों की ओर जाने

वाले हैं। मेरा ख्याल है खत्म होने की अगली बारी हमारी ही है। कुछ भी हो, हमारी ज़िन्दगी बहुत कठोर है।"

मैंने देखा कि सामने पाँच फुट का एक ठिगना आदमी खड़ा था। उसका बदन बहुत गठीला और मज़बूत था। देखने में वह भद्दा-सा लग रहा था। उसकी हिरण की खाल की कमीज़, चिकनाई के कारण, काली हो चुकी थी। उसकी पेटी, चाकू, थैली और बारूद का डिब्बा आदि बहुत पुराने पड़ चुके थे। उसके पाँव का सबसे अगला जोड़ सालों पहले, सर्दियों में जम जाने के कारण मारा जा चुका था। इसलिए उसके जूते भी उसी हिसाब से सिकुड़े हुए थे। उसकी पोशाक और सामान बता रहे थे कि वह एक स्वतंत्र पशु फँसाने वाला है। उसका चेहरा गोल और लाल था और उसपर बेफिक्री और प्रसन्नता झलक रही थी, हालाँकि यह बात उसकी कही हुई ऊपर की बात से मेल न खाती थी।

मैंने पूछा, "दो और खत्म हो जाने से तुम्हारा क्या मतलब है?"

"ओह! अरापाहो लोगों ने हमारे दो आदमियों को पहाड़ों में मार डाला है। यह बात हमें बुल्टेल् (वृषपुच्छ) नाम के आदिवासी ने अभी-अभी आकर बताई है। उन्होंने एक को पीठ पीछे घायल किया और दूसरे को उसकी ही बन्दूक छीनकर मार डाला। यह है हमारी ज़िन्दगी। मैं इस साल के बाद इस काम को छोड़ दूँगा। मेरी स्त्री चाहती है कि एक तेज घोड़ा और कुछ लाल फीते खरीद लिए जायें। मैं उसके लिए ये चीज़ें बीवर नामक जानवर पकड़-कर भी ला सकता हूँ। उसके बाद मेरा काम खत्म हो जाएगा। तब मैं नीचे, मैदानों में, जाकर खेती पर गुज़र करने लगूँगा।"

उसके पास ही खड़े एक दूसरे पशु फँसाने वाले ने कहा, "रूलो! मैदान में तुम्हारी हड्डियाँ सूख जाएँगी।" वह आदमी कुछ असभ्य और बड़े भद्दे चेहरे वाला लग रहा था। रूलो हँस पड़ा और उसने गुनगुनाना और नाचना शुरू कर दिया। दूसरे आदमी ने कहा, "आप हमें बहुत जल्दी ही अपने रास्ते से गुज़रता हुआ देखोगे!"

मैंने कहा, "अच्छा, कुछ देर रुको और हमारे साथ काफ़ी पियो।" साँझ पास आ जाने के कारण मैंने भी क़िला छोड़ने की तैयारी कर ली।

ज्योंही मैं किले से निकला, मैंने प्रवासियों की एक लम्बी कतार को

धारा पार करते देखा। दो या तीन लोगों की प्रणाम भरी आवाज ने मुझे चौंकाया। वे पूछ रहे थे, "तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"यहाँ से लगभग अठारह मील, दूर, नदी के किनारे।"

"इतनी दूर जाने के लिए अब समय कहाँ है ? अच्छा है जल्दी ही निकल जाओ। पर ज़रा आदिवासियों से सावधान रहना।"

मैंने उनकी इस सलाह पर ध्यान न दिया। धारा पार करके सामने के मैदानों पर एक लम्बा चक्कर काटते हुए मैं बढ़ा। परन्तु जल्दी में चाल भी धीमी हो जाती है। यह बात मेरे साथ पूरी-पूरी घटी। मैं जब तीन मील दूर की पहाड़ियों तक पहुँचा तब तक राह के निशान धुँधले पड़ने लगे थे। तेज़ी से आगे बढ़ते हुए मुझे ये भी दिखाई देने बंद हो गए। लारामी धारा को ध्यान में रखकर मैं एक सीधी रेखा में बढ़ता रहा। यह धारा छिपते हुए सूरज की रोशनी में कभी-कभी दिखाई दे जाती थी। सूरज छिपने से आधा घंटे पहले मैं इसके किनारे पर उतर आया। इस स्थान के एकान्त में कुछ अजीब ही उत्तेजना थी। सामने से झाड़ियों में निकलता हुआ एक बारहसिंगा अचानक ही उछला। अभी वह मेरे सामने तीस गज दूर पर भी न होगा कि मैंने घोड़े पर चढ़े-चढ़े ही गोली दाग़ दी और वह उसी क्षण गिर पड़ा। मैं निश्चिन्त होकर उसकी ओर बढ़ा। जब आराम से मैं दुबारा बन्दूक भरने लगा, तो मुझे अचरज में डुबोकर वह एक दम ही उछला और तेज़ी से, अपने तीन पाँवों के बल पर दौड़ता हुआ, सामने की अँधेरी पहाड़ियों के बीच जा छिपा। उधर जाने का समय मेरे पास नहीं था। दस मिनट के बाद जब मैं एक गहरी घाटी के तल में से गुज़र रहा था, मैंने बहुत हल्की रोशनी में पीछे मुड़कर देखा कि कोई चीज़ मेरा पीछा कर रही है। इसे भेड़िया ख्याल करके मैं घोड़े से उतर कर, छिप कर, बैठ गया और उसे मारने की प्रतीक्षा करने लगा। उसके सामने आते ही मैंने देखा कि यह कोई दूसरा बारहसिंगा था। मेरे सौ गज के फ़ासले के अन्दर पहुँचने पर अपनी गर्दन झुकाकर यह निश्चिन्त होकर चरने लगा। मैंने इसकी छाती के एक सफेद निशान की ओर निशाना साधा। मैं अभी गोली दाग़ने ही वाला था कि यह एक दम तेज़ी से भाग निकला। समुद्र में तूफ़ान में फँसे जहाज की भाँति कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर भागते हुए यह पूरी तेज़ी के साथ एक ओर को निकल गया।

फिर एक बार रुका और पीछे मुड़कर उत्सुकता से देखकर फिर से पहले की तरह दौड़ने लगा। पर अब इसमें वह जोश न था। यह रुका और मेरी ओर ताकने लगा। मैंने गोली दाग दी। यह ऊपर की ओर उछला और फिर अपने ही निशानों पर गिर पड़ा। दूरी नापने पर मैंने देखा कि यह सवा सौ गज से अधिक दूर था। जब मैं इसके पास खड़ा हुआ, तो इसने अपनी बुझती हुई आँखें मेरी ओर घुमाईं। इसकी ये आँखें किसी सुन्दर स्त्री की काली और चमकदार आँखों जैसी ही थीं। मैंने सोचा, "शुक्र है, कि मैं जल्दी में हूँ। अगर कहीं मेरे पास समय होता तो मुझे इसके मरने पर अफ़सोस करना पड़ता।"

इस को चीरकर मैंने इसका मांस काठी के पीछे की ओर रख लिया और फिर से चलने लगा। अब पहाड़ियाँ पास से पास घिरती नज़र आईं। मैंने सोचा कि रात अधिक हो गई है, इसलिए आगे जाना उचित न होगा। सुबह रास्ता खोजने का इरादा करके, रात वहीं बिताने की सोचने लगा। एक बार और हिम्मत करने की दृष्टि से मैंने एक ऊँची चोटी पार की। बहुत संतोष के साथ मैंने देखा कि मेरे सामने ही लारामी वारा पेड़ों के बीच बल खाती बह रही थी और पास ही पेड़ों की छाया में किसी एक पुराने व्यापारी किले के खंडहर दिखाई दे रहे थे। तारों की छाया में मैं वहाँ तक पहुँचा। उस धुँधली रोशनी में घने पेड़ों और झाड़ियों के बीच से होकर बढ़ना बहुत आनन्ददायक न लगा। मुझे किसी भी आवाज़ को सुनते ही किसी आदमी या पशु के लिए चौकन्ना हो जाना पड़ता था। उस सारे स्थान पर एक भी चीज़ हिलती नज़र न आती थी। भूरे रंग का एक ही पक्षी शाखों पर बैठा शोर कर रहा था। जब मैंने खुला मैदान दुबारा देखा तब मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ, क्योंकि कोई भी आने वाली चीज यहाँ मुझे अच्छी तरह दिखाई दे सकती थी। 'चुग वाटर' के मुहाने पर पहुँचने तक अँधेरा बहुत घना हो चुका था। मैंने लगाम ढीली छोड़ दी और घोड़े को अपनी राह चलने दिया। वह बिना गलती किए अपनी सूझ के अनुसार तेज़ चाल से चलता रहा। नौ बजते-बजते वह हमारे डेरे के पास की चरागाह में नीचे की ओर उतर रहा था। मैं अभी आग की रोशनी को खोजने की कोशिश कर ही रहा था कि मेरा घोड़ा अपनी तेज़ पहचान के द्वारा सच्चाई जानकर दूर से ही एक दम हिनहिना उठा। इस आवाज़ का उत्तर भी, तुरन्त ही, दूसरी ओर की हिनहिनाहट से मिला।

कुछ ही क्षण में मुझे अन्धेरे में ही स्वागत भरी आवाज़ सुनाई दी। रेनल हाथ में राइफल लिए यह देखने बाहर निकला था कि कौन आ रहा है?

इस समय डेरे पर वह, उसकी पत्नी, दो कनाडा-निवासी और दो आदिवासी—कुल मिलाकर छः प्राणी थे। शॉ और हेनरी अब तक भी न लौटे थे। वे लोग अगली दोपहर को लौटे। उस समय उनके घोड़े यात्रा के लायक न रहे थे। हेनरी का दिल टूट-सा गया था। उसकी पत्नी मर गई थी और उसके बच्चे आज के बाद से अपना संरक्षक न पाकर आदिवासी जीवन की हर प्रकार की कठिनाइयों और सख्तियों को सहने के लिए मजबूर हो गए थे। अपने इस शोक की दशा में भी उसने अपने 'मालिकों' का ध्यान न छोड़ा। इस हालत में भी उसने अपने सम्बन्धी आदिवासियों से दो सजी हुई भैंसे की खालें हमारे लिए प्राप्त कीं और उन्हें हमें भेंट के रूप में ज़मीन पर बिछा दिया।

शॉ ने अपना पाइप सुलगाया और अपनी यात्रा का किस्सा मुझे सुनाया। किले पर जाते हुए ये लोग मुझसे 'चुग वाटर' के मुहाने से अलग हो गए थे। वे सारे दिन भर उसी छोटी धारा के साथ-साथ चलते रहे। रास्ता उजाड़ और सुनसान था। उन्हें कई बार एक बड़े भारी लड़ाकू दल के गुज़रने के चिह्न मिले। ये चिह्न उसी दल के थे, जिसके आक्रमण से हम बच चुके थे। ये चिह्न ताज़ा थे। साँझ होने से एक घण्टा पहले वे किसी भी आदमी से बिना टकराए हेनरी की पत्नी और उसके सम्बन्धियों के डेरों पर पहुँच गए। वे लोग हेनरी के संदेश के अनुसार अपने आदिवासी गाँव को छोड़कर हम से मिलने हमारी ओर आ रहे थे। घर गाड़े जा चुके थे। नदी के किनारे गड़े इन घरों की संख्या पाँच थी। उसकी पत्नी इनमें से एक में पड़ी थी। वह केवल हड्डियों का ढाँचा रह गई थी। बहुत दिन से वह न बोल सकती थी और न हिल-डुल सकती थी। वह केवल जिन्दा ही हेनरी को देखने के लिए थी। उसके साथ उसका बहुत गहरा और पक्का सम्बन्ध था। डेरे में उसके घुसते ही वह कुछ अच्छी दीखने लगी और रातभर उससे बातें करती रही। सुबह होते ही उसे फिर से टोकरी वाली गाड़ी में डाला गया। सभी लोग हमारे पड़ाव की ओर चल पड़े। दल में पाँच लड़ाकू वीर सैनिक थे और बाकी औरतें व बच्चे थे। काक जाति के लड़ाकू दल को पास

ही अनुभव करके, वे सभी बहुत चौकन्ने हो उठे थे, क्योंकि वे लोग इन्हें बड़ी निर्दयता से समाप्त कर डालते। अभी ये लोग एक या दो मील ही बढ़े होंगे कि उन्हें बहुत दूर क्षितिज पर एक घुड़सवार दिखाई दिया। बहुत चिन्तित होकर वे सब रुक गए। बहुत देर बाद घुड़सवार के ओझल होने पर ही वे निश्चित हुए। उसी समय वे फिर चल पड़े। हेनरी, शॉं के साथ-साथ आदिवासियों से कुछ आगे-आगे चल रहा था। पीछे से महतो तातोंका ने आवाज दी। पीछे लौटकर उन्होंने देखा कि सभी आदिवासी उस औरत की गाड़ी के चारों ओर इकट्ठे हो गए हैं। वे जब उसके पास पहुँचे, तब उसकी अन्तिम साँसें गले में अटकी हुई थीं। एक ही क्षण में वह उसी टोकरी में मरी पड़ी थी। चारों ओर एकदम शान्ति छा गई। तब आदिवासियों ने मिलकर उस शव पर झुकते हुए शोक प्रकट करने के लिए रोना शुरू किया। शॉ ने इन आवाजों में 'हल्लेलुजा' जैसी आवाज़ें साफ सुनीं। इन सब बातों से उसने यह अनुमान किया कि इन आदिवासियों की आदतें इजराइल वासियों से मिलती हैं और हो सकता है कि वे उनके ही खोए हुए दस वंशों में से एक वंश के हों।

आदिवासी प्रथा के अनुसार हेनरी और सभी आदिवासी-सम्बन्धियों को शव के साथ-साथ गाड़ने के लिए कीमती भेंटें देनी आवश्यक थीं। आदिवासियों को पीछे छोड़कर वह और शॉ अपने डेरे की ओर चल पड़े और बहुत कठिन परिश्रम के बाद दोपहर तक यहाँ पहुँच गए। यहाँ से ज़रूरी चीजें लेकर वे एकदम ही लौट पड़े। बहुत अँधेरा होने के बाद ही वे लौट पाए। वे सब बहुत भयंकर पहाड़ियों के बीच में स्थित एक खड्ड में ठहरे हुए थे। उनमें से चार तो दुःख के मारे हुए दिखाई देते थे, परन्तु पाँचवाँ भाई उत्साह की आग से जलता हुआ दिखाई दे रहा था। उनके पास आते हुए चारों ओर शान्ति छाई हुई थी। लगता था जैसे घरों के अन्दर एक भी रहने वाला वहाँ नहीं है। कोई भी जीवित चीज हिलडुल नहीं रही थी। सारा दृश्य ही बड़ा डरावना-सा लग रहा था। वे उस डेरे के दरवाज़े तक गए। घोड़ों की टपटपाहट के अलावा और कोई भी आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। एक औरत ने आगे बढ़कर बिना कुछ कहे उनके पशुओं को सम्भाल लिया। अन्दर घुसते ही उन्होंने देखा कि डेरा पहले ही आदिवासियों से भरा हुआ था।

बीचों-बीच आग जल रही थी। इसके चारों ओर तीन कतारें बनाकर अफ़सोस करने के लिए ये लोग जमा थे। इन नये लोगों के लिए मकान के सामने ही एक नया कमरा बना दिया गया था। उनके बैठने के लिए एक गलीचा बिछा दिया गया था और बहुत चुप्पी के साथ उनके हाथ में चिलम सुलगाकर दे दी गई थी। इसी तरह, बैठे-बैठे ही उन्होंने अधिकांश रात बिताई। बहुत बार आग बुझने को होती थी कि तभी कोई औरत उठकर उसमें भैंसे की चरबी डाल देती थी। तब एक तेज लपट उसमें से उठती और लोगों के चेहरे अपनी उदासी और जड़ता को साफ़ झलका देते। यह चुप्पी लगातार चलती रही। सुबह होने तक शां ने कुछ सुख अनुभव किया। अब वह इस अफ़सोस वाले घर से अलग हो सकता था। हेनरी और उसने डेरे की ओर लौटने की तैयारी की। इससे पहले उन्होंने अपनी बहुत-सी कीमती भेंटें हेनरी की पत्नी के पास रखीं। वह इस समय एक घर में बैठी हुई हालत में सजी-धजी रखी गई थी। उसके घर से कुछ दूरी पर ही एक बहुत अच्छा घोड़ा उसकी आत्मा के लिए, बलि देने के लिए, बाँधा गया था। यह इसलिए कि स्त्री लंगड़ी थी और 'मुर्दों के स्वर्ग' की ओर यात्रा करने में वह घोड़े के बिना समर्थ न हो पाती। उसके लिए भोजन और घर-गृहस्थी का सामान भी साथ ही रख दिया गया था।

हेनरी उसे उसके सम्बन्धियों की दया पर छोड़कर शां के साथ तुरन्त ही डेरे पर लौट आया। उसकी निराशा बहुत देर बाद ही टूट पाई।

—:o:—

११ : पड़ाव के नज़ारे

रेनल ने एक दिन पड़ाव से लगभग दो मील दूर से बन्दूक की आवाज सुनी। उसे लगा कि शायद काक जाति के लोग हमला करने वाले हैं। यह सोचकर वह निराश हो गया। हम बाहर गए हुए थे। लौटने पर उसने हमसे फिर अपने अकेला रह जाने की शिकायत की। अगले ही दिन उसकी चिन्ता का कारण स्पष्ट हो गया। मौरैं, साराफैं, रूलो और गिग्रास नाम के चार पशु-फँसाने वाले हमारे डेरे तक आए और हमारे साथ टिक गए। ये ही लोग थे, जिन्होंने पहले दिन गोलियाँ चला कर रेनल के दिल में डर पैदा कर दिया था। उन्होंने हमारे पास ही डेरा डाला। उनकी बन्दूकें भी हमारी बन्दूकों के साथ ही पेड़ पर टिका दी गईं। बहुत अधिक प्रयोग के कारण वे भद्दी और पुरानी हो चुकी थीं। उनकी नंगी और मजबूत काठियाँ, उनके भैंसों की खालों के कपडे, उनके जाल और छोटी-मोटी चीजें हमारे तम्बू के पास ही रख दी गई थीं। उन्होंने अपने पहाड़ी घोड़ों को चरने के लिए चरागाह की ओर हमारे पशुओं के साथ ही छोड़ दिया। वे चारों हमारे पेड़ की ही छाया में दिन भर सुस्ताते रहते, तम्बाकू पीते रहते और अपने साहस की कहानियाँ सुनाते रहते। मैं नहीं जानता कि राकी पर्वत माला के इन पशु-फँसाने वालों से अधिक बहादुरी के इतने कारनामे कहीं और भी सुनने को मिल सकते हैं।

इन लोगों के आ जाने से रेनल की घबराहट कुछ दूर हुई। हमें इस जगह से कुछ प्यार-सा होने लगा था। तब एक जगह पर बहुत अधिक दिन टिकना अच्छा न था। बिना आवश्यकता के टिके रहने पर कोई बुरा परिणाम भी सामने आ सकता था। अब घास भी यहाँ उतनी अच्छी और चिकनी न रही थी। मिट्टी और कीचड़ से मिलकर यह कुचल गई थी। इसलिए हमने कुछ दूरी पर दूसरे पेड़ के नीचे, नदी के किनारे, अपना डेरा बदल लिया। इसका तना दो गज से अधिक चौड़ा रहा होगा और उस पर आदिवासियों ने बहुत से चित्र बनाकर अपनी वीरता और युद्धप्रियता की बातें लिखी हुई थीं। इसकी बहुत ऊपर की शाखाओं में एक मचान दिखाई दे रहा था। इस पर कभी

आदिवासी प्रथा के अनुसार मुर्दे रखे जाते थे ।

हम भोजन के लिए घास पर बैठे ही थे कि हेनरी चिल्लाया, "वह देखो, उधर 'बुलबियर' (साँड-रीछ) नाम का आदिवासी आ रहा है।" हमने सामने बहुत से घुड़सवारों को एक पास की पहाड़ी पर से आते हुए देखा । कुछ ही देर में चार बहुत मजबूत और अच्छी हैसियत वाले युवक हमारे सामने आए और घोड़ों से उतरे । इस बुलबियर का उनमें ऊँचा स्थान था । उसका ही दूसरा नाम 'महतो तातोंका' था । यह नाम उसे ओजिल्लाला जाति के एक नेता के रूप में अपने पिता से, उत्तराधिकार में मिला था । उसके साथ उसका एक भाई और दूसरे दो आदिवासी युवक थे । हमने इन अतिथियों से हाथ मिलाए और अपना भोजन समाप्त कर हमने, उनकी ही प्रथा के अनुसार, उन्हें कॉफ़ी का प्याला और बिस्कुट भेंट किए । इस पर उन्होंने पूरी ताकत के साथ "हाऊ, हाऊ" की आवाज करके, प्रसन्नता प्रगट की । तब हमने चिलम सुलगाकर सबको बारी-बारी से पीने के लिए दी ।

"गाँव कहाँ पर रुका हुआ है ?"

महतो तातोंका ने दक्षिण की ओर इशारा करते हुए कहा, "उधर ! वह दो दिन तक यहाँ पहुँचेगा "

"क्या वे अब भी युद्ध के लिए बढ़ेंगे ?"

"हाँ !

इन दिनों में कोई भी आदमी मानवता का प्रेमी बनकर नहीं रह सकता । हमने भी इस खबर का पूरा स्वागत किया । मुझे इस बात पर प्रसन्नता हुई कि आखिर 'बवंडर' को युद्ध से हटाने के बोर्दू के प्रयत्न असफल हुए और यह भी कि आगे भी कोई और ऐसी बाधा न आएगी, जो हमें लाबोंते के शिविर पर होने वाले बड़े मिलन को देखने से रोक सकेगी ।

अगले कुछ दिनों तक ये नये मित्र हमारे अतिथि बन कर रहे । उन्हें हमारे भोजन के बचे-खुचे हिस्से में ही बहुत आनन्द आता था । वे हमारे लिए चिलम सुलगाते और इसे पीने में भी हिस्सा बँटाते । कभी वे पेड़ की छाया में साथ ही साथ लेटकर हँसी और मजाक में डूब जाते । यह सब बात वीर योद्धाओं के लायक न थी । पर उनमें से दो सचमुच अच्छे योद्धा थे ।

दो दिन और बीत गए । तब तीसरे दिन हम आदिवासियों के गाँव की

हुए थे।

ये पर्वत जंगलों से भरे हुए तो थे ही, इन पर रहने वाले पशु भी अनेक प्रकार के और संख्या में बहुत अधिक थे। आगे बढ़ने पर मैंने बारहसिंगों की चौड़ी पगडंडियों को देखा। सब तरफ़ घास कुचली हुई थी। यहाँ भेड़ियों की भी बहुत-सी पगडंडियाँ दिखाई दीं। कहीं-कहीं मुझे, और जगह देखे गये निशानों से, कुछ भिन्न निशान भी मिले। मैंने समझ लिया कि ये निशान राकी पर्वतमाला में पाईजाने वाली भेड़ों के थे। मैं एक चट्टान पर बैठ गया। वहाँ पूरी शांति छाई हुई थी। न हवा चल रही थी और ना ही कोई जन्तु दिखाई दे रहा था। मुझे ध्यान आया कि कहीं मैं ऐसी जगह में गुम न हो जाऊँ। इसलिए मैं सामने के पहाड़ की एक ऊँची चोटी को देखता रहा। यह जंगलों से एक दम सीधी ऊपर उठी थी और कुदरती तौर पर इस की सब से ऊँची जगह पर एक नंगी चट्टान पड़ी हुई थी। इस प्रकार के निशान को भुलाना मुश्किल था। इस लिए मुझे कुछ निश्चिन्तता अनुभव हुई और मैं आगे चलने लगा। मेरे सामने की झाड़ियों में से एक सफ़ेद भेड़िया उछला और धीरे से सरकता हुआ एक ओर को बढ़ने लगा। वह एक क्षण के लिए रुका और उसने उत्सुक निगाहों से मुझे देखा। मेरी इच्छा हुई कि उसे मारकर उसकी खोपड़ी को मैं, इन पर्वतों की निशानी के रूप में, अपने साथ ले लूँ। पर मेरे निशाना साधने से पहले ही वह भाग गया। कुछ ही देर में मैंने सामने की शाखाओं के टूटने की आवाज़ सुनी और उन ऊँची झाड़ियों के ऊपर निकलते हुए बारहसिंगे के सींग देखे। मुझे लगा कि मैं शिकारियों के स्वर्ग में पहुँच चुका था।

इन पहाड़ियों की यह हालत गर्मियों में होती है। सर्दियों में यहाँ का नज़ारा कुछ और ही होता है। चारों ओर ऊँचे-ऊँचे देवदार और दूसरी किस्म के पेड़ बहुत घने हो जाते हैं और उनके पराग से यह सारा पहाड़ सफ़ेद-सा पड़ जाता है। उन दिनों पशु फँसाने वाले यहाँ आकर घने पेड़ों के नीचे अपने डेरे लगा लेते हैं और शिकार के इस स्वर्ग का खूब आनन्द लेते हैं। उन के मुख से मैंने सुना है कि किस प्रकार वे अपनी आदिवासी प्रेमिकाओं और कुछ आदिवासी साथियों को लेकर यहाँ कुछ महीने अकेले में बिताते हैं। वे यहाँ बहुत से गड्ढे खोद कर सफेद झाड़ियों, सेंबलों और मार्तेनों को फँसा लेते हैं।

उनके चारों ओर भेड़ियों की चीख-चिल्लाहट सारी रात सुनाई देती रहती है, पर अपने डेरे के चारों ओर ऊँचे-ऊँचे लट्ठों और पत्थरों की दीवारें बनाकर ये लोग जलती आग के सामने निश्चिन्त होकर सोते रहते हैं और सुबह अपने ही दरवाजे पर आये हुए किसी भी हिरण को मार लेते हैं।

—: ० :—
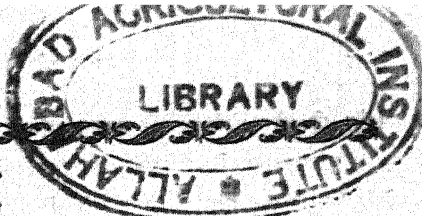
१८ : पहाड़ पर शिकार

डेरे में नई काटी हुई बल्लियाँ बहुत अधिक जमा हो गई थीं। उन में से बहुत-सी काट कर तैयार हो चुकी थीं। ये सब साथ-साथ जमा की हुई थीं। इन्हें धूप में सूखने के लिये रख दिया गया था। दूसरी कुछ बल्लियाँ ज़मीन पर ही पड़ी थीं, जिन्हें साफ़ करने में औरतें, बच्चे और योद्धा जुटे हुए थे। पिछले शिकार में पाई गई बहुत-सी खालें तैयार कर छील ली गई थीं। इस लिये बहुत सी स्त्रियाँ इकट्ठी होकर सीने के काम में जुटी हुई थीं, ताकि मकानों की नई छतें तैयार की जा सकें। आदमी धारा के किनारे की झाड़ियों में घूम रहे थे, ताकि वहाँ से शोंगसाशा की छड़ियों को इकट्ठी कर सकें। इस की छाल को तम्बाकू में मिला कर पिया जाता है। रेनल की पत्नी भी, अपने घर में ही, सीने के काम में जुटी हुई थी। उसका पति सुबह का भारी नाश्ता खा कर बाहर बैठा रेमंड और मेरे साथ चिलम पी रहा था। उसने काफ़ी देर बाद यह प्रस्ताव किया कि हमें किसी शिकार पर चलना चाहिये। उसने हम से अपने डेरे से बंदूकें लाने को कहा। वह घोड़े की शर्त लगाने को तैयार था कि मील दो मील की दूरी पर ही हमें किसी बारहसिंगे या अन्य हिरण का शिकार अवश्य मिलेगा। वह अपनी पत्नी की पीली घोड़ी साथ ले चलना चाहता था। उसका कहना था कि भले ही वह घंटे में तीन-चार मील से अधिक न चलती हो, पहाड़ों पर शिकार के लिए वह किसी भी खच्चर से कम अच्छी साबित न होगी।

मैं उस काले खच्चर पर चढ़ा, जिस पर प्रायः रेमंड चढ़ा करता था। यह खच्चर बहुत ताकतवर, सभ्य और सम्भाले जाने लायक था। पर पिछले कुछ दिनों से पड़ने वाली कुछ मुसीबतों के कारण इसका स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया था। आज से लगभग एक सप्ताह पहले किसी आदिवासी का अनजाने में मैंने अपमान कर दिया था। उसने चुपचाप एक चरागाह में अपने चाकू से इस की कमर पर, बदला लेने के लिए, घाव कर दिया था। घाव तो अब भर चुका था, पर अब भी उसकी दर्द अवश्य बाकी थी। इसीलिए वह अपनी

जाति की और घोड़ियों की बजाय अधिक चिड़चिड़ी हो गई थी।

सुबह बहुत ही सुहावनी थी और मेरी सेहत अच्छी थी। ऐसी अच्छी सेहत मेरी पिछले कई दिनों से नहीं रही थी। हम लोग यह छोटी-सी घाटी छोड़कर एक चट्टानों भरे खड्ड में होते हुए पहाड़ी पर चढ़े। जल्दी ही हमारा डेरा दीखना बन्द हो गया। साथ ही हर जीवित चीज़ भी दीखनी बन्द हो गई। मैं जीवन में कभी इतनी घृणित जगह से नहीं गुज़रा और ना ही कभी गुज़रना चाहूँगा। यहाँ यह काली खच्चर बहुत ही अड़ियल बन गई। यहाँ तक कि रेनल का पीला घोड़ा भी हर कदम पर लड़खड़ाने लगा। इनके पाँव और टाँगें चट्टान से टकरा कर घायल होने लगीं।

यह जगह चुप्पी और एकांत की थी। यहाँ केवल पर्वतों की चट्टानों भरी चढ़ाइयाँ या खुरदरी नंगी चट्टानें ही देखने को मिल रही थीं। पेड़-पौधे तो बहुत ही कम थे। बहुत देर बाद हरे जंगल का एक टुकड़ा मिला। जब हम इसमें कुछ आगे बढ़े तो हमारी इच्छा चट्टानों में लौट चलने की हुई। बात यह थी कि हम इतनी सीधी ढलान पर थे और इतने घने पहाड़ों में से गुज़र रहे थे कि हमें इधर-उधर एक गज़ तक भी कुछ नहीं दिखाई दे रहा था।

अगर कोई स्वयं को इस प्रकार की कठिनता और खीझ पैदा करने वाली मिली-जुली हालत में रखना चाहे, तो उसे एक बुरे खच्चर पर चढ़ कर ऐसे घने जंगलों में किसी ऐसी ही तिरछी ढलान पर उतरने की कोशिश करनी चाहिये। मजा तो तब होगा यदि उसके साथ एक लम्बी बंदूक हो, उसने झालरदार कमीज पहनी हुई हो तथा उसके लम्बे बाल हों। ये सब चीजें हर जगह शाखाओं में उलझ और फँस कर तंग करेंगी और इनसे उछल कर शाखाएँ उसके मुँह पर बार-बार टकरायेंगी। उसकी खच्चर बार-बार रुक कर फिर तेजी से भागेगी, जिससे सवार की हालत बार-बार बिगड़ेगी। कभी वह उसकी पीठ पर चिपक जाएगा और कभी वह अपनी पीठ पर गिर कर अपने पाँव उसकी गर्दन में फँसा लेगा। यह इस कारण कि वह शाखाओं और चट्टानों की टक्कर से अपने को बचा सके। रेनल लगातार अपने घोड़े को कोसता ही रहा। हम में से किसी को पता न था कि हम किधर जा रहे हैं ? मैं कई बार ऐसी बुरी सवारी कर चुका था पर, तो भी कुछ मिनट की वह

सवारी मुझे जीवन में कभी न भूलेगी।

आखिर हम लोगों की मुसीबत खत्म हुई। हम ढलान की ओर बहने वाली एक धारा के किनारे आ निकले। यहाँ से बाईं ओर मुड़ते हुए हम पत्थरों और पानी पर से गुज़र कर, चमकते हुए सूर्य की धूप से बचते हुए, पेड़ों की छाया में खुशी-खुशी बढ़ने लगे। यह धारा एक ओर को तेजी से मुड़ गई थी और चट्टानी पहाड़ियों के बीच में एक खाई के रूप में बदल गई थी। यहाँ यह इतनी गहरी हो गई थी कि हम उसका तला भी खोज नहीं पाए। यहाँ से आगे एक बार फिर हम बुरे जंगलों में जा फँसे। बहुत देर बाद हम फिर से धूप और छाया में आ निकले। हमने देखा कि हम एक पहाड़ की तलहटी में थे। यहाँ धूप खूब चमक रही थी। हमारे सामने एक लम्बी-चौड़ी रेतीली घाटी पहाड़ों तक फैली हुई थी। रेनल इसकी ओर ध्यान से देखता रहा और अन्त में कहने लगा—

"बहुत बार आदिवासियों के साथ इन ब्लैक हिल्स में शिकार खेलते हुए मैं सोने की खोज में रहा हूँ। यहाँ काफ़ी सोना है यह बात तय है। मैंने कम-से-कम पचास बार ऐसे स्वप्न देखे हैं और आज तक मेरा स्वप्न कभी झूठा नहीं हुआ। सामने इन काली चट्टानों की ओर देखो, जो एक और चट्टान के चारों ओर जमा हैं। क्या यह अनुमान नहीं होता कि वहाँ कुछ जरूर होगा? किसी गोरे पुरुष के लिए पहाड़ियों में अकेले घूमना उचित न होगा। आदिवासी लोग इन पहाड़ियों में बुरी आत्मा का निवास मानते हैं। मेरा भी यह विश्वास है कि यहाँ सोने की खोज करना अच्छा सिद्ध नहीं होगा। हाँ, इस सबके लिए मैं यह जरूर चाहूँगा कि इन नीचे के लोगों में से कोई यहाँ अपनी छड़ और छेनी ले कर आये। मेरा विश्वास है कि वह जल्दी ही सोने की खान पा लेगा। खैर आज मैं सोने को निकालने की कोशिश नहीं करूँगा। वह देखो, खड्ड में जो पेड़ हैं, हम वहाँ तक जाएँगे। मेरा विश्वास है कि वहाँ काली पूँछ वाले हिरण का शिकार हमें जरूर मिलेगा।"

रेनल की भविष्यवाणी पूरी न हुई। हम पहाड़ पर पहाड़ और घाटी पर घाटी पार करते गये। हमने गहरी खाइयाँ भी पार कीं। पर तो भी हमने एक भी शिकार न पाया। मेरा साथी इससे चकित और परेशान हो गया। हमने किसी अच्छे शिकार के न मिलने पर मैदान में ही किसी साधारण हिरण का शिकार

करना अच्छा समझा। इस इरादे से हम एक तंग घाटी में से गुज़रने लगे। इसके तले पर जंगली झाड़ियाँ उगी हुई थीं और बीच-बीच में भैंसों के चलने के रास्ते बने हुए थे। ये भैंसे ऐसी घनी जगहों में से भी अपना रास्ता बना लेते हैं।

रेनल की आँख लगातार उन चट्टानों और चोटियों की ओर लगी हुई थी। उसे आशा थी कि कहीं से कोई पहाड़ी भेड़ हमें झाँकती हुई मिल जाएगी। कुछ देर तक हमें कुछ भी न दिखाई दिया। बहुत देर बाद एक पहाड़ी की तलहटी में हमें कुछ हलचल-सी दिखाई दी। यह एक काली पूँछ वाला हिरण था। वह एक चट्टान पर खड़ा होकर हमें देखने लगा। हमें देखते ही वह धीरे से घूमा और आँखों से ओझल हो गया। तुरन्त ही रेनल घोड़े से उतर कर उस जगह की ओर भागा। मुझ में पीछा करने की हिम्मत न थी। इस लिए मैं उसके घोड़े को थाम कर वहीं प्रतीक्षा करने लगा। रेनल कुछ देर के लिए ओझल हो गया। तब उसकी बंदूक चलने की आवाज़ आई। थोड़ी देर में वह फिर से निराशा भरी नज़र लिए हुए सामने आया। साफ़ था कि वह अपने काम में सफल नहीं हुआ। अब हम उस घाटी में यहाँ एक ऐसे गड्ढे के पास आये, जिस के तले पर सफेद मिट्टी जमी हुई थी और सूख कर फट चुकी थी। इस जगह को देख कर रेनल की आँखें चमक उठीं, उसने कोई शरारत पहचान ली। उसने मुझे रुकने के लिए पुकारा और एक पत्थर लेकर गढ़े में फेंका। मैं हैरान रह गया। मैंने देखा कि ऊपर की परत को हटा कर यह पत्थर पानी में गिरा और उससे ज़ोर से छींटे उड़े। नीचे का पानी बहुत ही गाढ़ा और पीले रंग का था। पास ही एक पाँच-छः फुट लम्बी छड़ी पड़ी थी। बहुत पास के किनारे पर इसे डुबा कर हम मुश्किल से इस गढ़े का तला छू पाये। इस तरह के स्थान राकी पर्वतमाला में जगह-जगह मिलते हैं। भैंसे अपने अंधेपन में ऐसे गड्ढों में अनजाने ही फँस जाते हैं। और कुछ देर निकलने की कोशिश करके, असफल होकर, वहीं डूब जाते हैं। इतने गहरे कीचड़ जैसे पानी में से निकलना उनके लिए कठिन हो जाता है क्योंकि यह पानी बहुत अधिक गहरा होता है।

आखिर हमें इस खाई को पार करने की जगह मिल गई। यहाँ यह घाटी मैदानों की ओर खुल गई थी। अब हमारे सामने मैदान ही मैदान फैला हुआ

था। बहुत दूरी के एक टीले पर हमने कुछ काली रेखाएं हिलती हुई देखीं। रेनल का विश्वास था कि ये भैंसे हैं।

उसने कहा, "आओ, हम इनमें से किसी एक को फंसाने की कोशिश करें। मेरी पत्नी को कुछ और खालें मकान के लिए चाहिएँ और कुछ गोंद जैसी चिकनाई मुझे भी चाहिये।"

उसने अपने पीले घोड़े को तुरन्त पूरी तेजी के साथ दौड़ाना शुरू कर दिया। इधर मैंने भी अपने घोड़े को एड़ लगाई। वह बहुत जल्दी ही अपने साथी से आगे निकल गया। एक-दो मील दौड़ने के बाद एक बड़ा खरगोश उछल कर हमारे सामने आया। यह मेरे खच्चर की टाँगों में उलझ गया। घबरा कर मेरा खच्चर एक ओर को उछला। कमज़ोर होने के कारण मैं तुरन्त ही जमीन पर गिर पड़ा। मेरी बन्दूक मेरे सिर के पास ही आ गिरी। गिरते-गिरते इस में से गोली छूट गई। भाग्य से मैं बच गया, पर इस की गोली की गुंजन ने मेरे कानों को बहरा कर दिया। एक दम चौंक कर मैं कुछ देर जड़-सा पड़ा रहा। रेनल मुझे मरा हुआ समझ कर पास तक आया और मेरे खच्चर को गालियाँ देने लगा। कुछ ही देर में सँभल कर मैं उठा और बन्दूक उठा कर उसे जाँचने लगा। यह बहुत चोट खा गई थी। इस के हत्थे में चीर पड़ गया था और इस का मुख्य पेंच ढीला हो गया था। अब इसके ताले को बाँधने के लिए ताँत का प्रयोग करना पड़ा। अब भी इससे कुछ-न-कुछ काम लिया जा सकता था। मैंने उस को साफ़ किया और फिर से भरा। रेनल इसी बीच मेरा खच्चर पकड़ कर मुझ तक ले आया था। रेनल को बन्दूक पकड़ा कर मैं इस पर चढ़ गया। अभी मैं चढ़ा ही था कि इस ने फिर से गड़बड़ करनी शुरू कर दी। पर, अब मैं पूरी तरह तैयार था और कोई रुकावट बीच में न थी। इसलिए मैंने उसे जल्दी ही काबू कर लिया। रेनल से बन्दूक लेकर मैं फिर पहले जैसे ही आगे बढ़ने लगा।

अब हमारे रास्ते में पहाड़ न थे। हम चौड़े मैदान में निकल आए थे। भैंसे अब भी हम से दो मील आगे थे। जब हम उन के पास तक आये, तो एक छोटे-से टीले के पीछे छिप गये। मैंने रेनल का घोड़ा थाम लिया और वह तेजी से भाग निकला। कुछ ही मिनट में मुझे गोली चलने की आवाज़ आई। मैंने एक भैंसे को दाईं ओर पूरी तेजी से भागते हुए देखा। उस के

पीछे ही असफल शिकारी भी आ निकला। अब वह फिर से निराशा की हालत में अपने घोड़े पर चढ़ गया। वह इन पहाड़ियों और भैंसों को कोसने लगा और बार-बार अपने अच्छा शिकारी होने की बात दोहराने लगा। यह बात सच भी थी। यह सच था कि वह पहले कभी भी इन पहाड़ियों से दो-तीन हिरण या भैंसे आदि मारे बिना न लौटा था।

अब हम बहुत दूर पर स्थित अपने डेरे की ओर लौटे। हमारे रास्ते में चारों ओर अनेक हिरण मैदान में दौड़ते फिर रहे थे। पर, उनमें से हमारे सामने एक भी रुक कर खड़ा न हुआ, जिससे हम उस पर निशाना साध सकते। जब हम डेरे के पास के पहाड़ की तलहटी में पहुँचे तो हम छोटे-से-छोटा रास्ता पकड़ने को अधीर हो उठे। इसलिए बाईं ओर को मुड़ कर हम अपने थके-हारे जानवरों को चट्टानों में से ले कर बढ़े। इन पथरीली ढलानों पर हिरण और भी अधिक दीखने लगे। हम दोनों ने ही काफ़ी दूरी से एक-एक निशाना साधा, पर दोनों ही चूक गये। बहुत देर बाद हम आखिरी टीले की चोटी पर पहुँचे। वहाँ हमने बिल्कुल नीचे ही गाँव को पाया। यहाँ सभी लोग काम में जुटे हुए थे। हम बहुत निराशा के साथ नीचे उतरे। जब हम घरों के बीच से होकर गुजर रहे थे, तब लोगों ने हमारी ओर देखा कि शायद हम कुछ नया मांस आदि लाए होंगे। कुछ औरतों ने हँसी भी उड़ाई, जिससे रेनल को शर्म अनुभव हुई। जब हम उसके डेरे पर पहुँचे, तो हमारी हालत और भी बुरी हो गई। यहाँ हमने रेनल के आदिवासी युवक सम्बन्धी 'तूफ़ान' और उसके साथी 'शशक' को आराम करते पाया। वह लकड़ी के एक बर्तन में बड़े आनन्द के साथ 'वास्ना' का स्वाद ले रहा था। उसके पास ही एक मादा हिरणी की ताजी खाल भी पड़ी थी। इसे वह अभी-अभी पास ही में जंगल से मार कर लाया था। निश्चय ही उस युवक का हृदय इस बात से खुश था। पर उसने यह खुशी जाहिर नहीं की। उसे तो हमारे पहुँचने का पता भी नहीं चला। उसके सुन्दर चेहरे पर आत्म-सन्तोष और शांति साफ़-साफ़ झलक रही थी। आदिवासियों की यही विशेषता है कि वे अपनी बड़ी-से-बड़ी भावना को भी अन्दर-ही-अन्दर बिना बेचैनी के, छिपा लेते हैं। मैं पिछले दो महीनों से इस युवक को जानता था। इसने इस बीच अपने स्वभाव को काफ़ी अच्छा बना लिया था। जब मैंने शुरू में

उसे देखा तब वह अभी बचपन को छोड़ कर शिकारी बनने की तैयारी कर रहा था। बहुत दिन पहले उसने पहला हिरण मारा था। तब से शिकार की उसकी इच्छा बढ़ने लगी थी। अब वह सदा ही शिकार की खोज में रहने लगा। इतना छोटा कोई और शिकारी इस मामले में इस जितना सौभाग्यशाली नहीं रहा होगा। इन सब सफलताओं ने उसके चरित्र में काफ़ी अन्तर ला दिया था। मुझे याद है, पहले-पहल वह जवान स्त्रियों के बीच में बैठने से घबराता था और उनके सामने वह भीगी बिल्ली-सा बन जाता था। पर, अब वह अपने को बहादुर मानने लगा था। इसीलिए अब अच्छी पोशाकें पहन कर और खूब सज-धज कर निकलता था। मेरा अनुमान है कि इस दिशा में भी उसे सफलता ही मिली थी। पर अब भी योद्धा का पूरा सम्मान पाने के लिए उसे बहुत-कुछ करना बाकी था। वह औरतों और लड़कियों में सज-धज कर अवश्य निकलने लगा था, परन्तु अब भी सरदारों और बूढ़े लोगों के सामने जाने में भी उसे शर्म महसूस होती थी। उसने आज तक भी किसी आदमी को न मारा था और न ही लड़ाई में मारे गए किसी शत्रु के शरीर पर चोट पहुँचाई थी। मुझे पूरा विश्वास है कि वह युवक शत्रु की गर्दन काटने वाले अपने अछूते चाकू का बहुत जल्दी ही उपयोग करेगा, क्योंकि उसके दिल में इस बात की इच्छा बहुत दिन से घर किए हुए है। मैं उसके साथ अकेला रहने में, इसीलिए घबराता भी था।

'घोड़ा' नाम का उसका बड़ा भाई कुछ भिन्न चरित्र का था। वह खूबसूरत हो कर भी सुस्त था। वह अच्छा शिकारी हो कर भी, दूसरों के शिकार पर मौज उड़ाना पसंद करता था। उसे अपना नाम चमकाने की कोई खास इच्छा न थी। उसका छोटा भाई पहले ही प्रतिष्ठा में उससे आगे बढ़ चुका था। उसका चेहरा गहरे रंग का और भद्दा था। वह इस पर रंग मलते रहने और मेरे द्वारा दिए हुए एक शीशे में अपनी शक्ल देखते रहने में ही अपना अधिक समय गुज़ार देता था। बाकी समय वह खाने, सोने या घर के बाहर धूप सेकने में बिता देता था। यहाँ वह पूरी तरह सज-धज कर और अपने हथियार ले कर बैठा हुआ घंटों बिता देता। वह इस बात में ही खुश था कि उसे देख-देख कर औरतें प्रसन्न होती हैं। वह हमेशा ही गंभीर चेहरा ले कर बैठा रहता, जैसे वह ध्यान में डूबा हुआ हो। बीच-बीच में वह अपने प्रशंसकों की ओर

भी तिरछी निगाह डाल लेता।

वे दोनों भाई आदिवासियों के दो वर्गों के प्रतिनिधि थे। यहाँ हमें 'शशक' का भी ध्यान रखना चाहिए। 'तूफान' और वह दोनों सदा साथ रहते थे। उनका खाना, सोना और शिकार साथ-साथ ही होता था। उनकी हर चीज़ ही साँझी रहती थी। आदिवासी जीवन में अगर कोई चीज़ बहुत आकर्षक है, तो वह है इस प्रकार की दोस्ती ! ऐसी दोस्ती मैदान के इन कबीलों में कभी कभी देखने को मिल जाती है।

धीरे-धीरे दोपहर के बाद समय बीतने लगा। मैं रेनल के डेरे में ही लेटा रहा। सारे डेरे में ही छाई सुस्ती ने ही मुझे भी आ घेरा। दिन का काम लगभग समाप्त हो गया था। जो कुछ रह गया था, उसे बिना समाप्त किए ही सब लोग अपने घरों में सुस्ताने के लिए लेट गए थे। एक गहरी सुस्ती और आलस्य ने सारे गाँव को घेर रखा था। जब-तब कुछ लड़कियों की हँसी, पास के घर से आती हुई सुनाई दे जाती, या फिर दूर से बच्चों के हँसने-खेलने की आवाज़ आ जाती। धीरे-धीरे मैं भी सुस्त होता गया और नींद ने मुझे आ घेरा।

शाम होने पर जब चारों ओर आगें जलने लगीं, रेनल के घर के पास ही परिवारों का एक घेरा सा बन गया। ये परिवार उसकी स्त्री के ही सम्बन्धी परिवार थे। ये लोग बहुत ही असभ्य और नीच खानदान के थे। इनमें से केवल 'तूफ़ान' ही अकेला ऐसा था जिससे आगे चलकर कुछ आशा हो सकती थी। खानदानी गुणों के कारण यह बात भी संदेह में ही पड़ी दिखाई देती थी। कारण यह था कि उसके साथी इतने वीर और संख्या में अधिक नहीं थे कि वे लड़ाइयों या बदला चुकाने में उसका साथ दे सकें। रेमंड और मैं उनके साथ ही बैठ गए। आग के पास कम-से-कम आठ दस आदमी और लगभग इतनी ही जवान और बूढ़ी औरतें जमा होंगी। उनमें चिलम घूमने लगी। साथ ही, हँसी-मज़ाक का सिलसिला शुरू हुआ। कुछ देर बाद दो-तीन बूढ़ी औरतों ने रेमंड को तीखे ताने देने शुरू किए। कुछ आदमियों ने भी इसमें हिस्सा लिया। अन्त में एक बूढ़ी औरत ने उसे एक बहुत बुरे नाम से पुकारा। इस पर सब लोग हँस पड़े। रेमंड हँसता रहा और उसने कई बार मुकाबले में उत्तर देने का यत्न किया। पर वह असफल रहा। मैं चुप

ही रहा। मुझे डर था कि कहीं उसे बचाते हुए मैं स्वयं ही अपना अपमान न करवा बैठूँ ?

सुबह होने पर मैंने बहुत निराशा के साथ देखा कि अभी डेरा एक दिन और इसी जगह रुका रहेगा। मैं यहाँ की सुस्ती से तंग आ गया था। इसलिए मैंने आसपास के पहाड़ों में निकल जाने का निश्चय किया। मेरे साथ केवल मेरी बंदूक थी, जिस का साथ मुझे हर मुसीबत में भरोसा दिलाता रहता था। इस गाँव के सारे लोग गोरों के प्रति अपना विश्वास बताते थे, परन्तु अनुभव बताता था कि वे लोग इतने विश्वास योग्य थे नहीं। उनकी बेलगाम इच्छाओं और विचित्र हरकतों के बारे में कुछ भी, निश्चित रूप में पहले से ही नहीं कहा जा सकता था। अगर इन लोगों के बीच पूरा सावधान न रहा जाए, तो किसी भी समय जीवन को खतरा हो सकता है। इन लोगों को दूसरे की कमज़ोरी ही सब से अधिक लुभावनी लगती है और ये किसी पर भी हमला कर बैठते हैं।

बहुत-सी घाटियाँ साथ के पहाड़ों से मैदान पर खुल रही थीं। इनमें पेड़ और झाड़ियाँ बहुत अधिक उगे हुए थे। इन जंगलों में बहुत से आदिवासी घूम-फिर रहे थे। पहाड़ों पर उनके बच्चे हँसते हुए आँखमिचौनी खेल रहे थे। साथ-साथ वे पक्षियों और छोटे जन्तुओं को अपने छोटे-छोटे धनुष-बाणों से मारते जाते थे। पास ही एक गहरी घाटी, पहाड़ की चोटी से नीचे तक फैली हुई थी। मैंने इसके तले से चढ़ना शुरू किया। चट्टानों, पेड़ों और झाड़ियों में से होकर मैं बढ़ने लगा। इसमें एक बहुत ही पतली धारा बह रही थी। यह इतने अँधेरे रास्ते से बह रही थी कि इस पर अब तक भी सूर्य की किरणें कभी एक क्षण को भी न पड़ पाई होंगी। कुछ देर आगे बढ़ने के बाद मैंने सोचा कि मैं बिल्कुल अकेला हूँ। पर, एक जगह साफ मैदान में आने पर मैंने एक आदिवासी के काले सिर और लाल कंधों को दूर से पहचाना। यह कोई खतरे की बात न निकली। यह मेरा मित्र मेनेसीला ही था। वह वहाँ बैठकर, चट्टानों और पेड़ों के बीच में छिपा हुआ, ध्यान कर रहा था। मैंने उसे खुल कर देखा, उसका चेहरा ऊपर उठा हुआ था। उसकी आँखें ऊपर की चट्टान से उगने वाले एक वृक्ष पर जड़ी हुई थीं। चीड़ के उस पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा इधर-उधर हिल रही थी। नीचे की शाखाएँ भी

ऊपर-नीचे हिल रही थीं। लगता था जैसे वह पेड़ भी ज़िन्दा चीज़ हो! उसकी ओर कुछ देर देखने के बाद मैं समझ गया कि मेनेसीला ध्यान में डूब कर किसी अलौकिक चीज़ के साथ अपना सम्बन्ध जोड़े हुआ था। मैंने उसके विचारों को पहचानना चाहा। पर, मैं केवल अनुमान मात्र ही कर सकता था। मैं जानता था कि किसी आदिवासी की बुद्धि में यह तो आ सकता है कि कोई 'महान् आत्मा' सर्वशक्तिमान, सबसे अधिक बुद्धिमान् और सबका शासक है, पर उसके लिए यह सोचना कठिन है कि वह उससे सीधा सम्बन्ध बना सकता है। इसीलिये वह अपना सम्बन्ध दिखाई देने वाली किसी छोटी सी चीज़ से करके ही प्रसन्न हो जाता है। इसीलिए ये आदिवासी अपने लिए एक प्रतिनिधि और रक्षक आत्मा को मानकर उस पर, हर कठिनाई और राह दिखाने के लिए, भरोसा करके चलते हैं। उनके लिए सारी प्रकृति ही किसी जादूभरे असर से भरी हुई है। उन पहाड़ों में घूमने वाला एक भी जंगली जानवर, गाने वाला कोई भी पक्षी, या हिलता हुआ कोई भी पत्ता उसके भाग्य को बताने वाला या भविष्य के लिए चेतावनी देने वाला बन सकता है। वह इस सारे संसार को वैसे ही देखता है, जैसे कोई ज्योतिषी तारों को देखता है। वह इन चीज़ों से इतना निकट का सम्बन्ध समझता है, कि वह अपनी रक्षक आत्मा को किसी जीवित प्राणी का रूप दे बैठता है। यह रूप भालू, भेड़िया, चील, या साँप आदि किसी भी रूप में हो सकता है। मेनेसीला भी शायद इस चीड़ के पेड़ की ओर यही सोच कर देख रहा था कि यह उसकी रक्षक आत्मा का प्रतिनिधि है।

उसके दिमाग में चाहे जो कुछ भी रहा हो, यह ठीक नहीं था कि मैं उसे छेड़ता। अपने कदम चुपचाप हटाता हुआ मैं घाटी में उतर आया और दूसरी ओर चढ़ने का रास्ता खोजने लगा। ऊपर की ओर देखते हुए मैंने जंगलों में से उठी हुई एक ऊँची चोटी देखी। मुझ में इस पर चढ़ने की इच्छा जगी। ऐसी इच्छा पिछले बहुत दिन से नहीं जगी थी। डेढ़ घंटे तक लगातार मेहनत करने के बाद मैं चोटी तक पहुँच सका। अँधेरी चट्टानों के पास से होते हुए मैं रोशनी में निकल आया और इसके किनारों पर घूमने लगा। मैं इसकी सब से ऊँची जगह पर जा कर बैठ गया। यहाँ से जब मैंने पश्चिम की ओर देखा तो पहाड़ी चोटियों में से दूर तक फैला हुआ पीला और नीला मैदान दिखाई

दिया। लगता था जैसे एक शान्त समुद्र लहरा रहा हो। चारों ओर के पहाड़ भी कम लुभावने न थे। परन्तु इस विरोध भरे दृश्य ने उन्हें और भी लुभावना बना दिया था।

—: • :—

१९ : पहाड़ों की राह

लाबोते नाम के स्थान पर जब मैं शॉ से जुदा हुआ था, तब मैंने उससे पहली अगस्त के दिन, लारामी किले में, मिलने का वायदा किया था। आदिवासियों का इरादा भी पर्वतों की राह किले की ओर जाने का था। अब इस अवसर पर ऐसा करना कठिन था, क्योंकि कोई भी राह नहीं मिल रही थी। ऐसी राह खोजने के लिए हमें दक्षिण की ओर बारह-चौदह मील जाना पड़ता। दोपहर काफी देर बाद सारा डेरा चलने की तैयारी करने लगा। मैं तीन या चार आदिवासियों को लेकर सबसे पीछे-पीछे चला। मेरे सामने बहुत दूर तक सूर्य के लाली भरे प्रकाश में या पर्वतों की छाया में इन आदिवासियों का ही फैलाव नज़र आता था। यह जगह बहुत ही अपशकुन वाली थी और डेरे के लिए चुनी गई थी। जब वे यहाँ एक साल पहले रुके थे, तब 'बवंडर' के बेटे के साथ दस आदमियों की लड़ाकू टुकड़ी शत्रुओं के विरुद्ध लड़ाई के लिए गई थी। उसमें से एक भी लौट नहीं पाया था। इस साल की लड़ाइयों की तैयारियों का यही सबसे बड़ा कारण था। जब मैं डेरे में पहुँचा, तब मैंने इसे बहुत भंयकर आवाज़ों से भरा पाया। पर, मैं चकित नहीं हुआ। लोग अफ़सोस में चीख और चिल्ला रहे थे। अधिकांश स्त्रियाँ केवल रोने से ही सन्तुष्ट न रह कर, अपने शोक को प्रकट करने के लिए, अपनी टाँगों पर चाकुओं से घाव कर रही थीं। एक योद्धा का भाई मारा गया था। उसने अपने दुःख को प्रकट करने का दूसरा ही ढंग सोचा। ये आदिवासी जब कभी दुःख में होते हैं, तो कितनी ही भंयकर आदत के क्यों न हों, उस समय बहुत ही उदार हो जाते हैं। कई बार अपने दुःख को प्रकट करने के लिए अपनी हर चीज़ दूसरों को देकर स्वयं को कतई निर्धन बना लेते हैं। जिस योद्धा का ज़िक्र है, वह अपने दो सबसे अच्छे घोड़े गाँव के बीचों-बीच लेकर आया और उसने उन्हें अपने मित्र को दे दिया। तब उसकी प्रशंसा में चारों ओर से गीत गाए जाने लगे, जो उस चीख और चिल्लाहट में मिलकर एक हो गए।

अगली सुबह हम फिर पर्वतों में घुसे। ये पर्वत न बहुत बड़े थे और न

सुन्दर। यहाँ कतई एकान्त था और ये बिल्कुल उजाड़ थे। चरों ओर टूटी-फूटी काली चट्टानें ही बिखरी हुई थीं। किसी भी पेड़ या वनस्पति का कोई चिन्ह तक दिखाई नहीं देता था। जब हम इन घाटियों में से गुजर रहे थे, तब मैंने रेमंड को एक जवान स्त्री के साथ-साथ बढ़ते देखा। वह उसकी प्रशंसा में बहुत कुछ कह रहा था। पास पड़ोस की बूढ़ी स्त्रियाँ उसकी हरकतों को बहुत प्रशंसा के साथ देख रही थीं। वह लड़की खुद भी अपना सिर उसकी ओर मोड़कर हँस रही थी। तभी रेमंड का खच्चर अपनी बुरी हरकतों पर उतर आया और बुरी तरह उछलने-कूदने लगा। रेमंड एक अच्छा घुड़सवार था। पहले तो वह अपनी जगह पर टिका रहा, परन्तु थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि खच्चर ने बुरी तरह दुलत्तियाँ झाड़नी शुरू कर दीं। रेमंड उसकी गर्दन पर चिपट गया। चारों ओर से हँसी और चीख की आवाजें आने लगीं। यहाँ तक कि वह लड़की भी जोर से हँसने लगी। रेमंड पर चारों ओर से इतने अधिक ताने कसे गए कि उसने उनसे आगे भाग कर ही अपने को बचाया। इसके कुछ ही देर बाद जब मैं उसके पास गया तो मैंने देखा कि वह मुझे ही बुला रहा था। उसने एकान्त में खड़ी एक चट्टानी पहाड़ी की ओर इशारा किया। यह हमारे सामने की घाटी में खड़ी थी और इसके पीछे से बहुत ही अच्छे बारहसिंगों की एक कतार, सामने से होकर, निकल गई। अभी वे निकले ही होंगे कि मेरे चारों ओर लगभग पचास आवाजें तेजी से उठीं। कुछ युवक अपने घोड़ों से उतर कर पूरी तेजी से पास की तलहटी की ओर भाग निकले। रेमल भी उनके साथ ही पूरी तेजी से उसी दिशा में बढ़ गया। उसने हमें भी पुकारा, "आ जाओ! दौड़े आओ! क्या तुमने उन हिरणों के समूह को देखा? अगर वहाँ ये इतने से हो सकते हैं, तो और भी अनेक होंगे।"

निश्चय ही यह बात सच थी। पहाड़ की चोटी के पास मैंने सैकड़ों सफेद चीजों को चट्टानों की ओर तेजी से भागते देखा, जब कि दूसरी कुछ इधर-उधर झुण्ड बाँधकर खड़ी हो रही थीं। इस शिकार को देखने की मेरी भी इच्छा हुई और मैं आगे बढ़कर पहाड़ के एक रास्ते से होता हुआ, हल्की-हल्की चट्टानों के बीच में से, वहाँ तक गया, जहाँ तक मेरे घोड़े को चलने में सहूलियत थी। यहाँ मैंने उसे एक चीड़ के पेड़ के साथ बाँध दिया। उसी

समय दाईं ओर से मुझे रेमंड ने बुलाया। वहाँ भेड़ों का एक जत्था पास में ही था। एक खुली जगह आकर मैंने देखा कि सामने पचास-साठ भेड़ें खड़ी थीं। ये के बंदूक कस बनिशाने की पहुँच के अन्दर ही थीं। सब चट्टानों में से होकर ऊपर की ओर बढ़ने की कोशिश कर रही थीं। नंगे आदिवासी पूरी तरह इनका पीछा करने में लगे हुए थे। थोड़ी ही देर में शिकार और शिकारी आँखों से ओझल हो गए। कुछ देर तक कुछ भी दिखाई या सुनाई न दिया। कभी-कभी बन्दूक की आवाज़ दूर से दूर होती हुई सुनाई दे जाती थी।

मैं उतरने के लिए मुड़ा। नीचे उतरते हुए मैंने देखा कि आदिवासी पैदल और घोड़ों पर चढ़े हुए जल्दी में उधर से गुज़र रहे थे। कुछ दूर जाकर वे फिर इकट्ठे हो गये। यहाँ थोड़ी ही देर में डेरा खड़ा हो गया। मैं इधर की ओर ही उतरा। कुछ ही देर में रेनल और रेमंड भी यहीं आ गए। उन्होंने अपने बीच में एक भेड़ लटका रखी थी, जिसे उन्होंने एक घाटी के किनारे पत्थरों से ही मार गिराया था। अब एक-एक करके हर शिकारी लौटने लगा। इन पहाड़ों की भेड़ों की यह विशेषता है कि ये बहुत तेज हरकत वाली होती हैं। तभी तो साठ या सत्तर शिकारी कुल मिलाकर आधी दर्जन भेड़ें ही मार सके। इनमें से केवल एक ही जवान नर मेढा था। उसके सींग बहुत बड़े थे। इस प्रकार के बड़े सींग मैंने बहुत कम देखे हैं। ऐसे सींगों से ही आदिवासी लोग इतनी बड़ी-बड़ी कड़छियाँ बना लेते हैं, जिनमें बहुत अधिक चीज आ जाती है।

अगली सारी सुबह हम पहाड़ों में ही चलते रहे। उससे अगले दिन पहाड़ कुछ हमारे अधिक निकट तक घिर आए और हमारा रास्ता सही रूप में पहाड़ी रास्ता बन गया। डेरा छोड़ने से पहले ही मैं एक मजबूत और गठीले शरीर वाले 'चील-पंख' नाम के युवक के साथ आगे बढ़ निकला। उसका चेहरा बहुत ही भद्दा और खूँख्वार लगता था। उसका छोटे आकार का एक लड़का भी हमारे साथ ही चला और 'चीता' नाम का एक और आदिवासी युवक भी हमारे साथ हो लिया। गाँव को अपने बहुत पीछे छोड़ कर हम इन चट्टानी रास्तों से होते हुए आगे बढ़े। कुछ ही देर बाद हमें शिकार सामने दिखाई देने लगा। दोनों बाप-बेटे उस ओर निकल गए। 'चीते' के साथ मैं आगे बढ़ता रहा। इस युवक का 'चीता' नाम इसका दूसरा नाम था। इसका

१२ : दुर्भाग्य

एक कनाडावासी लारामी किले से अजीब ही खबर ले कर आया। हाल में ही पर्वतों में से एक पशु-फँसाने वाले ने प्रवासियों के साथ जाने वाली मिसूरी निवासी किसी स्त्री से प्यार बढ़ा लिया था। ये प्रवासी बहुत दिनों से किले के पास ही डेरा डाले पड़े थे। अगर किसी सुन्दरी का प्यार पाने का उपाय वीरता दिखाना ही हो तो पर्वतों से लौटे हुए ऐसे पशु-फँसाने वाले का छोड़कर और कौन उसका अच्छा अधिकारी हो सकता है? इस किस्से में भी यही बात हुई। दोनों प्रेमियों ने एक योजना बनायी और उसे पूरी सावधानी के साथ पूरा करने का निश्चय किया। प्रवासियों के दल ने किला छोड़ा और उसके एक रात बाद हर रोज़ जैसे ही डेरा डालकर अपना पहरेदार खड़ा कर दिया। आधी रात के कुछ देर बाद ही वह पशु-फँसाने वाला एक घोड़े पर चढ़कर डेरे तक आया। उसने एक दूसरे घोड़े की लगाम भी थामी हुई थी। उसने दोनों घोड़े पेड़ से बाँधे और चुपचाप सरकता हुआ गाड़ियों की ओर ऐसे गया, जैसे वह भैंसों के पास पहुँच रहा हो। आधे-सोते पहरेदार की निगाह बचाकर वह अपनी प्रेमिका से, निश्चित किये हुए तरीके से, डेरे से बाहर ही मिला। उसने उसे खाली घोड़े पर चढ़ाया और उसे लेकर अँधेरे में ही ग़ायब हो गया। इस साहस का परिणाम हम तक फिर कभी नहीं पहुँचा। हम नहीं जान पाये कि उस गोरी प्रेमिका ने आदिवासियों जैसे घर में रहना क्यों स्वीकार किया और एक फक्कड़ पशु-फँसाने वाले को अपना पति कैसे चुना?

काफी देर बाद 'बवंडर' और उसके लड़ाकू जवानों ने आगे बढ़ने का निश्चय किया। अपनी तैयारियाँ पूरी कर लेने के बाद उन्होंने निश्चय किया कि वे लाबोंते नाम के डेरे की ओर नहीं जायेंगे। ब्लैक हिल्स की ओर से गुज़रते हुए उन्होंने कुछ दिन भैंसों के शिकार में बिताने का निश्चय किया, ताकि उनके पास मांस आदि का काफी बड़ा भंडार और अगली मौसम के लिए मकान ढकने के भैंसों के चमड़े इकट्ठे किए जा सकें। ऐसा होने के बाद

उन्होंने शत्रुओं के विरुद्ध एक स्वतन्त्र लड़ाकू दल भेजने का निश्चय किया। उनके इस निश्चय ने हमें अजीब पशोपेश में डाल दिया। अगर हम पहले से निश्चित डेरे की ओर जाते हैं तो यह सम्भव है कि और भी बहुत से आदिवासियों के गाँव इसी प्रकार से वहाँ न पहुँचें और शायद वहाँ कभी भी वे लोग इकट्ठे न हो सकें। हमारा पुराना साथी रेनल हमें चाहने लगा था। हो सकता है वह हमारे बिस्कुटों और काफ़ी आदि से अथवा समय-समय पर दी जाने वाली भेंटों से अधिक प्यार करता हो? वह बहुत अधिक उत्सुक था कि हम गाँव के साथ-साथ ही बढ़ें। उसने स्वयं भी ऐसा फ़ैसला किया था। उसे पूरा विश्वास था कि ये आदिवासी मिलन के निश्चित स्थान पर कभी जमा नहीं हो पाएँगे। उसने यह भी कहा कि हमारी गाड़ी और सामान के लिए इन पहाड़ियों में से होकर गुज़रना अधिक आसान रहेगा। उसे इस मामले में कुछ अधिक पता नहीं था। न तो वह ही और न हम गोरों में से कोई और ही उन कठिन रास्तों से परिचित था, जिनमें से होकर इन आदिवासियों ने जाने का निश्चय किया था। बाद में जब मैं उधर से गुज़रा तब मुझे अपने दुःखी घोड़े को तंग घाटियों और धूप के दर्शन न पा सकने वाले घने छोटे वनों में से गुजरने पर मजबूर करना पड़ा। हमारी गाड़ी बहुत आसानी से 'पाइक' की चोटी तक चढ़ सकती थी। पर हम इस बात से अनजान थे। मिलन के निश्चित स्थान की ओर जाने में कठिनाइयों और अनिश्चय के कारण हमने यह अधिक अच्छा समझा कि आधी छोड़ सारी को धावे, वाली कहावत के अनुसार हमें इन लोगों के साथ ही चलना चाहिए।

आदिवासियों और हम लोगों के डेरे पहली जुलाई की सुबह ही उखाड़ लिए गए। मैं बहुत अधिक कमज़ोर था। थोड़ी-थोड़ी देर बाद कुछ चमचे शराब पीकर ही मैं घोड़े पर बैठकर उस दिन की यात्रा के लिए समर्थ हो सका। हम से आधा मील आगे और आधा ही मील पीछे तक का यह रेतीला मैदान चलते हुए आदिवासियों के जत्थों से घिरा हुआ था। सामने का उजाड़, कटा-फटा मैदान दायें और बायें बहुत दूर तक फैला हुआ था। बहुत दूर सामने की ओर ब्लैक हिल्ज़ नाम की पहाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। हम भारी बोझे से लदी गाड़ियों और बुरी तरह लदे हुए लादू घोड़ों, पैदल चलती बूढ़ी औरतों, घुड़सवार जवान औरतों, अशांत बच्चों और सफेद खाल ओढ़े बूढ़े आदमियों

के पास से होते हुए इस बिखरे हुए जत्थे के आगे तक पहुँच गए। कुछ जवान योद्धा बहुत अच्छे घोड़ों पर चढ़े हुए थे। हेनरी ने पीछे की ओर दूर मैदान में देखते हुए कहा कि कोई घुड़सवार हमारी ओर आ रहा है। सच यह था कि हमने अपनी ओर बढ़ती हुई एक हल्की सी आकृति सामने के एक टीले पर आती हुई देखी, मानों किसी दीवार पर कोई मक्खी चल रही हो। धीरे-धीरे हमारी ओर बढ़ते हुए यह काला दाग बढ़ने लगा।

हेनरी ने कहा, "मुझे लगता है कि यह कोई गोरा है। इसके चढ़ने का ढंग देखो! आदिवासी इस तरह नहीं चढ़ते। हाँ, उसने अपनी बन्दूक अपने आगे काठी पर अवश्य रखी हुई है।"

वह घुड़सवार मैदान के एक खड्ड में छिप गया। तुरन्त ही वह फिर से दिखाई देने लगा और आदिवासियों की भीड़ में होता हुआ हमारी तरफ बढ़ आया। उसके लम्बे बाल हवा में पीछे की ओर उड़ रहे थे। हमने उसके चेहरे और उसकी पुरानी हिरन की खाल की पोशाक से पहचान लिया कि वह पशु-फँसाने वाला गिग्रास ही था। वह अभी-अभी लारामी किले से ही आ रहा था और हमारे लिए संदेश लाया था। हेनरी के मित्रों में से बिसोनेत नाम का एक व्यापारी इन्हीं दिनों हमारे इलाके से आया था। उसका इरादा कुछ लोगों के साथ लाबोंते नाम के डेरे की ओर जाने का था। गिग्रास ने हमें बताया कि वहाँ कम-से-कम दस बारह गाँवों के आदिवासी अवश्य इकट्ठे होंगे। बिसोनेत चाहता था कि हम भी नदी पार करके उनसे वहाँ जा मिलें। हमारे घोड़ों और सामान की देखभाल करने का भी उसने विश्वास दिलाया, क्योंकि हमने आदिवासियों के साथ आगे जाना था। शॉ और मैंने अपने घोड़े रोके और कुछ देर विचार किया। न जाने किस बुरी घड़ी में हमने उस ओर जाने का निश्चय किया।

उस सारे दिन हमारा और आदिवासियों का रास्ता एक ही रहा। एक घण्टे से भी कुछ कम समय में ही हम उस जगह पहुँच गये, जहाँ इस उजाड़ और ऊसर मैदान के अन्त में एकदम सीधी ढलान आ जाती है। इसके किनारे खड़े होकर हमने देखा कि सामने एक बहुत बड़ी चरागाह थी। लारामी धारा यहाँ से बाईं ओर को मुड़ जाती थी। यहाँ से आगे वह गहराइयों में से होती हुई, अपने उथले पानी के साथ बढ़ गई थी। हम घोड़ों की पीठ पर बैठे हुए

तब तक प्रतीक्षा करते रहे और देखते रहे, जब तक उन आदिवसियों का पूरा का पूरा गाँव ही धीरे-धीरे नीचे उतर कर चरागाह में न फैल गया। कुछ ही देर में वह सारा मैदान अनेकों प्राणियों की हलचल से भर गया। उनमें से कुछ साफ दिखाई दे रहे थे और कुछ बहुत ही धुँधले से दीख रहे थे। कुछ लोग बहुत जल्दी में अब भी धारा पार कर रहे थे। ऊँचाई के इन किनारों पर कुछ बड़ी उमर के योद्धाओं का एक दल तम्बाकू पीता हुआ और इस सुन्दर दृश्य को स्थिर निगाहों से देखता हुआ बैठा था।

धारा के किनारे-किनारे, एक घेरे के रूप में, तुरन्त ही तम्बू खड़े हो गये। शान्त रहने की इच्छा से हमने लगभग आधा मील दूर डेरा गाड़ा। दोपहर के बाद हम गाँव की ओर गये। दिन बहुत ही शुभ था। सारा गाँव बहुत अधिक काम में जुटा हुआ और हमारे लिये सहानुभूति से भरा हुआ लग रहा था। बच्चों और छोटी लड़कियों की टोलियाँ खूब हँस खेल रही थीं। ढालें, भाले और धनुष उन तिपाइयों से उतार लिए थे, जिन पर वे मकानों के सामने ही टँगे रखे थे। योद्धा लोग घोड़ों पर सवार होकर पास की पहाड़ियों की ओर एक-एक करके निकलने शुरू हो गये।

शॉ और मैं रेनल के मकान के पास ही धरी घास पर बैठे थे। तभी एक बुढ़िया अपनी प्रथा के अनुसार उबले हुए हिरण के मांस का प्याला भर कर ले आई। हम कुछ जवान स्त्रियों को आँखमिचौनी खेलते देखते रहे। तभी पास की पहाड़ियों में से चीखती हुई युद्ध की तरह की आवाजें आने लगीं। घुड़सवारों की एक टोली गाँव की तरफ़ पूरी तेज़ी के साथ दौड़ती हुई आई। उनके बाल हवा में इस तरह उड़ रहे थे, जैसे किसी जहाज़ की चिमनी में से भाप निकल रही हो। पास आने पर वे ठीक तरह से बँट कर दो-दो करके आने लगे और कुछ दूरी पर एक घेरा बाँध कर खड़े हो गये। हर एक योद्धा अपनी-अपनी जगह पर ही युद्ध का गीत गा रहा था। उनमें से कुछ की पोशाकें बहुत ही अच्छी थीं। उन्होंने पंखों के कालर वाले कपड़े पहने हुए थे। ये कपड़े हिरण की खाल से बनाए हुए थे। इनके किनारे की झालरें शत्रुओं के सिर के बालों के गुच्छों से बनी हुई थीं। बहुतों की ढाल पर भी सुनहरी चीलों के पंख लगे हुए थे। सबके धनुष और बाण पीठ पर बंधे हुए थे। कुछ ने लम्बे भाले या बन्दूकें अपने हाथों में पकड़ी हुई थीं। उनका नेता 'सफ़ेद

खल' बहुत ही सुन्दर चमकदार पोशाक पहने उनके आगे खड़ा था। उसका घोड़ा सफ़ेद और काले रंग का था। महतो के भाइयों ने इस तैयारी में हिस्सा न लिया, क्योंकि वे अपनी बहिन की मृत्यु का शोक मना रहे थे और अब भी अपने डेरे में बैठे थे। उन सब के शरीर सफेद मिट्टी से पुते हुए थे और उनके माथे पर से कुछ बाल कटे हुए थे।

योद्धा लोग गाँव के चारों ओर तीन बार परिक्रमा के लिये गये। ज्यों-ज्यों कोई प्रसिद्ध वीर सामने से गुज़रता, बूढ़ी स्त्रियाँ उसका नाम लेकर उसकी वीरता का बखान करतीं और नये योद्धाओं को उनके अनुकरण के लिए हौसला देतीं। इस जलूस के पीछे दो साल से भी कम आयु के बच्चे अपने कबीले के वीर योद्धाओं की प्रशंसा करते हुए चल रहे थे।

यह सारा जलूस वैसे ही गाँव से बाहर निकल गया जैसे अन्दर आया था। आधे ही घण्टे बाद यह फिर से गाँव में लौट आया। पर, अब एक-एक योद्धा चुपचाप आता गया।

यह सब समाप्त होने के बाद हमें आदिवासियों की गृहस्थी का एक नया नजारा देखने को मिला। एक चुड़ैल-सी औरत बहुत गुस्से में भर कर अपने पति का अपमान कर रही थी। उसका पति मकान के बीचों-बीच निश्चिन्त होकर तम्बाकू पीता हुआ चौकड़ी मारे बैठा था। बहुत देर बाद उसकी चुप्पी के कारण पागलपन में आकर उस औरत ने तम्बू की बल्लियाँ उखाड़ डालीं और धीरे-धीरे सारा मकान पति के सिर पर गिरने लगा। वह इस सब के बीच दब गया। उसने इन चीजों को हटा कर अपना सिर बाहर निकाला। अब भी वह पहले जैसे ही निश्चिन्त होकर तम्बाकू पी रहा था। पर, अब उसकी आँखों में एक शरारत खेल रही थी। उसकी औरत उसे कोसती हुई अपना घोड़ा तैयार करने के लिए बढ़ी। वह उसे पार करती हुई डेरे से बाहर नहीं निकल गई। शायद वह अपने पिता के घर जाना चाहती थी, चाहे वह और कहीं न जा चुका हो। वह योद्धा चुपचाप उठा और अपने को उस सब गड़बड़-झाले से अलग करके उसने बालों की एक रस्सी अपने लादू घोड़े के जबड़े पर बाँधी और एक बड़ी बल्ली के आखिरी हिस्से को तोड़कर चार फुट लम्बा एक डण्डा हाथ में ले लिया। भैंसे पर चढ़ कर वह तेजी से मैदान की ओर निकल चला, ताकि अपनी साथिन को काबू में ला सके।

अगली सुबह सूरज चढ़ने पर हमने चरागाह के पार देखा। आदिवासियों के मकान गिराये जा चुके थे और वे लोग डेरा छोड़ने की तैयारी कर रहे थे। उनका रास्ता पश्चिम की ओर था। हम अपने तीनों आदमियों के साथ उत्तर की ओर बढ़े। चार पशु-फँसाने वाले और मोरें का परिवार भी हमारे साथ ही था। रात तक हम चलते रहे और एक छोटे से झरने के पास के पेड़ों में हमने डेरा डाला। यहाँ सारे दिन भर बिसोनेत की प्रतीक्षा करते रहे, पर वह न दिखाई दिया। यहाँ से हमारे साथियों में से दो पशु-फँसाने वाले हमसे विदा हुए और राकी पर्वतों की ओर चले गए। अगली सुबह बिसोनेत को न आता देखकर निराशा में हमने अपना सफ़र फिर से शुरू कर दिया। हमारा रास्ता एकान्त, उजाड़ और धूप से झुलसे हुए मैदानों में से होकर गुज़र रहा था। एक भी जीवित वस्तु नज़र में नहीं आ रही थी। कहीं-कहीं कोई हिरण अवश्य दिखाई दे जाता था, पर वह भी तीर की भाँति निकल जाता था। दोपहर के समय हमें एक बहुत ही अच्छा और दुर्लभ नज़ारा दिखाई दिया। बहुत से पेड़ एक धारा के किनारे उगे हुए थे। इस धारा का नाम 'हौर्सशू' धारा था। पेड़ कुछ दूरी तक खूब पत्तों से ढके हुए थे। उनके नीचे काफ़ी घनी और ऊँची घास उगी हुई थी। धारा बहुत तेज़ी से बह रही थी। उसका पानी बहुत साफ़ था। इसके नीचे की रेत साफ़ चमक रही थी। पेड़ों से भरी घाटियों से गुजरती हुई यह धारा गहरे रंग की हो उठी थी। मैं एकदम थका हुआ था। इसलिये हार कर मैं ज़मीन पर लेट गया।

सुबह सूर्य बहुत ही सुहावने रूप में निकला। ऐसा आनन्द इस मैदान पर हमेशा ही छा जाता होगा। हम लोग आगे बढ़े और जल्दी ही हमारे चारों ओर ऊँची नंगी पहाड़ियाँ नज़र आने लगीं। इन पर कहीं-कहीं नाशपातियों और ओहर आदि के पौधे लगे हुए थे और वह दूर से छिपकलियों जैसे लग रहे थे। सामने मैदान भी था, जिस पर न तो घास ही अधिक थी और न ही जो मुलायम थी। इस पर बुरे लगने वाले ऊँचे पेड़ों की एक कतार खड़ी थी, जिस से एक सीमा-रेखा-सी बन गई थी। वहाँ किसी मनुष्य वा जानवर का नामो-निशान भी मालूम न पड़ता था और ना ही किसी जीवित वस्तु का। हालांकि, इस स्थान पर ही वह जगह थी, जहाँ आदिवासियों के सारे गाँवों ने जमा होना था। हमें यहाँ हज़ारों आदिवासियों से मिलने की आशा थी। हमने चारों ओर

बहुत ध्यान से देखना और सुनना शुरू किया। हमने पूरी तेजी के साथ अपने घोड़ों को सामने के पेड़ों में से बढ़ने के लिये मजबूर किया। सामने बहुत दूर तक छोटे-छोटे पेड़ फैले हुए थे। उनके बीच से होकर एक पतली-सी धारा बह रही थी। हम झुकी हुई शाखाओं को हटाते हुए आगे बढ़ने लगे। अब दाएँ-बाएँ सभी ओर हिरण कूदने लगे। बहुत देर बाद हमें सामने का मैदान दिखाई दिया और हम इस पर बढ़ आये। हमें एक भी डेरा या कोई और जीता-जागता निशान न दिखाई दिया। चारों ओर मीलों दूर तक रेगिस्तान ही फैला हुआ दिखाई दे रहा था। एक भी झाड़ी, पेड़ या पशु नजर नहीं आ रहा था। हमने लगामें खींचीं और आदिवासियों के विरुद्ध अपने भाव प्रगट किये। हमारी यात्रा बुरी तरह व्यर्थ हुई। मेरे लिये तो यह और भी बुरी पड़ी। क्योंकि, मैं जानता था कि मेरी सेहत में थोड़ी गड़बड़ भी बहुत भयानक सिद्ध होगी और इस प्रकार मैं अपने उस उद्देश्य में सफल न हो सकूँगा, जिसके लिये तीन-चार हजार की मील की दूरी तै करके मैं यहाँ तक आया था।

फिर आदिवासी कहाँ थे ? वे लोग यहाँ से लगभग बीस मील दूर एक स्थान पर बहुत बड़ी संख्या में जमा होकर युद्ध के नाच आदि कर रहे थे। शायद इस जगह पर भैंसों की कमी के कारण वे नहीं आये थे। भैंसों की खालों और मांस से ही उनका सारे साल का काम चलता था। इसलिये उन्हें यहाँ इकट्ठा होने में लाभ न दिखाई दिया। यह सब बात हमें बहुत दिन बाद पता चली।

शाँ ने अपने घोड़े को एड़ लगाई और आगे की ओर निकल गया। मैं उससे भी अधिक उतावला था। पर मैं यह सब कुछ करने की शक्ति से हीन था। इसलिये मैं धीमी चाल से बढ़ने लगा। हम एक अकेले पुराने पेड़ तक पहुँच गये। यही एक-मात्र जगह थी, जहाँ हम डेरा डाल सकते थे। इसकी आधी से अधिक शाखाएँ मुरझा चुकी थीं। बाकी शाखाओं पर बहुत ही थोड़े पत्ते रह गए थे। इस कारण छाया भी बहुत थोड़ी थी। हमने अपनी काठियाँ तने की छाया में डाल दीं और उन पर बैठ गये। इसी तरह हम एक-दो घण्टे तक छाया के साथ-साथ अपनी काठियाँ सरकाते हुए बैठे रहे। धूप अब भी बहुत तेज थी।

—:०:—

१३ : आदिवासियों की शिकार-यात्रा

अन्त में हम ताबोंते नाम के डेरे पर पहुँच गए। इस ओर हमारी आँखें न जाने कब से लगी हुई थीं। उस दिन दोपहर और साँझ के बीच में जितना भी चिन्ता भरा समय बीता, वह हमारी बेचैनी से भरा हुआ था। मैं एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ सोच रहा था कि अब आगे क्या किया जाए ? मेरी निगाह छाया और सूर्य पर टिकी हुई थी। लगता था, दोनों ही न हिलने की कसम खा चुके थे। हर क्षण यह उम्मीद जगती थी कि व्यापारी बिसोनेत और उसके साथियों के डेरे इसी समय जंगलों से निकल कर बाहर आते दिखाई देंगे। शॉ और हेनरी उनका पता लेने के लिए कुछ दूर तक बढ़ गए थे। वे सूर्य छिपने से पहले न लौट पाए। जब वे लौटे तो उनके चेहरे प्रसन्न न थे।

शॉ ने बताया, "हम यहाँ से दस मील दूर तक गए और सबसे ऊँची जगह पर चढ़ गए। परन्तु न तो हमें कोई भैंसा दिखाई दिया और न कोई आदिवासी। हाँ, हमारे चारों ओर बीस-बीस मील तक केवल मैदान ही मैदान नज़र आता था। हेनरी का घोड़ा खड्डों और खाइयों में चढ़ने उतरने के कारण नाकाम हो गया था। शॉ का घोड़ा भी बहुत अधिक थक गया था।

शाम के भोजन के बाद हम आग के चारों ओर इकट्ठे हुए। मैंने शॉ से एक दिन और प्रतीक्षा करने की प्रार्थना की। मुझे आशा थी कि शायद बिसोनेत आ जाए। अगर तब भी वह न आया तब हम देस्लारियर को सामान और गाड़ी के साथ लारामी किले में ही वापिस भेज देंगे और हम स्वयं 'बवंडर' के गाँव की ओर चल पड़ेंगे। हमारा यत्न होगा कि हम इसे पहाड़ों में से गुज़रते हुए ही पकड़ लें। शॉ ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। वह आदिवासियों के शिकार को देखने के लिए उतना उत्सुक न था। तब मैंने अकेले ही इस राह पर बढ़ने का फैसला किया। यह बात मैंने बड़े अनमने ढंग से स्वीकार की, क्योंकि मुझे पता था कि मेरी इस कमज़ोर हालत में ऐसा प्रयत्न बड़ा दुःखदायी और हानि देने वाला साबित होगा। मुझे आशा थी कि अगले ही दिन बिसोनेत आ जाएगा और हमारा रास्ता तय करने के लायक कोई

खास खबर देगा। इस प्रकार मैं अपने उद्देश्य को अधिक अच्छी तरह पूरा कर सकूँगा।

मेरे न रहने पर हेनरी और उसकी राईफल दल की रक्षा के लिए अधिक जरूरी थे। इसलिए मैंने रेमंड को बुलाकर अपने साथ चलने के लिए कहा। रेमंड चारों ओर सूनी-सी निगाहें दौड़ाने लगा। अन्त में उसे कुछ सूझा और वह अपनी गाड़ी के नीचे बिछे बिस्तर की ओर बढ़ गया। उसका शरीर कुछ भारी था और चेहरा चौड़ा। उसके चेहरे पर बहुत मूर्खता-सी झलकती दिखाई देती थी। पर साथ ही उसे अपने पर विश्वास भी बहुत अधिक था। उसके अच्छे गुणों में सबसे बड़ी बातें थीं उसकी अत्यधिक दृढ़ता, खतरे के प्रति निडरता और उसकी सूझ, जो कभी-कभी उसे अच्छे-अच्छे समझदार लोगों से भी ज्यादा तेज़ अक्ल वाला साबित कर देती थी। इस सब के अलावा उसे राइफल चलाना और घोड़े को सम्हालना वगैरह भी आता था।

अगले सारे दिन बहुत तेज धूप तपती रही। बहुत दूर तक मैदान मृग-तृष्णा के जाल में पड़ा हुआ काँप-सा रहा था। हमारे आदिवासियों का तम्बू इन तपती किरणों में ही तना हुआ था। हमारी बन्दूकें पेड़ों के साथ टिकी हुई थीं। पर, यह सभी कुछ बुरी तरह झुलसा हुआ-सा लग रहा था। सारे डेरे में बहुत अधिक शान्ति छाई हुई थी। कभी-कभी मच्छरों या भूण्डों के भिनभिनाने के कारण यह चुप्पी टूट जाती थी। आदमी अपनी बाहों पर सिर टिकाए गाड़ियों के नीचे सो रहे थे। नये विवाहित पति-पत्नी को छोड़ कर बाकी सारे आदिवासी अपने तम्बू में ही लेटे हुए थे। यह नया जोड़ा कुछ दूर पर एक चादर सी तान कर उसके नीचे बैठा हुआ था। इनको छोड़ कर एक और बहुत कमजोर-सा बूढ़ा, पेड़ पर ऊंचे चढ़कर बैठा हुआ था और अचानक ही आ जाने वाले शत्रुओं को चौकन्ना होकर खोज रहा था। हमने भोजन किया और तब शॉ ने अपने घोड़े की काठी कसी।

वह बोला, "मैं अभी हौर्सशू धारा तक जाकर वापिस आता हूँ। देखूँ, शायद बिसोनेत वहाँ हो!"

मैंने उत्तर दिया, "मैं भी तुम्हारे साथ चलता, पर, मुझे अपनी बची-खुची ताकत को बचाकर रखना है।"

आखिर साँझ भी आई। मैं उस सारे समय अपनी राईफल और पिस्तौलों को साफ करने में और यात्रा की दूसरी तैयारियों में लगा रहा। बहुत देर बाद मैं सो पाया। शॉ अब तक भी नहीं लौटा था। पर इससे हमें कुछ बेचैनी न हुई, क्योंकि हमें लगा कि वह बिसोनेत से मिल गया होगा और रात भर उसके साथ ही रहेगा। पिछले एक-दो दिन से मेरी सेहत और ताकत कुछ ठीक हो गई थी। पर आधी रात के समय दर्द का फिर एक दौरा पड़ा और मैं कुछ घण्टों तक सो न सका। प्लाट् के इस मैदान पर चमकता हुआ चाँद काँपता-सा लग रहा था। बहुत दूर पर अस्पष्ट-सी आवाज़ों को छोड़कर और कुछ भी सुनाई न दे रहा था। ये अस्पष्ट आवाज़ें जैसे किसी काना-फूसी और घोड़ों की हल्की-हल्की टाप की हों। इन मैदानों में ऐसी आवाज़ें सुनाई देना मामूली बात है। अभी मैं फिर से सोने ही लगा था कि बहुत दूर से एक पहचानी-सी आवाज़ सुनाई दी। एक बहुत तेज़ चाल से कोई डेरे तक आया। यह शॉ ही था, जो नंगे पाँव अपने हाथ में बन्दूक लिए तेज़ी से डेरे में घुसा।

मैंने पूछा, "तुम्हारे घोड़े का क्या हुआ ?" मैं बहुत कठिनता से कोहनी का सहारा लेकर उठ पाया। शॉ ने उत्तर दिया, "गुम हो गया ! पर, देस्लारियर कहाँ है ?"

मैंने कुछ दूरी पर कम्बलों और खालों के ढेर की ओर इशारा करते हुए बताया, "वहाँ।"

शॉ ने वहाँ जाकर अपनी बन्दूक के कुन्दे से छेड़-खानी की। वफ़ादार कनाडा-निवासी उछल पड़ा। शॉ बोला, "उठो, देस्लारियर ! ज़रा आग तेज करो और मेरे खाने के लिए कोई चीज़ तैयार करो।"

मैंने पूछा, "बिसोनेत कहाँ है?"

"भगवान् जाने ! उस धारा पर तो कोई भी नहीं है।"

शॉ वहाँ तक गया था, जहाँ हमने आज से दो दिन पहले डेरा डाला था। वहाँ हमारी ही जलाई आग की राख के अलावा कुछ और न पाकर, उसने अपना घोड़ा एक पेड़ से बाँध दिया और खुद नदी में नहाने के लिए उतर गया। अचानक ही उसका घोड़ा किसी कारण चौंक गया और रस्सी तुड़ाकर भाग निकला। शॉ ने दो घण्टे तक उसका पीछा किया पर व्यर्थ। साँझ होने लगी। डेरा अभी बारह मील था। उसने अपनी कोशिश छोड़ दी और हमारी

ओर पैदल ही निकल पड़ा। उसे अपनी इस भयंकर पैदल यात्रा का अधिक हिस्सा अँधेरे में ही बिताना पड़ा। उसके जूते चिथड़े-चिथड़े हो गए थे और उसके पाँव बहुत अधिक घायल हो गए थे। वह खाना खाने के लिए बैठा। हमेशा की भाँति उसके चेहरे पर शान्ति मौजूद थी। नींद आने से पहले मैंने देखा वह आग के आगे चौकड़ी मारे बैठा तम्बाकू पी रहा था।

जब मैं जागा, हवा में फिर से एक सिलाब-सी अनुभव हो रही थी। मैदान पर कुछ धुंधलका-सा छाया था और पूर्व में कुछ लाल धारें फूटती दिखाई दे रही थीं। मैंने लोगों को पुकारा और कुछ ही देर में आग तेजी से जलने लगी। नाश्ता तैयार हो गया था। हम घास पर साथ-साथ ही बैठे। अगले बहुत दिनों के लिए सभ्य लोगों के साथ बैठकर खाना खाने का यह मौका अन्तिम ही था।

"अच्छा अब घोड़े ले आओ।"

मेरी ठिगनी घोड़ी पाली जल्दी ही आग के पास आ खड़ी हुई। वह बहुत ही मजबूत, कठोर, परन्तु सभ्य, जानवर थी। उसका नाम 'पाल दोरियों' के नाम के कारण रक्खा गया था। इसे मैंने उससे ही पौंटियक के बदले में पाया था। वह सवेरे की सैर के लिए सजी हुई न दीखती थी, बल्कि उस पर ऊँचे किनारों वाली पहाड़ी काठी रक्खी हुई थी। उसकी बगलों में लटकने वाली थैलियाँ भारी पिस्तौलों से भरी हुई थीं। उसके दोनों ओर दो बोरियाँ लटक रही थीं। एक कम्बल लपेट कर पीछे बाँधा हुआ था। साथ ही आदिवासियों के लिये भेंटें एक खाल में बाँध दी गई थीं। चमड़े के एक थैले में आटा और एक छोटी थैली में चाय भरी हुई थी। ये सब चीजें काठी के पीछे की ओर बाँधी गई थीं। उसकी गर्दन के सहारे एक खोजी रस्सी भी बँधी हुई थी। रेमंड के पास एक मजबूत काला खच्चर था, जो इसी प्रकार सजा और लदा हुआ था। हमने अपने बारूद के डिब्बे गले के साथ लटका लिये और घोड़ों पर चढ़ गए।

मैंने शॉ से कहा, "तुम्हें पहली अगस्त के दिन लारामी किले में मिलूँगा।"

उसने उत्तर दिया "अच्छा यही सही। हो सकता है कि हम उससे पहले मिल जाएँ। मेरा विचार है कि एक या दो दिन में मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे आ जाऊँगा।"

उसने ऐसा प्रयत्न भी किया। अगर उसके रास्ते में दिल तोड़ देने वाली बाधाएँ न आ जातीं, तो वह मुझसे मिल भी जाता। दो दिन बाद उसने देस्लारियर को गाड़ी और सामान के साथ किले की ओर लौटा दिया और खुद पहाड़ों की ओर हेनरी के साथ चल पड़ा। पर उसी समय एक बहुत जबर्दस्त आँधी और तूफान आ टूटा। इसके कारण हमारे ही नहीं आदि-वासियों तक के पाँव के निशान तक मिट गए। वे दोनों पहाड़ों की तलहटी में रुके पर अगला रास्ता न खोज पाए। सुबह होते ही शॉ ने अनुभव किया कि विष-भरे एक पौधे का उस पर असर हो गया है। इसके कारण उसके लिये अगली यात्रा करना असम्भव हो गया। अब वे किले की ओर बहुत अनमने ढंग से वापिस लौटे। वहाँ एक हफ्ते तक शॉ बहुत अधिक बीमार रहा और जब तक मैं लौटकर उससे न मिला, वह वहीं टिका रहा।

अपनी यात्रा पर निकलने के पहले मैंने और रेमंड ने अपने साथियों से हाथ मिलाए और विदा ली। हम मैदान पर, पहाड़ों की ऊँचाइयों और ढलानों पर, और छोटी-मोटी पहाड़ियों पर चढ़ते-उतरते आगे बढ़ निकले। सभी स्थान धूप के मारे बुरी तरह जल रहे थे। धूप से सूख कर मानों यह सारा इलाका बहुत-सी खड्डों और खाइयों में फट गया था। परन्तु, यह सब भी हमारे रास्ते में अधिक रुकावट न डाल सका। इनकी ढलानें एकदम नंगी और ऊबड़-खाबड़ थीं। तले पर जाकर हमें बहुत बार काले रीछों के निशान बहुत बड़ी संख्या में मिले। इतनी बड़ी संख्या में इस इलाके में ये कहीं और नहीं दिखाई देते थे। पहाड़ों की चोटियाँ चट्टानों के समान कठोर थीं और इन पर चकमक और लाल पत्थर बहुत ज्यादा पाए जाते थे। वहाँ से देखने पर रेगिस्तान चारों ओर एक समान फैला हुआ दीखता था। कहीं-कहीं किसी घाटी के किनारे चीड़ का एक-आध पेड़ अपनी शाखाएँ फैलाए नजर आ जाता था। इसकी राल की सुगन्ध हमें न्यू इंगलैंड के चीड़ों से भरे पहाड़ों की याद दिलाने लगी। मैं बहुत अधिक प्यासा था और चाहता था कि इन पहाड़ियों में भी हमें वैसे ही बहते हुए झरने मिल जाएँ, जो हमारे इलाके की हजारों पहाड़ियों में मिलते हैं। मैं कल्पनाओं में ही चट्टानों की छाया में बैठा हुआ अपने को धाराओं में नहाता और डुबकियाँ लेता अनुभव करता। परन्तु वे कल्पनाएँ वैसे दूर से दूर होती चली जाती थीं। मुझे चट्टानें काली पड़ती

दिखाई देने लगीं जैसे उन पर लगी काई से हल्की-हल्की बूँदें टपक रही हों।

दोपहर के समय एक छोटी-सी धारा दिखाई दी। इसके किनारे कुछ पेड़ और झाड़ियाँ खड़ी थीं। यहाँ हमने घण्टा भर आराम किया। यहाँ से सूर्य की दिशा में ही हम साँझ तक बढ़ते रहे। तब हम एक और धारा के किनारे पहुँचे। इसका नाम 'बिटर कॉटनवुड' धारा था। यहाँ झाड़ियों और पुराने पेड़ों का काफ़ी घना जंगल-सा था। थोड़ी-थोड़ी दूर पर इसी प्रकार के झुंड मिल जाते थे। एक पेड़ की जड़ में हमने अपनी काठियाँ टिकाईं और घोड़ों के पाँवों में रस्सी बाँध कर हमने उन्हें चरने के लिए छोड़ दिया। यह छोटी-सी धारा बहुत तेज़ और साफ़ थी। सफ़ेद रेत पर बहती हुई इस धारा की आवाज संगीत की भाँति उठ रही थी। छोटे जल-पक्षी उथले पानी में खेलते हुए अपनी आवाज और फ़ड़फड़ाहट से उस सारी हवा को ही गुंजा रहे थे। लारामी पर्वत के पीछे सुनहरे और लाल बादलों के बीच सूरज डूबने ही वाला था। मैं एक लट्ठे पर पानी के किनारे ही लेटा हुआ गहरे पानी में छोटी-छोटी मछलियों की अशान्त हलचल को देख रहा था। यह बात अजीब लगती है। पर मुझे ऐसा लगा कि जैसे सुबह से अब तक मैंने कुछ और ताकत पा ली है और मेरी सेहत लौटने लगी है।

हमने आग जलाई। रात आने पर भेड़ियों ने चिल्लाना शुरू किया। पहले एक गहरी आवाज उठी और तब उसके उत्तर आस-पास की पहाड़ियों, मैदानों और जंगलों से बड़े भद्दे रूप में दिया जाने लगा। इन मैदानों में ये आवाजें किसी की भी नींद खराब नहीं करतीं। हमने घोड़ी और खच्चर को पास ही बाँध लिया और सुबह होने तक सोते रहे। तब हमने उन्हें फिर चरने के लिए खोल दिया। उनके पाँव अब भी बँधे हुए थे। अभी हम नाश्ता खाने के लिए तैयार हुए ही थे कि रेमंड को कुछ दूरी पर एक हिरण दिखाई दे गया। वह उसके शिकार के लिए उत्सुक हो उठा।

मैंने कहा, तुम्हारा काम पशुओं की देखभाल करना है। मैं बहुत कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि मैं बहुत कमजोर हूँ। अगर पशुओं को कुछ हो गया तो तुम्हारी जिम्मेवारी होगी। तुम जहाँ भी जाओ, तुम्हारी निगाह डेरे पर ही रहनी चाहिए।

रेमंड ने डेरे के आस-पास ही रहने का वायदा किया और बन्दूक हाथ में

ले निकल पड़ा। घोड़ी और खच्चर ने धारा पार की और वहीं लम्बी घास के बीच दूसरे किनारे पर चलने लगे। उन्हें हरे रंग के सिर वाली मक्खियाँ बहुत सताने लगीं। मैंने उन्हें देखा कि वे एक और गहरे खड्ड में उतर गए और फिर बहुत देर तक न लौटे। मैं भी धारा के पास उन्हें देखने के लिए गया। किन्तु मेरी चिन्ता बढ़ गई। मैंने उन्हें बहुत दूरी पर पूरी तेज़ी के साथ दूसरी ओर भागते हुए पाया। पाली आगे-आगे दौड़ रही थी। उसके पाँवों की रस्सियाँ टूट चुकी थीं। खच्चर अपने बँधे पाँवों से भी भाग रहा था। मैंने गोली दाग़ी और रेमंड को आवाज़ दी। कुछ ही क्षण में वह नदी पार करके भागता हुआ आया। उसके गले में लाल रूमाल बँधा हुआ था। मैंने भागने वाले इन विद्रोही पशुओं की ओर इशारा किया और उनका पीछा करने को कहा। वह उन्हें मन-ही-मन गाली देता हुआ उनके पीछे पूरी तेज़ी से भागा। उसकी बन्दूक अब भी उसके हाथ में लटक रही थी। मैं एक पहाड़ी तक चढ़ गया और मैदान की ओर देखने लगा। मैं भागने वाले उन जानवरों को अब भी ठीक तरह देख रहा था। अपनी आग के पास लौटकर, मैं एक पेड़ की जड़ के पास बैठ गया। चिन्तित और कमज़ोर हालत में ही मैंने कई घंटे गुज़ार दिए। मेरे पास के वृक्ष की उतरी हुई छाल हवा के साथ ही आगे-पीछे उड़ रही थी और चारों ओर हल्की-हल्की आवाज में मच्छर भिन-भिना रहे थे। परन्तु इन दोनों के अलावा कोई और चीज़ दिखाई या सुनाई न दे रही थी। सूरज ऊपर-से-ऊपर उठता गया। मुझे तब ध्यान आया कि दोपहर हो चुकी है। अब यह सम्भव नहीं दीखता था कि पशु फिर से पाए जा सकेंगे। और, अगर वे न पाए गए तो मेरी हालत और भी बिगड़ जाएगी। जिस दिन मैं विदा हुआ था, शॉ ने उसी सवेरे चले जाने का फ़ैसला किया था। पर पता नहीं उसने किधर जाने का फ़ैसला किया होगा? उसकी खोज-बीन करने का प्रयत्न व्यर्थ ही होगा। लारामी का किला यहाँ से चालीस मील दूर था। मेरे लिए जैसे-तैसे एक मील चल पाना भी बहुत काफ़ी था। इसलिए यह सोच कर कि 'कठिन-से-कठिन आपत्ति और बाधा के सामने भी नहीं झुकना चाहिए', मैंने यह निश्चय किया कि आदिवासियों के पीछे चलना ही अधिक उचित है। मेरे दिमाग़ में एक ही बात आई कि रेमंड को भेज कर किले से कुछ और घोड़े मँगवा लिए जाएँ और तब तक उसी जगह रहकर उसके

लौटने की इन्तजार करूँ। शायद इस सब में तीन दिन लग जाएँगे। पर, इन तीन दिनों तक अकेले एक जगह पर टिके रहना कतई उचित न होता, क्योंकि यह इलाका आदिवासियों का सबसे खतरनाक इलाका था। इस तरह आदिवासियों के पीछे चलने का मेरा उद्देश्य इस बात से कितना पीछे पड़ जाता और उसके क्या परिणाम होते, यह कहना भी कठिन है। इन बातों का विचार करते हुए मुझे भूख लगने लगी। हमारे पास भोजन की सामग्री के नाम पर कुल दो-ढाई सेर आटा ही बच गया था। इसलिए मैं किसी शिकार की खोज में बाहर निकला। चार या पाँच कर्ल्यू पक्षियों को छोड़कर कुछ और न दिखाई दिया। वे मेरे सिर पर मँडराते और कभी मैदान में उतर आते। मैंने उनमें से दो पक्षी मार गिराए और लौटने की तैयरी करने लगा। तभी अचानक चौंका देने वाल कोई चीज मेरी निगाह में आई। आदमी के सिर की तरह की कोई काली-सी चीज अचानक ही सामने आकर, धारा के किनारे की झाड़ियों में, फिर से छिप गई। ऐसे इलाके में हर अजनबी शत्रु ही लगता है। मैंने उधर ही गोली दाग़ दी। एक ही क्षण में झाड़ियों में बहुत तेज हलचल हुई। दो सिर सामने दिखाई दिए। पर, ये मनुष्य के सिर नहीं थे। मैंने पहचान कर देखा कि दोनों हमारे अपने ही जानवर घोड़ी और खच्चर थे, जो लौटकर आ रहे थे। रेमंड खच्चर पर सवार था। वह बहुत ही मुर्झा गया था और उसकी छाती में बहुत तेज दर्द उठने लगी थी। मैंने पशुओं को सँभाल लिया और वह घुटने के बल झुककर धारा में से पानी पीने लगा। वह दस मील दूरी पर स्थित लारामी धारा तक पशुओं पर निगाह रखता हुआ आगे बढ़ा और वहाँ पहुँच कर बहुत कठिनता से उन्हें पकड़ने में सफल हुआ। मैंने देखा कि उसके हाथ खाली थे। मैंने उससे पूछा कि उसने बन्दूक को क्या किया? उसने बताया कि पीछा करते हुए यह उसे कष्ट देने लगी थी। इसलिए उसने इसे मैदान पर ही रख दिया और सोचा कि लौटते हुए इसे खोज लेगा। पर, लौटते समय वह उसे न खोज पाया। यह हानि बहुत बुरी साबित होती। मुझे इस बात की खुशी थी कि पशु मिल गए थे और रेमंड की स्वामिभक्ति की भी प्रसन्नता थी। वह चाहता तो खुद भी पशुओं के साथ भाग जाता। मैंने उसके लिए थोड़ी चाय तैयार की और बताया कि फिर दुबारा निकल चलने से पहले वह दो घंटे तक आराम कर सकता

है। उस दिन मैंने भी कुछ नहीं खाया था पर तो भी मुझे भूख न थी। वह एक दम ही लेट गया। मैंने पशुओं को सबसे अच्छी घास की जगह पर बाँध दिया और हरी लकड़ियों की आग उनके पास जला दी, ताकि उसके धुँए से मच्छर और मक्खियाँ उनसे दूर रहें। तब पेड़ की जड़ में फिर से बैठकर सूरज की हल्की चाल की ओर देखने लगा और हर क्षण की उतावली से प्रतीक्षा करने लगा।

अब मेरा बताया हुआ समय बीत गया, तब मैंने रेमंड को जगाया। हमने काठियाँ कसीं और फिर से निकल पड़े। पहले हम बन्दूक की खोज में चले। हमारा यह सौभाग्य था कि एक घण्टे में ही हमने उसे पा लिया। तब हम पश्चिम की ओर मुड़े और पहाड़ियों और खड्डों को एक धीमी चाल से पार करते हुए ब्लैक हिल्स की ओर चल पड़े। गर्मी अब सताने वाली न रही थी, क्योंकि सूर्य को कुछ बादलों ने ढक लिया था। हवा भी कुछ ताज़ी और ठण्डी हो गई थी। सामने कुछ दूर की पहाड़ियों में बादल घने रूप में जमा थे और बिजली कड़कने की हल्की-हल्की आवाज़ आ रही थी। शुरू में पहाड़ियों की कुछ चोटियाँ सफ़ेद-सी दिखाई दीं, पर तभी बादलों के घिर आने से एक दम अन्धकार छा गया। हमारे चारों ओर का रेगिस्तान भी जल्दी ही अँधेरे से ढक गया। बिजली बहुत हल्के-हल्के गरज रही थी और छाया पहाड़ों और मैदानों पर धीरे-धीरे बढ़ रही थी। उसी समय आँधी फूट पड़ी और बिजली भी बहुत तेज़ी से कड़की। सारे मैदान पर उठता हुआ एक बवंडर बहुत तेज़ी से घूमने लगा और चारों ओर पानी इतनी तेज़ी से बहने लगा जैसे बाढ़ आ रही हो। आस-पास कहीं भी कोई भी बचने की जगह न थी। बहुत देर बाद हमें समतल मैदान में एक गहरी खाई-सी घिरी हुई दिखाई दी। रेमंड ने अपने चारों ओर देखा और सारे वातावरण को गालियाँ दीं। तभी हमें उस खाई में एक पुराना चीड़ का पेड़ दिखाई दिया। इसकी फैली हुई शाखाएँ आँधी और तूफान में हमारे लिए शरण का काम दे सकती थीं। हमें वहाँ तक जाने का एक रास्ता भी मिल गया। अपने पशुओं को पास के पत्थरों से बाँधकर हमने ऊपर चढ़कर कुछ कम्बल अपने सिर पर ओढ़ लिए और पेड़ के नीचे बैठ गए। मुझे उस समय समय का पूरा ध्यान तो नहीं रहा, पर तो भी मेरा अनुमान है कि हम घण्टा भर बैठे रहे होंगे। उस समय हमारे चारों ओर

असल नाम कुछ और ही था, जिसे किसी अंधविश्वास के कारण छिपाया गया था। यह बहुत ही अच्छा साथी था। जब इसकी ओढ़ी हुई खाल कंधों से खिसक कर नीचे तक गिर जाती, तब इसकी आकृति और भी अच्छी और सुन्दर लगने लगती। जब वह अपने घोड़े पर आराम से बैठा होता, तब मुर्गे के पंख, उसके मुकुट से ऐसे फरफराते हुए उड़ते कि वह एक आदर्श मैदानी घुड़सवार दिखाई देने लगता। उसका शरीर दूसरे आदिवासियों से पूरी तरह मेल नहीं खाता था। उसके चेहरे से ईर्ष्या, सन्देह, धूर्तता आदि बातें नहीं झलकती थीं। अधिकांशतः कोई भी गोरा आदमी उसमें और दूसरे आदिवासियों में समानता की बातें शायद ही खोज पाएगा। पूरा न्याय करने के लिए यह ध्यान रखना उचित होगा कि इस युवक में और इसके दूसरे लाल रंग वाले भाइयों में एक बड़ी खाई इनके चरित्र को अलग करती है। यहाँ पर रहकर कुछ ही दिन में इन मैदानी आदिवासियों को कोई भी गोरा आदमी एक जंगली जानवर ही अनुभव करेगा। परन्तु इस युवक को देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई, क्योंकि मुझे उसमें और अपने में समानता की कुछ बातें अवश्य मिल गईं। हम दोनों बहुत अच्छे मित्र थे। ज्यों-ज्यों हम इन चट्टानी रास्तों, गहरे खड्डों और उजाड़ मैदानों से होकर आगे बढ़ने लगे, वह मुझे डाकोटा जाति की अपनी भाषा पढ़ाने में गर्व अनुभव करने लगा। कुछ देर बाद हम एक ऐसे खुले घास भरे मैदान में आ निकले, जहाँ जंगली फलों की कुछ झाड़ियाँ चट्टानों के नीचे से उग रही थीं। इनका आकर्षण मेरे साथी के लिए इतना अधिक लुभावना रहा कि वह मुझे पढ़ाना छोड़कर फल इकट्ठे करने के लिए निकल गया। अब जब हम आगे बढ़े तो गाँव की गाड़ियाँ भी हमारी निगाह में आने लगीं। सामने एक बूढ़ी स्त्री अपने लादू घोड़े को बढ़ाती हुई चट्टानों से आती दिखाई दी। तब एक-एक करके आदिवासी आने लगे और थोड़ी ही देर में वह छोटी-सी घाटी भीड़ से भर गई।

उस दिन की सुबह की यात्रा को आसानी से भुलाया नहीं जा सकता। उस दिन हम एक ऐसी जगह से होकर गुजरे, जहाँ सुन्दरता फैली थी, पहाड़ों का पूरा रूप निखरा हुआ था, चीड़ों के जंगल थे, और इस सबसे बढ़कर, वहाँ एकान्त और शान्ति बरसती हुई दिखाई देती थी। ऊपर-नीचे चारों ओर हरियाली ही हरियाली नजर आती थी। घाटियों, पहाड़ों, काली

चट्टानों, चोटियों तथा नीचे बहने वाली धाराओं तक यह हरियाली ही छाई हुई थी। मैं पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर देखने लगा, मेरे ही नीचे से होकर गाँव के लोग गुज़र रहे थे। यह जलूस बहुत दूर तक फैला हुआ था। बहुत दूर की एक चोटी से अब भी घुड़सवार उतरकर आ रहे थे। दूर से वे रेखाओं के रूप में ही दिखाई देते थे।

मैं तब तक इस चोटी पर खड़ा रहा, जब तक सब लोग गुज़र न गए। तब उतर कर मैं उनके पीछे चलने लगा। कुछ और दूर चलकर मुझे पहाड़ियों से घिरी हुई एक छोटी-सी चरागाह मिली। गाँव ने उस दिन यहीं डेरा डाला। इस छोटी-सी जगह में सब लोग बड़े बेतरतीबे और घबराए हुए ढंग से जमा हो गए। कुछ घर खड़े हो चुके थे और कुछ तैयारी में थे। बहुतों के घर का सामान अभी भी जमीन पर ही पड़ा हुआ था और वे उसे ठीक से सजा न पाए थे। औरतें एक दूसरे को पुकार रही थीं। घोड़े हिनहिना रहे थे और उछल-कूद रहे थे। कुत्ते भौंक रहे थे। उन्हें अपना बोझ उतरवाने की जल्दी थी। दूसरी ओर, पंखों की फरफराहट और आदिवासियों के आभूषणों की आवाज़ इस दृश्य को और भी आकर्षक बना रही थी। छोटे-छोटे बच्चे इस भीड़ में दौड़ते फिर रहे थे। बहुत से बड़े लड़के पास की चट्टानों पर अपने छोटे-छोटे धनुष बाण लेकर कूद रहे थे या फिर गाँव की ओर देखते हुए खड़े थे। इस सब गड़बड़झाले के मुकाबले में, दूसरी ओर कुछ बूढ़े आदमी और योद्धा एक दायरा बनाकर बैठे थे और बहुत अधिक शान्ति के साथ तम्बाकू पी रहे थे। काफ़ी देर बाद वह गड़बड़ समाप्त हुई। घोड़े पास की ही घाटी में चरने के लिए ले जाए गए और सारा डेरा फिर से एक शान्त आरामगाह लगने लगा। अभी दोपहर बीती ही थी कि पास के जंगल से, पूर्व की ओर उठता हुआ, सफेद धुएँ का एक बड़ा-सा समूह दिखाई दिया। इससे सूर्य की किरणें कुछ छिप जरूर गई, परन्तु अब भी धूप सही न जा सकती थी। सारे मकान बिना किसी क्रम के, थोड़ी-सी जगह में ही, खड़े थे। हर एक का घर तप रहा था और बीचों-बीच उस घर का स्वामी सुस्ताने के लिए सो रहा था। डेरे में मौत का-सा सन्नाटा छाया हुआ था। केवल कभी-कभी किसी बूढ़ी औरत के एक घर से दूसरे घर में जाने की आवाज आ जाती थी। लड़कियाँ और युवक समूह बनाकर चीड़ के पेड़ों के

नीचे आसपास के टीलों पर जाकर बैठ गए थे। कुत्ते ज़मीन पर ही लेटकर आराम कर रहे थे। मुझ जैसे गोरे को देखकर भी वे भौंक न पाए। इस चरागाह के बाहर ही चट्टानों के बीच से एक ठंडा सोता बह रहा था। इसके किनारे घने पेड़ और घास उगे हुए थे। इस ठंडी और शान्त जगह पर बहुत-सी लड़कियाँ इकट्ठी होकर चट्टानों और गिरे हुए पेड़ों पर बैठी गप्पें और हँसी-मज़ाक कर रही थीं। अचानक मैं उधर से निकला। उन्होंने मुझ पर पानी उछालना शुरू कर दिया। कुछ मिनट घण्टों के रूप में बदलने लगे। मैं वहीं एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ ओजिल्लाला लोगों की भाषा को, अपने साथी 'चीते' की सहायता से सीखने लगा। जब हम दोनों ही इस बात से थक गए, तब मैं एक गहरे और साफ़ जोहड़ के किनारे जाकर लेट गया। यह जोहड़ इसी सोते से बना था। छोटी मछलियों का एक समूह इसमें मचल रहा था। लगता था वे आपस में बहुत मित्रता से खेल रही थीं। पर बहुत झुककर देखने पर मालूम पड़ा कि वे एक दूसरे को खाने में लगी हुई थीं। जब-तब उनमें से सबसे छोटी किसी दूसरे का शिकार बन जाती और शिकारी मछली उसे निगल जाती। हर बार एक बड़ी सी मछली किनारे पर आ जाती और फिर बीच में जाकर कुछ एक का शिकार कर आती। इसके आते ही सारी मछलियाँ इधर से उधर डर कर बिखर जातीं। इस मछली को देखकर बाकी सारी छोटी-छोटी मछलियाँ छिप गईं।

मैं सोचने लगा, "इस घटना को देखकर मानवता-प्रेमी और दयालु लोग बहुत देर तक अपने युग की शांति के लिए आहें भरने लगेंगे। सच यह है कि इन छोटी-छोटी मछलियों से लेकर मनुष्यों तक सभी प्राणी अपनी-अपनी जिन्दगी की लड़ाई में उलझे हुए हैं।"

आखिर साँझ आई। पहाड़ की चोटियों पर अब भी धूप पड़ रही थी, हालाँकि हमारी घाटी पूरी तरह अँधेरे की जकड़ में आ चुकी थी। डेरा छोड़कर मैं पास की एक पहाड़ी पर गया। चीड़ों में से होती हुई सूर्य की किरणें अब भी पश्चिम की एक पहाड़ी पर पड़ रही थीं। थोड़ी देर में सूर्य छिप गया और यह दृश्य भी अँधेरे में समा गया। अब मैं फिर से गाँव की ओर लौटा। उतरते हुए मैंने अँधेरे जंगलों में से, पास और दूर से, आती हुई भेड़ियों और लोमड़ियों की आवाजें सुनीं। गाँव में चारों ओर अनेकों

जगह आग जल रही थी और अनेकों नंगी आकृतियाँ चमक रही थीं। आस-पास पड़ने वाली उनकी लम्बी छाया देखकर लगता था, जैसे कुछ भूत घूम रहे हों।

एक जगह मैंने कुछ युवकों को इकट्ठे बैठकर तम्बाकू पीते देखा। ये लोग समाज में प्रिय समझे जाने वाले एक योद्धा के घर के आगे जमा थे। मैं भी अपने मित्रों के साथ विदाई के समय की चिलम पीने के लिए बैठ गया। आज का दिन पहली अगस्त का था। इसी दिन मैंने लारामी किले में शॉ से मिलने का वायदा किया था। किला यहाँ से कम-से-कम दो दिन की यात्रा की दूरी पर था। यह सोचकर कि मेरा मित्र कहीं मेरे लिए परेशान न हो उठे, मैंने पूरी तेज़ी के साथ आगे बढ़ने का निश्चय किया। मैंने 'तूफ़ान' नाम के युवक को खोजा और उसे कुछ भेंटें दीं। शर्त यह थी कि सुबह होते ही इन पर्वतों से होकर वह मुझे किले का रास्ता दिखाता चलेगा। वह मेरी बात को सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मेरी भेंटें स्वीकार कर लीं। हम दोनों कुछ अधिक न बोले। बात तय होने पर मैं अपने पुराने डेरे में आकर सो गया।

सुबह पौ फटने से बहुत पहले ही रेमंड ने मुझे कंधा पकड़कर हिलाया और बताया कि तैयारी पूरी हो चुकी है। मैं बाहर निकला। वह सुबह बहुत ठण्डी, सीली और अँधेरी थी। सारा गाँव नींद में डूबा हुआ था। हमारे घर के सामने ही 'तूफ़ान' घोड़े पर बैठा था और उसके पास ही मेरी घोड़ी और रेमंड का खच्चर भी खड़े हुए थे। हमने काठियाँ कसीं और अपने सफ़र की और तैयारियाँ पूरी कीं। अभी ये तैयारियाँ पूरी भी न हुई थीं कि गाँव में हलचल शुरू हो गई। औरतों ने अपने डेरे उखाड़ने शुरू कर दिए और चलने की तैयारी करने लगीं। प्रकाश की पहली किरणों के साथ ही हम वहाँ से विदा हुए और तब एक छोटे से दर्रे में से निकलते हुए पूर्व की ओर बढ़े। यहाँ राह पाकर हम पीछे की ओर गाँव को देखने लगे। इस धुँधलके में वह बहुत हल्का-हल्का दिखाई दे रहा था। वहाँ सभी लोग तैयारी में जुटे हुए थे। बहुत आनन्द से मैं, इन सबसे विदाई लेते हुए, अगली राह पर मुड़ा। अब हम चट्टानों और चीड़ के पेड़ों में से होते हुए बढ़ने लगे। रास्ता अँधेरा था और हम पूरी तरह देख नहीं पा रहे थे। सामने का इलाका टूटा-फूटा और जंगल से भरा था। कहीं पहाड़ी, कहीं मैदान, कहीं खुला हुआ और कहीं घिरा

हुआ—इस प्रकार के रास्ते से हम बढ़ते रहे। रास्ते में कभी-कभी ऊँचे पहाड़ बाधा बनकर आ जाते। सुबह जंगल बहुत ही ठण्डे और ताजगी देने वाले लग रहे थे। पहाड़ धुँध से भरे हुए थे और उनके पास के पेड़ों में हल्की-हल्की फुहारें छाई हुई थीं। बहुत देर बाद हमें पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी पर सूर्य की सुनहरी किरणें फैलती हुई दिखाई दीं। उन्हें देखकर आगे बढ़ते हुए 'तूफ़ान' ने खुशी प्रगट की। इसी समय कोई एक बड़ा सा जानवर सामने से उछला और एक बारहसिंगा अपने बड़े-बड़े काले सींगों के साथ हमारे सामने से तेजी से निकल कर पास के चीड़ों में छिप गया। रेमंड अपनी काठी से उतर कर उसके पीछे दौड़ा, पर उसके गोली दागने से पहले ही शिकार दो-सौ गज़ से अधिक दूर जा चुका था। फिर भी उसका निशाना ठीक जगह पर लगा, हालाँकि उसमें जोर उतना नहीं रहा था। अब बारहसिंगा दाईं ओर मुड़कर पूरी तेज़ी के साथ सामने के पेड़ों में से भागने लगा। मैंने भी गोली दागी, जो उसके कँधे पर लगी। अब भी वह लंगड़ाता हुआ पास के खड्ड में भाग गया। यहाँ हमारे आदिवासी मित्र ने उसका पीछा करके उसे मार डाला। पास जाकर हमने देखा कि वह बारहसिंगा न होकर काली पूँछवाला हिरण था। ऐसा हिरण दूसरे हिरणों की बजाय दुगना बड़ा होता है। पूर्व के इलाकों में यह देखने में नहीं आता। हमारी बन्दूकों की आवाजें आदि-वासियों तक भी पहुँच गईं। उनमें से बहुत से उसी जगह पर आ पहुँचे। हमने वह खाल 'तूफ़ान' को ही दे दी और अपनी जरूरत के लायक मांस अपनी काठियों के पीछे लाद लिया। बाकी बचा-खुचा मांस अपने आदिवासी साथियों के लिए छोड़कर हम अपने सफ़र पर आगे बढ़ गए। इस बीच बाकी गाँव वाले अपनी चाल से बढ़ते हुए बहुत दूर निकल गए थे। उन्हें पार करके आगे निकलना असम्भव था। इस लिए हमने ऐसा रास्ता चुना, जिससे हम उनके बिल्कुल नज़दीक तक पहुँच सकें। थोड़ी ही देर में हमें चीड़ों में से दिखाई दिया कि वे सामने से ही गुज़र रहे थे। एक बार फिर हम उनसे जा मिले। अब वे एक तंग दर्रे में से होकर गुज़र रहे थे। इस बार वे सदा की अपेक्षा अधिक सट कर और इकट्ठे होकर बढ़ रहे थे। हम पहाड़ की पूर्वी ढलान पर थे। यहाँ हमें एक बहुत तंग घाटी मिली, जिसकी ढलान बहुत कठिन थी। सभी लोग इसमें एक साथ ही उतर पड़े और चट्टानों भरे इस

रास्ते को उन्होंने ऐसे घेर लिया, जैसे कोई उमड़ती हुई पहाड़ी नदी बह रही हो। हमारे सामने के पहाड़ों पर आग लगी हुई थी, जो कि पिछले कई हफ्तों से इसी प्रकार जल रही थी। छाए हुए धुएँ के कारण सामने का नज़ारा दीख नहीं रहा था। दाँए-बाँए ऊँची-ऊँची चोटियाँ उठी हुई थीं। उनपर चीड़ों के पेड़ लगे हुए थे। कुछ टूटी चोटियाँ भी कुछ दूरी पर, सामने, दिखाई दे रही थीं, जैसे वे किसी परदे से ढकी हुई हों। यह सारा नज़ारा बहुत ही सुन्दर और महान् दिखाई दे रहा था। चलने वाले इन असंख्य असभ्य घुड़सवार योद्धाओं, नंगे बच्चों और सजी-धजी लड़कियों के कारण यह और भी सुहावना बन गया था। किसी चित्रकार के लिए यह बहुत ही अच्छा विषय बन जाता और शायद इसका वर्णन करने में कोई बड़ा लेखक ही सफल हो पाता।

अब यहाँ से हमें एक जले हुए हिस्से पर से गुज़रना पड़ा। घोड़ों के खुरों के नीचे की धरती गरम थी। पास के दोनों ओर के पहाड़ जल रहे थे। बहुत शीघ्र हम इससे अधिक अच्छी जगह में आ गए। यहाँ लगातार कई घाटियाँ, एक नदी के किनारे पर ही, मिलीं। इनके किनारे बहुत अच्छी और मधुर फलों की झाड़ियाँ उगी हुई थीं। बच्चे और आदमी इन फलों को इकट्ठा करने के लिए टूट पड़े। इससे भी नीचे जाकर ऊपर का नज़ारा बिल्कुल बदला नज़र आया। जलते हुए पहाड़ पीछे छूट गए थे और सामने की खुली घाटियों में से हमें मैदान एक समुद्र की भाँति फैला हुआ दिखाई देने लगा। धारा के किनारे के पेड़ों से निकलने के बाद समतल मैदानों में आदिवासी फिर से कतार बाँधकर चलने लगे। मैं प्यासा था, इसलिए मैंने झुककर धारा में से पानी पिया। जब मैं फिर घोड़े पर चढ़ा, तब भूल से मैं अपनी बन्दूक वहीं घास पर ही छोड़ आया। कुछ और ही विचारों में डूबा हुआ रहने के कारण मैं उसे उठाना भूल गया। कुछ दूर निकल जाने के बाद मुझे इसका ध्यान आया। मैं तुरन्त ही इसकी खोज में लौटा। आदिवासियों में उनमें से एक के पास उसे देख भी लिया। पास जाकर माँगते ही इसने मुझे तुरन्त दे दी। उसका धन्यवाद करने के लिए मेरे पास कुछ और न था, इसलिए उस समय अपनी घोड़ी की काठी की रकाब ही मैंने उसे भेंट में दे दी। वह बहुत ही खुश हुआ। प्रसन्नता में उसने अपना पाँव मेरी ओर बढ़ा दिया, ताकि मैं इसे

उसके पाँव में फँसा दूँ। मैंने ज्यों ही यह उसके पाँव में बाँधी, उसने तुरन्त घोड़े को एड़ लगाई जिससे घोड़ा उछला। वह हँसने लगा और पहले से भी अधिक तेज़ी से एड़ लगाने लगा। इस पर घोड़ा तीर की भाँति भाग निकला और औरतों और मनुष्यों की हँसी और खुशी की आवाज़ों के बीच बढ़ गया। लोगों ने मेरी भेंट की बहुत तारीफ़ की। उस आदिवासी के पास काठी के नाम पर केवल एक खाल और लगाम के नाम पर चमड़े की एक रस्सी ही थी। उसका घोड़ा काबू में न रहकर पूरी तेज़ी से भाग निकला और थोड़ी ही देर में वह सामने के टीले के पीछे जा छिपा। मैं उस आदमी को फिर कभी न देख पाया। पर, मेरा विश्वास है कि उसे किसी प्रकार का कोई नुकसान न हुआ होगा। घोड़े पर चढ़कर आदिवासी अपने को अधिक सुरक्षित समझता है।

गाँव वालों ने उस दिन पहाड़ी तलहटी के पास के झुलसते मैदानों में ही डेरा डाला। इस समय गरमी बहुत तेज़ और चुभने वाली थी। मकानों के परदों को ज़मीन से एक या डेढ़ फुट ऊँचा उठाकर खड़ा किया गया ताकि उनके नीचे से हवा आ-जा सके। रेनल ने अपनी पशु-फँसाने वालों जैसी हिरण की खाल की पोशाक उतार कर आदिवासियों की-सी पोशाक पहन ली। इस प्रकार सज-धज कर वह अपने मकान में भैंसे की खाल के गलीचे पर लेट गया। कभी वह गर्मी को कोसता और कभी चिलम का कश खींचता। हम दोनों को छोड़कर कुछ और भी आदिवासी मित्र और सम्बन्धी बैठे थे। एक छोटा-सा कुत्ता पकाकर परोसा जा रहा था। यह हमारी विदाई का भोज था। मीठी चीज़ के रूप में पहाड़ों से इकट्ठी की गई बेरियाँ भी इसके साथ साथ ही रख दी गई थीं। रेनल ने अपने दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा: "उधर यहाँ से लगभग पन्द्रह मील दूर उन चोटियों को देखो! इन में से सबसे परे की सफ़ेद चोटी को देखो! क्या तुमने इसे पहले भी देखा है?"

मैंने उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि आज से छः या सात हफ़्ते पहले हमने इसी पहाड़ी के नीचे, लारामी धारा के किनारे, डेरा डाला था।"

रेनल ने कहा, "हाँ, तुमने बिल्कुल ठीक पहचान लिया।"

मैंने रेमंड से कहा, "जाओ, पशु ले आओ। हम आज रात वहीं डेरा डालेंगे और सुबह होते ही किले की ओर चल देंगे।"

जल्दी ही घोड़ी और खच्चर मकान के सामने आ गए। हमने काठियाँ कस लीं। इसी समय अनेकों आदिवासी भी वहाँ जमा हो गए। मेरी घोड़ी के गुणों की तारीफ़ सब जान चुके थे। कुछ आदिवासी बहुत अच्छे घोड़ों पर चढ़कर आए। उन्हें वे मुझे भेंट में देने के लिए लाए थे। मैंने उनकी भेंट लेने से इन्कार कर दिया। उनकी भेंट लेने का अर्थ होता, इस घोड़ी को उन जंगली लोगों के हाथ में देना। हमने रेनल से विदाई ली, पर आदिवासियों से नहीं। आदिवासी लोग इन मौकों पर बहुत-से उलटे-सीधे रिवाज पूरे करने लगते हैं। डेरा छोड़कर हम मैदान पार करते हुए सीधा उस सफेद चोटी की ओर बढ़े। उस पर्वत की पीली-सी चोटियाँ धीरे-धीरे बादल की तरह उठने लगीं। हमारे साथ ही एक आदिवासी भी था जिसका नाम मैं भूल गया हूँ। उसके चेहरे का भद्दापन और मुँह का चौड़ापन अब भी मुझे पूरी तरह याद है। रास्ते में हिरण बहुत अधिक थे, परन्तु हमने उनकी ओर ध्यान न दिया। हम सीधा ही अपने लक्ष्य की ओर, उजाड़ मैदानों और ऊसर पहाड़ियों में से होते हुए बढ़ते रहे। दोपहर बहुत बीत जाने के बाद, गरमी, प्यास और थकान से परेशान होकर, हमने एक बहुत आनन्ददायक नज़ारा देखा। हमें वे पेड़ और वे गहरी खाई दिखाई दे गई, जो लारामी धारा के साथ-साथ चल रही थी। इन पुराने और फैले हुए पेड़ों के बीच में से होते हुए हम धारा के पार पहुँच गए। धारा का तेज बहता हुआ पानी उथली जगहों पर खेलती और फड़फड़ाती मछलियों से भरा हुआ था। दूसरे किनारे पर पहुँच कर हमारे घोड़े पानी पीने को उत्सुक हो उठे। हम भी घुटनों के बल बैठकर पानी पीने आये। हम बहुत दूर न गए थे कि रास्ता परिचित लगने लगा। मैंने रेमंड से कहा, "हम उद्देश्य के नज़दीक ही पहुँच रहे हैं।"

वहाँ पर वह बड़ा पेड़ दिखाई दिया, जिसके नीचे हमने बहुत दिन डेरा डाला था। वे छोटी-छोटी सफेद चोटियाँ भी यहाँ थीं, जो कि हमारे डेरे के बिल्कुल ऊपर ही थीं। हमने वह छोटी-सी चरागाह भी देखी, जिसमें हमारे घोड़े हफ्तों तक चरते रहे। थोड़ी दूर आगे चलकर हमने मैदानी कुत्तों का यह गाँव भी देखा, जहाँ मैं घण्टों सुस्ताता हुआ उन अभागों का शिकार करता रहता था।

रेमंड ने आकाश की ओर अपना चौड़ा चेहरा उठाते हुए कहा, "अब

वर्षा और आँधी आने ही वाली है।''

सचमुच ही चोटियाँ, मैदान, धारा और अमराइयाँ—सभी—बड़ी तेजी से अँधेरे की लपेट में आने लगीं। काले-काले बादलों के समूह दक्षिण से उठकर छाने लगे और भयंकर रूप में बिजली कड़कने लगी। मैंने धारा से नीचे की ओर एक घनी अमराई की ओर इशारा करते हुए रेमंड को कहा, ''हम आज रात वहाँ होंगे। तब हम दोनों उधर ही गये पर पीछे से आदिवासी ने हमें एकदम बुला लिया। जब हमने उससे इस बुलाने का कारण पूछा, तो उसने बताया कि दो योद्धाओं के भूत उन्हीं पेड़ों पर रहते हैं और अगर हम वहाँ सोए तो वे चीख-चिल्लाकर रात भर हम पर पत्थर फेंकेंगे। शायद सुबह होने से पहले ही वे हमारे घोड़ों को भी चुरा ले जायेंगे। उसे प्रसन्न करने की बात सोचकर, इस जगह को छोड़कर हम 'चुगवाटर' की ओर बढ़ गए। इसके लिए हमें चाल तेज़ करनी पड़ी, क्योंकि वर्षा की बड़-बड़ी बूँदें गिरने लगी थीं। हमें उस छोटी-सी धारा के मुहाने पर उगने वाला वही पुराना परिचित पेड़ दिखाई दिया। हम जमीन पर कूद पड़े और अपनी काठियाँ पटककर हमने अपने घोड़ों को खुला छोड़ दिया। अब अपना चाकू निकालकर हमने आसपास की झाड़ियों से टहनियाँ और शाखें काटीं, ताकि वर्षा से अपना बचाव कर सकें। हमने बड़े ऊँचे और पतले वृक्षों को झुकाकर उनकी छोटी-छोटी टहनियाँ काट लीं और अपने लिए आराम देने वाला एक हल्का-सा शरण-घर बना लिया। परन्तु, हमारी यह मेहनत बेकार रही, क्योंकि आँधी हम तक पूरी तरह पहुँची ही नहीं। हमसे आधा मील दूर पर बहुत तेज़ मूसलाधार वर्षा हो रही थी और बिजली तोपों के समान गरज रही थी। परन्तु सौभाग्य से हमारी ओर केवल कुछ बूँदें ही गिर कर रह गईं। थोड़ी देर में मौसम साफ़ हो गया और सूर्य फिर से चमकने लगा। अपने इस नये शरण-घर के नीचे लेटे हुए हम उस भोजन के बारे में चर्चा करने लगे, जो मुझे एक खूबसूरत स्त्री—'वेया वेस्थीं'—ने दिया था। आदिवासी अपने साथ चिलम भी लाया था, और कुछ शोंगसाशा भी उसके पास था। इसलिए लेटने से पहले कुछ देर साथ बैठकर हमने तम्बाकू पिया। इससे पहले हमारा वह आदिवासी मित्र पास-पड़ोस को ध्यानपूर्वक देख आया था कि कहीं कोई गड़बड़ न हो। उसने बताया कि वहाँ पर कुछ देर पहले ही आठ आदमी रुके

थे, इनमें बिसोनेत, पाल, रूज़, रिचर्ड्सन और दूसरे चार आदमी थे। इन बाकी चारों के नाम वह नहीं बता पाया। बाद में यह बात बिल्कुल सही निकली। परन्तु उसने किस बुद्धि से यह सब इतना अधिक सही बताया, मैं आज तक भी पूरी तरह नहीं जान सका।

चारों ओर एकदम घना अँधेरा छाया हुआ था। जागकर मैंने रेमंड को पुकारा। आदिवासी हमसे पहले ही किले की ओर निकल गया था। उसके पीछे-पीछे चलते हुए हम भी कुछ देर तक अँधेरे में ही बढ़ते रहे। जब आकाश पूरी तरह लाल-लाल उगते हुए सूर्य के प्रकाश से भर गया, तब तक हम किले से दस मील दूर ही रह गए थे। कुछ दूरी पर चलकर एक रेतीले टीले की चोटी से हम किले को एक काले धब्बे के रूप में देखने में सफल हो गए। यह धारा के किनारे ही चारों ओर के उजाड़ मैदान के बीच में खड़ा हुआ था। मैंने अपना घोड़ा रोका और एक क्षण के लिए उधर देखता हुआ रुका रहा। मुझे ऐसा लगा, मानो इसे देखकर आराम मिलता हो। यह सभ्यता का केन्द्र था ही। हमें यहाँ पहुँचने में देर न लगी। क्योंकि बाकी हिस्से को हमने तेजी से पार कर लिया। अब भी लारामी धारा हमारे और किले की उन मित्रतापूर्ण दीवारों के बीच में थी। हम जहाँ किनारे पर पहुँचे, वहीं से हमने धारा पार की। हमने अपने पाँव पीछे को उठा लिए मानों घोड़े की पीठ पर ही हम घुटनों के बल झुक गए हों। इस प्रकार तेज़ धारा में से भी सूखे ही पार आ गए। हम जब दूसरे किनारे पर चढ़े, तो हमें किले के दरवाज़े में अनेक व्यक्ति खड़े हुए दिखाई दिये। इनमें से तीन आदमी हम से मिलने के लिए कुछ आगे तक चले आये। मैंने उन्हें तुरन्त पहचान लिया। अपने सरल और शान्त चेहरे को लिए हेनरी और हँसता हुआ देस्लारियर इन लोगों के पीछे-पीछे आए। दोनों ओर से ही यह मिलन बहुत प्यार भरा रहा। मुझे तो यह मिलन पसन्द था ही, क्योंकि असभ्यों के बीच से निकल कर मुझे अपने बहुत ही प्यारे और सभ्य साथियों से मिलना मिला। मेरे साथियों को भी मेरा मिलन उतना ही पसन्द आया। शॉ बहुत दिन से मेरे लिए बहुत अधिक चिन्तित हो उठा था।

बोर्दू ने बहुत खुले दिल से मेरा स्वागत किया और रसोइये को पुकारा। यह नया ही नौकर आया था। इसे पोर्टपियेर् से व्यापारी गाड़ियों के साथ

भेजा गया था। वह कितना ही दावा, अपनी योग्यता के विषय में, करता हो, पर उसके पास सामान उस योग्यता को सिद्ध करने लायक नहीं था। फिर भी उसने मेरे सामने बिस्कुट, कॉफी और सूअर के नमकीन मांस का नाश्ता परोस दिया। बहुत दिनों बाद इस प्रकार बैंच और मेज़ पर बैठकर छुरी, कांटे, प्याले और तश्तरी आदि में खाने का यह आनन्द अपने जीवन में मुझे एक नया मोड़ लगने लगा। कॉफ़ी बहुत ही स्वाद भरी लग रही थी। रोटी भी बिल्कुल ही नयी सी लग रही थी। पिछले तीन हफ्तों से मुझे लगातार मांस ही खाने को मिल रहा था और वह भी अधिक समय बिना नमक के ही खाने को मिला था। भोजन भी अच्छा साथ पाकर और अधिक आनन्द देने लगता है। मेरे सामने ही शॉ बैठा था। वह खूब प्रसन्न था। किसी भी व्यक्ति को यदि अपने मित्र की कीमत पहचाननी हो, तो उसके लिए अच्छा है कि वह कुछ दिन आदिवासियों के साथ रह कर देख ले। अगर उसे वहाँ रहकर बहुत अधिक कठिनाइयाँ, एकान्त और मुसीबतें सहनी पड़ी हों, तब वह अपने मित्र के गुणों को और अधिक पहचान सकेगा।

शॉ पिछले दो-तीन सप्ताह किले में ही रहा था। मैंने उसे पुराने कमरों में ही पड़े हुए पाया। यह वही कमरा था, जो यहाँ के स्वामी के बाहर जाने के कारण खाली था। एक कोने में बहुत अच्छी भैंसों की खालें खड़ी थीं। मैं इसी पर लेट गया। शॉ ने मुझे तीन पुस्तकें ला कर दीं और बोला, "ये हैं तुम्हारे शेक्सपियर और बायरन, और यह है ओल्ड टैस्टामेंट। मेरी नज़र में इस में, बाकी दोनों ही पुस्तकों की अपेक्षा अधिक अच्छी कविता है।"

मैंने इन तीनों में से सबसे रद्दी पुस्तक चुन ली और बाकी सारे दिन भर वहीं लेटे-लेटे उन विचारों पर सोचता रहा, जिन्हें हमें उस प्रतिभाशाली मनुष्य ने दिया था, जिसने हमें इस दुनिया के बनाने वाले पर विचार करने के लिए विवश किया।

—:०:—

२० : एकान्त यात्रा

लारामी किले में पहुँचने के दिन मैं और शॉ गलीचों पर पड़े आराम कर रहे थे। हेनरी भी काठियों और दूसरे सामान की देख-भाल में लगा हुआ था। पास ही दो-तीन आदिवासी चौकड़ी मार कर फर्श पर बैठे हुए हमारी तरफ़ एक-टक देख रहे थे। शॉ ने कहा, "यूँ तो मैं यहाँ मजे में ही रहा, पर कमी एक बात की रही। वह यह कि यहाँ प्यार या पैसे के बदले भी अच्छा शोंगसाशा नहीं मिलता।"

मैंने उसे ब्लैकहिल्स से साथ लाया हुआ शोंगसाशा दिया।

वह बोला, "हेनरी अब जरा मुझे पैंपिन का तम्बाखू काटने का तख्ता ला दो या फिर, यह उस सामने बैठे आदिवासी को दे दो। वह इसे काट कर ठीक से मिला देगा। हम लोगों की बजाय वे इसे अच्छा जानते हैं।"

उस आदिवासी ने बिना कुछ कहे तम्बाखू और इस छाल को काट कर मिला दिया और चिलम भर कर उसे सुलगा दिया। इसके बाद हम दोनों अपनी आगे की यात्रा तय करने लगे। इससे पहले शॉ ने मुझे किले में घटने वाली कुछ बातों से परिचित करवाया, जो मेरे पीछे घटी थीं।

आज से एक हफ़्ता पहले बहुत दूर के पहाड़ों से चार आदमी यहाँ आये थे। पहुँचने से कुछ ही पहले कुछ आदिवासियों के चंगुल में फँस गये थे। ये आदिवासी हमार मित्र स्मोक के ही दल के थे। ये लोग सदा अपने को गोरों का मित्र बताते थे। इसलिये चारों गोरे बिना सन्देह के ही उन से बातें करने लगे। उन्होंने अचानक ही उनके घोड़ों की लगामें पकड़ लीं और उन को उतरने पर मजबूर किया। इन्होंने कहना न मान कर अपने घोड़ों को एड़ लगाई और तुरन्त ही उन की पहुँच से बाहर निकल आये। आगे बढ़ते हुए इन्होंने उन्हें पीछे से चिल्लाते हुए सुना और बन्दूक चलने की कुछ आवाजें भी सुनीं। इनमें से केवल रेड्डिक की लगाम की रस्सी ही एक गोली से कट पायी। बाकी किसी को कोई भी नुकसान न पहुँचा। इसके बाद इन लोगों ने इस प्रकार का कोई और खतरा न लेना चाहा। वे दक्षिण की ओर के पहाड़ों

की तलहटी से होकर बेंट के किले की ओर जाना चाहते थे। हम दोनों दलों के इरादे मिलते-जुलते थे, इसलिये उन्होंने हमारे साथ मिलने की इच्छा प्रकट की। मेरे ठीक समय पर न लौट पाने के कारण वे अधीर हो उठे और अपने पुराने खतरे को भूल कर अकेले ही उस किले की ओर चल पड़े। हमें वहीं मिलने का वायदा उन्होंने किया। वहाँ से हम लोगों ने बस्तियों की ओर साथ-साथ ही निकल जाना था। यह इलाका बहुत खतरनाक आदिवासी जातियों से भरा हुआ था।

बेंट के किले में पहुँचे पर हमें एक और भी दल के आ मिलने की उम्मीद थी। केण्टुकी का रहने वाला एक युवक—रसेल केलिफोर्निया के प्रवासी लोगों के साथ इन पहाड़ों तक आया था। उसने हमें बताया कि उसका मुख्य उद्देश्य किसी आदिवासी को मारना था। इस उद्देश्य में वह बाद में सफल तो हुआ, पर इस से उसने हमारे लिए, और उधर से गुजरने वाले दूसरे लोगों के लिए, खतरा पैदा कर दिया। पौनी जाति के जिस युवक को उसने मारा था, उसके सम्बन्धी बदले के लिए उतावले हो उठे थे। अपने साथियों से बिछड़ कर वह कुछ दिन पहले, अपने कुछ और साथियों के साथ, अरकंसास की ओर निकल चला था। उसने हमारे लिए एक पत्र लिखा था कि वह भी हमारी प्रतीक्षा बेंट के किले में ही करेगा और वहाँ से हमारे साथ ही बस्तियों की ओर लौटेगा। जब वह उस किले में पहुँचा, तो वहाँ उसने तीस-चालीस आदमियों को घर लौटने के लिए उत्सुक पाया। उसने उन लोगों के साथ जाना अधिक अच्छा समझा। पहले के चारों गोरे भी उनके साथ ही मिल गये। इसलिए जब हम छः हफ़्ते बाद उस किले में पहुँचे तो हमने स्वयं को अकेला ही पाया।

चार अगस्त के दिन दोपहर के तुरन्त बाद, हम लारामी किले से विदा लेकर चल पड़े। मैं और शॉ मैदान की ओर साथ-साथ बढ़ने लगे। पहले कुछ मीलों तक हमारे साथ कुछ और लोग भी थे। इन में ऱौशे नाम का एक पशु फँसाने वाला और रुवैल नाम का फर कम्पनी का एक नौकर भी था। यह नौकर बिसोनेत नाम के व्यापारी के पास जा रहा था। हम उस दोपहर कुल सात या आठ मील ही गये होंगे कि एक छोटी-सी धारा के किनारे आ पहुँचे। इसके किनारेपर जंगली शहतूतों के छोटे-छोटे पेड़ लगे हुए थे। इन पर फल पक चुके

थे। ये इतने घने थे कि इन में से होकर बहता हुआ पानी साफ़ नहीं दिखाई दे रहा था। हमने यहीं डेरा डाला। तम्बू गाड़ने की मेहनत न करके हम ज़मीन पर ही अपनी काठियाँ डाल कर, और भैंसों की खालें बिछा कर, लेट गये और तम्बाकू पीने लगे। इसी बीच देस्लारियर खाना पकाने में जुट गया। रेमंड पास ही खड़ा होकर हमारे चरने वाले घोड़ों की निगरानी करने लगा। रुवैल रसोई के काम में हाथ बँटा लेता था। उसने देस्लारियर को तुरन्त सहायता देनी शुरू की। रुवैल खुद को सब बातों का जानकार समझता था। इसलिए उसने तुरन्त ही सब ओर अपनी चतुरता दिखानी आरम्भ की। सेंटलुई में वह किसी सर्कस में घुड़सवार रहा था। लारामी किले में भी उसने एक बार सिर के बल ही घोड़े पर घूम कर दिखाया था, जिसे देखकर आदिवासी चक्कर में आ गये थे। किले में वह मज़ाक के लिए भी मशहूर था। उस रात उसने सबसे अधिक हँसी-मज़ाक में समय गुज़ारा। कभी वह देस्लारियर के पास झुक कर उसे कुछ समझाता और कभी वह हमारे पास बैठकर इधर-उधर के शिकारों की कहानियाँ सुनाता। या फिर कभी अपने स्वामी पैपिन की बातें सुनाने लगता। अन्त में उसने शेक्सपीयर की एक किताब पास से ही उठा ली और उसे पढ़कर यह बताने लगा कि वह भी पढ़ा-लिखा है। वह सारे डेरे में उछलता फिरता और बन्दर की तरह चहकता रहता था। लगभग यह निश्चित ही था कि हर मिनट वह नया ही काम कर रहा होगा। उसका साथी ग्रोशे हमारे पास ही चुप बैठा, बिना कुछ बोले सामने बैठी बहुत ही भद्दी और छोटी सी, ऊटा जाति की एक स्त्री की ओर बड़ी ईर्ष्या से देख रहा था।

अगले दिन हम और आगे बढ़े। हमने 'गोशे होल' नाम के मैदान को पार किया। रात के समय बहुत देर तक हम खाइयों में ही उलझे रहे। पानी न पाकर हमें बहुत रात तक सफर करना पड़ा। अगली सुबह हमें पहाड़ियों की एक लम्बी कतार में से गुज़रना पड़ा। इनकी ढलानें देखने में बहुत बुरी लग रही थीं। जब हम इन पहाड़ियों के बीच से होकर चले तो रास्ते में किसी राक्षस के पाँव के समान ही निशान देखे थे। इसके तुरन्त बाद हमें एक उजाड़ मैदान में से गुज़रना पड़ा, जो सामने बहुत दूर तक छोटे-मोटे टीलों के साथ फैला हुआ दिखाई दे रहा था। हालाँकि इस समय धूप तेज़ थी, फिर भी चारों

ओर कुछ धुन्ध-सी छाई हुई थी। दूर की पहाड़ियाँ रेत की चमक के कारण कुछ अजीब-सी दिखाई दे रही थीं। क्षितिज की सीमा हर क्षण बदलती हुई दिखाई दे रही थी। शॉ और मैं आगे-आगे चल रहे थे। हेनरी हमसे भी कुछ आगे चल रहा था। वह एक दम रुका और एक ओर को मुड़कर उसने हमें भी बुलाया। ऐसा वह तभी करता था जब वह अधिक उत्तेजना में होता था। हम उस तक पहुँच गये। उसने हमें सामने के एक मैदानी टीले पर एक काला-सा निशान दिखाया। यह हम से मील भर दूर रहा होगा।

वह बोला, "शायद यह भालू है। आओ, हम इसका शिकार करें। भैंसे की बजाय इससे लड़ने का कुछ मज़ा और ही है। यह बहुत ताकतवर होता है।"

अब हम साथ-साथ बढ़ने लगे। हम कठिन लड़ाई के लिए तैयार थे। ये भालू बहुत भयंकर और खूँखार होते हैं। टीले ने उस काली चीज को हमारी नजरों से छिपा लिया। कुछ ही देर बाद यह फिर दिखाई देने लगी। जब हमने इसकी ओर देखा तो हमारे अचरज का ठिकाना न रहा। यह दो हिस्सों में बँट गई थी। दोनों हिस्से तुरन्त ही पंख फैला कर उड़ गये। हम ने घोड़े रोके और हेनरी की ओर देखा। वह कुछ डरा हुआ और कुछ खुश-सा लग रहा था। आज उसकी आँख एक दम धोखा खा गई थी। उसने दो बड़े मैदानी कौवों को पचास गज की दूरी से देख कर ही ऐसा सोचा था, जैसे मील-भर दूर पर कोई भालू खड़ा हो। फिर दोबारा उससे ऐसी ग़लती कभी नहीं हुई।

दोपहर बाद हम एक पहाड़ की तलहटी में पहुँचे। इस पर चढ़ते हुए रवैल हम से तरह-तरह के सवाल घर-बार के बारे में पूछने लगा। शॉ उसे अपनी पत्नी और बच्चों के बारे में झूठ-मूठ की बातें बताता रहा और वह भोंदू सुनता रहा। इस पहाड़ी की चोटी पर पहुँच कर हमने नीचे के मैदानों में 'हॉर्स क्रीक' नाम की धारा के मोड़ को देखा। कुछ ही दूरी पर हमें बाई ओर बिसोनेत के तम्बू गड़े हुए दिखाई दिए। रवैल का चेहरा एक दम उतर गया। हमने पूछा, 'बात क्या है?' उसने बताया कि व्यापारी ने उसे यहाँ से तम्बाकू लेने के लिए किले तक भेजा था, पर वह इस बात को कतई भूल गया था। उसका सौ मील का यह सफ़र बिल्कुल बेकार हो गया था। हम

धारा पर आ गये और हमने इसे पार कर लिया। दूसरे किनारे पर एक अकेला आदिवासी किसी पेड़ के नीचे खड़े घोड़े पर बैठा हुआ था। वह कुछ भी बिना बोले हमारे आगे-आगे डेरे की ओर चलने लगा। बिसोनेत ने डेरे की जगह बहुत ही अच्छी चुनी थी। यह धारा और इसके किनारे के ऊँचे पेड़ उसे तीन ओर से घेरे हुए थे। यह जगह एक चरागाह के रूप में थी। यहाँ डाकोटा लोगों के चालीस घर भी थे। यहाँ से कुछ दूर 'शिएने' लोगों के कुछ घर और भी थे। बिसोनेत खुद भी आदिवासियों के ढंग से रहता था। उसके डेरे पर पहुँच कर हमने देखा कि वह दरवाजे के पास ही बैठा था। उसके आसपास इस इलाके में न पाये जाने वाले बहुत से आराम के सामान थे। उसकी पत्नी उसके पास-ही बैठी हुई थी। उसके बच्चे छपे हुए सूती कपड़े पहने आस-पास घूम रहे थे। उसके पास-ही पाल दोरियो भी बैठा था। साथ ही एन्टोनी भी बैठा था। इनके इलावा एक पौनी, एक व्यापारी और कुछ दूसरे गोरे लोग बैठे थे।

बिसोनेत बोला, "अगर तुम यात्रा पर आगे बढ़ने से पहले कुछ दिन मेरे साथ यहाँ बिता लो, तो अच्छा होगा। किसी भी प्रकार की हानि न पहुँचाने का विश्वास दिलाता हूँ।" हमने उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। और कुछ दूरी पर, एक ऊँची जगह पर, अपना तम्बू गाड़ दिया। बिसोनेत ने तभी हमें दावत के लिए बुलाया। यहाँ भी हमें उसके आदिवासी साथियों के हाथों वैसी ही बहुत-सी खातिर मिली। पाठकों को याद होगा जब मैं ब्लैक हिल्स से परे आदिवासियों के पहले गाँव से जाकर मिला था, तब उनमें से कुछ घर पीछे रह गये थे। बिसोनेत के डेरे में रहने वाले ये आदिवासी उन्हीं कुछ परिवारों के थे। शाम के समय वे मुझ से अपने सम्बन्धियों और मित्रों के बारे में पता करने आये। उन्हें बहुत दुःख हुआ, जब उन्हें यह पता चला कि वे लोग अपनी कमजोरी और सुस्ती के कारण इधर भूखों मर रहे हैं और उधर उनके वे सम्बन्धी अगले साल के लिए घरों और खाने-पीने के सामान से अपने को पूरी तरह भर चुके हैं। बिसोनेत के ये साथी बहुत समय से जंगली शहतूतों पर पल रहे थे। इनकी औरतें इन्हें पीसकर धूप में सुखा लेती थीं और बाद में इन्हें ऐसे ही खा लिया जाता था अथवा किसी और चीज़ के साथ पका लिया जाता था।

२४ : पीछा

हमारे सामने का इलाका भैंसों से भरा हुआ था। इसलिए उनके 'पीछे' या शिकार का तरीका बता देना उचित ही होगा। इस पीछे में दो प्रकार के उपाय बरते जाते हैं। पहले को 'दौड़ाना' कहते हैं और दूसरे को 'पहुँचना'। दौड़ाने का दूसरा नाम 'पीछा करना' भी है। इसमें घोड़े पर सवार होकर भैंसे का पीछा किया जाता है। यह पीछा, दोनों तरीकों में से, अधिक खतरनाक है। कभी-कभी भसा बहुत ही भयंकर हालत में होता है। साधारण दशा में वह सीधा-सा बना रहता है। कई बार अच्छा शिकारी एक ही बार में पाँच या छः भैंसों को भी मार लेता है और घोड़े पर चढ़ ही चढ़े बार-बार बंदूक भर लेता है। भैंसे के एक छोटे-से समूह पर हमला करने, या किसी एक को औरों से अलग करके उस पर हमला करने में खतरा कम होता है। सच यह है कि कभी-कभी यह पशु इतने सीधे-सादे और मूर्ख होते हैं कि इन्हें मारने में भी मजा नहीं आता। एक अच्छे साहसी घोड़े के साथ ऐसे भैंसे के पास पहुँचकर शिकारी उसकी बगल में दौड़ने लगता है। वह इतना समीप होता है कि उसे हाथ से भी वह छू सकता है। तब तक कोई खास डर नहीं होता, जब तक भैंसे की ताकत और साँस चलता रहता है। जब वह थक जाता है, आराम से दौड़ नहीं पाता, उसकी जीभ बाहर लटकने लगती है और मुख से झाग निकलने लगती है, तब शिकारी को उससे कुछ दूरी पर हो जाना उचित है। परेशान भैंसा किसी भी क्षण उलटकर हमला कर सकता है, खासकर जब उस पर बंदूक दागी जाती है। तब घोड़ा एक ओर को उछल जाता है। इस समय शिकारी को बहुत मजबूती से जमकर बैठना चाहिए, क्योंकि अगर वह जमीन पर गिर गया, तो फिर उसकी जान बचने का कोई उपाय नहीं रह जाता। भैंसा अपने हमले को चूकता देखकर फिर से दौड़ पड़ता है। पर, अगर निशाना ठीक बैठा है तो वह फिर रुक जाता है, और, तब कुछ देर खड़ा रहने के बाद लड़खड़ा कर एक ओर को गिर पड़ता है।

भैंसे के इस प्रकार के पीछे में मुझे सबसे कठिन बात यह लगी कि पूरी तेज़ी से दौड़ते हुए बंदूक या पिस्तौल आसानी से नहीं भरी जा सकती। बहुत से शिकारी तीन या चार गोलियाँ मुँह में भरकर चलते हैं। बारूद नली में भरकर गोली उसमें डाल दी जाती है। ऐसी कुछ नालियाँ घोड़े के कूल्हे पर पीछे की ओर लटका दी जाती हैं। ऐसे काम में खतरा भी होता है, क्योंकि अगर कहीं भरी हुई नाली चल पड़ी, या उलटी चली तो दोनों ही दशाओं में कुछ न कुछ नुकसान होकर रहेगा। इस असर को कम करने के लिए कुछ लोग अपने पास एक छड़ रखते हैं और उसे अपनी गर्दन से बाँधकर लटका लेते हैं। इससे बारूद और गोली भरने का काम और कठिन हो जाता है। इस लिहाज़ से आदिवासियों के धनुष और बाण ज्यादा अच्छे बैठते हैं।

इस पीछे में घायल जानवर से उतना डर नहीं होता, जितना कि ऊबड़-खाबड़ मैदान या ज़मीन में होता है। मैदान सदा ही एक समान और समतल नहीं होता। बहुत बार टीलों, खड्डों और खाइयों आदि से भरा होता है। कभी जंगली झाड़ियाँ या उनकी जड़ें रुकावट पैदा कर देती हैं। सबसे कठिन रुकावट भेड़ियों, बैजरों और मैदानी कुत्तों की मांदों के कारण आती है। ये गड्ढे मैदानी ज़मीन में बहुत अधिक होते हैं। शिकार में अंधा शिकारी इस खतरे की बिना परवाह किये ऐसी ज़मीन पर बढ़ चलता है। उसका घोड़ा, पूरी तेज़ी से दौड़ते हुए, ऐसी मांद में अपना पांव फंसा बैठता है। उसकी हड्डियाँ टूट जाती हैं और सवार नीचे गिर जाता या मर जाता है। फिर भी इस पीछे में बहुत कम दुर्घटनाएँ होती हैं। इस पीछे में कोई भी शिकारी उतना ही मस्त होता है, जितना कि कोई शराबी शराब पीकर। पर उसकी होश भी बनी रहती है और वह ढलानों और गड्ढों आदि से बचता हुआ बढ़ता है। अगर वह हर बात का ख्याल रखना शुरू कर दे तो वह गिरकर अपनी गर्दन तुड़ा बैठेगा।

'पहुँचने' का तरीका इससे भिन्न है। उसमें पैदल चलना होता है और उसमें पहले तरीके की अपेक्षा कुछ लाभ अधिक है। पहले तरीके में घोड़े या शिकारी की ज़िन्दगी को खतरा है। उसे बहुत ही शांत और सँभला हुआ होना चाहिये। उसे भैंसे, ज़मीन और हवा तक का पूरा ध्यान होना चाहिये। बंदूक बरतने में चतुर तो होना ही चाहिये। भैंसा बड़ा अजीब पशु है। वह

कभी-कभी इतना मूर्ख भी होता है कि उसके समूह तक पहुँचकर कोई भी आदमी उनमें से कुछ एक का इकट्ठा शिकार भी कर सकता है। पर कभी-कभी वे इतना छिपते फिरते हैं कि, उन तक पहुँचने में बहुत अधिक चतुरता, अनुभव और सूझ-बूझ की जरूरत पड़ती है। हेनरी पास पहुँचने में प्रसिद्ध है और 'किटकासों' नाम का आदमी भैंसों का 'पीछा करने' में चतुर माना जाता है।

रूज ने रात को जो गड़बड़ मचाई, उसके बाद से फिर सुबह तक कोई गड़बड़ न हुई। अरापाहो लोगों ने भी किसी प्रकार की गड़बड़ न की और अगर की होगी तो हमारे दल के लोगों के चौकन्ना होने के कारण वे लोग अपने उद्देश्य में सफल न हो सके होंगे। अगले सारे दिन हलचल और उत्साह छाये रहे। आगे-आगे चलने वाला हेनरी दस बजे लगभग एकदम ही, "भैंसे! भैंसे!" कहकर चिल्लाया और सामने के खड्ड में हमने भैंसों का एक समूह चरते हुए पाया। हम लोभ न रोक सके। मैं और शॉ नीचे की ओर चल पड़े। अपने सफर के घोड़ों पर हम ठीक से जमकर नहीं बैठे हुए थे, पर फिर भी पूरी तेजी के साथ घोड़ों को दौड़ाकर हम उन तक पहुँच ही गये। शॉ ने एक भैंसे की बगल में पहुँचकर, दौड़ते हुए ही, अपनी दुनाली बंदूक से दोनों गोलियाँ उसकी बगल में दाग़ दीं। पास से गुजरते हुए मैंने उस भैंसे को बहुत गुस्से में आकर, अपने दुश्मन के विरुद्ध बढ़ते हुए देखा। शॉ का घोड़ा इधर-उधर उछल कर उसके हर वार को बचा रहा था। मेरा घोड़ा कुछ अधिक सरल या धीरे-धीरे बढ़ रहा था। बहुत देर बाद में एक भैंसे के नजदीक पहुँच गया और उसे पिस्तौल की सहायता से मार डाला। अपने शिकारों की पूँछें निशानी के रूप में काटकर हम और लोगों से आ मिले। यह सब पन्द्रह मिनट में ही हो गया। उस सारी सुबह बार-बार "भैंसा! भैंसा!" की पुकार सुनाई देती रही। हर कुछ मिनट बाद नदी किनारे की फैली हुई चरागाहों में अपने भारी सिर उठाये, पास आने वाले घुड़सवारों को मूर्खता से देखते हुए, भैंसे कभी अलग-अलग और कभी एक साथ ही उछलते हुए भाग निकलते और बाईं ओर की ऊँचाई की ओर बढ़ जाते। दोपहर के समय हमारे सामने का मैदान भैंसों, कट्टड़ों और मादा भैंसों आदि से, हजारों की संख्या में, भरा हुआ दिखाई दिया। हमारे पास

पहुँचते ही ये सब भाग निकलते और हमें दूर तक का मैदान काला ही काला दिखाई देता। हमारा दल बहुत प्रसन्न और खुश था। दोपहर बिताने के लिए हम नदी किनारे एक अमराई में रुके।

देस्लारियर ने हमारे सामने हिरण के मांस का जो खाना रखा उस पर शॉ नाराज हुआ। उसने पूछा, "क्या ताजा मांस कभी और के लिए बचाया गया है ?" भोजन समाप्त करके हम वहीं लेट गये। हेनरी की तेज आवाज ने हमें जगाया। हमने देखा कि वह गाड़ी के एक पहिये पर खड़ा हुआ नदी के परे मैदान की ओर कुछ देख रहा है। उसकी नजरों की दिशा में देखते हुए हमने एक बहुत बड़ी काली चीज देखी। लगता था जैसे काले बादलों पर कोई समूह सामने के टीलों पर से होकर गुजर रहा था। इसके पीछे एक और काली चीज, और भी तेजी से चलती हुई, दिखाई दी। यह कुछ छोटी थी और पहली चीज के पास आती जा रही थी। आगे का समूह भैंसों का था और पीछे की टुकड़ी अरापाहो शिकारियों की थी। मैंने और शॉ ने सबसे अच्छे घोड़ों पर काठियाँ कसीं और दूसरे किनारे की ओर निकल चले। हम बहुत देर से पहुँचे। तब तक वे शिकारी भैंसों के जत्थे में घुलमिल कर अपना काम समाप्त कर चुके थे। अधिक नजदीक पहुँचकर हमने वहाँ चारों ओर बहुत अधिक शव पड़े देखे। बाकी सारे जानवर इधर-उधर बिखर कर भाग गये थे। बहुत से शिकारी पहले दिन के परिचित ही दिखाई दिये। इनमें उन लोगों का मुखिया भी था। कुछ लोग अब भी भैंसों का पीछा कर रहे थे। मुखिया एक भैंस के पास झुका था। इसे उसने पाँच या छः बाणों से घायल किया था। उसके पास खड़ी हुई उसकी औरत उसे पानी का प्याला दे रही थी। लौटकर फिर से नदी को पार कर हम अपने दल में जा मिले और साथ-साथ आगे बढ़ने लगे।

अभी हम मील भर भी आगे न गये होंगे कि हमें एक बहुत ही अजब नजारा दिखाई दिया। नदी के दायें किनारे पर बाईं ओर के टीलों तक और सामने निगाह की पहुँच में चारों तरफ, भैंसों का एक बड़ा समूह समुद्र के रूप में फैला हुआ दिखाई दे रहा था। इनका कोई भी किनारा दो सौ गज से अधिक दूर था। कुछ जगह वे इतने घने दीख रहे थे कि उनकी पीठें एक काले समतल मैदान के रूप में दीख रही थीं। इर्द-गिर्द के हिस्सों में वे कुछ

अधिक बिखरे हुए थे। इन सबके बीच से धूल के बादल से उठ रहे थे। यहाँ कुछ भैंसे ज़मीन पर लोट रहे थे। कहीं-कहीं ये आपस में भी लड़ रहे थे। हम उन्हें एक दूसरे की ओर दौड़ता हुआ देख सकते थे और उनके सींगों के टकराने और उनके चिल्लाने की आवाज हमें साफ़ सुनाई दे रही थी। शॉ और हेनरी हम से कुछ आगे चल रहे थे। मैंने देखा कि शॉ ने रुककर अपनी बंदूक थैली से बाहर निकाल ली। ऐसे नजारे को देखकर एक ही अंदाजा किया जा सकता था। उस दिन सुबह मैंने अपनी पिस्तौलों का प्रयोग किया था। इस समय मेरा इरादा बंदूक की परीक्षा करने का था। देस्लारियर की बंदूक लेने के लिए मैं उसकी गाड़ी पर गया। वह वहाँ चिलम पीता हुआ आराम से बैठा मुस्करा रहा था।

"देस्लारियर ! जरा मुझे अपनी बंदूक तो दे दो !"

"ज़रूर, श्रीमान् !" कहकर देस्लारियर ने घोड़े रोके और गाड़ी के अन्दर घुस गया। वह बंदूक निकालने की कोशिश करने लगा।

मैंने पूछा, "क्या वह भरी हुई है ?"

"हाँ, बहुत अच्छी तरह भरी हुई है। आप इस से जरूर शिकार मारेंगे। यह बहुत सरल है।"

मैंने उसे अपनी बंदूक थमा दी और उसकी बंदूक लेकर शॉ के पीछे निकल चला।

शॉ ने पूछा, "क्या तुम तैयार हो ?"

"आ जाओ !" मैंने बढ़ते हुए कहा।

हेनरी बोला, "उस खड्ड में छिप जाओ ! वे तुम्हें नहीं देख पायेंगे और तुम उनके पास तक पहुंच जाओगे।"

सामने का खड्ड एक खाई के रूप में था। यह तिरछा, बढ़ते हुए पशुओं तक, फैल गया था। हम इसके नीचे होते हुए आगे बढ़ते रहे। अब यह उथला होने लगा। हम घोड़ों की गर्दनों पर झुक गये और अन्त में जब हमने देखा कि छिपना कठिन है, तो हम उस समूह की ओर तेजी से सीधे बढ़ चले। अब यह समूह हमारे निशाने की पहुँच में ही था। इनके घेरे के बाहर की ओर अनेकों काले-काले बूढ़े नर भैंसे बिखरे हुए थे। वे अपनी मादा भैंसों की रखवाली करते हुए चल रहे थे। गुस्से और अचरज में भरकर ये हमारी

ओर देखने लगे और कुछ गज़ आगे बढ़ आये। तब फिर से लौटकर ये तेजी से भागे। इस के बाद सारे रेवड़ में ही खलबली मच गई और सब जानवर भाग निकले। सारा समूह हमसे दूसरी ओर जाकर जमा हो गया और एक ओर कुछ रास्ता खुल गया। हम इस बीच के रास्ते से आगे बढ़े। हमने अपने घोड़ों को काबू में रखा। हर क्षण यह गड़बड़ बढ़ती गई। भैंसे हमसे कुछ दूरी पर हर तरफ जमा होने लगे। सामने और अगल-बगल में, हम जिधर भी देखते, भैंसे ही भैंसे नज़र आ रहे थे। धूल के बादलों ने उन्हें कुछ कुछ छिपा लिया था। भागते हुए भैंसों के हज़ारों खुरों की ठाप साफ़ सुनाई दे रही थी। अपनी ताकत को बिना पहचाने हज़ारों की संख्या में भी ये जानवर भागते चले जा रहे थे, हालाँकि हम घुड़सवार कुल दो ही थे। ऐसे समय अधिक देर काबू रखना कठिन था।

शों बोला, "मैं सामने से बढ़ता हूँ और तुम बाईं बगल से बढ़ो।"

वह उछला और फिर दीखना बन्द हो गया। मेरी कलाई के साथ एक भारी चाबुक बँधा हुआ था। इसे फटकारकर मैंने घोड़े को तेजी से एड़ लगाई। वह तेजी से दौड़ चला। मैं अपने सामने धूल के बादल के अलावा कुछ और नहीं देख पा रहा था। पर इतना ज़रूर जानता था कि सामने ही सैकड़ों भैंसे इसमें छिपे हुए हैं। एक क्षण में मैं इस बादल के बीच में छिप गया। धूल से मेरी साँस रुकने लगी। भागते हुए भैंसों की टपटपाहट ने मुझे जड़ बना दिया। पर मैं भी पीछा करने के नशे में था। भैंसे के अलावा मुझे किसी और बात की चिन्ता न थी। बहुत जल्दी ही मुझे एक काला समूह सामने दिखाई देने लगा। थोड़ी देर बाद मैं हर पशु को अलग-अलग पहचानने लगा और उनके उठते खुरों और खड़ी पूँछों को साफ देखने लगा। अगले ही क्षण मैं इतना पास पहुँच गया कि अपनी बंदूक से उन्हें छू सकता था। उसी समय अचानक ही उन सबके खुर चमके और पूँछें हवा में उठ गईं। पर तभी ये भैंसे कहीं धरती में समा गये। इस क्षण का नज़ारा अब भी मेरे दिमाग में उसी तरह समाया हुआ है। मुझे याद है कि मैं किस प्रकार उस धूल में से उन पशुओं को खोजने के लिए आँखें गड़ाकर देख रहा था। हम अचानक ही एक खाई के किनारे पहुँच गये। उस समय मैं इसकी गहराई और चौड़ाई का ठीक से अनुमान न कर सका। पर, जब मैं इसमें से गुज़रा तो मैंने पाया कि

यह चार गज गहरी और लगभग दुगनी चौड़ी रही होगी। यहाँ रुकना नामुमकिन था। मैं अगर रुक सकता तो अवश्य रुक जाता। इसलिए फिसलते, कूदते और लड़खड़ाते हुए घोड़ी नीचे उतरने लगी। तले की रेत गीली थी। यहाँ अचानक ही उसके घुटने झुक गये और मैं उछलकर उसकी गर्दन तक खिसक आया। शायद एक और झटके में सामने की भैंसों के बीच में ही गिर जाता। परन्तु, वह घोड़ी एक ही क्षण में फिर से उठ खड़ी हुई और सामने के किनारे पर चढ़ने लगी। अब वह मैदान पर आ निकली थी। मैंने पीछे मुड़कर देखा कि एक भैंसा बड़ी कठिनता से अपने अगले पाँव खाई के किनारे फँसाकर ऊपर तक उठने की कोशिश कर रहा था। आखिर मैं भैंसों के करीब आ पहुँचा। अब वे पहले की अपेक्षा कम घने हो गये थे। पर, मैं उन नर भैंसों के साथ ही था, जो हमेशा ही अपने समूह की रक्षा के लिए पीछे-पीछे चलते हैं। जब मैं उन में से गुजरा तो वे अपने सिर झुकाकर दौड़ने से पहले मेरी घोड़ी को चीर देने के लिए मुड़कर भाग पड़े। पर, क्योंकि वे पहले से ही पूरी तेजी से दौड़ रहे थे, इसलिए उनके हमले में पूरी तेजी न थी। मेरी घोड़ी उनसे भी अधिक तेज थी। इसलिए वे हर बार बहुत पीछे पड़ जाते थे। मैंने इस सारे रेवड़ में से तुरन्त ही मादा भैंसों को पहचानना शुरू कर दिया। एक तो मेरे बिलकुल सामने ही आ पड़ी। यह मेरे मनपसन्द थी। इसलिए मैंने इसका पीछा करना शुरू किया। लगाम छोड़कर उसके कंधे के पास अपनी बंदूक ले जाकर मैंने गोली दाग दी। वह भी बिजली की भांति घोड़ी पर लौट कर उछली। मेरी घोड़ी ने इस हमले को बचा लिया। परन्तु इस गड़बड़झाले में वह आँखों से ओझल हो गई। तुरन्त ही मैंने एक दूसरी भैंस का पीछा करना शुरू किया और एक दूसरे के बाद दोनों पिस्तौलों से उस पर वार कर दिया। कुछ देर तक मैं उसे निगाह में रखकर बढ़ता रहा, पर अपनी बंदूक दुबारा भरते हुए मेरी निगाह उससे चूक गई। उसके बुरी तरह घायल होने का भरोसा करके मैंने अपनी घोड़ी को रोक लिया। रेवड़ के भाग जाने के बाद, और धूल के दब जाने पर, मैंने देखा कि एक अकेली भैंस बहुत भारी कदमों से दौड़ती हुई पीछे-पीछे चल रही है। कुछ ही देर में मैं उसकी बगल में पहुँच गया। मेरे दोनों हथियार गोलियों से खाली थे। मेरी थैली में राईफल की गोलियाँ

जरूर थीं। पर वे न तो बंदूक में आ सकती थीं और न ही पिस्तौल में। मैंने ये गोलियाँ ही बंदूक में भरकर चलाने की कोशिश की, पर ये नीचे सरक जाती थीं। बंदूक छूटने की आवाज़ एक हल्के पटाके जैसी होती थी। अब मैं भैंस के सामने होकर उसे लौटाने लगा। उसकी आँख में अचानक ही चमक दौड़ गई और उसकी गर्दन झुक गई। उसने अपना सिर झुकाकर मुझ पर पूरी तेज़ी के साथ हमला कर दिया। मैं बार-बार उसके सामने पहुँचता और वह बार-बार उसी प्रकार हमला करती। पर आज मेरी घोड़ी भी अपने असली रूप में आ चुकी थी। उसने अपने दुश्मन को हर कदम पर छकाया। अंत में भैंस थककर चुप खड़ी हो गई। वह अपनी कोशिशों में हार चुकी थी। उसकी जीभ मुख से बाहर लटकने लगी थी।

कुछ दूर तक चलने के बाद मैं घोड़ी से उतरा, ताकि कुछ घास इकट्ठी करके अपनी बंदूक में भर कर एक रोक बना दूँ। अभी मैं उतरा ही था कि वह भैंस फिर से तेज़ी के साथ मेरी ओर आई। मैं फिर से उछलकर घोड़ी पर चढ़ गया। कुछ देर तक और इन्तज़ार करने के बाद मैंने उस पर अपनी छुरी से ही हमला करने की सोची। पर मेरी घोड़ी इतनी पास जाने को तैयार न थी। अन्त में अपने पाजामों की झालरों में से कुछ बालों को निकाल कर मैंने बंदूक को फिर से भरा और उनसे गोली को जकड़ दिया। तब पास जाकर मैंने भैंस को बगल में फिर से गोली मार दी। वह तुरन्त ही मुर्दे के रूप में ज़मीन पर गिर पड़ी। मैं यह देखकर हैरान रह गया कि जिसे मैंने मारा था वह भैंस न होकर एक मज़बूत भैंसा था। यह भैंसा बरस भर का रहा होगा। उसकी तेज़ी पर अधिक देर अचरज न करके, मैंने उसकी गर्दन चीरकर जीभ को बाहर निकाल लिया और अपनी काठी के पीछे लटका लिया। मेरी यह भूल ऐसी थी, जिसे कोई भी अनुभवी शिकारी इस पीछे में कर बैठता।

अब पहली बार मैंने आराम से चारों ओर का नज़ारा देखा। सामने का मैदान लौटते हुए पशुओं के कारण काला दिखाई दे रहा था। दोनों ओर से भैंसें कतारें बांधकर नीचे, नदी पर, उतर रही थीं। अरकंसास नदी यहाँ से तीन-चार मील दूर होगी। मैं उस ओर मुड़ चला। बहुत देर बाद सामने बहुत दूरी पर, मैंने सफ़ेद चादर से ढकी छोटी-सी गाड़ी और घुड़सवारों की

पंक्ति को पहचान लिया। पास आने पर मैंने शॉ की सुन्दर और चमकदार पोशाक को भी पहचान लिया। मैं भी दल में जा मिला। मैंने शॉ से उसकी सफलता के बारे में पूछा। उसने एक गाय को दो गोलियों से घायल किया था। दोपहर बाद हम दोनों में से कोई भी शिकार के लिए तैयार न था। हमारे पास फालतू गोलियाँ भी न बची थीं। इसलिए उस घायल जानवर को हेनरी के हाथों को छोड़कर शॉ चला आया था। हेनरी ने एक ही निशाने में उसे मारकर, उसका मांस घोड़े पर लाद दिया था। वह भी उसी समय आ पहुँचा।

हमने नदी के पास डेरा डाला। रात अँधेरी थी। सोते समय हमें चारों ओर से भेड़ियों और भैंसों की मिली-जुली आवाज़ें आ रही थीं, मानों बहुत दूरी पर समुद्र तट के साथ टकरा रहा हो।

—:•:—

२५ : भैंसों का डेरा

हमारे डेरे में जिमगुर्नी से अधिक चुस्त और एलिस से अधिक सुस्त कोई और न था। ये दोनों ही बिल्कुल ही उलटी आदतों के थे। एलिस सुबह तब तक न जागता था, जब तक उसे मजबूर न किया जाय और जिम पौ फटने से बहुत पहले ही जाग जाता था। उस दिन भी हमें उसकी आवाज ने जगा दिया। वह एलिस को कह रहा था, "उठो, बेटा ! जल्दी उठ जाओ। तुम खाने और सोने को छोड़कर और कुछ काम नहीं जानते। अब ज़रा जल्दी से उठकर बाहर आओ, नहीं तो मैं तुम्हारी चादर खींच लूँगा।"

जिम के इन शब्दों में कुछ और भी विशेषण मिले जुले थे। उनका असर तुरन्त हुआ। ऐलिस नाक से कुछ गुनगुनाता हुआ बाहर निकला और तुरन्त कपड़े उतारकर बैठ गया। अपनी बाहों और टाँगों को फैलाकर जँभाई लेता हुआ यह सीधा खड़ा हो गया, मानों चारों दिशाओं में देखभाल करना उसके लिये ज़रूरी था। तुरन्त ही देस्लारियर ने आग जला ली। घोड़ों और खच्चरों को खूँटों से खोल दिया गया, ताकि वे पास की चरागाह में आराम से चर सकें। जब हम नाश्ते के लिए बैठे तो अभी सुबह का धुँधला खतम नहीं हुआ था। सूर्य की पहली किरणें दीखने से पहले ही हम फिर से घोड़ों पर चढ़कर आगे बढ़ने लगे थे।

"वह सफेद भैंसा !" मुनरो चिल्ला पड़ा।

शॉ बोला, "अगर मुझे घोड़े से भी हाथ धोना पड़े, तब भी मैं उसके पीछे इसे दौड़ाकर, उसका शिकार अवश्य करूँगा।" उसने अपनी बन्दूक का खोल उतारा और तुरन्त उधर भाग निकला। हेनरी पीछे से चिल्लाया, "शॉ, रुक जाओ ! रुक जाओ ! तुम्हारा घोड़ा बेकार में ही चोट खा जाएगा। अरे भाई ! यह तो सफ़ेद बैल है, भैंसा नहीं।"

किन्तु शॉ पहले ही बहुत दूर निकल गया था। यह बैल किन्हीं सरकारी गाड़ियों में से पीछे छूट गया था और वहीं किसी नीची पहाड़ी की तलहटी में खड़ा हुआ चर रहा था। उससे कुछ ही दूरी पर भैंसे भी चर रहे थे। ये शॉ

को आता देखकर तितर-बितर हो कर भागने लगे और पहाड़ियों के ऊपर चढ़ने लगे। उनमें से एक भैंसा अपनी तेज़ी और डर के कारण बुरी आफ़त में जा फँसा। तलहटी पर एक छोटा-सा दलदल वाला हिस्सा था। यह भैंसा उसी में फँस कर खुद को निकालने की कोशिश करने लगा। हम सब इस जगह तक बढ़ आए। उसका बड़ा शरीर इस कीचड़ में आधा धँसा हुआ था। कीचड़ इसकी ठोड़ी तक बढ़ आया था। भैंसे की गर्दन अब भी कीचड़ के बाहर थी। हमारे पास पहुँचते ही भैंसे ने पूरी ताकत से बाहर निकलने की कोशिश शुरू कर दी। वह इधर-से-उधर हिलता हुआ बहुत हताश होकर खुद को कीचड़ से निकालने लगा। परन्तु जितना ही वह बाहर निकलने की कोशिश करता, उतना ही वह और धँसता चला जाता। हमने उसकी पूँछ मरोड़कर उसे उत्तेजित करना चाहा। पर, कुछ लाभ न हुआ। बहुत यत्न करने के बाद भी वह डूबता ही गया। अन्तिम बार उसने हमारी ओर बहुत ही क्रोध भरी आँखों से देखा। अन्त में एलिस अपने घोड़े से उतरा और येगर नाम का अपना हथियार लेकर उसने भैंसे के दिल पर दाग़ दिया। वह फिर से अपने घोड़े पर जा चढ़ा। अपने मन को तसल्ली देने के लिए वह भी एक भैंसे का शिकार कर चुका था। शायद सारे सफ़र में पहली और आखिरी बार उसका हथियार इसी समय बरता गया था।

सुबह बहुत ही सुहानी और हवा इतनी साफ़ थी कि सामने क्षितिज की ओर फैला हुआ पीला-पीला मैदान साफ़ दिखाई दे रहा था। शॉ का दिल शिकार पर आया हुआ था और वह हम से बहुत आगे चल रहा था। थोड़ी देर में ही हमने सामने भैंसों की एक लम्बी कतार पूरी तेज़ी से हरे-भरे मैदान के एक टीले पर चढ़ती हुई देखी। शॉ उसके पीछे उछलता हुआ पहुँच गया। उसकी लाल कमीज़ दूर से पहचानी जा सकती थी। वह जल्दी ही उनके बीच पहुँच गया। और आखिरी भैंसे के टीला पार करने से पहले हमने देखा कि उसने सबसे पिछले भैंसे पर हमला कर दिया। तुरन्त ही एक धुआँ उठा और बन्दूक की आवाज़ सुनाई दी। वह भैंसा उसकी ओर पलटा। पर, अब तक वे दोनों ही हमारी निगाह से छिप चुके थे।

दोपहर तक हम आगे बढ़ते रहे। तब हमने अरकंसास नदी के किनारे कुछ देर आराम किया। उस समय शॉ हमें दूर की एक पहाड़ी की तलहटी

में धीरे-धीरे बढ़ता हुआ नजर आया। उसका घोड़ा थक चुका था। उसने अपनी काठी जमीन पर रक्खी और लेटने लगा। मैंने देखा कि उसके घोड़े के पीछे दो भैंसों की पूछें लटक रही थीं। अभी हमने चरने के लिए घोड़े ढीले छोड़े ही थे कि हेनरी मुनरो को साथ लेकर, बन्दूक हाथ में लिए हुए, चुपचाप एक ओर को निकल गया। हाँ, मैं और रूज देस्लारियर द्वारा परोसे गए खाने की चर्चा करते हुए गाड़ी के पास ही बैठे थे। अभी हमने खाना खत्म ही किया था कि मुनरो को लौटते देखा। उसने बताया कि हेनरी ने चार मोटी भैंसें मारी हैं और उसे मांस ढोने के लिए घोड़े लेने भेजा है। शॉ अपने और हेनरी के लिए एक-एक घोड़ा लेकर मुनरो के साथ चला गया। कुछ ही देरी बाद तीनों वापिस आए। उनके घोड़े उन भैंसों के चुने हुए मांस से लदे थे। हमने दो भैंसों का मांस अपने लिए रखकर बाकी मुनरो और उसके साथियों को दे दिया। देस्लारियर मांस के सामने जम गया और तुरन्त ही उसे लम्बे-लम्बे टुकड़ों में काटकर सुखाने योग्य बनाने लगा। इस काम में वह किसी आदिवासी स्त्री से कम चतुर न था। रात से बहुत पहले ही भैंसे की खाल की रस्सियाँ चारों ओर फैला दी गईं और उनपर मांस लटका दिया गया, ताकि धूप और खुली हवा में वह सूख सके। हमारे दूसरे साथी अपने काम में इतने चुस्त न थे। उन्होंने बहुत देर में अपना काम निपटाया। पर, बहुत रात बीतने से पहले ही उनके यहाँ भी हमारे डेरे जैसा ही नजारा खड़ा हो गया था।

हमारा इरादा यहाँ कुछ दिन रहकर सीमांत की यात्रा की पूरी तैयारी कर लेने का था; क्योंकि यह सफ़र एक महीने से भी अधिक चलना था। अगर यह सफ़र इससे भी दुगना होता, तो भी हेनरी की अकेली बन्दूक ही हमारे लायक सामान दो दिन में जुटा देती। फिर भी, हमें यहाँ इतने दिन रुकना जरूरी था, ताकि मांस भली प्रकार सूख सके। इसलिए हमने तम्बू गाड़कर पक्का डेरा बना लिया। हमारे नये साथियों के पास ऐसा कोई प्रबन्ध न था। इसलिए उन्होंने अपने सामान को घास पर आग के चारों ओर ही जमा कर लिया। इस बीच हमारे पास हँसी, मजाक और आनन्द मनाने के अलावा और कोई काम न था। हमारा डेरा नदी से कुछ ही गज की दूरी पर था। यहाँ नदी रेत के फैलाव के अलावा और कुछ न थी। दोनों ओर

के चौड़े समतल मैदान नदी तटों के बराबर ही फैले हुए थे और उनसे बहुत दूर छोटी-छोटी, एक जैसी, पहाड़ियाँ फैली हुई थीं। चारों ओर घास ही घास फैली हुई दिखाई देती थी। कोई पेड़ तक निगाह में न आता था। हाँ, नदी के बीचों-बीच के टापू में कुछ पेड़ अवश्य उगे हुए थे। इस पर भी यह नजारा हमारे लिए कम आकर्षक न था। हर सुबह और शाम, दो बार, भैंसे कतारें बाँधकर पहाड़ियों में से निकलते हुए, एक जलूस से रूप में, नदी तक पानी पीने आते। हमारे सभी आनन्द उनके बल पर ही होते थे। बूढ़ा भैंसा सबसे अधिक भद्दे किस्म का जानवर होता है। उसे देखते ही करुणा का भाव मिट जाता है। मादा भैंसें उनकी अपेक्षा बहुत छोटी और सभ्य दिखाई देती हैं। इस डेरे पर रहते हुए हमने मादा भैंसें मारने का काम हेनरी पर ही छोड़ दिया, क्योंकि वह अकेले ही ज्यादा अच्छी तरह और ठीक ढंग से हमारे योग्य सामान जुटा सकता था। हाँ, हमने बड़े भैंसों का शिकार खुद ही करने का फैसला किया। उनमें से यदि हजारों भी मार दिए जाते तो भी उनकी नस्ल की कोई खास हानि न होती। मादा भैंसों की अपेक्षा नर भैंसों की संख्या बहुत अधिक थी। मादा भैंसों की खालें ही व्यापार और आदिवासियों के घर आदि के काम आती हैं। इस लिए लोग अक्सर उन मादाओं का ही शिकार अधिक करते हैं। तभी दोनों की संख्या में यह गड़बड़ है।

हमारे घोड़े थक चुके थे। इसलिए अब हम पैदल ही शिकार करने लगे। दोपहर के भोजन के बाद हम लोग चिलम पीते हुए और हँसी मजाक करते हुए लेटे होते। कोई एक आदमी खड़ा होकर बहुत दूर नदी के पास मैदान की ओर देखता और बताता कि एक काली-सी कोई चीज धीरे-धीरे हमारी ओर आ रही है। वह उसी समय एक कश खींच कर सुस्ताता हुआ उठता और अपनी बन्दूक उठाकर और अपनी गोली-बारूद की थैलियाँ कंधे पर लटकाकर निकल चलता। दूसरी ओर की रेत को पार करके वह कुछ दूर तक निकल जाता। यहाँ रेत बहुत फैली हुई थी और पानी बहुत कम था। दूसरा किनारा ऊँचा था और सीधा भी! इसके ऊँचे किनारों पर लम्बी घास उगी हुई थी। अपने हाथों से इसे हटाता हुआ वह व्यक्ति बीच में से झाँकता हुआ और झूमता हुआ कोई भैंसा पा सकता था। पानी पीने आते समय उन भैंसों की चाल बहुत ही सुस्ती और मस्ती भरी हो जाती थी। इन भैंसों के नदी

तक आने के रास्ते निश्चित से बने हुए हैं। इन्हें नदी तक पहुँचता हुआ देख कर शिकारी किनारे पर कुछ दूरी पर छिपकर बैठ जाता है। यहाँ से भैंसे नदी पर उतरते हैं। रेत पर चुपचाप छिपकर बैठा हुआ शिकारी ध्यान लगाकर सुनता रहता है। तब उसे भैंसों की पास पहुँचती हुई चाल की भारी आवाज़ सुनाई देने लगती है। एक ही क्षण में वह सामने की हरी और ऊँची घास में कोई हिलती हुई चीज़ आती देखता है। सबसे पहले उसे बहुत बड़ा काला सा सिर निकलता हुआ दिखाई देता है। तब साथ ही सींग और गर्दन बाहर आती हुई दिखाई देती है। फिसलता और गिरता हुआ भैंसा नदी के किनारे आ निकलता है। पानी पीते हुए उसकी आवाज़ साफ़ पहचानी जा सकती है। अब वह अपना सिर उठाता है। इस समय उसके मुँह से पानी की बूँदें टपक रही होती हैं। वह जड़-सा बनकर खतरे से बेख़बर होकर वहीं खड़ा रहता है। इसी समय शिकारी अपनी बन्दूक को चुपचाप चला देता है। बैठे हुए शिकारी के घुटने खड़े रहते हैं और उसकी कोहनी इन पर टिकी रहती है। वह बहुत ठीक तरह से निशाना बाँध सकता है। बन्दूक के हत्थे को वह कंधे पर टिका लेता है और उसकी आँख बन्दूक की नाली पर टिक जाती है। अब भी वह गोली नहीं दागता। अब वह भैंसा दूसरी ओर के रेतीले किनारे पर पहुँच जाता है और अपनी अगली टाँगे फैलाकर एक खास जगह को नंगा कर देता है। यहाँ पर बाल नहीं होते। यह जगह कंधे के एक एक दम नज़दीक है। शिकारी यहीं पर गोली दागने की तैयारी करता है। बहुत निशाना साधकर वह आख़िर बन्दूक का घोड़ा दबा देता है। तुरन्त ही गोली निशाने पर जा लगती है और उस नंगी जगह पर एक काला लाल-सा निशान दिखाई देने लगता है। इधर एक तेज़ आवाज़ चारों ओर गूँज जाती है, उधर भैंसा काँप कर मौत के पंजे में जा फँसता है। वह नहीं जान पाता कि यह मौत कहाँ से आ रही है? वह अभी गिरता नहीं, धीरे-धीरे आगे भारी कदमों के साथ बढ़ने लगता है। इससे पहले कि वह रेत पर बहुत आगे जा सके, वह रुकता है, लड़खड़ाता है और उसके घुटने झुकने लगते हैं। अब उसका सिर नीचे को झुक जाता है। उसी समय वह सारा बोझ एक तरफ को गिर पड़ता है और बिना किसी संघर्ष के वह भैंसा एक किनारे गिरकर चुपचाप मर जाता है।

भैंसे का इस प्रकार का शिकार, और पानी पीने आते हुए उस पर निशाना साधना, शिकार का सबसे आसान तरीका है। इस तरह घाटियों और खाइयों में, पहाड़ियों के पीछे और कहीं-कहीं मैदान में भी, उन तक सरकते हुए पहुँचा जा सकता है। यह शिकार बहुत आसान होता है परन्तु, कुछ अवसरों पर यहाँ भी बहुत सावधानी की जरूरत होती है। बहुत सधा हुआ शिकारी ही इस कठिन मौके पर सफल हो पाता है। इस लिहाज से हेनरी बहुत असाधारण रूप में मजबूत और ताकतवर था। मैंने कई बार उसे भी बहुत अधिक थके हुए और जख्म खाए हुए लौटते देखा था। बहुत बार झाड़ियों में सरकते हुए उसकी पोशाक काँटों से भर गई थी। कभी-कभी वह अपने चेहरे के बल ज़मीन पर उलटा लेट जाता था और इस हालत में बहुत दूर तक घिसटता हुआ आगे बढ़ता था।

इस जगह रुकने के अगले दिन हेनरी इसी प्रकार दोपहर के शिकार पर गया। शॉ और मैं तब तक डेरे पर ही रुके रहे, जब तक हमें दूसरे किनारे पर पास पहुँचते हुए भैंसे न दिखाई दे गए। तब हम उन पर हमला करने के लिए नदी के पार पहुँच गए। वे बहुत नज़दीक थे। इससे पहले कि हम किनारे पर पहुँच कर कहीं अपने को छिपा पाते, वे चौकन्ने हो गये और गोली की पहुँच से दूर रहते हुए ही भाग निकले और नदी के साथ-साथ दाहिनी ओर मुड़ गए। किनारा चढ़कर मैं भी उनके पीछे भागा। वे बहुत तेजी से चल रहे थे। इससे पहले कि मैं गोली की पहुँच के अन्दर पहुँच पाता, वे एकदम मुड़ कर मेरे सामने अड़ गए। एक क्षण के लिए वे चौकन्ने होकर देखने लगे। उनके मुड़ने से पहले ही मैं धरती पर मुँह के बल सीधा लेट गया। वे घास पर लेटे मुझे घूरते हुए कुछ देर खड़े रहे और फिर मुड़कर पहले जैसे ही चल पड़े। अब तुरन्त उठकर मैं तेजी से पीछा करने के लिए दौड़ा। एक बार फिर, वे मुड़े और मैं उसी तरह फिर से लेट गया। इस प्रकार तीन-चार बार दोहराने के बाद मैं उनसे सौ गज़ की दूरी के अन्दर ही पहुँच गया। इस बार जब मैंने उन्हें फिर से घूमते हुए देखा, बैठकर बन्दूक उनकी ओर साध दी। इनके बीचों-बीच एक बहुत बड़ा भैंसा था। इतना बड़ा भैंसा मैंने कभी नहीं देखा था। मैंने उसके कंधे के पीछे गोली चला दी। उसके दो साथी तुरन्त भाग निकले। वह भी उनके पीछे भागने लगा, पर थोड़ी ही देर में खड़ा हो गया

और कुछ देर बाद इस तरह आराम से लेट गया, मानो कोई बैल जुगाली करने के लिए बैठ गया हो। पास जाकर मैंने उसे देखा। वह मर चुका था।

जब मैंने पीछा शुरू किया था, इस मैदान में एक भी जानवर नहीं दिखाई दे रहा था। परन्तु इस समय तक हज़ारों भैंसे एक साथ दिखाई देने लगे थे। न जाने ये कहाँ से उमड़ आए थे? अपने से पचास गज की दूरी पर मैंने एक काला फैलाव दाएँ और बाएँ बहुत दूर तक फैला हुआ देखा। मैं इनकी तरफ बढ़ा। इनमें से किसी को भी मेरे पहुँचने से कोई परेशानी नहीं हुई। इस सारे समूह में भैंसे और बछड़े ही थे। पर, कुछ बूढ़े भैंसे इसे घेर कर पीछे-पीछे चल रहे थे। मैं ज्यों ही नज़दीक पहुँचा, उन बूढ़े भैंसों ने मेरी ओर मुड़कर इतनी भयंकर नज़र से देखा कि मैंने आगे जाने का निश्चय छोड़ दिया। मैं जहाँ खड़ा था, वहाँ से भी निशाना साध सकता था। इसलिये मैं ज़मीन पर बैठकर उनकी हरकतें देखने लगा। कभी तो वे सब खड़े हो जाते और उनके सिर एक ओर को उठ जाते। और, कभी वे सामने की ओर दौड़ने लगते, जैसे सभी को एक-सी ही बातें सूझ गई हों। उनके खुर और सींग टकराते हुए दीखने लगते। तुरन्त ही बहुत दूरी पर मैंने बहुत-सी गोलियाँ चलने की आवाज़ें सुनीं और ये आवाज़ें बार-बार दुहराई जाने लगीं। कुछ ही देर बाद कुछ और भारी तरीके की आवाजें आईं। मैंने पहचान लिया कि ये भारी आवाजें हेनरी की दुनाली बन्दूक की थीं। हेनरी जब भी अपनी बन्दूक से काम लेता, हमारे सारे डेरे के लिए मांस जुट जाता और उसे लाद कर लाना पड़ता। इसलिए मैं तैरकर नदी के पार गया और शिकारियों के पास आ पहुँचा। भैंसे अब भी बहुत दूर मैदान पर दिखाई दे रहे थे। वे बहुत दूर लौट चुके थे। अब भी मैदान पर दस या बारह शव इधर-उधर बिखरे पड़े थे। अपने हाथों में छुरी लिए हुए हेनरी अपने काम में जुटा हुआ था और एक खास भैंस में से बहुत ही चुना हुआ मांस निकाल रहा था।

शॉ मुझ से अलग होने के बाद कुछ दूर तक नदी के नीचे की ओर किनारे-किनारे किन्हीं और भैंसों की टोह में निकल गया था। बहुत देर बाद उसने मैदान पर एक बड़े भारी भैंसों के समूह को फैले हुए देखा और तभी उसे हेनरी की गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। किनारे पर चढ़कर, घास में से सरकता हुआ, वह आगे बढ़ा। अभी वह बहुत आगे न बढ़ा था कि उसने

अगर आदिवासियों का कोई वार हम पर हो ही गया, तो हम उसका अधिक से अधिक अच्छी तरह मुकाबला करेंगे।

यहाँ से लगभग पचहत्तर मील दूर बेंट का किला नदी के किनारे खड़ा है। तीसरे दिन दोपहर के समय हम इससे तीन-चार मील दूर तक पहुँच गए। हमने अपना डेरा वहीं एक पेड़ के नीचे गाड़ दिया। इसके तने पर ही हमने शीशे लटकाए और दाढ़ी-मूँछ आदि साफ़ करके तथा नहा-धो कर किले की ओर निकल गए। हमने इसे तुरन्त ही देख लिया। इसकी ऊँची-ऊँची दीवारें तपते मैदानों में दूर से ही दिखाई दे जाती थीं। हमें लगा कि इस इलाके पर टिड्डियों ने हमला कर दिया था, क्योंकि हमें चारों ओर की मीलों तक की घास खाई नजर आती थी। सच यह था कि यह घास जनरल कीर्नी के घोड़ों ने खाई थी। जब हम किले में पहुँचे, तो हमने देखा कि घोड़ों ने केवल घास ही समाप्त नहीं की थी, बल्कि उनके स्वामियों ने उस किले के भण्डारों को भी बिल्कुल खाली कर दिया था। इसलिए हमें घर की यात्रा के लिए बहुत थोड़ी चीजें ही मिल सकीं। सेना के जाने के बाद किला भी उजाड़ और सुनसान-सा हो गया था। चारों ओर चुप्पी छाई हुई थी। कुछ अफ़सर और सैनिक, जो नाकाम हो चुके थे, इधर-उधर घूम रहे थे। चारों ओर गरमी बुरी तरह छाई हुई थी। चारों ओर की ऊँची सफ़ेद दीवारों के कारण चमकते सूर्य की धूप और भी ज्यादा तपती हुई लगने लगी। इस किले का स्वामी मौजूद नहीं था। हमें होल्ट नाम के एक सज्जन ने आदर दिया। इस समय किले का अधिकार उसके पास ही था। उसने हमें भोजन के लिए बुलाया। यहाँ हमें पहली बार मेज पर एक सफ़ेद कपड़ा, बीच में एक गुलदस्ता और चारों ओर कुर्सियाँ बिछी पाकर बहुत ही प्रसन्नता हुई। यह आनन्ददायक भोजन समाप्त होने पर हम अपने डेरे पर लौट आए। शाम के भोजन के बाद हम यहाँ पर चिलम पीते हुए आग के चारों ओर लेटे हुए थे कि तभी हमें किले की ओर से आते हुए तीन आदमी दिखाई दिए। वे हम तक घोड़ों पर सवार होकर आए और हमारे पास ही, जमीन पर ही, बैठ गए। इनमें सबसे पास का आदमी लम्बे कद का और अच्छा जानकार था। उसके चेहरे और व्यवहार ने हम में विश्वास जगा दिया। उसने एक चौड़ा टोप पहना हुआ था, हालांकि वह पुराना पड़ गया था। उसकी बाकी पोशाक एक कमीज और हिरण की

खाल के पाजामे की थी। उसके एक जूते की एड़ी में लोहे की एड़ी फँसी हुई थी। उसके घोड़े पर मैक्सिको-वासियों जसी काठी लदी हुई थी, जो भालू की खाल से ढकी हुई थी। इसके दोनों ओर की एड़ें बहुत बड़ी और लकड़ी की बनी हुई थीं। दूसरा आदमी बहुत छोटा, ठिगना और चुस्त था। उसका शरीर बहुत ही गठीला था। उसका चेहरा किसी मैक्सिकोवासी जैसा था। उसकी दाढ़ी बहुत घनी और मुड़ी हुई थी। उसने एक चिकना, पुराना, सूती रूमाल अपने सिर पर बाँधा हुआ था। उसकी हिरण की खाल की बनी कमीज़ बहुत सटी हुई थी। यह चिकनाई तथा बार-बार प्रयोग के कारण काली पड़ गई थी। इनमें से तीसरा आदमी बहुत ही मजबूत था और सीमांत के इलाके का पाजामा पहने हुए था। यह बहुत ही सुस्ती के साथ सरकता हुआ-सा चल रहा था। उसकी सलेटी रंग की आँखें नींद से भरी दिखाई देती थीं। उसकी ठोडी कुछ पिचकी हुई-सी, मुँह कुछ खुला हुआ-सा और ऊपर का होठ कुछ फूला हुआ-सा लग रहा था। इन सबसे वह एक बहुत ही सुस्त और निकम्मा व्यक्ति लगता था। उसके पास अमरीका का एक पुराना हथियार था। इससे उसने कोई निशाना तो न साधा था, पर तो भी वह इसे आग उगलने वाले हथियार की निशानी के रूप में अपने पास रखता था।

पहले दोनों आदमी कैलिफोर्निया से आने वाले दल से सम्बन्ध रखते थे। उनके पास बहुत से घोड़े थे, जिन्हें उन्होंने बेंट के किले में बेच दिया था। इनमें से लम्बे आदमी का नाम मुनरो था। वह इयोवा के इलाके का था। वह बहुत ही अच्छे स्वभाव का, खुले दिलवाला और बुद्धिमान् आदमी था। दूसरा आदमी बोस्टन का एक मल्लाह था, जिसका नाम जिमगुर्नी था। वह कैलिफोर्निया तक एक व्यापारी जहाज में आया था। अब उसकी इच्छा थी कि सारे महाद्वीप पर पैदल ही पार जाए। इस यात्रा ने उसे पहले ही एक अच्छा खासा "पहाड़ी" बना दिया था। वह एक अजीब प्रकार का मल्लाह बन चुका था, जो घोड़े की सवारी भी पूरी तरह जानता था। हमारे तीसरे अतिथि का नाम एलिस था, जो मिसूरी का रहने वाला था, और जो ओरेगन के प्रवासियों के साथ आया था। परन्तु ब्रिजर के किले तक आकर वह घर लौटने के लिए उतावला हो उठा था। उसने, इसीलिए इन लोगों के साथ मिलकर घर की ओर लौटना उचित समझा।

उन्होंने प्रार्थना की कि वे लोग भी हमारे दल के साथ मिलकर बस्तियों तक साथ-साथ ही यात्रा कर सकें। हमने इन लोगों को तुरन्त स्वीकृति दे दी, क्योंकि हमें पहले दोनों आदमियों के अनुभव से लाभ मिलने का पूरा विश्वास था। हमने उन्हें अगली शाम नदी के किनारे, यहाँ से छः मील दूर, एक खास जगह पर मिलने के लिए कहा। हमारे साथ कुछ देर तम्बाकू पीकर हमारे साथी हमसे विदा हुए। हम भी नींद लेने के लिए लेट गए।

—: ० :—

२२ : तेत रूज : स्वयंसेवक

अगली सुबह देस्लारियर को गाड़ी ठीक करके मिलने की जगह पर ले जाने की बात कह कर हम लोग एक बार फिर किले की ओर चले, ताकि यात्रा का पूरा प्रबन्ध किया जा सके। इन प्रबन्धों को पूरा करने के पश्चात् हम कुछ आदिवासियों के साथ तम्बाकू पीने के लिए ड्योढ़ी में बैठे। कुछ ही देर में हमने एक बहुत ठिगना आदमी सैनिक की-सी वर्दी पहने अपनी ओर ओर आते देखा। वह छोटे गोल चेहरे, खुरनुमा गड्ढों के बीच धँसी आँखों और लाल घुँघराले बालों के साथ अजीब-सा लग रहा था। उसने एक छोटी-सी टोपी भी पहन रखी थी। लगता था कि वह खाने-पीने के मामले का उस्ताद होगा। पर मैदानी जीवन की कठिनाइयों से वह बिल्कुल अनजान था। वह हमारे पास आया और उसने हमसे प्रार्थना की कि हम उसे बस्तियों की ओर अपने साथ ले चलें, नहीं तो उसे सारी सर्दियों-भर, यहीं, किले में ही, रहना होगा। हमें उसकी शक्ल कतई अच्छी नहीं लगी। इसलिए हमने उसकी प्रार्थना को मानने से इन्कार कर दिया। अब वह इतनी अधिक प्रार्थना करने लगा कि हम मानने को मजबूर हो गये। वह बहुत ही निराश था। उसने हमें बहुत ही दुःख से भरी कहानियाँ सुनाई थीं। इस पर भी हमें उससे पूरी तसल्ली नहीं हुई।

हमारे इस नये अंग्रेज साथी का नाम कुछ इतना अजीब और बेतुका-सा था, कि हमारे दोनों फ्रांसीसी सेवक बहुत कोशिश करके भी उसे बोल न सके। तब हार कर हेनरी ने उसका नाम 'तेत रूज' रख डाला। यह नाम उसके लाल बालों के कारण रखा गया था। वह कभी किसी जहाज में लेखक रहा था। कभी किसी बस्ती में किसी व्यापारी का दलाल बन कर रहा था। अन्य अनेक जगहों पर वह कुछ और नौकरियाँ भी कर चुका था। पिछले बसन्त में वह गर्मियों की यात्रा का इरादा लेकर स्वयंसेवकों के एक दल के साथ निकल पड़ा था।

उसने बताया, "हम तीन आदमी थे। हम ने सोचा कि हम सेना के साथ

चलेंगे और देश को जीतने के बाद जब हम सेना से छोड़ दिए जाएँगे, तो अपनी तनखाह ले कर मैक्सिको जा कर आनन्द मनाएँगे। वहाँ से फिर हम 'वेरा क्रूज़' होते हुए न्यू ऑर्लियन्स लौट जाएँगे।"

पर रूज का यह विचार बिल्कुल गलत था। मैक्सिकोवालों से लड़ना उतना आसान न था, जितना उसने सोचा था। इस यात्रा के बीच में ही उसे दिमाग़ी बुखार चढ़ आया। यह बुखार उसे बेंट के किले की ओर जाते हुए हुआ था। उसके बाद उसने बाकी सफर सामन लादने वाली एक गाड़ी में किया। जब वे किले पर पहुँचे तब उसे अन्य बीमार आदमियों के साथ वहीं छोड़ दिया गया। यह किला बीमारों के लिए बहुत अच्छा नहीं था। रूज को एक मिट्टी के कमरे में रहना पड़ा। यह और उसका एक अन्य साथी वहाँ एक ही भैंसे की खाल पर, जमीन पर ही, सो जाते थे। डाक्टर का सहायक आ कर उन्हें देख जाता और दवाई दे जाता था। वह केवल 'कैलोमल' नाम की दवाई ही देनी जानता था।

रूज ने एक सुबह जाग कर देखा, उसका साथी मर चुका था। उसका अपना दिमाग़ घबरा गया। उसे कुछ होश-सी आई। वह कभी डाक्टर और कभी कैलोमल की बात सोचता। वह इस किले में पहुँचने पर भी अपने दिमाग़ से वह डर न निकाल सका था। अपने साथी की मौत के बाद भी उसके चेहरे पर कुछ इस प्रकार का भाव था कि हम हँसे बिना न रह सके। उसने पोशाक तो सैनिक की पहनी हुई थी, पर व्यवहार बिलकुल उल्टा ही कर रहा था। हमने उससे पूछा कि उसकी बन्दूक कहाँ है? उसने बताया कि उसकी बीमारी में किले के लोगों ने उससे बन्दूक ले ली थी। तब से उसे वह दिखाई नहीं दी थी। उसने आशा प्रकट की कि शायद हम अपनी एक बड़ी पिस्तौल उसे किसी आदिवासी से सामना होने पर, दे देंगे। इसके बाद मैंने घोड़े के बारे में पूछा। उसने बताया कि वह बहुत शानदार है। शॉ के कहने पर एक आदिवासी उस घोड़े को ले आया। घोड़ा देखने में अच्छा लगता था, परन्तु भूख के कारण उसकी हड्डियाँ उभर आई थीं और उसकी आँखें गढ़ों में धंस गई थीं। उसके कंधों पर कुछ निशान भी थे। देखने से साफ़ लगता था कि उसकी बीमारी के दिनों में लोगों ने उसे तोपों में जोता था। तेत रूज को अचरज हुआ, जब हमने उसे घोड़े की बजाय खच्चर लेने

को कहा। किले के लोग उससे इतने तंग आ गये थे कि वे उसे कुछ भी देकर छुटकारा पाने के लिए उतावले थे। इस प्रकार उसे अपने रद्दी घोड़े के बदले एक अच्छा खच्चर मिल गया।

एक आदमी तुरन्त ही खच्चर को रस्सी के सहारे लेकर दरवाज़े पर आया। उसने उसको रूज़ के हाथ में पकड़ा दिया। अपने इस नये पशु से घबरा कर रूज़ ने अपना रोब जमाने के लिए, उसे अनेक प्रकार के हुक्म देने चाहे और आगे आने को कहा। खच्चर यह सोचकर कि उससे आगे बढ़ने को कहा जा रहा है, अपनी जगह पर ही चट्टान की तरह जम गया। वह ऐसे देखने लगा, जैसे वह कुछ समझा ही न हो। पीछे से मुक्का मारने के बाद वह बढ़ने लगा और किले के दूसरी ओर तक दौड़ता हुआ भाग गया। देखने वालों को हँसता देखकर रूज़ ने हौसला बाँधा और रस्सी को खींच लिया। खच्चर पीछे की ओर उछला और चक्कर काट कर दरवाज़े की ओर दौड़ा। रूज उसकी रस्सी को पकड़ कर कुछ दूर तक उसके साथ ही घिसटता हुआ चला गया। तब उसने रस्सी छोड़ दी और खुद खच्चर के पीछे मुँह बाए खड़ा देखता रहा। खच्चर मैदान पर बहुत दूर भाग गया। उसे एक मैक्सि-सकोवासी जल्दी ही वापिस ले आया।

इस प्रकार मैदान के सफ़र के लिए अपनी योग्यता दिखाने के बाद रूज अपना सामान लेने के लिए किले की ओर गया। किले में जाकर वहाँ ठहरे एक सैनिक अधिकारी से उसने अपना सामान माँगा। यह अधिकारी खुद भी सेना द्वारा पीछे छोड़ा जाने के कारण बहुत दुःखी और अपमानित था। वह भी रूज से छुटकारा पाने को उतावला था। इसलिए उसने चाबी निकाली और नीचे की ओर खुलने वाला एक दरवाज़ा खोल कर जमीन में बने तहखाने में चला गया। थोड़ी देर बाद वे दोनों बाहर आये। रूज बहुत सारे बंडलों के कारण परेशान था। ये सारी चीजें गाड़ी में रख दी गईं, जो कि उस समय तक मिलने के निश्चित स्थान की ओर चल पड़ी थी।

तब हमने रूज से कहा कि अगर किसी तरह हो सके, तो उसे एक बन्दूक भी अपने लिए ले लेनी चाहिए। इसके लिए भी उसने किले के बहुत से लोगों की मिन्नत की। पर, किसी ने भी उसकी सहायता न की। इस हालत से हमें कोई खास परेशानी नहीं हुई, क्योंकि अगर कहीं कोई झड़प हो ही गई,

तो वह हमारी सहायता के बजाय कोई नुकसान ही कर बैठेगा। जब ये सब तैयारियाँ पूरी हो गईं तो हमने अपने घोड़ों की काठियाँ कसीं और किले को छोड़ने को तैयार हो गये। इसी समय हमने देखा कि हमारा नया साथी फिर एक मुसीबत में जा फँसा है। एक आदमी ने उसका खच्चर किले के बीचों-बीच थाम रखा था और रूज़ उस पर काठी रखने की कोशिश कर रहा था। खच्चर बार-बार इधर-उधर हिलकर या कभी चक्कर काट कर उसे परेशान कर रहा था। इन सब मुसीबतों से छुटकारा पाने के लिए उसे सहायता की ज़रूरत थी। बहुत देर बाद वह अपनी युद्ध की काली काठी पर बैठ गया। शायद इसी काठी पर बैठकर वह मैक्सिको के युद्ध के लिए जाता। तब उसने खच्चर को आगे बढ़ने का हुक्म दिया।

खच्चर बहुत शरारत के साथ आगे बढ़ने लगा। उसकी हाल की हरकतों ने रूज़ को इतना डरा दिया था कि अब वह चाबुक मारने को भी तैयार न था। हम बहुत तेज़ी से मिलने के निश्चित स्थान की ओर बढ़े। अभी हम बहुत दूर न गये थे कि हमने मुड़कर देखा, रूज़ का खच्चर एक जगह खड़ा होकर घास चर रहा था। इसलिए उसके पीछे होकर हमने उसे बढ़ाना शुरू किया। तभी हमें कुछ दूरी पर आग चमकती हुई दिखाई दी। इस समय साँझ हो चुकी थी। मुनरो, जिम, और एलिस उस आग के आस-पास लेटे हुए थे। उनकी काठियाँ, गट्ठड़, और हथियार इधर-उधर पड़े हुए थे। और, उनके घोड़े उनके पास ही बँधे हुए थे। हमारी गाड़ी और गाड़ीवान भी वहाँ मौजूद थे। तुरन्त ही हमारे लिए भी आग धधकने लगी। हमने अपने नये मित्रों को कॉफ़ी पर बुलाया। चाय के बाद बाकी दोनों तो अपनी ओर चले गये, पर जिम गुर्नी कुछ देर हमारी आग के पास ही खड़ा-खड़ा तम्बाकू पीता रहा।

उसने कहा, "हम लोग आठ हैं, पर हमें छः मानकर ही चलना चाहिये। हमारे साथ एलिस और यह आपका नया साथी दोनों ऐसे हैं, जिन्हें न गिनना ही अच्छा है। हमें किसी भी कठिनाई से डरना नहीं चाहिए। हम उसके मुकाबले के लिए काफी हैं। बस डर हो सकता है तो केवल 'कमांचे' नामक आदिवासी लोगों से ही।"

---

२३ : आदिवासियों का खतरा

हमने बस्तियों की ओर अपनी यात्रा सत्ताईस अगस्त के दिन शुरू की। शायद हमसे अधिक किसी और छोटी और बेतरतीबी टुकड़ी ने कभी उत्तरी अरकंसास के किनारे यात्रा न की होगी। जब हम सीमान्त से बसंत के दिनों में चले थे, तब हमारे पास बहुत सुन्दर और बड़े घोड़े थे। परन्तु आज उनमें से एक भी नहीं रहा था। हमने उनका स्थान मैदानी किस्म के घोड़ों को दे दिया था। ये घोड़े खच्चरों जैसे ही कठोर और भद्दी किस्म के थे। हमारे साथ अब बहुत से खच्चर भी थे। हालांकि उनमें ताकत और कठोरता काफ़ी अधिक थी, फिर भी बहुत अधिक सेवा और कठिन यात्रा के कारण उनमें से बहुत से कमजोर पड़ चुके थे। इनमें से एक के भी खुर ठुके हुए नहीं थे। इसलिए बहुत जल्दी ही बहुतों के पांव सूजने शुरू हो गए। हर घोड़े और खच्चर पर एक रस्सी बँधी हुई थी, जो कि भैंसे की खाल से बनी हुई थी। हमारी काठियाँ और सारा सामान भी लगभग खराब हो चुका था। हमारे हथियार भी जंग खाए हुए और कमजोर पड़ चुके थे। घुड़सवारों की पोशाक भी घोड़ों की हालत से अच्छी न थी। सारा दल बहुत ही बुरी हालत में दिखाई दे रहा था। शॉ ने ऊपरी पोशाक के तौर पर लाल फलालैन की एक कमीज पहनी हुई थी, जब कि मैंने और कोई कपड़ा न पाकर हिरण की खाल की ही पोशाक पहन ली थी।

इस प्रकार चिन्ता से रहित होकर हम लोग खुशी-खुशी, भिखारियों से बने हुए, आगे बढ़ने लगे। यह यात्रा हर रोज एक जैसी होने के कारण उकता देने वाली सिद्ध हुई। रूज हमें लगातार मुसीबतें देता रहता। न तो वह कभी अपने खच्चर को पकड़ पाता, न उसपर काठी रख पाता और न ही कोई और काम बिना किसी की सहायता के कर पाता। हर रोज उसकी कोई नयी शिकायत उठ खड़ी होती। एक क्षण वह दु:खी और निराश लगने लगता, तो दूसरे ही क्षण उसका दिल खुशी से पागल दिखाई देता। वह हँसता हुआ इधर-उधर की कहानियाँ कहने लगता। जब किसी भी तरीके से वह काबू न

आता तब हम उसे सताकर मज़ा लेते। इसी सताने में हम उसके दिए दुःखों का बदला चुकाने का यत्न करते। हम उसपर हँसते, पर वह इसे भी अपना आदर समझता। वह कमज़ोरी, अच्छा स्वभाव और पागलपन का एक मिला-जुला नमूना था। उसकी चाल को देखकर वह एक चित्रकारी का नमूना दिखाई देता था। खच्चर पर चढ़े हुए और भैंसे की खाल के कपड़े पहने वह किसी तस्वीर में बैठे हुए सैनिक की भाँति लगता था। यह पोशाक उसे किसी ने दया करके दी थी। यह इतनी बड़ी थी कि इसमें उस जैसे दो आदमी समा जाते। इस पर भी उसने इसे पलटकर पहना और कभी भी, कठिन-से-कठिन गर्मी में भी इसे उतारा नहीं। सब तरफ़ से इसकी सीवन उखड़ी हुई थी। पुरानी होने के कारण खाल जगह-जगह से फट गई थी। इस खाल के ऊपर उसके लाल बालों का एक गुच्छा-सा दिखाई दे रहा था। सिर पर रखी हुई टोपी से लगता था कि वह सैनिक है। काठी पर उसके बैठने की जगह, खुद उसके लिहाज़ से, बुरी न थी। उसने अपने पाँव घोड़े की अगल-बगल से अन्दर को दबाकर और बाहर की ओर तिरछे करके मोड़ रखे थे। उसके पाजामे सैनिकों की भाँति लाल धारी से सजे हुए थे। इसका उसे बहुत गर्व था। पर, पाजामा छोटा होने के कारण उसके जूते बिल्कुल साफ़ ऊपर तक दिखाई दे रहे थे। उसका कम्बल एक गठरी के रूप में बँधा हुआ, उसकी काठी की पीठ से लटक रहा था। हर कुछ मिनट के बाद वह चिलम, चाकू, पत्थर, लोहा, तम्बाकू या कोई और चीज़ गिरा बैठता और फिर उन्हें उठाने के लिए रुकता। इन सब बातों में वह हर एक के लिए मुसीबत खड़ी कर देता। गुस्से में आकर हमारे दल के लोग भी, सभ्य भाषा की बिना परवाह किए, उसे नये-नये विशेषणों से सजाते रहते। अन्त में तंग आकर वह भी अपनी जिन्दगी और साथियों को कोसने लगता।

बॅंट के किले से निकलने के एक या दो दिन बाद ही हेनरी एलिस को लेकर कुछ दूर तक शिकार खोजने निकल गया। वे कुछ देर हमसे अलग रहकर सामने की पहाड़ी से उतरते हुए दिखाई दिए। उनके साथ सेना के तीन घोड़े थे, जो अपने मालिकों से, चढ़ाई के समय, भाग निकले थे। मालिकों ने भी उन्हें ढूँढना छोड़ दिया था। उनमें से एक की हालत काफ़ी अच्छी थी। पर, बाकी दोनों काफ़ी कमज़ोर और भेड़ियों के सताए लगते थे। हमने उनमें

से दो अपने साथ, बस्तियों तक, ले लिए और तीसरे को हेनरी ने अरापाहो लोगों से एक अच्छे खच्चर के बदले में बदल लिया।

अगले रोज जब दोपहर को हम आराम के लिए रुके तो सांताफे आनेवाली गाड़ियों की एक लम्बी कतार हम तक आई और धीरे-धीरे एक शानदार जलूस के रूप में आगे निकल गई। इनके व्यापारी का नाम मैगोफिल था। इसका भाई बहुत से और लोगों को लेकर आया और हमारे साथ कुछ देर घास पर ही बैठ गया। ये लोग जो समाचार अपने साथ लाए थे, वे बहुत अच्छे न थे। उन्होंने बताया कि आगे के इलाकों की यात्रा बहुत बुरी है। उन्होंने बीसियों बार आदिवासियों को अपने डेरों के आस-पास घूमते हुए पाया था। हमसे कुछ हफ्ते पहले जो बड़ा दल बेंट के किले से चला था, उसपर आदिवासियों ने हमला कर दिया था। उनमें से स्वान नाम का एक आदमी मारा भी गया था। उसके साथियों ने उसका शरीर दफना दिया था। परन्तु, इस व्यापारी ने उसकी कब्र को 'कैचेज़' नाम की जगह के पास जब देखा, तब तक उसे आदिवासी खोदकर उसकी खोपड़ी अलग कर चुके थे, और भेड़ियों ने उसके बाकी शरीर का बुरा हाल कर दिया था। इसके साथ ही उन्होंने यह भी अच्छी खबर दी कि कुछ दिन की यात्रा के बाद हमें असंख्य भैंसे मिलने लगेंगे।

अगले दिन दोपहर बाद जब हम नदी के किनारे-किनारे बढ़े तो क्षितिज के पास सफ़ेद गाड़ियों की लम्बी कतारें दिखाई दीं। जब कुछ देर बाद हम उन लोगों से मिले, तो ये सरकारी बैलगाड़ियाँ साबित हुईं। ये सांताफे के व्यापारियों की गाड़ियों से कतई भिन्न थीं और इनमें सरकार का सामान भरा हुआ था। यह सामान सेनाओं के लिए भेजा जा रहा था। ये सब रुक गए और इनके गाड़ीवान आकर हमारे चारों ओर जमा हो गए। उनमें से बहुत से अभी छोटी उमर के थे और खेतों को छोड़कर सीधा ही इस काम में जुट गए थे। रास्ते की हालत ने व्यापारियों की बताई हर बात को सच साबित कर दिया। 'पौनीफोर्क' और 'कैचेज' के बीच में से गुज़रते हुए इनके पहरेदारों ने आदिवासियों को पास आता समझकर कई बार गोलियाँ चलाई थीं। उन्होंने बताया कि एविंग नाम के एक युवक ने एक आदिवासी का सिर काटा था। यह युवक वही था, जो हमसे कुछ दिन पहले निकल पड़ा था। इन में से

कुछ लोगों ने हमें लौटने की सलाह दी और कुछ ने हमें जल्दी-से-जल्दी आगे बढ़ने की सलाह दी। पर, सभी लोग बहुत अधिक चिन्तित और घबराए हुए दिखाई दे रहे थे। उनका दिल ठिकाने न था। हमने भी उनकी बात को पूरा महत्त्व नहीं दिया। इसके बाद उन्होंने हमें एक और खबर दी। नीचे, नदी के किनारे, अरापाहो लोगों का एक बड़ा गाँव डेरा डाले पड़ा था। उन्होंने बताया कि वे मित्र हैं। परन्तु हम जानते थे कि एक बड़े दल और हमारे जैसे छोटे-से दल की हालत में काफ़ी अन्तर था और आदिवासी मौके को अच्छी तरह समझते थे।

अगले दिन दोपहर बीतते ही जब हम बढ़े तो हमने क्षितिज पर आरे के दाँतों की भाँति कुछ उठा हुआ देखा। ये थे अरापाहो लोगों के घर जो कुछ दूरी पर उठे हुए थे। हमें यहाँ तक पहुँचने में दो-तीन घंटे लग गए। ये मकान संख्या में दो सौ के लगभग थे और नदी के पार कुछ दूरी पर एक चरागाह में खड़े थे। नदी के दोनों ओर, एक मील तक, अरापाहो लोगों के घोड़े या खच्चर समूहों में या अकेले-दुकेले चर रहे थे। यह सब कुछ एक साथ ही हमारी निगाह में आ गया; क्योंकि बीच में न तो कोई पहाड़ी ऊँची उठी हुई थी और ना ही कोई पेड़ या झाड़ियाँ रुकावट बनकर खड़े थे।

इधर-उधर कोई घुड़सवार आदिवासी पहरे के काम में लगा हुआ दिखाई दे जाता था। अभी हमें ये दिखाई ही दिए थे कि रूज ने देस्लारियर को, गाड़ी रोक कर, अपनी सैनिक पोशाक देने के लिए कहा। इसमें सज-धज कर वह अपनी काठी पर बैठकर सजा हुआ सैनिक लगने लगा। बाईं ओर को अपनी टोपी मोड़कर वह एक उद्धत सैनिक की भाँति आगे बढ़ने को तैयार हुआ। उसने हमसे आधे घंटे के लिए बन्दूक या पिस्तौल माँगी। जब हमने उससे इस सबका कारण पूछा तो उसने बताया कि वह जानता है कि आदिवासी लोग सैनिक को उसकी पोशाक में देखकर घबरा जाते हैं। उसकी इच्छा थी कि उसे देखकर आदिवासी यह भली भाँति समझ लें कि इस दल में भी कोई सैनिक मौजूद है।

इस नदी के किनारे इन आदिवासियों से मिलना इनके पहाड़ी निवास स्थानों में मिलने से कतई भिन्न किस्म का होता है। एक और भी बात हमारे हक में हुई। हमसे कुछ हफ्ते पहले ही जनरल कीर्नी अपनी सेनाओं के साथ

इधर से गुजरे थे और उन्होंने इन्हें पिछले साल की तरह धमकी दी थी कि अगर एक भी गोरे आदमी का बाल बाँका हुआ, तो उसका भयंकर बदला लिया जाएगा। इस बात ने उनका दिमाग दुरस्त कर दिया था। अब तक वे फिर से बिगड़े नहीं थे। मेरी इच्छा गाँव और उसके निवासियों को देखने की हुई। इसके लिए हमने यह अधिक उचित समझा कि उनके बीच खुले रूप में जाया जाए। शॉ, मैं और हेनरी नदी पार करने के लिए बढ़े। इस बीच बाकी दल को इसने पूरी तेज़ी के साथ आगे बढ़ने के लिए कह दिया; ताकि वे इन आदिवासियों की पहुँच से, रात आने से पहले ही, दूर निकल जाएँ।

इस जगह अरकंसास नदी केवल रेतीली ही रह जाती है। उसमें पानी की पतली धारा बहती है। यह बात यहाँ से सैकड़ों मील दूर तक ऐसी ही चलती है। सर्दियों में कुछ जगहों पर रेत में समाकर पानी गुम हो जाता है। इस मौसम में हम इस नदी को बिना कठिनाई के अच्छी तरह पार कर सकते थे, भले ही इसकी धार कई जगह चार सौ गज से अधिक चौड़ी हो गई थी। हमारे घोड़े नदी के किनारे उछलकर नीचे उतरे और तुरन्त ही नदी पार करने लगे। मिट्टी सख्त थी इसलिए उछलते हुए जल्दी ही दूसरी ओर पहुँच गए। यहाँ ऊँची घास में से होते हुए हमने नजदीक ही कुछ आदिवासियों को देखा। उनमें से एक हमारे आने की प्रतीक्षा करता रहा और हमारे पास पहुँचने पर भी चुपचाप खड़ा रहा। वह अपनी छोटी साँप जैसी आँखों से हमारी ओर प्रश्न की दृष्टि से देख रहा था। अपने इशारों से हेनरी ने उसे समझाया कि हम क्या चाह रहे थे? तब वह आदिवासी अपने लबादे को सँभाल कर हमारे आगे-आगे बिना बोले ही, चलता हुआ हमें गाँव की ओर ले चला।

अरापाहो लोगों की भाषा इतनी कठिन है—और इसका बोलना तो और भी कठिन है—कि शायद ही कभी कोई गोरा इसे पूरी तरह सीख पाए। इन लोगों में रहने वाला व्यापारी मैक्सवैल भी सालों तक रहकर इनकी भाषा को न सीख सका, और उसने भी इशारों की वह भाषा ही सीखी, जो इन मैदानी इलाकों के सभी कबीले प्रयोग करते हैं। इशारों की यह भाषा हेनरी को खूब आती थी।

गाँव के पास पहुँचकर हमने चारों ओर भैंसों का बिखरा हुआ मांस, ढेरियों के रूप में, पड़ा पाया। सारे मकान एक घेरे के रूप में गाड़े गए थे।

ये डाकोटा जाति के लोगों के घरों के समान ही थे। इनकी सफ़ाई अवश्य उनसे कम थी। दो घरों के बीच से होते हुए हम बीचों-बीच आ गए। हमने तुरन्त ही सैकड़ों मर्दों, औरतों और बच्चों से अपने को घिरा हुआ पाया। उसी समय गाँव के चारों ओर कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया। हमारा पथ-प्रदर्शक हमें मुखिया के घर की ओर ले चला। यहाँ हम घोड़ों से उतरे और उनकी खोजी रस्सी खोलकर हम दरवाजे के सामने खड़े हो गए। हमारी बन्दूकें हमारे पास थीं। मुखिया ने बाहर आकर हमसे हाथ मिलाया। वह बहुत ही नीच किस्म का आदमी था। उसका कद लम्बा और चेहरा पतला था। वह अपनी बाकी जाति की भाँति ही अच्छे कपड़े आदि भी नहीं पहने हुए था। अभी हम कुछ मिनट ही बैठे थे कि चारों ओर एक अच्छी खासी भीड़, गाँव के कोने-कोने से आकर, जमा हो गई। हम चारों ओर से उन असभ्य चेहरों से घिर गए। कुछ दर्शक हमारे चारों ओर जमीन पर ही बैठ गए। कुछ उनके पीछे बैठ थे और कुछ झुके या खड़े हुए थे। उनमें हर कोई हमें देखने को उतावला था। मैंने इस सारी भीड़ में एक भी सभ्य या उदार शक्ल न देखी। सभी की शक्ल भेड़ियों जैसी भयंकर और खूँखार दिखाई दे रही थी। डाकोटा लोगों की अपेक्षा इनका रंग और इनकी शक्ल बहुत ही बुरी थी। सरदार दरवाजे के पास बैठा था। उसने वहीं से अपनी पत्नी को बुलाया और उसने आकर हमारे सामने लकड़ी के बर्तन में मांस परोस दिया। हमें यह देखकर अचरज हुआ कि भोजन के बाद चिलम नहीं पी गई। मांस का स्वाद चखने के बाद मैंने भेंटों का पुलन्दा खोला। उसमें तम्बाकू, चाकू और केसर आदि बहुत-सी चीजें थीं। इसे देखकर उस असभ्य भीड़ का हर चेहरा मुसकराता हुआ नजर आया। उनकी आँखें चमकने लगीं और हर एक के हाथ कुछ-न-कुछ माँगने के लिए फैल गए।

अरापाहो लोग अपनी ढालों को बहुत महत्त्व देते हैं। ये खानदानी तौर पर चलती आती हैं। मैंने एक ऐसी ही ढाल उनसे माँगनी चाही और इसके लिए एक लाल रूमाल बिछाकर कुछ और भेंटें सामने रक्खीं। मैंने उनमें से किसी भी ऐसे आदमी को यह भेंट देने का वायदा किया जो मुझे ढाल लाकर दे सके। काफी देर बाद एक अच्छी-सी ढाल हमारे सामने लाई गई। वे यह जानना चाहते थे कि आखिर हम इसे क्या करेंगे ? हेनरी ने बताया कि हम

उनके दुश्मन पौनियों से लड़ने जा रहे हैं। इस बात ने उन सब पर बहुत ही अच्छा प्रभाव डाला। यह प्रभाव हमारी भेंटों से और भी गहरा हो गया। हमने औरतों के लिए भी कुछ भेंटें दीं, क्योंकि हम उन लोगों की सुन्दरता भी देखना चाहते थे। हेनरी ने यह बात उन्हें बताई और औरतों को बुलाने के लिए कहा। तब एक सैनिक ने जोर की आवाज लगाई। जवान और बूढ़ी औरतें एक साथ ही दौड़ती और हँसती हुई वहाँ पर जमा हो गईं। सबके हाथ भेंटों के लिए आगे बढ़ गए। सभी एक-दूसरे से बढ़कर भद्दी और बद-सूरत लग रही थीं।

अपने घोड़ों पर चढ़कर हम उनसे जुदा होने लगे। दोनों तरफ़ की भीड़ ने छँटकर हमें रास्ता दिया। अभी हम आधा ही गाँव पार कर आए होंगे कि हमें एक बात सूझी। शायद पौनी लोग 'कैंचेज़' के आसपास थे। हमने यह उचित समझा कि अरापाहो लोगों को यह बात समझा दी जाए और उन्हें अपना एक लड़ाकू दल उनकी ओर भेजने के लिए कहा जाए। इस बीच हम खुद पीछे रुककर भैंसों का शिकार करते रहें। पहले-पहल तो यह विचार हमें बहुत ही कमाल का लगा परन्तु, तुरन्त ही हमें यह ध्यान आ गया कि अगर कहीं ये ही अरापाहो सैनिक हमें नदी के नीचे के मैदानों में, अकेले में, टकरा गए तो हमारे लिए बहुत खतरनाक साबित हो सकते हैं। इसलिए अपने इस इरादे को वहीं छोड़कर हम गाँव से बाहर निकल आए। अब ऊँची-ऊँची घास में से हमने अपने घोड़ों को दौड़ा दिया। इसमें कुछ दूरी पर कुछ आदिवासी घूम रहे थे। ऊपर से हिलते हुए उनके चेहरे दिखाई दे जाते थे। इस घास पर जौ जैसे कुछ दाने भी लगे हुए थे, जो बहुत ही स्वादु और अच्छे थे। चाबुक और लगाम के बरतने के बाद भी हमारे घोड़े इस आराम से मिले भोजन को खाने का लोभ न रोक सके। गाँव से मील भर दूर आकर मैंने घास के इस लहराते हुए समुद्र को मुड़कर देखा। अभी सूर्य अस्त होकर ही चुका था। पश्चिम का आकाश पूरी तरह चमक रहा था और इसके आगे मैदान में खड़ा हुआ अरापाहो लोगों का गाँव दिखाई दे रहा था।

नदी के किनारे पहुँचकर कुछ दूर तक हम इसके साथ-साथ चले और तब हमने तारों के हल्के प्रकाश में दूसरे किनारे पर अपनी गाड़ी की सफेद छत को पहचान लिया। जब हम उस तक पहुँचे, तो वहाँ बहुत से आदि-

वासियों को जमा पाया । वे जमीन पर ही बैठे हुए थे, जैसे बहुत दिनों से भूखे हों। रूज अपनी पोशाक में सजा-धजा गाड़ी के पास ही खड़ा हुआ उन्हें इशारों में कुछ समझा रहा था । जब उसके इशारे सफल हो गए, तो उसने अंग्रेजी के शब्दों को ही कुछ ऊँचे से बोल कर उन पर रोब जमाना शुरू किया। आदिवासी उसके सामने जड़ से बने बैठे थे । उनके चेहरों से यह साफ़ था कि वे लोग इस सैनिक की असलियत को पहचान चुके हैं । इस बात को देखकर हमें हँसी आ गई । हमने उसे जल्दी-से-जल्दी अपनी बात खतम करने को कहा। डाँट खाकर ही वह एक दम ही दुबक कर वहीं बैठ गया । हेनरी ने उसे देखा और बहुत धीरज और शान्ति से कहा कि कोई भी आदिवासी ऐसे-ऐसे दस आदमियों को मारकर भी हँसता ही रहेगा ।

एक-एक करके दर्शक उठे और चले गए । अधिक अँधेरा होने पर हमारा स्वागत एक और किस्म की आवाजों ने किया । भेड़िये इस इलाके में बहुत होते हैं । खासकर अरापाहो लोगों के खेमे के चारों ओर फेंके गए मांस के कारण तो उनकी संख्या बहुत अधिक बढ़ गई थी । नदी के बीचों-बीच एक हरा टापू जैसा था । वह हमारे निशाने की पहुँच में ही था । ये भेड़िये वहीं पर जमा थे । उनकी रोने की-सी आवाजें और गुस्से भरी चीखें सूरज छिपने के कुछ घंटे बाद तक लगातार उठती रहीं । हम भेड़ियों को भागते हुए साफ़-साफ़ देख सकते थे । ये हमारे डेरे के पास से ही मैदान पर भागते हुए या नदी के रेत पर अथवा उसके पानी में मचलते हुए दिखाई दे जाते थे । इनसे हमें कुछ भी खतरा न था, क्योंकि इन मैदानों में सबसे अधिक कायर ये जानवर ही होते हैं ।

अपने पास के इन्सानी भेड़ियों की ही परवाह हमें अधिक थी । उस रात हर आदमी अपनी बन्दूक भरकर और बगल में ही रखकर सोया । हमारे घोड़े भी बिल्कुल पास ही बाँधे गए । हम लोगों को पहरा रखने की आदत नहीं थी, पर फिर भी हर कोई बहुत चौकन्ना बना हुआ था । उस रात हममें कोई भी गहरी नींद न सो सका और सारी रात एक-न-एक उठकर, चौकन्ना होकर, इधर-उधर घूमता ही रहा । खुद मैं इसी तरह जागता और सोता आधी रात तक लेटा रहा । रूज नदी के किनारे की ओर सोया था । परन्तु मैंने देखा कि चारों हाथों-पाँवों के बल वह गाड़ी के नीचे खिसक आया । इसके

बाद मैं गहरी नींद में सो गया। थोड़ी देर में ही किसी ने कंधा हिलाकर मुझे जगाया। मैंने देखा कि डरा हुआ पीला चेहरा लिए रूज मुझे जगा रहा है। मैंने उससे कारण पूछा। उसने बताया कि जब वह नदी-किनारे सो रहा था, कोई उसे दिखाई दे गया और उसे कुछ सन्देह हुआ। इसलिए अपने को बचाने के लिए वह गाड़ी नीचे छिप कर देखने लगा। तब उसने देखा कि दो आदिवासी कुछ आगे बढ़े और सारे घोड़ों को लेकर भाग निकले। वह इतना डरा हुआ और बेतुका-सा लग रहा था कि उस पर विश्वास नहीं आया। मैं नहीं चाहता था कि और लोगों को जगाया जाए। फिर भी, यह हो सकता था कि यह बात सच हो और इस पर तुरन्त ध्यान देना पड़े। इसलिए मैंने अपनी बन्दूक पकड़ी और उसे वह राह बताने को कहा, जिधर आदिवासी गए थे। नदी के किनारे, दो-तीन सौ गज तक, इधर-उधर चौकन्ने होकर ध्यान देते हुए हम आगे बढ़े। मुझे दाईं तरफ मैदान में कुछ भी चौंका देने वाली चीज न दिखाई दी। नदी के धुंधले से तल पर एक भेड़िया अवश्य उछल रहा था, पर इसे किसी आदिवासी की नकल नहीं कहा जा सकता।

मैं डेरे की ओर लौट आया और देखा कि दल के सभी लोग जागे हुए हैं। खाँ ने मुझे पुकारा और बताया कि उसने सब घोड़ों को गिन लिया है। रूज से जब फिर से पूछा गया कि उसने क्या देखा, तो उसने फिर से पुरानी बात दोहरा डाली। इस पर जिमगुर्वी ने उसे पागल करार दिया। तब उन दोनों में कुछ झगड़ा उठ खड़ा हुआ। अन्त में हमने बीच-बचाव करने की बजाय रूज को डाँटकर सोने के लिए कह दिया और उसे यह भी कह दिया कि चाहे वह सारे आदिवासियों को इकट्ठा होकर आता हुआ देख ले, तब भी हमें बिल्कुल न जगाए।

—:•:—

हेनरी को मैदान में, भैंसों से घिरे होने पर भी, तना हुआ खड़ा पाया। हेनरी अपने पूरे जोश में था। उसे यह पता न था कि कोई उसे देख रहा है। इस लिए वह पूरी तरह तन कर खड़ा हुआ था। उसका एक हाथ कमर पर और दूसरा बन्दूक के कुन्दे पर टिका हुआ था। उसकी आँखें चारों ओर के उस समूह को देखने में लगी हुई थीं। बीच-बीच में वह कोई एक भैंस अपने लिए चुन लेता और अपनी बन्दूक उठा कर उसे मार डालता। तब फिर चुपचाप बन्दूक धर कर पहले जैसे ही खड़ा हो जाता। भैंसें इस प्रकार निडर थीं, जैसे वह उनमें से ही एक हो। नर भैंसे अब भी एक दूसरे के साथ टक्करें मारते हुए, शोर करते हुए और जमीन पर लोटते हुए खेल रहे थे। मरी हुई भैंस के चारों ओर कुछ और भैंसे जमा होकर उसके जख्म को सूँघने लगते। तब वे बची हुई भैंसों के पीछे आकर उन्हें खदेड़ने की कोशिश करते। जब-तब कोई बूढ़ा भैंसा हेनरी की ओर मुँह उठाकर अचरज के साथ देखने लगता। पर उनमें से न तो कोई भागने की कोशिश करता और न ही उस पर हमला करता। कुछ देर तक थॉ पास में ही लेटा रहा और अचरज में डूबकर इस अद्भुत दृश्य को देखता रहा। बहुत देर बाद धीमे-धीमे आगे बढ़कर उसने हेनरी को पुकारा। हेनरी ने उसे अपने पास बुला लिया। अब भी भैंसे डरे नहीं। अपने मरे हुए साथियों के पास वे उसी तरह जमे रहे। हेनरी अब तक उतनी भैंसें मार चुका था, जितनी हमारे लिए आवश्यक थीं। थॉ ने एक मुर्दा भैंस के पीछे बैठकर पाँच नर भैंसों का निशाना साधा, पर तब तक और भैंसें वहाँ से गायब हो गई थीं।

इस प्रकार की भैंसों की जड़ता और मूर्खता इस स्थिति से बिल्कुल भिन्न होती है, जबकि वे भयंकर और खूँखार रूप में सामने आते हैं। हेनरी इन सब बातों को समझता था। उसने इन सब बातों को एक विद्वान् के समान ही समझा था। इस प्रकार के शिकारों में वह पूरा मजा लेता था। भैंसे उसके अपने ही साथियों जैसे थे और उनके बीच में खड़ा होकर वह कभी अपने को अकेला अनुभव नहीं करता था। उसे उनके शिकार में अपनी चतुरता पर सदा नाज रहता था। वह बहुत ही नम्र तबीयत का आदमी था। सीधा-सादा और सरल होने पर भी, उसे शिकार के मामले में अपने बड़प्पन और महत्व का पूरा-पूरा ध्यान था। पर वह अपने विषय में कितना ही ज्यादा बढ़ा-चढ़ाकर सोचता

हो, यह उस अनुमान से कम ही था, जो कोई और शिकारी या दर्शक उसके विषय में कर सकता था। मैंने केवल एक ही बार उसके चेहरे पर घृणा का भाव देखा था। वह भी तब, जब दो नौसिखियों ने पहले-पहल भैंसे का शिकार किया और हेनरी को उस शिकार के गुर समझाने लगे। वे बताने लगे कि 'पहुँच' किस प्रकार की जाती है? हेनरी भैंसों और उनके शिकार को अपने अधिकार का विषय समझता था और उसके विषय में हर बात की पूरी जानकारी रखता था। उसे सबसे अधिक बुरा तब लगता था, जब कोई बिना ही मतलब के मादा भैंसों को मारे। सबसे बढ़कर पाप उसकी नजर में यह था कि बेबात के ही कटड़े मार दिए जाएँ।

हेनरी और रूज की आयु एक बराबर थी। वे दोनों लगभग तीस वर्ष के थे। पर हेनरी लगभग दुगने शरीर का था और ताकत में उससे छः गुणा अधिक था। हेनरी का चेहरा आँधियों और तूफ़ानों से पक चुका था; रूज का चेहरा शराबों आदि के कारण पीला पड़ा हुआ था। हेनरी हमेशा ही आदिवासियों या भैंसों के बारे में बात करता था; रूज को हमेशा ही थियेटर आदि की बात सूझती थी। हेनरी का जीवन कठिनाइयों और संघर्षों में बीता था, रूज को कभी भी उनका सामना न करना पड़ता था। वह ख्याली-पुलावों और वहमों में पलने वाला जीव था। हेनरी कभी भी किसी स्वार्थ में उलझना न जानता था, रूज अपने स्वार्थ के अलावा किसी और बात से मतलब न रखता था। पर, हम इस पर भी उसे खोना न चाहते थे; क्योंकि वह हमारे यहाँ मजाकिए या विदूषक का काम देता था। अगर वह न होता तो शायद हमारे डेरे में रौनक समाप्त हो जाती। पिछले हफ्ते के दौरान वह काफ़ी मोटा हो गया था। यह बात अजब भी न थी, क्योंकि उसकी भूख बहुत ज्यादा बढ़ी हुई थी। सुबह से रात तक वह खाता ही रहता था। आधे से अधिक समय तो वह अपने लिए कोई न कोई खास चीज बनाता रहता था। और कॉफ़ी का बर्तन तो उसके हाथों आठ या दस बार भरता जाता था। उसका निराश और उतरा हुआ चेहरा खुद ही दूसरों के लिए मजाक का साधन बन जाता। उसकी आँखें उभरी हुई सी लगतीं और उसका दिल और हौसला अब खूब बढ़ा हुआ लगता था। वह दिन भर हँसता जाता और कहानियाँ सुनाता रहता था। वह केवल जिमगुर्नी से घबराता था और इसीलिए सदा हमारे डेरे के पास मँडराता

रहता था। उस बेचारे को हमेशा ही सरल जिन्दगी बिताने को मिली थी, और उसके पास मजाक का काफ़ी भण्डार जमा था। इसलिए उसकी बात हँसाने वाली होतीं। दूसरों को हँसाने के लिए वह अपनी मजाक उड़वाने को भी तैयार रहता। इस पर भी वह हमारे लिए मुसीबत का कारण तो था ही। उसे सबसे बुरी आदत थी हमारे खाने-पीने के सामान को दिन भर टटोलते रहने की। वह किसी का भी कहना नहीं मानता था। चाहे उस पर हम कितना ही नाराज हो लें, वह अपनी चालाकियों से बाज न आता था। जब तब उस पर किसी न किसी का गुस्सा उतरता रहता। वह इन मौकों पर चुप होकर सह लेता; परन्तु कुछ ही देर बाद फिर कोई न कोई चोरी करता हुआ पकड़ा जाता। खासकर भोजन के सामानों की चोरी उसकी विशेष आदत थी। उसे तम्बाकू पीने की लत थी, पर उसके अपने पास वह था नहीं। हम उसे उसकी जरूरत के मुताबिक दे दिया करते थे। पर हर मौके पर थोड़ा-थोड़ा करके ही देते थे। शुरू-शुरू में हमने उसे आधा सेर तम्बाकू एक साथ ही दे दिया था। पर हमें यह परीक्षण महँगा पड़ा। क्योंकि उसने कुछ ही देर में तम्बाकू और चाकू दोनों ही गुम कर दिए और हमसे माफी माँगने लगा।

हम इस डेरे पर दो दिन रह चुके थे। और काफ़ी सारा मांस ले जाने के योग्य हो गया था। पर इसी समय एक भयंकर आँधी आ टूटी। शाम के समय सारा आकाश स्याही के समान काला पड़ गया और नदी किनारे की लम्बी घास तूफ़ान की पहली झपेट के साथ उठने और गिरने लगी। मुनरो और उनके साथी अपनी बन्दूकें लाकर हमारे तम्बू में ही रख गए। उन लोगों ने कोई बचाव न पाकर एक ऐसी आग जलाई, जिस पर वर्षा का भी असर न होता। वे खुद को भैंसे की खालों के लबादों में लपेट कर जमीन पर उसके चारों ओर बैठ गए, ताकि आने वाले तूफ़ान का मुकाबला किया जा सके। हमारा गाड़ीवान अपनी गाड़ी के नीचे छिप गया था। हमारे तम्बू में मैं, शॉ, हेनरी और रूज जमा थे, पर इस सबसे पहले सारे सूखे हुए मांस को एक ओर जमा करके, उसे भैंसों की खालों से ढक दिया गया और जमीन पर जकड़ दिया गया। नौ बजे के करीब यह तूफ़ान बुरी तरह टूट पड़ा। चारों ओर घुप अँधेरा छाया हुआ था। मैदान में सब तरफ़ भयंकर धाराएँ फूट निकलीं।

हमारा तम्बू भी कुहरे और फुहारों से भर गया। यह कुहरा अन्दर बैठे हर आदमी को गीला करने लगा। हम एक-दूसरे को बिजली की चमक में ही देख पा रहे थे। इस चमक में हमने देखा कि चारों ओर सब कुछ पानी-ही-पानी में डूब गया था। हमें अपने तम्बू का डर था। पहले एक-दो घण्टे तक तो यह बिल्कुल ठीक खड़ा रहा। आखिर इसकी चोटी पर से कपड़ा फट गया और बाँस ऊपर निकल गया। अब तम्बू झुकने और चूने लगा। हमें घुटन-सी महसूस होने लगी। अपनी बन्दूकें पकड़ कर हमने उन्हें सीधा खड़ा कर लिया, ताकि अगर तम्बू गिरे ही तो हम उसके कपड़े को खड़ा कर सकें। इस प्रकार इस हालत में ही रात का बहुत-सा समय बीत गया। इस सारे समय तूफ़ान की तेज़ी में कोई कमी न आई। लगता था, जैसे यह बढ़ता ही जा रहा था। कुछ ही देर में हमारे नीचे भी पानी दो या तीन इँच गहरे जोहड़ के रूप में जमा हो गया। इसलिए आधी से अधिक रात भर हम ठण्डे पानी का अनचाहे स्नान का मजा लेते रहे। इस सब के बावजूद रूज़ का हौसला न गिर पाया। वह आँधी और तूफ़ान की परवाह न करके हँसता, गाता और सीटियाँ बजाता रहा। सच तो यह था कि उस रात उसने अपने बहुत से अपराधों का बदला चुका दिया था। हम सब लोग न जाने किन ख्यालों में डूबे बहुत चुपचाप बैठे थे, पर वह अकेला ऐसे समय भी घण्टों तक हँसी और मज़ाक करता रहा। लगता था जैसे, उसमें कोई जानवरों जैसी ताकत आ गई थी। सुबह लगभग तीन बजे हम लोग, इस घुटन की बजाय बाहर आना अच्छा समझकर, तम्बू से निकल आए। अब हवा चलनी बन्द हो गई थी। फिर भी वर्षा लगातार गिर रही थी। इस अँधेरे में भी हमारे दूसरे साथियों की आग अब तक जल रही थी। हम भी उनके पास ही बैठ गए। हमने ताजगी के लिए कुछ कॉफ़ी बनाई। जब सबने अपने प्याले दुबारा भरने चाहे, तब पता चला कि रूज़ अपना हिस्सा पीने के बाद, काफ़ी बची-खुची सारी कॉफ़ी को भी पीकर समाप्त कर चुका था।

सुबह सूर्य खुलकर निकला। हमें प्रसन्नता हुई। इस समय हमारी हालत हँसी के लायक थी। हमारे कपड़े बुरी तरह गीले हो चुके थे, पर हल्की हवा और गर्म धूप ने तुरन्त उन्हें सुखा डाला। हमें बड़ी जकड़ सी लगने लगी। अपनी जकड़ाहट को दूर करने के लिए हम सारे दिन भर, मैदान में, शिकार

के लिए घूमते रहे। हमने दो तीन भैंसे मार भी डाले।

हेनरी के अलावा मैं और शॉ भी शिकार में कुछ माहिर थे। इस दिन सुबह मुनरो ने भी एक भैंसे को भगाने की कोशिश की थी, किन्तु उसका घोड़ा कभी शिकार के पास न पहुँच सका। शॉ उसके साथ ही निकला था। अधिक अच्छे घोड़े पर सवार होने के कारण वह तुरन्त ही भैंसों के रेवड़ में जा निकला। उसे चारों ओर केवल भैंसे और कटड़े ही दिखाई दिए। उसने अपने घोड़े को रोक लिया। एक बूढ़ा भैंसा पीछे से भागता हुआ आ रहा था। उसकी ओर मुड़ते ही शॉ ने उसका रास्ता काटा और अपनी बन्दूक तानकर सामने से उसके गुजरने पर उसके कंधे के नीचे, एक बगल में, निशाना दाग दिया।

कुछ पास के पेड़ों पर गीधों का एक समूह घूम रहा था। यह स्थान हमारे डेरे के बिल्कुल पास ही एक टापू पर था। पिछले सारे दिन भर हमने उनके बीच में एक चील को बैठे देखा था। वह अब भी वहीं बैठी थी। रूज ने यह घोषणा की कि आज वह उस पक्षी को मार डालेगा। यह कहकर उसने देस्लारियर की बन्दूक ली और उस पक्षी के शिकार के लिए निकल पड़ा। यह पक्षी अमरीका का राष्ट्रीय पक्षी है। इसलिए रूज का काम देश-द्रोह के समान था। हमें उम्मीद ही थी कि उस पक्षी का, इसके हाथों, कुछ भी बिगाड़ न होगा। वह जल्दी ही लौट आया और उसने बताया कि वह पक्षी को खोज नहीं पाया। पर, फिर भी, उसने एक गीध को मारने का दावा किया। जब हमने उससे सबूत माँगा, तो वह कहने लगा, "मुझे उसके मरने का पूरा यकीन नहीं है। वह घायल जरूर हुआ था, पर फिर भी वह उड़ गया।"

रूज फिर बोला, "फिर भी अगर आप चाहें तो मैं उसका एक पंख लाकर दिखा सकता हूँ। क्योंकि मेरे गोली चलाने के बाद उसके बहुत से पंख वहाँ गिर गए थे।"

हमारे डेरे के बिल्कुल सामने एक और टापू झाड़ियों से ढका हुआ था। इसके परे पानी गहरा था। इसके सामने ही दो या तीन धाराएँ बह रही थीं। यहाँ पर एक दोपहर को मैं नहा रहा था कि उसी समय एक सफेद भेड़िया, जो कि किसी बड़े कुत्ते के समान ही था, टापू में से निकलकर भागा और मेरे से कुछ ही दूरी पर रेत पर आकर उछलने लगा। मैंने उसकी लाव

आँखें और उसके मुख के चारों ओर की मूँछें साफ़ देख लीं। वह बहुत ही भद्दी शक्ल का था। उसका सिर काफ़ी बड़ा, पूँछ भरी हुई और चेहरा बहुत भद्दा था। मेरे पास न बन्दूक थी और न ही पत्थर थे। मैं उस पर मारने के लिए किसी चीज को खोज ही रहा था कि अचानक डेरे की ओर से गोली चलने की आवाज आई और उसके सामने की कुछ रेत उड़ गई। इस पर वह हल्का-सा उछला और तेजी से रेतीले मैदानों पर एकदम भाग निकला। असल बात यह थी कि आसपास के मैदानों पर भैंसों के इतने शव जमा हो चुके थे कि हर तरफ से भेड़िये यहाँ आकर इकट्ठे हो गए थे। हेनरी और शॉ के शिकार की जगह उनकी आरामगाह बन गई थी। मैं अक्सर ही नदी के पार जाकर उन्हें भोजन के समय देखता। किनारे पर लेटकर उन्हें पूरी तरह देखा जा सकता था। इनमें तीन किस्म के भेड़िये थे। सफेद और सलेटी रंग के भेड़िये बहुत बड़े थे। तीसरी किस्म के साधारण मैदानी भेड़िये कुत्तों जैसे ही दिखाई देते थे। ये सब एक ही शव के चारों ओर जमा होकर चीखते और लड़ते, किन्तु इस पर भी इतने चौकन्ने रहते थे कि मैं कभी भी इतना नजदीक न जा सका जिससे उन पर निशाना साध सकूँ। जब कभी भी मैंने कोशिश की वे तुरन्त ऊँची घास में भाग कर छिप गए। इस जगह चारों ओर गीध मँडराते फिरते थे। भेड़ियों के किसी शव पर से अलग होते ही ये उस पर आ टूटते और उसे इस बुरी तरह से ढक लेते कि एक भी बन्दूक की गोली उनमें से दो या तीन की जान लेने के लिए काफ़ी रहती। ये पक्षी बीसियों की संख्या में हमारे डेरे के ऊपर भी मँडराते रहते और इस प्रकार एक हल्की छाया भी हमारे डेरे पर कर देते। हमारे चारों ओर भेड़िये और गीध बढ़ते ही जाते और कभी-कभी दो-तीन चील भी वहाँ दावत उड़ाने आ जाते। मैंने डेरे के पास ही एक भैंसे का शिकार किया था। उस रात उन भेड़ियों ने बहुत चीख-पुकार मचाई। सुबह तक वह शव खोखला हो चुका था।

यहाँ चार दिन रहने के बाद हमने यह डेरा छोड़ने की तैयारी की। अब हमारे पास छः मन के लगभग सूखा मांस था। चार मन के लगभग मांस हमारे दूसरे साथियों ने भी जमा कर लिया था। यह सारा मांस आठ या नौ भैंसों के चुने हुए हिस्सों में से ही था। सारे लादू जानवर लाद लिए गए। घोड़ों और खच्चरों पर भी काठियाँ और जुए कस लिए गए। अन्त में रूज भी

तैयार हो गया और हम लोग सफ़र पर बढ़ चले। अभी हम मील भर ही बढ़े होंगे कि शाँ को अपने चाकू छूट जाने का ध्यान आया। वह डेरे की ओर उसे खोजने के लिए लौटा। वहाँ दिन में भी कुछ अंधकार-सा छाया हुआ था। अभी नदी किनारे की आगें बुझी नहीं थीं। चारों ओर की घास भी घोड़े और आदमियों के पाँवों से कुचली हुई दिखाई दे रही थी। साफ़ था कि अब भी हमारे डेरे की निशानियाँ मौजूद थीं। हमारे यहाँ से चलते ही सैंकड़ों जानवर और पक्षी वहाँ जमा हो गए थे। जलती आगों के चारों ओर बीसियों भेड़िये इधर-उधर घूम रहे थे। और भी अनेकों पास के मैदान में जमा हो रहे थे। शाँ को दुबारा पहुँचते देख वे सभी वहाँ से भाग निकले। कुछ सामने के रेतीले तट पर से होते हुए हरे मैदानों की ओर भाग गए। ऊपर आसमान में बहुत अधिक गीध जमा होकर मंडरा रहे थे। डेरे के पास ही मेरे मारे हुए भैंसे पर सैंकड़ों गीध जमा थे। शाँ के पहुँचने पर उन्होंने भी अपने पंख फड़फड़ाए और अपनी गर्दन उठाकर खतरे की ओर देखा। परन्तु, वे उसे छोड़ना नहीं चाहते थे। जब शाँ आग के पास चाकू खोज रहा था, उस समय उसने देखा कि कुछ दूरी पर सामने की पहाड़ियों पर सैंकड़ों भेड़िये वहाँ से उसके जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने चाकू की खोज में असफल होने पर वह फिर से घोड़े पर सवार होकर गीधों और भेड़ियों को आनन्दपूर्वक खाते हुए छोड़कर हमारी ओर चला आया।

—:०:—

२६ : अरकंसास के किनारे पर

सन् १८४६ के सितम्बर महीने में उत्तरी अरकंसास नदी के इलाके ने पहली बार किसी गोरी सेना को गुजरते देखा। सान्ताफ़े की ओर बढ़ते हुए जनरल कीर्नी ने यही रास्ता चुना था। जब हम यहाँ पहुँचे तो सेनाओं की मुख्य टुकड़ियाँ पहले ही जा चुकी थीं। प्राइस नाम के सेनापति की टुकड़ी अभी रास्ते में ही थी, क्योंकि उन्होंने सीमांत बहुत दिन बाद छोड़ा था। इस समय हमें प्रतिदिन ही एक या दो टुकड़ियाँ रास्ते में मिल जाती थीं। इन लोगों से बढ़ कर कभी कोई और सेना अपने काम के प्रति इतना प्यार लेकर नहीं बढ़ी होगी। अगर सेना की अच्छाई हुक्म और नियन्त्रण मानने में है, तो ये लोग सबसे निकम्मे थे। परन्तु इन लोगों ने सारे ही अमरीका की चढ़ाइयों में हिस्सा लिया था इसलिए इन्हें अच्छे सैनिक न मानना उचित न होगा। इन्होंने युद्ध की हर कठिनाई में से विजय पाई थी। यह काम उनकी सैनिक योग्यता से ही हो सका था। डोनिफन की सेनाओं ने 'न्यू मैक्सिको' के इलाके में से साधारण यात्रियों की भाँति रास्ता तय किया था। वे आजकल के सैनिक न लगते थे। जब जनरल टेलर ने डोनिफन को उसकी सफलता पर बधाई दी, तो उसके उत्तर से साफ़ पता चलता है कि यह सेना कितने गुणों वाली थी और इसके सैनिकों और अधिकारियों में कितना प्यार था।

"मैं कोई तौर-तरीके और चालें नहीं जानता था। यह लड़के मेरे पास आते और हुक्म माँगते। जब मैं अच्छा मौका देखता इन्हें हमला करने की आज्ञा दे देता। ये लोग तुरन्त ही तीर की भाँति निकल जाते। बस, मैं इतना ही जानता हूँ।"

यह वकील किन्हीं भले मानसों में समझौता कराने लायक अधिक था, बजाय अपने सैनिकों को हुक्म देने के। उसके नीचे काम करने वाले इस प्रकार के चरित्र और शिक्षा वाले अनेक लोग थे, जो उससे अधिक योग्यता से सेना का नेतृत्व कर लेते।

साक्रामेन्तो की लड़ाई में उसके सैनिक हर दृष्टि से घाटे में थे। मैक्सिको-

वासियों ने अपने ठिकाने ठीक से चुन लिये थे। वे एक ऐसी घाटी के पास खड़े हो गये थे, जो उनके अपने आदिवासी शहर की ओर बढ़ती थी। वहाँ सारा इलाका खाइयों और तोपखानों से भरा हुआ था। वे लोग संख्या में भी पाँच गुने थे। उसी समय अमरीकावासियों के ऊपर एक चील मँडराने लगी। उनमें चारों ओर एक प्रसन्नता छा गई। शत्रु का तोपखाना बरसना शुरू हुआ। पहले तो ये लोग रुके रहे। पर, तब हुक्म मिलते ही चिल्लाते हुए आगे की ओर भाग निकले। आगे रास्ते में ही एक शराबी अफसर ने रुकने का हुक्म दिया। सैनिकों ने इस हुक्म को मानने में आना-कानी दिखाई। तभी पीछे से एक साधारण सैनिक चिल्ला उठा, 'आगे बढ़ो!' अब सारी सेना शेरों की भाँति दुश्मन पर टूट पड़ी। चार सौ शत्रु वहीं पर मार डाले गये और बाकी भाग निकले। उनकी सभी चीज़ें हथिया ली गईं। उन चीज़ों में रस्सियों से भरी एक गाड़ी भी थी, जो कि अमरीकन कैदियों को बाँधने के लिए लाई गई थी।

ये सैनिक और दूसरी सेनाओं के मुकाबले के थे। प्राइस के जिन सैनिकों से हम अभी मिले थे, वे सब भी उसी तरह के सैनिक थे। एक दिन सुबह, जब हम एक चौड़े चरागाह में उतर रहे थे, हमने घुड़सवारों का एक दल कुछ दूरी पर देखा। हम यहाँ आराम करना चाहते थे। पानी खोजने के लिए हमें नदी के किनारे की ओर मुड़ना पड़ा। वह जगह पगडण्डी से आधा मील दूर थी। यहाँ हमने कपड़े फैलाये और जमीन पर ही बैठ कर तम्बाकू पीने लगे। शॉ बोला, "अब जरूर गड़बड़ होगी। देखो, ये लोग यहाँ फिर आ गये। हमें चैन नहीं मिलेगी।" सच ही आधे से अधिक सैनिक अपनी बड़ी टुकड़ी से अलग होकर आ गये थे। पहले ने आते ही हम से हाल-चाल पूछा और घोड़े से उतर कर जमीन पर बैठ गया। बाकी लोग भी उसके पीछे-पीछे आ गये और उसके समान ही जमीन पर बैठ गये। बाद में आने वाले कुछ सैनिक घोड़ों पर ही बैठे रहे। ये सब सेंट लुई से भरती किये गये थे। इनमें से कुछ लोग बहुत ही असभ्य और कुछ कपटी दिखाई देते थे। पर अधिक लोग अच्छे और सभ्य दिखाई दे रहे थे। ये लोग सादे सैनिकों की अपेक्षा अधिक सभ्य थे। उनके जूते अवश्य घुटनों तक लम्बे थे। उन्होंने पोशाकें फौजी और सादी—दोनों प्रकार की—पहनी हुई थीं। इसके अलावा

उनकी काठियों से तलवारें और पिस्तौलें भी लटक रही थीं, उन्होंने हमारे दल का उद्देश्य पूछा और हमसे भैंसे पाने की बात भी जाननी चाही। वे यह भी जानना चाहते थे कि उनके घोड़े सान्ताफे की यात्रा कर भी सकेंगे या नहीं ?

इसके तुरन्त बाद ही प्रश्नों की एक नई बौछार हम पर होने लगी। दर्शक ने हमसे हमारे आने की जगह, जाने की जगह और खुद हमारे बारे में बहुत से सवाल करने शुरू कर दिये। उसने बहुत मोटे करघे की पोशाक पहनी हुई थी। उसका चेहरा बुखार के कारण उतरा हुआ था और उसका ऊँचा और मजबूत चेहरा बड़ी तिरछी निगाह से युक्त था। घोड़े की भद्दी काठी पर बैठे हुए वह और भी भद्दा लग रहा था। उसके पीछे भी उसी तरह के बहुत-से लोग खड़े थे। इन्हें भी सीमान्त के आसपास के इलाके से भरती किया गया था। हमें कुछ देर बाद इनकी असभ्यता का पूरा अन्दाजा हो गया। ये हमारे चारों ओर भीड़ के रूप में जमा हो गये और हमारे दूसरे अतिथियों को हटा कर आगे बढ़ने लगे।

उनमें से एक ने मुझ से पूछा, "क्या आप कप्तान हैं ?"

दूसरे ने पूछा, "आप यहाँ किस मतलब से आये हैं ?"

तीसरा आदमी पूछ बैठा, "तुम घर लौट कर कहाँ बसोगे ?"

चौथा जवाब देता सा बोल पड़ा, "मेरे अन्दाज में तुम व्यापारी हो" इन सब के साथ ही एक और आदमी ने मेरे पास बढ़कर बहुत धीमी आवाज में सवाल किया, "तुम्हारे साथी का क्या नाम है ?"

हर नये आने वाले ने ये ही सवाल पूछने शुरू कर दिये। अन्त में हम लोग तंग आ गये। हमारे उत्तर बड़े उलटे-सीधे निकलने लगे। इससे वे सैनिक भी घबरा गये। हमने सुना कि वे हमें गालियां दे रहे थे। हम बैठे चिलम पीते रहे। रूज अपनी जबान बिना रुके चलाता रहा। वह अपनी सैनिक विशेषता को भूला नहीं था, इसलिए वह इन सैनिकों में घुल-मिल कर बातें करने लगा। बहुत देर बाद हमने उसे अपने सामने ज़मीन पर बैठा कर बताया कि उसे शायद दुभाषिये, या हमारी बात समझाने वाले, का रूप धारण करना पड़ेगा। वह यह सुन कर बहुत खुश हुआ। हमने उसे देखा, वह इतनी तेजी से बात बनाने लगा कि वह बौछार हमारी ओर से बहुत

हद तक उस पर पड़ने लगी। कुछ ही देर बाद इस भीड़ के पीछे चार घोड़ों से खींची जाती हुई एक तोप भी आ गई। उसका लाने वाला घोड़ों पर ही बैठा हुआ, गर्दन सीधी करता हुआ बोला, "तुम लोग कहाँ से आये हो और तुम्हारा यहाँ क्या मतलब है ?"

एक टुकड़ी का कप्तान भी इन लोगों के साथ ही हमारी ओर आ गया था। उससे घबरा कर कुछ लोगों ने तुरन्त ही उसे जगह दे दी। एक ज़मीन से उठता हुआ, सुस्ता कर बोला, "अच्छा भई, अब तो बहुत देर हो रही है। हमें भी आगे बढ़ना उचित होगा।"

उनमें से एक आदमी कुछ दूरी पर सुस्ता रहा था। वह वहीं से बोला, "मैं तो अभी नहीं चलूँगा।"

उसने फिर कहा, "कप्तान ! बहुत जल्दी मत मचाओ।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "अच्छा तुम्हारी ही सही। हम कुछ देर और प्रतीक्षा कर लेंगे।"

बहुत देर बाद वे लोग जिस तरह आये थे, उसी तरह लौटने शुरू हो गये। हमने भी चैन की साँस ली। सबसे अधिक सुख देस्लारियर को मिला, क्योंकि भोजन ठंडा पड़ता जा रहा था। उसने तुरन्त ही सफेद गलीचा बिछा कर भोजन परोस दिया और कॉफी के लिए रकाबियाँ और प्याले सामने फैला दिए। रूज तो ऐसे मौकों के लिए तैयार ही रहता था। वह सबसे पहले जगह हथिया कर बैठ गया। अपनी पुरानी आदत के कारण वह हर एक के नाम के आगे 'श्री' जोड़ना अधिक उचित समझता था। परन्तु इस प्रकार देस्लारियर को जिन्दगी में पहली बार, 'श्री देस्लारियर' के नाम से बुलाया गया। परन्तु, इतने पर भी रूज के लिए उसकी नफ़रत कम न हुई। रूज सदा ही रसोई के कामों में उल्टे-सीधे सुझाव दिया करता था। देस्लारियर को या तो हँसना आता था या गुस्से में बरसना। वह बीच की बात नहीं जानता था। वह रूज से कुछ कहता तो नहीं था, पर दिल ही दिल में वह बुरा अवश्य मानता था। भोजन पर बैठ कर रूज बहुत खुश हो जाता था। इस समय वह भैंसे की खाल के लबादे में ही बैठा हुआ था। उसने अपनी बाँहें ऊपर चढ़ा लीं और अपने सामने की धारा पर ही चौकड़ी मार कर बैठ गया। उसने अपने पास

कॉफ़ी का प्याला रखा और अपना चाकू तैयार कर लिया। ज्यों ही उसने भैंसे के मांस को सामने रखा देखा, उसकी आँखें फटी सी रह गईं। देस्लारियर भी सामने ही आ बैठा। हमने भोजन देख कर पूछा, "आज रोटियाँ काफ़ी क्यों नहीं हैं ?"

देस्लारियर के चेहरे के भाव पलटने लगे। उसने गुस्से में रूज़ की ओर, बहुत कुछ कहते हुए, इशारा किया। रूज़ को बहुत अचरज हुआ। उसकी टूटी-फूटी अंग्रेजी से हम पहचान गये कि रूज़ ने हमारे खाने के लिए रखी गई सारी रोटियाँ पहले ही साफ कर दी थीं। रूज़ भौचक्का सा होकर देखने लगा। बहुत देर बाद उसने कहा कि यह सब झूठ है और यह भी वह नहीं समझ पाया कि देस्लारियर के क्रोध का कारण क्या है ? बातों ही बातों में हंगामा-सा मच गया। रूज़ की अंग्रेजी के सामने देस्लारियर कुछ बोल न पाया। वह गुस्से में वहाँ से उठकर चला गया। वह जाते-जाते खच्चरों को दी जाने वाली एक गाली भी देता गया।

अगली सुबह हमने एक भैंस और दो कटड़ों के साथ एक बूढ़े भैंसे को मैदान पर बढ़ते हुए देखा। उसके पीछे चार-पाँच भेड़िये चरागाह की लम्बी घास में से निकलते हुए आये। वे इस टोह में थे कि कब कोई कटड़ा बिछुड़ कर पीछे रह जाए। भैंसा पूरी निगरानी रखता हुआ बढ़ रहा था और रुक रुक कर पीछा करने वालों को घूरता जाता था।

ज्योंही हम दोपहर के आराम के स्थान पर पहुँचे, हमने पाँच या छः भैंसे एक ऊँचे टीले पर खड़े हुए देखे। तेज़ी से घोड़े दौड़ा कर हम उस जगह तक आ गये, जहाँ हमने रुकना था। यहाँ अपनी काठी जमीन पर गिरा कर मैंने घोड़ा चरने को छोड़ दिया। यहाँ से मैं उस टीले तक चुपके-चुपके छिपता हुआ पहुँचा और इसकी ढाल की ओर से बढ़ने लगा। इसी ढलान पर मैं छिपकर लेट गया। मैं अपने से पाँच गज़ दूर के एक भैंसे पर निशाना साधने की कोशिश करने लगा। चमकती हुई बन्दूक की नाली उन पशुओं की निगाह में पड़ गई और वे भाग निकले। वे इतने नजदीक थे कि उन पर ऐसी हालत में गोली चलाना अच्छा न होता। इसलिए चोटी पर पहुँच कर मैंने सामने की उजाड़ और ऊबड़-खाबड़ धरती पर उनका पीछा शुरू किया। यहाँ बहुत गहरी एक खाई, बीचों-बीच, पड़ती थी। इसके दो ओर से छोटी-छोटी दो खाइयाँ

इसमें उतरती थीं। वे भैंसे इधर-उधर बिखर गये और मैं उनमें से बहुतों को न देख पाया। मेरी निगाह में केवल एक ही भैंसा और एक ही भैंस रह गये थे। कुछ देर वे किनारे के साथ-साथ दौड़ते रहे। कभी-कभी वे किसी गड्ढे में छिप जाते और फिर सामने आ जाते। अन्त में वे खुले मैदान में निकल आये। यहाँ हरियाली न थी। यहाँ तक कि घास भी धूप में झुलस कर सूख गई थी। जब-तब वह भैंसा मेरी ओर मुड़ कर देख लेता। मैं भी उसी क्षण जमीन पर गिर कर जड़ बन जाता। इस तरह मैंने उनका पीछा लगभग दो मील तक किया। तब मुझे अपने सामने ही गुर्राने की भयंकर आवाज सुनाई दी। मैंने देखा कि सौ से भी अधिक भैंसे एक टीले से छिपे खड़े थे। ये भी उधर ही भाग गये। ये उनसे न मिल कर बीच में से सीधे निकलते गये। यह देख कर मैंने इनका पीछा छोड़ दिया और उन भैंसों के समूह की ओर सरकता हुआ बढ़ने लगा। बहुत पास पहुँच कर मैं उन्हें देखने के लिए जमीन पर बैठ गया। उन्हें किसी प्रकार घबराया हुआ न पा कर मेरा हौसला बढ़ गया। वे सब वहाँ चर नहीं रहे थे। वहाँ घास भी नहीं थी। इन्होंने इस जगह को खेल के मैदान के रूप में चुना था। उनमें से कुछ जमीन पर लोट रहे थे और कुछ आवाज करते हुए एक दूसरे के साथ सिर टकरा रहे थे। कुछ और मुर्दा से बन कर चुपचाप खड़े थे। उनके शरीर पर सिर्फ गर्दन की पीठ पर ही बाल थे। उनके पुराने बाल बसंत में झड़ गये थे और नये अभी निकले नहीं थे। कभी कोई भैंसा अचानक ही मेरी तरफ आ कर मुझ पर देखने लगता और तब वह अपने साथी को मुड़कर टक्कर मारने लगता। फिर वह धरती पर लेट कर लोटने लगता और अपने खुर आसमान की ओर उछालने लगता। पूरी तरह सन्तुष्ट होकर वह आधा खड़ा होकर मेरी ओर देखने लगता। इस तरह देखते हुए उसका चेहरा धूल में छिप जाता। कभी वह अचानक अपने चारों पाँवों पर धूल झाड़ता हुआ उठ खड़ा होता और अपनी पुरानी हरकतों पर सोचने जैसी शक्ल बना कर अपनी गर्दन नीचे झुकाये खड़ा रहता। मैंने मन-ही-मन कहा, "तुम सबसे अधिक भद्दे हो। तुम्हारा मर जाना ही अधिक अच्छा है।" ऐसा कहते हुए मैंने उनमें से सबसे भद्दे भैंसे को चुन कर उस पर गोली चला दी। एक-दूसरे के बाद मैंने तीन भैंसे, इसी तरह, मार डाले। दूसरे भैंसे इससे बिलकुल भी न घबराये और पहले जैसे ही आनन्द मनाते

रहे। हेनरी ने हमें बताया था कि भैंसे के गुस्सा होने पर भी अगर आदमी बिलकुल शांत बन कर पड़ा रहे, तब उसे अधिक खतरा नहीं रहता। इसलिए मैं भी बिना हिले-डुले जमीन पर बैठे-बैठे बंदूक भरने लगा। जब मैं इस तरह काम में लगा हुआ था, तभी एक हिरण अचानक ही दौड़ता हुआ मुझ से पचास गज की दूरी पर आ गया। पतली गर्दन पीछे की ओर मुड़े हुए छोटे-छोटे सींग और मेरी ओर ताकती हुई उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें, उसकी सुन्दरता का अंदाजा दे रही थीं। वह सामने खड़ा रहा। उन भद्दे भैंसों के पास खड़ा हुआ वह ऐसे दीख रहा था, जैसे कोई सुन्दर लड़की लुटेरों या दढ़ियल डाकुओं के बीच आ फँसी हो। उसके सामने भैंसे पहले से भी अधिक बुरे दीखने लगे। मैंने एक और भैंसे पर निशाना साधना चाहा, पर देखा कि मेरे पास एक भी गोली नहीं बची थी। अब मेरी यह बंदूक लोहे की किसी भी छड़ के बराबर कीमत की ही हो गई थी। घायल भैंसों में से अब तक एक-एक भैंसा गिरने से बच रहा था। मैं उसकी ताकत समाप्त होने और गिरने की इन्तजार करता रहा। वह मेरी ओर देखता हुआ, अब भी वैसे ही खड़ा था। हेनरी की सलाह की उपेक्षा करके मैं उसकी ओर बढ़ा। बहुत सारे भैंसे मुड़ कर मेरी ओर देखने लगे। पर अब भी उस घायल भैंसे ने मुझ पर कोई हमला न किया। मैं एक गहरी घाटी के किनारे पहुँच गया, ताकि हमले की हालत में वहाँ छिप सकूँ। यहाँ से मैंने घूमकर एक पत्थर भैंसों की ओर फेंका, ताकि उन में कुछ हलचल मचे। वे टस से मस न हुए। उनके न डरने पर मैं तंग आ गया। तब अपनी टोपी को उछालता और चिल्लाता हुआ मैं उनकी ओर तेजी से भागा। इस पर वे इकट्ठे हो कर भाग निकले। मरे हुए और घायल भैंसे पीछे ही रह गये। जब मैं डेरे की ओर मुड़ने लगा, घायल भैंसा भी लड़खड़ा कर गिर पड़ा और मर गया। लौटते हुए मेरी चाल कुछ तेज हो गई। मुझे यह ख्याल आ गया कि पौनी लोग भी इधर ही होंगे और कहीं वे मुझ पर हमला न कर बैठें। मैंने रास्ते में दो-तीन कमजोर भैंसों के अलावा और कोई जीवित चीज न देखी। जब मैं डेरे में पहुँचा तो साथियों को आगे के कूच के लिए तैयार पाया।

शाम के समय हम नदी के तट से कुछ ही दूरी पर रुके। आधी रात के समय जब हम सब सो रहे थे, मेरे सबसे पास के साथी ने अपने हाथ से छूकर

मुझे जगाया। पर, साथ ही चिल्लाने से मना कर दिया। तारे चमक रहे थे। मैंने अपनी आँखें खोलीं और दूसरी ओर जलती हुई आग के पास एक बड़े भारी भेड़िए को घूमते और कुछ सूँघते हुए देखा। अपने कम्बल से हाथ निकाल कर मैंने अपनी बंदूक का खोल निकाला। मेरी इस हरकत से वह भेड़िया भाग निकला। मैंने भी उछल कर पीछे से गोली चला दी। वह मुझ से तीस गज की दूरी पर रहा होगा। उस चुप्पी में गोली की इस गूँज ने सबको जगा दिया। उनमें से एक बोल पड़ा, "तुम ने उसे मार लिया है।"

मैंने कहा, "नहीं, मैंने नहीं मारा। वह तो उधर दौड़ता जा रहा है। वह देखो, नदी के साथ-साथ।"

"तब वे दो रहे होंगे ! क्या तुम नहीं देख रहे कि वहाँ एक मरा पड़ा है ?"

हम वहाँ तक गये और हमने देखा कि वह भैंसे की एक सफेद खोपड़ी पड़ी थी। मैं निशाना चूक गया था। बुरी बात तो यह हुई थी कि मैंने इन मैदानों के सफ़र का एक नियम तोड़ डाला। रात के समय गोली की आवाज़ दुश्मन को खींच लाने के लिए बहुत काफ़ी होता है।

सुबह घोड़ों को कस कर सब लोग तम्बाकू पीने से निबट कर चलने के लिए तैयार हो गये। सुबह की सुन्दरता ने सब में उत्साह भर दिया था। एलिस भी उत्साह से भर गया था। जिमगुर्नी अनेक कहानियाँ सुनाने में लगा हुआ था। भैंसे रास्ते में भरे हुए थे। कुछ देर बाद इन का एक बड़ा समूह बाईं ओर के पहाड़ों की ओर भागता दिखाई दिया।

शॉ बोला, "यह मौका चूकने लायक नहीं है।" हमने अपने घोड़ों को एड़ लगाई और पूरी तेजी के साथ उनके पीछे भाग निकले। शॉ ने दोनों गोलियों से दो भैंसे मार गिराये। मैंने सारे रेवड़ में से एक भैंसे को अलग कर लिया और उस पर गोली चला दी। इस पिस्तौल की छोटी-सी गोली ने बहुत गहरा वार किया, पर उसका असर तुरन्त न हुआ। भैंसा बहुत दूर तक भागता चला गया। मैंने बार-बार उस पर बची हुई पिस्तौल तानी। तीन या चार बार चलाने पर भी, यह ठीक से न चली। इसे थैले में रखकर खाली पिस्तौल को भरना शुरू किया। मैं अब भी भैंसे की बगल में चल रहा था। उसके जबड़ों से झाग निकल रही थी। उसकी जीभ बाहर निकल आई थी।

पिस्तौल भरने से पहले ही वह मुझ पर उछला और तेजी से पीछा करने लगा। मेरे लिए दो ही रास्ते रह गये थे, या तो मैं भाग निकलूँ या मारा जाऊँ। मैंने भागना शुरू किया और भैंसा मेरा पीछा करने लगा। इसी बीच में पिस्तौल भर चुका था। मैंने मुड़ कर देखा कि भैंसा मेरे घोड़े की पूँछ से अब पाँच-छः गज की दूरी पर ही था। ऐसे समय गोली चलाना बेकार रहता; क्योंकि खोपड़ी पर चलाई गई गोली टकरा कर चपटी पड़ जाती है। बाईं ओर को झुक कर मैंने अपनी घोड़ी को पूरी तेजी के साथ उधर ही मोड़ लिया। भैंसा अन्धा हो कर बढ़ रहा था, इसलिए वह न मुड़ सका। मैंने पीछे मुड़ कर देखा, उसकी गर्दन और कंधे सामने आ गये थे। इसलिए काठी पर बैठे-बैठे ही मुड़ कर मैंने एक गोली तिरछी दिशा में, उसके शरीर में से होती हुई, चला दी। मेरा पीछा छोड़ कर वह तुरन्त ही जमीन पर गिर पड़ा। कोई अंग्रेज यात्री ऐसी हालत को खतरे की हालत मान बैठता है। पर यह उसकी गलती है। भैंसा ऐसी दशा में कभी भी बहुत देर तक पीछा नहीं कर सकता। यह भी केवल दो-तीन मिनट ही और पीछा कर पाता।

अब हम एक ऐसे इलाके में आ गये थे, जहाँ हमें चारों ओर से चौकन्ना रहना जरूरी हो गया था। हम रात में पहरा बारी-बारी से देने लगे और सभी साथी अपनी बंदूक भर कर और उसे बगल में रख कर सोने लगे। एक दिन सुबह हम लोग चौंक गये, जब हमने एक बड़े आदिवासी डेरे के निशान देखे। सौभाग्य से यह हम से एक सप्ताह पहले ही उजाड़ हो गया था। अगली शाम हमने कुछ अधिक ताजा आगे देखीं। इससे हमें कुछ बेचैनी हुई। अन्त में हम 'कैंचेज' पहुँचे। यह बहुत खतरनाक जगह है। यहाँ रेतीली पहाड़ियाँ, खाइयाँ और फटाव जगह-जगह मिलते हैं। यहाँ हमने 'स्वान' नाम के उस गोरे की कब्र देखी, जिसे यहाँ पर पौनी लोगों ने मारा था। इस समय उसकी कुछ हड्डियाँ ही यहाँ पड़ी रह गई थीं, क्योंकि आदिवासियों और भेड़ियों ने इन्हें कई बार छेड़ा था।

अगले कुछ दिन तक हमें प्राइस की सेनाओं की कुछ टुकड़ियाँ मिलती रहीं। उनके घोड़े अक्सर छूट कर हमारी तरफ आ जाते। एक दोपहर हमें उनके तीन छूटे हुए घोड़े नदी के किनारे चरते हुए मिल गये। शाम को जब हम डेरा डालने के लिए रुके, तो जिम ने बताया कि आस-पास और भी घोड़े

बहुत तेज वर्षा होती रही। दूसरी ओर की नंगी चट्टानें भी हमें दीखनी बंद हो गईं। इस तूफ़ान का पहला झोंका रुक गया, पर वर्षा तेज धारों में होती रही। अन्त में रेमंड अधीर हो उठा। खाई में से निकलकर वह समतल मैदान में आ गया। मैंने अपनी जगह से ही उससे पूछा, "मौसम कैसा लगता है ?"

उसने उत्तर दिया, "बहुत बुरा ! चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा है।" और तब वह धीरे से उतर आया और मेरे पास ही बैठ गया। दस मिनट और बीत गए।

मैंने कहा, "एक बार फिर जाकर देखो, कि मौसम कैसा है ?" और वह धीमे-से बढ़कर फिर से देखने लगा। मैंने पूछा, "मौसम कैसा है ?"

"वैसा ही। केवल पहाड़ की चोटी के ऊपर एक हल्का-सा प्रकाश फैलता नजर आ रहा है।"

इस समय तक वर्षा धीमी पड़नी शुरू हो गई थी। हमने नीचे जाकर पशुओं को खोला। वे घुटनों गहरे पानी में खड़े हुए थे। उन्हें खाई से चढ़ाकर ऊपर लाए। हमारे चारों ओर सब कुछ अस्पष्ट और धुंधला-सा लगता था। पहाड़ की चोटी पर दीखने वाला वह चमकदार हिस्सा धीरे-धीरे बढ़ने लगा और बहुत जल्दी ही बादल फटने लगे। तब सूर्य की किरणें बाढ़ के रूप में धरती पर टूटने लगीं। चारों ओर की वनस्पतियों पर गिरती हुई किरणें ऐसे लगीं जैसे नये रंग की आग जल उठी हो। जल्दी ही बादल छितराकर बिखर गए, मानों किन्हीं बुरी आत्माओं की वे सेनाएँ हों। हमारे चारों ओर का वह मैदान सूर्य की किरणों में सूखने लगा। उत्तर से दक्षिण तक सामने की दिशा में, एक इन्द्र-धनुष निकल आया। बहुत दूरी पर सामने के जंगल मानों हमें आराम और ताजगी के लिए निमन्त्रण देने लगे। जब हम उनके पास पहुँचे, तब उनकी बूँदों में से छनती हुई किरणें सतरंगी बनकर नाचने लगीं और पक्षियों की फड़फड़ाहट और गीत मस्ती देने लगे। कुछ अजीब पंखों वाले पक्षी वर्षा के कारण गीले पड़े हुए पत्तों या शाखों से चिपटे हुए थे।

रेमंड ने बहुत कठिनता से आग जलाई। हमारे जानवर चरने के लिए घास पर टूट पड़े। मैं भी कम्बल लपेटकर एक जगह लेट गया और सांझ के इस सुहावने नजारे को देखने लगा। सामने के पर्वत कभी गुस्से में भरे हुए

दीख रहे थे, पर अब वे बहुत ही प्यार और हँसी में भरे हुए दीखने लगे। सामने के मैदान के खड्ड और खाइयाँ भी इस धूप से प्रसन्न हो उठीं। मैं गीला भी था, बीमार भी और चिन्तित भी! इस नज़ारे को देखकर मेरा दिल खिल उठा और मैं इसमें आनन्द लेने लगा।

सुबह होने पर रेमंड जागा। उसकी खाँसी बहुत तेज़ हो गई थी। उसे कोई और चोट लगी न दीखती थी। हम फिर से घोड़ों पर चढ़े और उस छोटी धारा के पास आए। पेड़ों के बीच से निकलकर हमने सामने के मैदान पर अपनी यात्रा शुरू कर दी। धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए हम आदिवासियों के निशानों को खोजने लगे। हमें विश्वास था कि वे इधर ही कहीं पास से गुज़रे हैं। परन्तु, घास बहुत छोटी थी और ज़मीन बहुत सख्त। इस पर से गुज़रने वालों का निशान भी दीखना कठिन था। पहाड़ों को चढ़ते-उतरते और घाटियों को पार करते हुए हमारा सफ़र बढ़ता रहा। हम एक पहाड़ी की तलहटी में से गुज़र रहे थे। मुझसे कुछ आगे चलते हुए रेमंड ने अपने खच्चर की लगाम एकदम ही खींच ली और उतर पड़ा। तब वह एक घाटी की ओर बहुत झुककर धीरे-धीरे बढ़ा। उसी समय मुझे उसकी बन्दूक के चलने की आवाज़ आई। एक घायल हिरण अपने तीन पाँवों पर दौड़ता हुआ पहाड़ी पर आ निकला। मैंने अपनी घोड़ी को उसके पीछे दौड़ा दिया। बहुत जल्दी मैं उसकी बगल में जा पहुँचा। कुछ देर उछल-कूद मचाने के बाद हिरण शान्त खड़ा हो गया, जैसे वह भागने से निराश हो गया हो। उसकी चमकती हुई आँखें मेरे चेहरे की ओर बड़ी करुणा से भर कर उठीं। बहुत दुःख के साथ मैंने उसके सिर में गोली दाग दी। रेमंड ने उसकी खाल उतारकर उसे चीर लिया। हमने उसके चारों हिस्सों का मांस बोरियों में भर लिया। हमें इस बात की प्रसन्नता थी कि हमारा कम पड़ता हुआ भोजन का सामान ऐसे मौके पर फिर से ठीक मात्रा में हो गया।

पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर हम सामने के मैदान में बहुत-से वृक्षों और छायादार अमराइयों को देख रहे थे। वे सब लारामी धारा के साथ-साथ खड़े थे। दोपहर से पहले ही हम इसके किनारों तक पहुँच गए, और बहुत उतावले होकर आदिवासियों के पाँवों के निशान खोजने लगे। हमने कई मील तक इस धारा के साथ, कभी तट पर और कभी पानी में बढ़ते हुए, रेत

और कीचड़ के हर जमाव पर ध्यान रखा। खोज में इतना आगे बढ़ आने पर हमें लगा कि शायद हम उनकी राह को बिना खोजे ही बहुत पीछे छोड़ आए हैं। बहुत देर बाद मैंने रेमंड को तेजी से चिल्लाते हुए और अपनी खच्चर पर से कूदकर किसी चीज पर झूलते हुए देखा। मैं उसके पास तक गया। यह किसी आदिवासी के जूते का निशान था। इससे उत्साहित होकर हमने अपनी खोज जारी रखी। कुछ दूरी पर ही मेरा ध्यान एक ऐसी जगह पर गया जहाँ पाँच-छः बच्चों और आदमियों के पाँवों के निशान थे। तभी धारा के परले किनारे एक सोते के मुहाने पर रेमंड ने कुछ देखा। धारा पार कर वह कुछ दूर तक गया और चिल्ला पड़ा। मैं भी उसके पास तक जाकर खड़ा हो गया। यह सोता फैली हुई रेत पर से बह रहा था और इस पर एक बहुत पतली धारा के रूप में पानी बह रहा था। इसके दोनों ओर बहुत पास-पास झाड़ियाँ उगी हुई थीं। मैंने देखा कि रेमंड झुककर तीन या चार घोड़ों के निशान देख रहा था। आगे बढ़ने पर हमने एक आदमी, फिर एक बच्चे और बाद में बहुत सारे घोड़ों के निशान पाए। अन्त में किनारे की झाड़ियाँ उन निशानों से कुचली हुई दिखाई देने लगीं। यहाँ सैंकड़ों निशान मौजूद थे। इनमें तम्बुओं को सम्भालने वाली बल्लियों के निशान भी मिले हुए थे। अब यह निश्चित था कि हमने उन आदिवासियों की पगडंडी खोज निकाली थी। कुछ आगे बढ़कर मैंने देखा कि सामने के मैदान में लगभग एक सौ पचास घरों की राख पड़ी हुई है। उसके पास ही हड्डियों और खालों के टुकड़े भी इधर-उधर बिखरे हुए हैं। कुछ जगह वे खूँटे भी गड़े थे, जिनसे घोड़े बाँधे गये होंगे। अपनी सफलता पर प्रसन्न होकर हमने एक अच्छे पेड़ को अपनी शरण के लिए चुना और अपने पशुओं को चरने के लिए खुला छोड़कर ताजे मारे गए हिरण के मांस को पकाने की तैयारी करने लगे।

कठिनाइयों और मुसीबतों ने मेरे अन्दर एक अजीब ताजगी भर दी। इससे मेरी सेहत और शक्ति दोनों ही बढ़ गई थीं। हम दोनों ने बहुत आनन्द के साथ-साथ खाना खाया। अब हमें यह खुशी थी कि एक कोना पकड़ लेने के बाद इन निशानों के दूसरे कोने को भी हम खोज निकालेंगे। पर जब पशुओं को लाया गया तो हमने देखा कि अभी हमारी मुसीबतें समाप्त नहीं

हुई हैं। अपनी घोड़ी पर काठी बाँधते हुए मैंने देखा कि उसकी आँखें एकदम सूजी हुई थीं और उसकी पलकों की खाल का रंग काला पड़ गया था। मैं उसपर सवार होकर बढ़ने लगा, पर वह लड़खड़ाकर एक तरफ गिर गई। बहुत हिम्मत से वह फिर खड़ी हुई, पर उसका सिर झुका हुआ था। या तो उसे किसी साँप ने काट लिया था, या किसी जहरीले पौधे को उसने खा लिया था, या फिर कोई और ही बीमारी अचानक उस पर हावी हो गई थी। कुछ भी हो उसकी यह बीमारी बहुत बुरे और दुर्भाग्यपूर्ण समय पर आई। एक बार फिर कोशिश करने पर मैं उस पर चढ़ने में सफल हो गया। हम लोग बहुत धीमी चाल से आदिवासियों की पैड़ पर बढ़ने लगे। इस पर बढ़ते हुए हमें एक पहाड़ी पार करके एक भयंकर मैदान में उतरना पड़ा। यहाँ वे निशान अचानक ही गायब हो गए थे। ज़मीन बहुत ही कठोर थी। अगर कभी इस पर किसी खुर के निशान रहे भी होंगे, तो कल की वर्षा ने उन्हें मिटा दिया होगा। आदिवासियों का कोई भी गाँव प्रायः आध मील की चौड़ाई तक फैला हुआ चलता है। इसलिए उनके कोई भी निशान साफ़ नहीं होते और उन्हें खोजने का काम बहुत कठिन हो जाता है। सौभाग्य से सामने बहुत-से छोटे-छोटे टीले थे, जिनपर कहीं-कहीं आदमियों, घोड़ों और मकानों की लम्बी बल्लियों के निशान बने हुए थे। कुछ जगह कुछ खास प्रकार के पौधे भी कुचले हुए थे। इनसे हमें राह खोजने में मदद मिली और हम बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। कई बार हम इन निशानों को बिल्कुल ही खो बैठते और फिर अचानक ही पा लेते। दोपहर के समय हम बिल्कुल ही गलत राह पर पड़ गए। हम एक ऐसी जगह थे जहाँ चारों ओर, एक भी निशान हमारी राह तय करने के लिए नहीं दिखाई देता था। यह कटा-फटा मैदान हमारे चारों ओर मीलों दूर तक फैला हुआ था और सामने उत्तर से दक्षिण तक एक बहुत लम्बी पंक्ति फैली हुई थी। हमारे दाहिनी ओर लारामी पर्वत और सब पहाड़ियों से कुछ ऊँचा होकर उठा हुआ था। बहुत दूर से ही हमने देखा कि इस पर सफेद धुआँ बहुत बड़ी मात्रा में उठ रहा है।

रेमंड ने कहा, "मेरे विचार में यहाँ कुछ आदिवासी अवश्य होंगे। अच्छा हो कि हम उधर चलें।" परन्तु इस योजना को यूँ ही स्वीकार नहीं किया

जा सकता था, क्योंकि हमें खोई हुई पैड़ को फिर से खोजना था। हमारा यह फैसला हमारे अच्छे भाग्य के कारण ही था, क्योंकि बाद में हमें आदिवासियों से पता चला कि यह धुआँ काक जाति के कुछ सैनिकों ने उठाया था।

शाम बढ़ आई, पर पहाड़ों की तलहटी के अलावा न कहीं जंगल का निशान था और न पानी का। इसलिए हम उसी ओर बढ़े। हमने अपना रास्ता लारामी धारा के उस हिस्से की ओर मोड़ दिया, जहाँ से वह पर्वत से मैदान पर आ जाती है। जब हम यहाँ पहुँचे तो सामने की नंगी पहाड़ी चोटियों पर अब भी धूप चमक रही थी। पहाड़ की अँधेरी कैद से अपने को छुड़ाती हुई यह नदी एक बहुत तेज़ धार के रूप में बह रही थी। इन पहाड़ों और घास के मैदानों में कुछ ऐसी विशेषता थी कि जिससे मन अचानक ही खिल उठा। नदी के किनारे ही घास भरे मैदान का एक टुकड़ा था, जिसके चारों ओर छोटे-छोटे टीले थे और जो हमारी आग को और हमें आस-पास घूमने वाले आदिवासियों की निगाह से बचा सकता था। यहाँ घास में छिपे हुए बड़े-बड़े पत्थरों के कई घेरे दिखाई दिए। डाकोटा परिवारों के सर्दियों का निवास कभी यहाँ रहा होगा। हम वहीं लेटकर सो गए और काफी दिन चढ़ने पर ही जागे। किनारे पर से एक बहुत बड़ी चट्टान आगे बढ़ी हुई थी। इसके पीछे से गहरा पानी धीरे-धीरे चक्कर काटता हुआ बढ़ रहा था। मैं लोभ न रोक सका। अपने कपड़े उतारकर इसमें घुस पड़ा और एक बार धारा के साथ ही मैं भी चक्कर खाने लगा। भँवर से बचने के लिए मुझे पानी के ही एक पौधे की जड़ मज़बूती से पकड़नी पड़ी और तब कहीं मैं किनारे पर आ सका। मुझे कुछ इतनी ताज़गी अनुभव हुई, जैसे मेरी सेहत लौटने लगी हो। अभी हम कुछ ही दूर बढ़े होंगे कि मेरी यह प्रसन्नता और ताजगी मिटने लगी। फिर से मैं उसी प्रकार झुककर बढ़ने लगा। अब मेरे लिए सीधा बैठना भी मुश्किल था।

रेमंड ने कहा, "सामने देखो! वह जो खड्ड दिखाई दे रही है! आदिवासी उधर से ही गए होंगे, यदि सचमुच वे इसी राह से बढ़े हैं।"

हम उस जगह तक पहुँच गए। लगता था पहाड़ों के बीच जैसे एक गहरा खड्ड हो। यहाँ पर हमें एक छोटे-से टीले पर घरों की बल्लियों के चिह्न

दिखाई दे गए। हमारे लिए यही बहुत था। अब सन्देह का कोई मौका न था। हम ज्यों-ज्यों आगे बढ़े रास्ता तंग पड़ता गया। यहाँ आदिवासियों को बहुत सटकर चलना पड़ा था। इसलिए उनके निशान बहुत साफ़ और अधिक मात्रा में दीख रहे थे। यहाँ से हम चट्टानों वाली जगह पर आ निकले और फिर एक नई घाटी में उतरे। यह घास और छोटे पौधों के कारण हरी-भरी थी, जो जगह-जगह से लोगों के गुज़रने के कारण, मसले जा चुके थे। हम चट्टानों पर से होकर धीरे-धीरे बढ़े। बहुत कठिनता से इन सैकड़ों फुट ऊँची चोटियों के बीच से होकर चलने लगे। रेमंड अपने मज़बूत खच्चर के साथ मुझसे कुछ आगे-आगे चल रहा था। यहाँ आकर हम एक ऐसी सीधी चढ़ाई पर आए, जो शायद सबसे अधिक ऊँची चढ़ाई थी। मेरी घोड़ी चीखती और लड़खड़ाती कुछ दूर तक बढ़ी और तब एकाएक रुक गई। अब उसके लिए आगे बढ़ना कठिन था। मैंने उतर कर उसे चलाने की कोशिश की। परन्तु, मेरी ताकत भी जल्दी ही जवाब दे गई। इसलिए मैंने उसकी खोजी रस्सी को ढीला कर दिया और अपनी बाँह के चारों ओर बाँधकर अपने हाथों और घुटनों के बल पर आगे सरकने लगा। चोटी पर पहुँचने पर मैं बहुत बुरी तरह थक गया था। मेरे माथे से पसीना टपक रहा था। मेरे पास ही मेरा घोड़ी एक बुत की तरह खड़ी थी। उसकी छाया एक झुलसती हुई चट्टान पर पड़ रही थी। मैं इसी छाया में कुछ देर के लिए लेट गया। अब मेरे अंगों में हिलने-डुलने की ताकत बिल्कुल न रही थी। चारों ओर सुइयों जैसी काली-काली घास धूप में अपना सिर उठाए खड़ी थी। कोई भी पेड़, झाड़ी या लम्बी घास यहाँ उगी हुई न दीखती थी। चारों ओर असह्य धूप आग बरसा रही थी।

कुछ देर बाद ही मैं फिर घोड़ी पर चढ़कर बढ़ने लायक हो सका। तब पश्चिम की ओर की घाटी में हम उतरने लगे। इस हालत में कुछ ऐसा भद्दापन था, जिसके आगे आदमी और पशु एक समान ही असहाय थे। मैं और घोड़ी—दोनों ही—न भाग सकते थे और न चढ़ सकते थे।

रेमंड की काठी की रस्सी फिसल गई। मैं आगे चलता रहा, पर वह उसे ठीक करने के लिए रुक गया। मैं उस छोटी सी ढलान के किनारे पर पहुँच गया था। यहाँ एक अच्छा नज़ारा मुझे दिखाई दिया। एक कोने में कुछ हरी घास चोटियों पर छाई हुई दिखाई दे रही थी। यहीं पर कुछ झाड़ियाँ और

चीड़ के पुराने पेड़ भी थे। मेरे अन्दर जैसे बचपन के दिन लौट आए और एक तेज़ आवाज़ ने जैसे मेरा स्वागत किया। यह आवाज़ झींगुर की थी, जो सामने के चीड़ की शाखाओं से चिपटा हुआ चिल्ला रहा था। तब मैं इन झाड़ियों में से होता हुआ आगे बढ़ा। यहाँ मुझे अचानक ही किसी झरने की आवाज़ आई। घोड़ी खुद ही उधर मुड़ पड़ी और पेड़ों की शाखाओं में से होती हुई एक काली चट्टान की ओर बढ़ गई। इसके नीचे हरियाली छाई हुई थी। इस पर से एक ठण्डी धारा लगातार नीचे की रेत में जमा पानी पर गिर रही थी। यहाँ से पानी निकलने का कोई रास्ता नहीं दीख रहा था। लगता है पानी ज़मीन में ही सूखता जा रहा था। जब तक मैंने इस चश्मे में से अपना प्याला भरा, घोड़ी अपना सिर पानी में डुबोकर आनन्द में मस्त हो रही थी। साफ़ था कि हमसे पहले भी बहुत-से दर्शक यहाँ आए थे, क्योंकि हिरण, बारहसिंगा और भेड़ों के निशान यहाँ पर दिखाई दे रहे थे। अभी कुछ ही देर पहले आये काले भालू के निशान भी यहाँ मौजूद थे। लगता है वह इन्हीं पहाड़ों में रहता होगा।

इस चश्मे को पार करने के कुछ ही देर बाद हमें एक घास का हरा मैदान, पहाड़ों से घिरा हुआ, दिखाई दिया। इस पर आदिवासियों के पड़ाव के सभी निशान मौजूद थे। रेमंड की खोजी आँखों ने तुरन्त ही वह जगह पहचान ली, जहाँ रेनल का घर और उसके घोड़े रहे होंगे। पास आकर मैं भी इस स्थान को देखने लगा। रेनल और मुझमें कोई मित्रता या समान बात न थी। पर तो भी मुझे अपने इस प्रकार उत्सुक हो उठने पर अचरज ही हुआ। हम दोनों में अगर कोई भी समानता थी, तो वह केवल गोरा होने के कारण ही थी।

आधे घण्टे में ही हम इन पहाड़ों से बाहर निकल आए। अब हमारे सामने एक विस्तृत मैदान था, जो एकदम उजाड़ और मैदानी कुत्तों से जगह-जगह भरा हुआ था। ये कुत्ते अपनी मांदों के बाहर बैठे हुए हम पर भौंकते रहे। यह मैदान कम से कम छः मील चौड़ा रहा होगा। पर उसे पार करने में हमें कम-से-कम दो घण्टे का समय लग गया। अब यहाँ हमारे सामने पहाड़ियों की एक नई माला नजर आई। इनकी चोटियाँ काफ़ी घनी झाड़ियों से ढकी हुई थीं, पर इनकी ढलानें काले पत्थरों से ढकी थीं। ये सभी आंधी

और तूफ़ान के कारण बड़े भयंकर और झुके हुए लग रहे थे। जब हम आदिवासियों की पैड़ पर बढ़ते हुए एक तंग रास्ते से गुज़रे, तो ये पत्थर हमारे सिर पर गिरते हुए-से दीखने लगे।

हमारा रास्ता अब घने पेड़ों में से होकर बढ़ने लगा। बीच-बीच में छाया और धूप पड़ती रहती थी। इन पेड़ों की शाखाओं के बीच से हम इधर से उधर घूमते हुए कई बड़ी-बड़ी चोटियों को साफ़ देख सकते थे। कुछ चट्टानें अगल-बग़ल से हमारे दाएँ-बाएँ हमें घेरती-सी दीख रही थीं।

एक खुली जगह पर चारों ओर ऊँची चट्टानों की दीवारों से घिरे हुए दो आदिवासी किले दिखाई दे रहे थे। ये चौकोन थे और लकड़ी और बल्लियों से मिलाकर बनाए गए थे। ये बिल्कुल उजाड़-से थे, शायद साल भर पहले के बने हुए थे। हर एक में बीस आदमी रह सकते थे। लगता है कभी इस शोक भरे स्थान पर कोई दल शत्रुओं से घिरकर नष्ट हो गया होगा और तबसे इन चट्टानों या पौधों ने कभी भी किसी भी संघर्ष या शत्रु को न देखा होगा। फिर भी अगर कोई खून-खराबी के चिह्न बचे होंगे तो वे इन घासों या झाड़ियों में छिप गए होंगे।

धीरे-धीरे पर्वतों में से निकलकर रास्ता खुले मैदान में आ गया। यहाँ हमें फिर से आदिवासियों की बस्ती के निशान दिखाई देने लगे। हमारे सामने ही पेड़ और झाड़ियाँ थीं। घण्टा भर आराम करने के लिए हम यहीं रुक गए। भोजन समाप्त करने के बाद रेमंड ने चिलम सुलगाई और पेड़ की जड़ में ही बैठकर उसे पीने लगा। कुछ देर तक मैं उसे उसी गम्भीर ढंग से तम्बाकू पीते हुए देखता रहा। थोड़ी देर बाद उसने चिलम धीरे से हटाई और बहुत गम्भीरता से बोला, "हमारे लिए आगे जाना अच्छा न होगा।"

मैंने पूछा, "क्यों नहीं ?"

उसने बताया कि इलाका बहुत खतरनाक हो गया है। हम नाग, अरापाहो, कृष्णपाद आदि जातियों के इलाके में आ गए हैं। अगर उनकी कोई भी घूमती हुई टुकड़ी हम तक पहुँच गई, तो हमें अपनी जान गँवानी होगी। परन्तु, उसने यह भी विश्वास दिलाया कि मैं जैसा भी फैसला करूँगा वह वफ़ादार होकर मेरा साथ देगा। मैंने उसे घोड़े लाने के लिए कहा। हम आगे चल पड़े। मैं स्वीकार करता हूँ कि आगे बढ़ते ही हमें बहुत-से सन्देह

जगने लगे। यदि मेरे अन्दर उस यात्रा के लायक, शरीर और मन में थोड़ी-सी भी ताकत होती और मेरे पास शक्ति और उत्साह से युक्त कोई अच्छा-सा घोड़ा होता तो मैं दुनिया की किसी भी बात के मुकाबले के लिए तैयार था।

चट्टानें हमारे अधिक निकट सरकती आईं। ये ऊँची और सीधी ढलान वाली होती जा रही थीं और हमारे रास्ते को तंग बनाती जा रही थीं। तब हम एक ऐसी खाई में घुसे, जिसके मुकाबले की दूसरी खाई मैंने कभी नहीं देखी। लगता था कि पर्वत चोटी से तल तक घिर गया है। नीचे उतरकर हम तलहटी पर बहुत धीरे-धीरे सरक रहे थे। यहाँ सिलाब और अँधेरा छाया हुआ था, पर साथ ही घोड़ों के खुरों के निशान भी थे। झरना बहुत हल्की-सी आवाज़ में गूँजता हुआ चल रहा था। मानों वही हमारा सच्चा साथी था। कभी-कभी पत्थरों में टकराता हुआ पानी हमारे सारे रास्ते में छा जाता और कभी एक ओर हो जाता। सूखी जगहों पर पाँव रखते हुए हम बढ़ने लगे। ऊपर देखने पर हमें आकाश एक पतली पट्टी के रूप में, दो काली चोटियों के बीच, नीला-सा चमकता हुआ दिखाई दे रहा था। कुछ ही देर बाद हमारा रास्ता चौड़ा होने लगा और सूर्य की किरणें पानी पर से चमकती हुई हम तक पहुँचने लगीं। घाटी यहाँ काफी चौड़ी हो गई थी। झाड़ियाँ, पेड़ और फूल यहाँ, चश्मे के दोनों ओर, काफी अधिक थे। ऊपर की घाटियों पर भी बहुत-सी झाड़ियाँ और फलों के पेड़ उगे हुए दिखाई दे रहे थे। कुछ देर बाद फिर अँधेरे रास्ते में से बढ़ना पड़ा। यह रास्ता मील भर से अधिक लम्बा रहा होगा। इस रास्ते के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते हमारे पशुओं के बिना नाल वाले खुर घायल हो गए और उनके पाँवों पर भी नुकीले पत्थरों के कारण काफ़ी चोटें आईं। इन पर्वतों से निकलकर हम एक और मैदान पर आए। हमारे चारों ओर ऊँची चोटियों का एक घेरा-सा बन गया था। लगता था चारों ओर चुप्पी और एकान्त का राज्य हो। यहाँ भी आदिवासियों ने डेरा डाला था। निश्चय ही वे अपनी औरतों, बच्चों और पशुओं के साथ इस रास्ते से होकर बढ़े थे। इस प्रकार जो रास्ता उन्होंने तीन दिन में तय किया था, हमने उसे एक ही दिन में तय कर लिया था।

इस घेरे से निकलने का एकमात्र रास्ता एक पहाड़ी पर से होकर ही

था। यह पहाड़ी दो सौ फुट ऊँची थी। हम बहुत कठिनता से इस पर चढ़ पाए। चोटी से हमने देखा कि अब पहाड़ों का सिलसिला समाप्त हो गया था। हमारे सामने रेतीला मैदान फैला हुआ था, हर जगह खड्ड और घाटियों ने इसे चीर रखा था। हमारे बाईं ओर एक ऊँचा पहाड़ आकाश में उठा हुआ था। इस पर घूमते हुए चार काले धब्बे से साफ़ दिखाई दे रहे थे। निश्चय ही ये भैंसे थे। इनके दिखाई देने को हमने एक अच्छा लक्षण माना, क्योंकि जहाँ भी भैंसे मिलते हैं वहीं पर प्रायः आदिवासी भी डेरा डालते हैं। हमें उम्मीद थी कि हम उसी रात उनके गाँव तक पहुँच जाएँगे। हमारी उत्सुकता दो कारणों से थी, एक तो यह कि हम अपना यह सफ़र जल्दी ही समाप्त करना चाहते थे और दूसरा यह कि भले ही दिन में वहाँ पहुँचना अच्छा होता पर, उनसे अलग होकर रात में पड़ाव डालना खतरे से खाली न होता। जब हम आगे बढ़े, सूर्य छिपने लगा था। थोड़ी ही देर में सूर्य छिपने ही वाला था, जबकि हमने एक पहाड़ी की चोटी से अपना डेरा डालने के लिए एक जगह ढूँढ ली। मैदान एक ज्वार वाले समुद्र के समान दिखाई दे रहा था, मानों एकदम ऊँची लहरों के बाद यह शान्त पड़ गया हो। इसका आधा हिस्सा धूप से चमक रहा था, और आधा छाया में डूब गया था। शाम की सुनहरी धूप ने इसे रंगबिरंगा बना दिया था। चारों ओर जंगली झाड़ियाँ उगी हुई थीं—खाइयों में भी और टीलों पर भी! हमारे सामने थोड़े-से हिस्से में, घास का एक मैदान भी था और पास ही पानी के कुछ छोटे-से जोहड़ भी चमक रहे थे। हम यहाँ पर आए और आग जलाकर हमने अपने घोड़ों को चरने के लिए खुला छोड़ दिया। यहाँ एक छोटा-सा सोता था, जो कुछ दूर तक बहकर इस मैदान को हरा-भरा बना रहा था। यही सोता कहीं-कहीं जोहड़ों के रूप में फैल गया था। यह इस कारण हुआ कि—बीवर नाम के जन्तु ने इसके चारों ओर बाँध जैसा बना दिया था।

हमने हिरण के बचे हुए मांस के अन्तिम टुकड़े को भूना और अपने भोजन के सामान की कमी पर चिन्ता करते हुए उसे खाने ही लगे थे, तभी एक सलेटी रंग का खरगोश सामने से उछलता हुआ आया और हमसे पचास गज की दूरी पर बैठ गया। मैं बिना सोचे बन्दूक उठाकर उसे मारने ही लगा था, कि रेमंड ने मुझे ऐसा करने से मना किया। उसने बताया कि कहीं आसपास

का कोई आदिवासी इस आवाज़ को न सुन ले। उस रात पहली बार हमें यह खतरा अनुभव हुआ कि हम एक भयानक स्थिति में फँस गए थे। जो लोग आदिवासियों के स्वभाव को नहीं जानते, उन्हें यह अजीब ही लगेगा कि जिन लोगों से मिलने के लिए उतावले होकर हम बढ़ रहे थे, उन्हीं से हम खतरा भी खा रहे थे। अगर कहीं हमारे इन विश्वासपात्र मित्रों की किसी टोली ने किसी पहाड़ की चोटी पर से दिन में हमें देख लिया होता, तो रात को वे हमें ही लूटने के लिए आ जाते और शायद हमारे घोड़े और सिर तक हमसे अलग कर देते। परन्तु यहाँ रहकर एक दम निराश भी नहीं हुआ जाता। मुझे याद है कि मैंने और रेमंड ने उस रात फिर दुबारा इस बात की चिन्ता नहीं की।

हम लगभग आठ घंटे तक बेहोश होकर अपनी काठियों के सिरहाने पर ही सोते रहे। जब मैं जागा तो पाली का पीला सिर मेरे ऊपर छाया हुआ था। मैंने उठकर उसे देखा, उसके पाँव कुचले गए और सूजे हुए थे, पर उसकी आँखें और उसकी चाल पहले से बहुत अच्छी थी। लगता है उसकी बीमारी दूर हो गई थी। हम आगे बढ़े। हमें आशा थी कि घंटे भर में ही हमें आदिवासियों का गाँव दीखने लगेगा। पर, हमें फिर निराशा मिली। अब मैदान बड़ा कठोर और पत्थरों वाला हो गया था। हम दोनों अलग-अलग बँटकर चलने लगे, ताकि कहीं कोई निशान दीख जाए। अन्त में मुझे चट्टानों के किनारे बल्लियों के निशान दिखाई दे गए। अब हम उधर से ही बढ़ने लगे।

"उधर मैदान पर वह काला धब्बा किस चीज का है ?"

हम चढ़कर वहाँ तक गए और पाया कि गुजरते हुए शिकारियों ने इस बड़े भैंसे को मारा था। इसके उलझे हुए बाल और खाल के टुकड़े चारों ओर बिखरे पड़े थे। भेड़ियों ने इसका मज़ा लूटकर इसे खोखला कर दिया था। इस समय इस पर बड़ी-बड़ी काली टिड्डियाँ बैठी हुई थीं। लगता था वह चार-पाँच दिन पहले मारा गया था। इसे देखकर हमारा हौसला टूट गया और मैंने रेमंड से कहा, "लगता है अब भी आदिवासी पचास साठ मील दूर होंगे।" पर उसने अपना सिर हिलाकर विरोध जताया और कहा कि वे अपने शत्रुओं के इलाके में इतनी दूर जाने की हिम्मत नहीं कर सकते।

इसके बाद निशान फिर गुम हो गए। हम पास की एक चोटी पर चढ़े। कहीं कुछ दिखाई न देता था। हमारे सामने एक समतल मैदान कुछ दूर तक

दाएँ-बाएँ फैला हुआ था। इसके सामने की ओर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ अवश्य थीं। यह दस बारह मील लम्बा अवश्य होगा। इस सारे खुले और लम्बे-चौड़े मैदान में आदिवासियों या भैंसों का एक भी निशान हमें न मिला।

रेमंड बोला, "आपने देखा; हमें उलटा लौट चलना चाहिए।"

मेरा विचार इससे मेल न खाता था। नौकर होने के कारण रेमंड को मेरी बात माननी पड़ी। हम सामने की पहाड़ी से उतरे और मैदान के पार चलने लगे। हम इतनी दूर आ चुके थे कि अब न तो घोड़ी में और न ही मेरे में जान बची थी कि हम वापिस लारामी किले की ओर लौट सकें। मुझे पता था कि कठिनाई के ऐसे मौकों पर सफलता पाने के लिए आगे बढ़ना ही एक मात्र उचित उपाय है। हमारे चारों ओर की ज़मीन भैंसों की खोपड़ियों और हड्डियों से भरी पड़ी थी। लगता है साल-दो साल पहले यहाँ आदिवासियों ने कभी भैंसों पर घेरा डाला होगा। पर हमें कोई भी जीवित शिकार सामने नज़र न आया। बहुत देर बाद एक हिरण उछलकर सामने आया और हमें देखने लगा। हमने गोली दाग़ दी, पर दोनों का ही निशाना चूक गया। पशु हमसे कुल अस्सी गज़ की दूरी पर भी नहीं था। शायद इसमें हम दोनों के उतावलेपन का दोष था। थोड़े से आटे को छोड़कर हमारे पास खाने को कुछ और नहीं रह गया था। यहाँ हमें कुछ दूरी पर चमकते हुए कुछ जोहड़ नज़र आए। पास पहुँचने पर हमें इनके चारों ओर की लम्बी घास में से भेड़िए और हिरण उछलते हुए नज़र आने लगे। इन जोहड़ों के पानी पर तैरते हुए कुछ जलमुर्ग़ भी दिखाई दिए, जो चीखते हुए उड़ जाते थे। हिरण पर निशाना चूकने के बाद रेमंड ने इन पक्षियों पर निशाना साधना चाहा। पर, इसमें भी उसे सफलता न मिली। यहाँ पानी भी साफ़ न था। इसके तट भैंसों के कारण इतने दलदले हो चुके थे कि हमारे घोड़े इस तक पहुँचने में घबराने लगे। इस लिए हम घूमकर फिर से पहाड़ियों की ओर बढ़ने लगे। जहाँ-जहाँ भैंसों ने घास को नहीं कुचला था, वहाँ-वहाँ हमारे घोड़ों की गर्दनों तक ऊँची उगी हुई थी।

फिर हमारे सामने ऊसर और उजाड़ मैदान आ गया। हमें रास्ता बताने के लिए एक भी निशान न था। ज्यों-ज्यों हम पहाड़ियों के पास आते गए, हमें एक-दर्रा सा दिखाई देने लगा। अगर आदिवासी इधर से गुजरे होते तो

वे निश्चय ही इसी दर्रे में से गए होंगे। धीरे-धीरे हमने इसपर बढ़ना शुरू किया। जब मैंने चारों ओर पाँव या किसी और वस्तु का निशान न पाया, तो मुझे लगा कि हम कतई असफल रहेंगे; हालाँकि इस सारे रास्ते में भैंसों की खोपड़ियाँ बिखरी पड़ी थीं। हमें इसी समय बिजली कड़कती सुनाई दी। लगा कि तूफ़ान आने वाला था।

जब हम इस दर्रे की ऊँचाई पर पहुँचे, तो सामने का नजारा साफ़ होने लगा। हमें सामने, क्षितिज पर, उठते हुए काले बादल दिखाई देने लगे। उनसे भी परे 'मेडिसन बो' नाम की पहाड़ियों की कतार दिखाई दे रही थी। यहीं से राकी पर्वतमाला आरम्भ हो जाती है। धीरे-धीरे सामने का मैदान पूरी तरह दिखाई देने लगा। चारों ओर हरियाली ही हरियाली छाई हुई थी। कोई भी जीवित चीज़ वहाँ नहीं दिखाई दे रही थी। लारामी नदी इस पर से एक लहरदार रेखा के रूप में चमकती हुई बह रही थी। इसके किनारों पर न कोई पेड़ था और न कोई झाड़ी। इसके सामने ही एक छोटी-सी पहाड़ी ने एक हिस्सा ढका हुआ था। मैं कुछ आगे निकल गया। मुझे मैदान पर कुछ काले धब्बे धारा के किनारे नज़र आए। मैं चिल्ला पड़ा, "भैंसे !"

रेमंड ने प्रसन्नता से कहा, "भगवान् कसम। ये तो घोड़े हैं।" और वह यह कहते-कहते एड़ लगाकर अपने खच्चर को दौड़ाने लगा। अब अधिक से अधिक मैदान सामने दीखने लगा। यहाँ घोड़े भी अधिक-से-अधिक बिखरे हुए दीखने लगे। वे टुकड़ियाँ बाँधकर सारे मैदान पर चर रहे थे। हमने देखा कि नदी के किनारे एक घेरे के रूप में, हमसे कोई मील भर दूर, आदिवासियों के घर खड़े हुए थे। शायद किसी भी यात्री का दिल अपने घर को देखकर इतना खुश न होता होगा, जितना आदिवासियों के इस गाँव को देखकर उस समय मेरा दिल प्रसन्न हुआ।

—:०:—

१४ : ओजिल्लाला गाँव

आदिवासियों के दिमाग़ी ढाँचे के वर्णन का यहाँ स्थान नहीं है पर, तो भी उस बात को समझ लेने से हम थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ मैक्सिको के उत्तर में रहने वाले सभी आदिवासियों के स्वभाव से परिचित हो जायेंगे। अपनी आदतों में यह समानता होने पर भी झीलों, समुद्र-तटों, मैदानों और जंगलों में रहने वाले आदिवासी बाहरी व्यवहार में एक दूसरे से कतई भिन्न हैं। इन लोगों के एक कबीले के साथ बहुत दिन रहने के कारण मैं इन के व्यवहार से भली-भाँति परिचित हो गया, क्योंकि मेरी आँखों के सामने कोई न कोई विशेष घटना घटती ही रहती थी। वे लोग कतई असभ्य थे। सभ्यता के संपर्क में आने पर भी उन लोगों ने कुछ भी नई बात न सुनी थी। उन्हें गोरे लोगों के चरित्र और उन की शक्ति के विषय में कुछ भी पता न था। इसीलिये उन के बच्चे मुझे देखते ही चीखने लगते। उन के धर्म, अन्धविश्वास और रीति-रिवाज, सदियों से बिना बदले, वैसे ही चले आ रहे थे। उनके हथियार और वेशभूषा तक भी न बदले थे। उन्हें हम पाषाणयुग का प्रतिनिधि कह सकते हैं। उनके भाले और उनके बाण तो व्यापारियों से लिये गये लोहे से बने थे, परन्तु वे लोग अब भी पत्थर के पुराने हथियार ही बरतते थे।

इस इलाके में बड़े-बड़े परिवर्तन हो रहे थे। ओरेगन और कैलिफोर्निया की ओर प्रवासियों के जाने के साथ-साथ इस इलाके से भैंसे खतम होने शुरू हो गये थे। इसके साथ ही भैंसों पर जीवन बिताने वाले आदिवासी लोग भी बिखरने शुरू हो गये थे। वे आदिवासी लोग अगले कुछ ही दिनों में शराब और सैनिक चौकियों के कारण कमज़ोर पड़ जाएँगे। इस प्रकार अगले कुछ ही सालों में इस राह से लोगों का आना-जाना आसान हो जाएगा। निश्चय ही इसका खतरा कम होने के साथ-साथ इसका आनंद भी कम होता जायगा।

ज्योंही रेमंड और मैंने गाँव को पहचाना, वे लोग भी उत्सुक हो कर हमें देखने लगे। हम घोड़ों पर चढ़े हुए जब मैदान में आगे बढ़े, तब तक गाँव का

सबसे अगला हिस्सा, कुछ नंगी शक्लों से घिरा होने के कारण, अँधेरे में डूबा-सा लगने लगा था। बहुत सारे लोग हमसे मिलने आगे तक चले आये। उन में से हरा कम्बल ओढ़े हुए फ्राँसीसी रेनल को मैंने पहचान लिया। जब वे पास आये तब हाथ मिलाने की रस्म पूरी तरह अदा की गई। सब लोग इस बात को जानने के लिये अधिक उत्सुक थे कि बाकी लोगों के साथ क्या हुआ? मैंने उन्हें सब बातों का उत्तर दिया। तब वे हमारे साथ ही गाँव की ओर लौट चले।

रेनल ने कहा, "तुम यह सब देखने से चूक गये। अगर कहीं परसों तुम यहाँ होते तो देखते कि इस सारे मैदन में जहाँ तक भी निगाह जाती थी, भैंसे ही भैंसे फैले हुए दिखाई देते थे। उनमें एक भी मादा भैंस न थी, केवल नर भैंसे ही थे। हमने कल तक उनपर हर रोज घेरा डाला। ज़रा गाँव पर निगाह डालो! क्या तुम्हें सभी अच्छी हालत में नहीं दिखाई देते?"

सचमुच ही मैं, बहुत दूरी पर, एक मकान से दूसरे मकान तक फैली हुई लम्बी रस्सियों को देख रहा था, जिन पर सूखने के लिये मांस लटक रहा था। मैंने यह भी देखा कि पिछली बार की बजाय इस बार यह गाँव कुछ छोटा लगता था। मैंने रेनल से इसका कारण पूछा। उसने बताया कि लोबोर्न्ये नाम का बूढ़ा आदमी अपने सम्बंधियों के साथ, इन पहाड़ों के पार जाना कठिन समझ कर, गाँव को छोड़ कर पीछे ही रह गया है। इनमें महतो और उसके भाई भी शामिल थे। 'बवंडर' भी इतनी दूर तक आने को तैयार न था, क्योंकि वह डर गया था। उसके साथ कुल आधा दर्जन घर ही रुके थे। बाकी सब घर अपनी इच्छा के अनुसार आगे चले आये थे। उन्होंने उसके नेतृत्व को मानने से इन्कार कर दिया था।

मैंने पूछा, "गाँव में अब कौन-कौन से मुखिया बच गये हैं?"

रेनल ने उत्तर दिया, "अब बूढ़ा 'लाल पानी,' 'चील का पंख,' 'महान् काक,' 'पागल भेड़िया,' 'चीता,' 'सफेद ढाल,' और दोगला 'शिएन' नाम के सरदार बाकी रह गये हैं।"

इस समय तक हम गाँव के पास पहुँच गये थे। मैंने देखा गाँव के बहुत से घर बहुत बड़े-बड़े थे। परन्तु, एक हिस्सा बहुत ही छोटी और रद्दी झोंपड़ियों का भी था। मैंने उनकी ओर देख कर उनके भद्देपन के लिये कुछ कहा।

परन्तु, मेरी यह बात बहुत बुरी जगह लगी।

रेनल बोला, "मेरी पत्नी के सम्बन्धी इन घरों में रहते हैं। गाँव भर में इनसे अच्छा दल कोई और नहीं है।"

"क्या इन का कोई सरदार भी है?"

रेनल ने उत्तर दिया, "हाँ, क्यों नहीं? बहुत से हैं।"

"उनके नाम क्या-क्या हैं?"

"उनके नाम? उनमें 'बाग़-शिर' एक है! वह अभी तो मुखिया नहीं बना, पर उसे बनना अवश्य चाहिये। फिर 'तूफ़ान' है! वह अभी तो लड़का ही है, पर आने वाले दिनों में वह निश्चय ही मुखिया बन जायेगा।"

इसी समय हम दो घरों के बीच से होते हुए गाँव के बड़े मैदान में पहुँचे। यहाँ बहुत-सी गठी नंगी आकृतियाँ हमें देख रही थीं। रेनल से मैंने पूछा, "'बुरे घाव' का मकान कहाँ है?"

उसने उत्तर दिया, "तुम उससे भी चूक गये। वह तो 'बवंडर' के साथ ही रह गया है। अगर तुम उसे यहाँ पता, और उसके साथ रहते, तो वह निश्चय ही तुम्हारा सबसे अधिक स्वागत करता। परन्तु, अब भी 'महान् काक' का घर सामने है। यह 'लाल पानी' के घर से लगा हुआ ही है। वह भी गोरे लोगों के लिये अच्छा है। मैं तुम्हें उसके यहाँ ठहरने के लिये ही सलाह दूँगा।"

"क्या उसके घर में औरतों और बच्चों की संख्या अधिक है?", मैंने पूछा।

"नहीं, उसमें उसकी केवल एक ही पत्नी है और दो-या-तीन बच्चे! बाकी सबको वह अलग मकान में रखता है।"

इस प्रकार आदिवासी हमारे पीछे-पीछे चलते रहे। हम 'महान् काक' के डेरे पर पहुँचे। उस में से एक स्त्री बाहर आई। उसने हमारे घोड़े ले लिये। मैंने दरवाजे पर से चमड़े का परदा हटाया और झुककर 'महान् काक' के कमरे में घुसा। वहाँ धुँधली रोशनी में खालों के एक गट्ठर पर बैठे हुए हमने उसे देखा। उसने अपनी भाषा में मेरा स्वागत किया। मैंने रेनल से उसे समझाने के लिए कहा कि मैं और रेमंड उसके साथ रहने के लिये आये हैं। उसने इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की। यह बात उसे लगी तो कुछ अजीब ही, पर तो

नई लाई गई दूसरी कुछ जवान औरतों पर अधिक था। इनमें से इस समय एक उसके साथ ही थी, जो इस मकान से अलग पास के ही एक दूसरे मकान में रह रही थी। एक दिन इसी पड़ाव में रहते हुए वह उससे नाराज़ हो गया और उसने उसे धक्का देकर, ज़ेवर, पोशाक और उसकी हर चीज़ के साथ, उसे बाहर निकाल दिया और अपने पिता के घर जाने को कहा। इस प्रकार का छोटा-सा तलाक देने के बाद वह फिर आकर अपनी जगह पर बैठ गया और बहुत शान्ति और सन्तोष के साथ अपनी चिलम पीने लगा।

मैं उस शाम उसके पास ही बैठा हुआ था। मुझे यह उत्सुकता जगी कि उस के नंगे बदन पर जो सैकड़ों घावों के निशान दिखाई देते थे, उनके बारे में कुछ पूछताछ करूँ। कुछ के बारे में मुझे पहले से ही पता था। दोनों बाहें चाकू के गहरे निशानों से कुछ-कुछ दूरी पर छेदी गई थीं। और भी कुछ दूसरी किस्म के निशान उसकी पीठ और छाती के दोनों हिस्सों पर बने हुए थे। यह एक प्रकार की तपस्या के निशान थे, जिन्हें ये आदिवासी अपने साहस और सहनशीलता की परीक्षा के रूप में खास-खास मौकों पर स्वयं ही लगाते हैं। इनसे आत्माओं को भी प्रसन्न करने का प्रयत्न किया जाता है। छाती और पीठ के बहुत से और निशान जंगल के पेड़ों को गिराते हुए लगे थे। इसके लिए एक रीत यह है कि जिन पेड़ों पर भैंसों की खोपड़ियाँ लटकाई जाती हैं, उनपर रस्सियाँ बाँधकर युवक को अपनी छाती के बल से उस पेड़ को गिराने को कहा जाता है। उसकी बाहें पकड़कर दो युवक उसकी सहायता करते हैं। वह आगे की ओर तेज़ी से भागता है। अन्त में पेड़ का तना चिर जाता है और उसके ऊपर लटकती हुई भैंसे की खोपड़ी एक ओर गिर जाती है। हमारे मेज़बान के कुछ और निशान किन्हीं दुर्घटनाओं के कारण भी थे; परन्तु युद्धों में भी उसके शरीर पर अनेकों घाव हुए थे। वह इस गाँव के माने हुए योद्धाओं में से एक था। उसने मेरे सामने दावा किया कि अपने जीवन में कम-से-कम चौदह आदमियों को वह मार चुका है। और आदिवासियों की तरह भले ही वह भी झूठा था, पर तो भी इस बात में वह निश्चय ही सच्चा था।

मेरी पूछताछ से खुश होकर वह मुझे कहानी पर कहानी सुनाने लगा। उसकी युद्ध की इन कहानियों में कोई सच्ची थी और कोई झूठी। इनमें से

एक कहानी ऐसी थी, जिससे आदिवासियों के चरित्र की सबसे बुरी बातें भी सामने आ जाती हैं। इसे छोड़ देना उचित न होगा। अपने घर के दरवाज़े में से 'मेडिसनबो' नाम के पहाड़ की ओर इशारा करते हुए उसने बताया कि आज से कुछ साल पहले वह अपने जवान आदमियों की एक लड़ाकू टुकड़ी लेकर उधर गया था। वहाँ उन्हें शिकार खेलते हुए दो नाग आदिवासी मिल गए। उनमें से एक को उन्होंने बाणों से ही मार डाला और दूसरे का पीछा करने लगे। अन्त में उन्होंने उसे घेर लिया। मेरे मेज़बान ने खुद अपने घोड़े से उतर कर सामने के पेड़ों में उसे बाँहों के साथ जकड़ दिया। दो और युवकों ने दौड़कर उसकी सहायता की और ज़िन्दा ही उसकी खोपड़ी काट लेने का मौका दिया। तब उन लोगों ने एक बहुत बड़ी आग जलाई और अपने कैदी के पाँवों और कलई के मांस को काटकर उसे उसमें जलने के लिए डाल दिया और तब तक उसे बल्लियों से दबाए खड़े रहे, जब तक वह जल न गया। उसने अपनी कहानी में कुछ ऐसी बातें भी वर्णन कीं, जिन्हें बताने में मुझे घृणा हो जाती है। यह सब बताते हुए वह बहुत ही नरम और सभ्य बना रहा। यह बात किसी और आदिवासी के लिए सम्भव नहीं। इन असभ्य बातों को बताते हुए वह मेरी ओर उतने ही भोलेपन से देखता रहा, जितने भोलेपन से कोई लड़का अपनी माँ को अपने छोटेपन की कोई बात सुना रहा हो।

बूढ़े मेनेसीला के घर में एक और ही नज़ारा सामने आया। वहाँ चमकदार आँखों वाला एक चुस्त बालक बैठा हुआ था, जो कभी कृष्णपाद जाति का था। ये लोग बहुत खूँखार और भयंकर होते हैं और अरापाहो लोगों से मिलजुल कर रहते हैं। आज से लगभग एक साल पहले 'महान् काक' और दूसरे योद्धाओं के एक दल ने इन लोगों के बीस घर इस जगह से बीस मील की दूरी पर देखे थे। इन्होंने उन्हें रात में जा घेरा और उनके मर्दों, औरतों और बच्चों को कत्ल कर डाला। केवल इस छोटे से बच्चे को बचा लिया गया। इसे मेनेसीला के परिवार में अपना लिया गया और अब यह इसी जाति के बच्चों में बराबर का बनकर हिलमिल कर पल रहा था। इस गाँव में एक बड़े और अच्छे डीलडौल वाला योद्धा भी था, जो काक जाति से सम्बंध रखता था। आज से बहुत साल पहले इसे कैदी बनाया गया था। एक माँ ने, जिसका बच्चा मारा जा चुका था, इसे अपना बच्चा मान लिया था। अब यह अपनी

पुरानी जाति को भूलकर तन-मन से इस नयी जाति को अपना चुका था।

यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि नाग और काक जाति के लोगों से लड़ने की बात सबसे पहले इसी गाँव में चली थी। बड़े भारी युद्ध का हौसला तो खत्म हो गया था, पर उस उत्साह की कुछ चिनगारियाँ अब तक जल रही थीं। ग्यारह युवक योद्धाओं ने शत्रु के विरुद्ध जाने की तैयारी कर ली थी। इस पड़ाव के चौथे दिन उन्होंने चलने का समय निश्चित कर लिया था। इस दल का मुखिया गठीले बदन का एक ठिगना आदिवासी युवक 'सफेद ढाल' था। मैंने उसे सदा ही अच्छी पोशाक में बने-ठने पाया था। उसका मकान चाहे बड़ा न था, पर तो भी गाँव भर में सबसे अच्छा था। उसकी स्त्री भी सबसे सुन्दर थी। कुल मिलाकर उसका घर किसी भी ओजिल्लाला परिवार के लिए आदर्श था। मैं उसके यहाँ अक्सर जाया करता था। गोरे लोगों के साथ उसका विशेष स्नेह था और वह मुझे जब-तब दावत के लिए बुलाता रहता था। एक बार उत्सव के समाप्त होने पर मैं और वह चौकड़ी मारे, चिलम पीते हुए, बहुत ही मित्रतापूर्वक बैठे थे। तब उसने अपने युद्ध के हथियारों को सब तरफ से इकट्ठा किया और गर्व के साथ मुझे दिखाया। और चीज़ों के साथ-साथ उसके पास एक बहुत अच्छी टोपी भी थी, जिसपर पंख जड़े हुए थे। इसे पहनकर वह मेरे सामने खड़ा हो गया। वह जानता था कि इसके पहनने से उसके उत्साह भरे सुन्दर चहरे पर कुछ और ही रौनक आ जाती है। उसने बताया कि इसपर तीन चीलों के पंख लगे हुए थे, जिनकी कीमत तीन अच्छे घोड़ों से कम न थी। उसने तब एक ढाल हाथ में ली, जो अच्छी तरह रंगी हुई थी और जिसपर पंख अटके हुए थे। इन हथियारों का असर भी बहुत अधिक होता था। उसका तरकश एक चीते की चित्तीदार खाल से बना हुआ था। ऐसा चीता इन पहाड़ियों में बहुत मिलता है। इस तरकश से अब भी चीते की पूँछ और पंजे जुड़े हुए थे। उस युवक ने इस उत्सव का अन्त आदिवासियों की तरह से ही किया। उसने मुझसे कुछ बारूद और गोलियाँ माँगीं। उसके पास धनुष और बाण के इलावा बन्दूक भी थी। मुझे यह भेंट देने से इन्कार करना पड़ा, क्योंकि मेरे पास पहले ही बहुत थोड़ी बारूद रह गई थी। फिर भी बिदा होते हुए मैंने उसे केसर दिया। जब मैं उससे बिदा हुआ, तब वह पूरी तरह संतुष्ट था।

अगली सुबह उस युवक को सर्दी लग गई और उसका गला सूज गया। वह तुरन्त ही हिम्मत हार बैठा। उस गाँव में किसी ने भी ऐसी बीमारी को अधिक वीरता से नहीं सहा था। अब वह भी घर-घर बड़ा उदास और निराश होकर घूमने लगा। बहुत देर बाद एक लबादे में लिपट कर वह रेनल के दरवाज़े पर बैठ गया। जब उसे पता चला कि मैं और रेनल उसकी बीमारी को किसी भी प्रकार कम न कर सकते थे, तब वह उठा और गाँव के एक जादूगर डाक्टर के पास गया। इस बूढ़े ठग ने उसे बहुत देर दोनों मुक्कों से थपथपाया और उसपर झुककर चीखा चिल्लाया। तब उसके कानों के पास झुककर उसने ढोल बजाना शुरू किया, ताकि बुराई दूर भाग सके। जब इस इलाज का भी कोई असर न हुआ तो वह युवक फिर से अपने घर लौट आया और कुछ घंटे तक निराश होकर पड़ा रहा। शाम के समय वह एक बार फिर आया और रेनल के घर के सामने उसी प्रकार ठाठ से अपना गला थामकर बैठ गया। कुछ देर वह चुपचाप ज़मीन पर अपनी निगाह जमाए, अफसोस करता. बैठा रहा। अन्त में उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहना शुरू किया, "मैं एक बहादुर आदमी हूँ। सभी युवक मुझे एक बड़ा योद्धा मानते हैं। उनमें से दस मेरे साथ युद्ध पर भी जाने को तैयार हैं। मैं जाऊँगा और उन्हें शत्रु दिखा दूँगा। पिछले साल नाग लोगों ने मेरे भाई को मार डाला था। जब तक मैं उसकी मौत का बदला न ले लूँ, मेरा जीवित रहना बेकार है। कल हम निकल चलेंगे और मैं उनकी खोपड़ियाँ काट लूँगा।"

'सफेद ढाल' ने जब यह इरादा प्रगट किया, तो उस समय उसमें सदा की भाँति न उत्साह था और न आँखों में चमक थी। उसका सिर निराशा से झुक गया था।

शाम के समय आग के किनारे बैठे हुए मैंने देखा था कि वह युद्ध की पूरी पोशाक में सजा-धजा अपने गालों पर केसर लगाए अपने सबसे प्यारे घोड़े को लेकर अपने घर के सामने आया। इस पर चढ़कर वह सारे गाँव में अपने भारी गले से खरखराहट भरे स्वर में युद्ध का गीत गाते हुए निकला। औरतों की प्रशंसा उसपर बरसने लगी। तब वह उतर कर कुछ देर के लिए जमीन पर लेट गया, जैसे वह कुछ प्रार्थना कर रहा हो। अगले दिन सुबह मैं योद्धाओं की विदाई की इन्तजार करता रहा, पर व्यर्थ। दोपहर से पहले तक

चारों ओर शान्ति ही छाई रही। तब 'सफेद ढाल' उसी पुरानी जगह पर हमारे सामने आकर बैठ गया। रेनल ने उससे युद्ध में न जाने का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया, "मैं जा नहीं सकता, क्योंकि मैंने लड़ाई में बरते जाने वाले अपने बाण किसी दूसरे को दे दिए हैं।"

रेनल ने कहा, "तुम ने तो उसे केवल दो ही बाण दिए हैं। अगर तुम अब भी मांगो, तो वह तुम्हें वापिस दे देगा।"

कुछ देर तक वह चुप रहा। पर अन्त में बहुत उदासी भरे स्वर में बोला, "बात यह है कि मेरे जवान साथियों में से एक को बहुत बुरा सपना आया है। कुछ मरी हुई आत्माओं ने नींद में उसपर पत्थर फेंके हैं।"

यदि कहीं सचमुच ही ऐसा स्वप्न किसी को आया होता तो अब तक युद्ध का कोई भी बड़ा दल तितर-बितर हो चुका होता। हम दोनों को ही यह विश्वास हो गया कि उसने घर पर ही रहने के लिए यह गप्प घड़ ली थी।

'सफेद ढाल' एक माना हुआ योद्धा था। वह पीड़ा को बिना दिखाए बहुत गहरे घाव को भी सह सकता था। उसने शत्रु से पाए हुए भयंकर घावों को भी बिना किसी कष्ट के सह लिया था। इस प्रकार के मुकाबले के लिए किसी भी आदिवासी का सारा स्वभाव परीक्षा पर आ जाता है। बचपन से लेकर उस पर पड़े हर प्रभाव को जानना ज़रूरी हो जाता है। वह जानता है कि उसे ये कष्ट क्यों सहने पड़ रहे हैं। इसी लिए उसकी आत्मा उसे शत्रु का पूरी तरह मुकाबला करने और एक योद्धा की भांति सर ऊँचा करके सबसे ऊँचा गौरव पाने के लिए प्रेरित करती है। पर जब कभी उस पर कोई बीमारी या इसी प्रकार का कोई दुर्भाग्य टूटता है, तब उसकी सारी मर्दानगी जवाब दे जाती है। बड़े-से-बड़ा योद्धा भी इस प्रकार के न दिखाई देने वाले दुश्मन के सामने अपने को कमज़ोर और असमर्थ पाता है। वह समझ लेता है कि या तो किसी बुरी आत्मा ने या किसी के जादू टोने ने उसे ग्रस लिया है। जब इस प्रकार की किसी लम्बी बीमारी के चक्कर में कोई आदिवासी पड़ जाता है, तो वह अपना भाग्य समझकर, अपने ही ख्यालों में डूबा हुआ, मरने की प्रतीक्षा करने लगता है। अगर किसी परिवार पर एक पर एक दुर्भाग्य टूटता रहे, तब भी यही हालत होती है। आदिवासी इस बात के लिए प्रसिद्ध हैं कि वे अकेले ही शत्रु के खेमे में घुस जाते हैं या अकेले ही काले भालू पर हमला

कर बैठते हैं। अक्सर वे ऐसा इसलिए भी करते हैं कि वे भाग्य के सहारे अपने बुरे दिन काटने की बजाय मरने या मारने में विश्वास रखते हैं।

इस प्रकार, उपवास, स्वप्न और महान् आत्मा की स्तुति करने के बाद भी 'सफेद ढाल' का यह लड़ाकू दल अपने काम पर न जा सका।

—:•:—

१६ : पशु फँसाने वाले

आदिवासियों की चर्चा करते हुए मैं एक अन्य जाति के दो साहसी बहादुरों की बात करना भूल गया हूँ। यह दोनों आदमी हैं—रूलो और साराफँ। ये दोनों एक बहुत ही खतरनाक काम में लगे हुए थे। यह दोनों अरापाहो लोगों के इलाके की ओर जा रहे थे। यह इलाका हम से एक दिन के सफ़र की दूरी पर था। ये जाति बहुत ही खूँखार और असभ्य है। इन लोगों ने गोरों से दुश्मनी पाल रखी है। ये लोग अपने इलाके में आने वाले किसी भी गोरे को जान से मारने पर तुले रहते हैं। हम लोग इन्हें बाद में लौटते हुए मिले भी थे। दुश्मनी की इस घोषणा का भी एक किस्सा है।

पिछले बसंत में कर्नल कीर्नी जब बहुत-सी सैनिक टुकड़ियों को ले कर लीवनवर्थ किले से लारामी किले की ओर चले, तो बेंट किले के नीचे के पहाड़ की तलहटी से होकर गुजरे। बाद में लौटते हुए पूर्व की ओर से लीवनवर्थ किले में पहुँचे। लारामी किले में ठहरने के समय उन्होंने अपनी एक टुकड़ी पश्चिम की ओर 'स्वीटवाटर' तक भेजी। वह खुद किले में ही रह गये और आसपास के आदिवासियों को मिलने के लिए उन्होंने किले में बुलाया। यहाँ उनकी एक खास बैठक बुलाई गई। इस समय पहली बार आदिवासियों ने गोरों को देखा। वे उन सिपाहियों के सैनिक रंग-ढंग, वेशभूषा तथा मजबूत घोड़ों को देखकर हैरान रह गये। और लोगों के साथ अरापाहो लोग भी काफ़ी बड़ी संख्या में वहाँ आये थे। पिछले दिनों उन्होंने बहुत से गोरे लोगों को मारा था। इसलिए कर्नल ने उन लोगों को धमकी दी कि अगर आगे से उन्होंने एक भी गोरे को मारा, तो वह अपने सैनिकों को खुला छोड़ देगा और उनकी जाति का नाम तक मिटा देगा। शाम के समय अपने भाषण का असर दिखाने के लिए उसने एक तोप दागने की आज्ञा दी। डर के मारे बहुत से आदिवासी जमीन पर गिर गये और बहुत से चीखते-चिल्लाते भाग गये। अगले दिन वे सब लोग अपने-अपने पर्वतों की ओर भाग गये। वे सैनिकों, तोप और ऊपर की ओर फेंके गये गोले को देखकर घबरा गये थे। गोले से उन्हें ऐसा

लगा कि वह महान्-आत्मा की ओर फेंका गया था। कुछ महीनों तक वे शान्त रहे और उन्होंने कोई गड़बड़ न मचाई। हमसे कुछ ही दिन पहले उन्होंने बहुत ही नीचता भरा एक कार्य किया। बूट और मे नाम के दो गोरे इन्हीं पहाड़ों में पशु फँसाने का काम कर रहे थे। इन्हें उन्होंने बहुत निर्दयता से मार डाला। यह इस कारण हुआ कि आदिवासियों में स्वभाव से ही खूँखार बनने की आदत होती है। ये दोनों खून होते ही सारी जाति घबराहट में पड़ गई। वे हर रोज़ इस बात की प्रतीक्षा में रहने लगे कि गोरे सैनिक आ कर उन पर हमला करेंगे। वे नहीं जानते थे कि वे सैनिक उनसे नौ सौ मील से भी अधिक दूरी पर थे। उनमें से बहुत से लोग लारामी किले में समझौते के लिए आए और अपने साथ खून का बदला चुकाने के लिए भेंट रूप में कुछ कीमती घोड़े लेते आये। बोर्दू ने ये भेंटें लेने से मना कर दिया। तब उन्होंने कातिल को ही सौंप देने की बात कही पर बोर्दू ने यह बात भी स्वीकार नहीं की। हफ्तों बीत जाने पर भी एक सैनिक तक न आया। आदिवासी लोग बहुत डर कर किले से लौटे थे पर, अब उन्हें लगा कि बोर्दू ने उनकी भेंटें डर के कारण स्वीकार नहीं की थीं। आदिवासियों की इस आदत को हर कोई जानकार अच्छी तरह जानता है। अब उन्हें विश्वास हो गया कि मरे हुए गोरों के बदले से उन्हें डरने की ज़रूरत नहीं रही। अब ड्र का स्थान एक निडर पागलपन ने ले लिया था। उन्होंने तब से गोरों को बुज़दिल और बूढ़ी औरत के रूप में समझना शुरू कर दिया। डाकोटा जाति के एक मित्र ने लारामी किले में यह खबर पहुँचाई कि ये लोग अपने बीच पहुँचने वाले किसी भी पहले गोरे को मार डालेंगे।

अगर लारामी किले में पूरे अधिकारों के साथ किसी सैनिक अफ़सर को तैनात कर दिया जाता और वह कातिल को सौंपे जाने की भेंट स्वीकार कर के उसे सब के सामने ही मरवा डालता तो वे लोग सदा के लिए शान्त हो जाते और यह खतरा टल जाता। परन्तु ऐसा न होने के कारण अब 'मैडिसन बो' नाम की वे पहाड़ियाँ बहुत अधिक खतरे से भर गई थीं। मेनेसीला और बहुत से दूसरे आदिवासियों ने इकट्ठे होकर इन दोनों पशु फँसने वालों को अपने काम से रुक जाने के लिए मनाना चाहा। पर ये दोनों बहादुर गोरे उस खतरे पर हँस दिये। जिस दिन उन्होंने हमारे डेरे से विदा होना था,

उससे पहली शाम हम सबने ही 'मैडिसनबो' पहाड़ों के नीचे से उठते हुए सफेद धुएँ को देखा था। कुछ स्वयंसेवक तुरन्त रवाना कर दिये गये थे, ताकि वे असली कारण का पता लगा सकें। उन्होंने बताया था कि इस जगह से अभी-अभी, कुछ देर पहले ही, अरापाहो लोगों का डेरा उखड़ कर जा चुका है। इतने पर भी ये दोनों पशु-फँसाने वाले अपनी तैयारियों में लगे रहे।

सारार्फे एक लम्बा और ताकतवर आदमी था। उसका चेहरा बड़ा खूँख्वार लगता था। उसकी बंदूक आदिवासियों और भैंसों के अलावा किसी और के ही काम आती होगी। रूलो का चेहरा कुछ अधिक चौड़ा और लाल था और वह बच्चे-सा भोला लगता था। उसका ढाँचा बड़ा मजबूत और गठा हुआ था। उसके पाँव के अगले जोड़ जम चुके थे। पिछले दिनों अपने घोड़े से कुचले जाने के कारण उसकी छाती पर भी कुछ घाव हो गये थे। इस पर भी उसकी शान में कोई अन्तर न पड़ा। वह अब भी अपने अधूरे पाँवों पर ही गाँव भर में, बातें करता हुआ, गाता हुआ और स्त्रियों से हँसी मजाक करता हुआ, घूमता रहता। रूलो को औरतों से कुछ खास लगाव था। वह एक न एक ऐसी पत्नी अवश्य रखता था, जिसे यह मालाओं और फूलों से सजा सके और दूसरी भी सजावट की चीजें उसे लाकर दे सके। हालाँकि वह उसे अपने साथ न ले जाकर गाँव में ही छोड़ जाता था, परन्तु इससे भी उसे प्रसन्नता ही होती थी। अगर कभी वह अपनी खतरे से भरी सारी कमाई अपनी प्रेमिका पर निछावर न कर पाता, तब वह उसे अपने साथियों में ही, दावतों में, उड़ा देता। अगर उसे शराब न मिलती, तो वह बहुत तेज कॉफी से काम चला लेता। यहाँ के लोग खुद पर बहुत काबू न रखते थे। इसलिए उनके सामने जो कुछ भी, जितना भी और, जितना महँगा भी रख दिया जाता, उसे एक ही बारी में समाप्त कर देते। दूसरे पशु फँसाने वालों की भाँति रूलो का जीवन भी विरोध और विचित्रताओं से भरा हुआ था। उसे अपनी इन यात्राओं पर बहुत कम समय के लिए ही जाना होता था। बाकी समय वह या तो किले के आस-पास काटता या उसके पास बसे अपने मित्रों के पास रह कर, शिकार और दूसरे प्रकार के आनन्दों में बिताता। पर एक बार बीवर के शिकार के समय उसे एक बहुत ही बुरा अनुभव हुआ। तब से हाथ-पाँव, कान और आँख—सभी ओर से वह चौकन्ना रहने लगा। जंगल में वह

अपना शाम का भोजन बिना पकाये ही निगल जाता था, ताकि कहीं शत्रु उसकी जलाई आग को दूर से न देख ले। कभी-कभी वह भोजन खाने के बाद आग जला कर, कुछ दूरी पर, अँधेरे में छिप कर बैठ जाता था, ताकि वहीं कहीं घूमता हुआ उसका शत्रु उसे न पा कर निराश होकर लौट जाए और उसके पाँवों के निशान भी न खोज पाये। राकी पर्वतमाला में ऐसी जिन्दगी अनेक लोगों को बितानी पड़ती है। एक बार मुझे एक ऐसे पशु फँसाने वाले से मिलने का मौका हुआ, जिसकी छाती पर बाणों और गोलियों के छः निशान थे। उसकी एक बाँह टूटी हुई और एक घुटना कुचला हुआ था। इस पर भी वह अपने काम से बाज न आता था।

इस डेरे के अन्तिम दिन ये लोग जाने के लिए तैयार हो गये। पिछली बार जब ये ब्लैकहिल्स गये थे; तब इन्होंने सात बीवर जन्तुओं की खालें उतारी थीं। अब ये खालें इन्होंने रेनल के पास जमा करवा दीं, ताकि उनके आने तक वह इन्हें सम्भाल रखे। उसके मजबूत और गठीले घोड़ों की लगाम के आगे स्पेनी लोहे के शिकंजे लगे हुए थे। उनकी काठियाँ मैक्सिको की बनी हुई थीं, जिनके साथ चढ़ने के लिए लकड़ी की रकावें लगी हुई थीं। उनकी काठियों के पीछे बीवर पशुओं को फँसाने वाले जाल बँधे हुए थे। उनके सामान में इसके अलावा बंदूक, चाकू, बारूद और गोलियों के थैले, पत्थर और लोहा तथा टीन का प्याला भी शामिल थे। उन लोगों ने हम से हाथ मिलाया और चले गये। अपना भारी चेहरा लिए साराफैं आगे चल रहा था और रूलो आराम से पीछे-पीछे चल रहा था। वह घोड़े को एड़ लगा कर, चाबुक फटकारता हुआ, मैदान पर भगाने लगा और एक कनाडी गीत बहुत ऊँचे स्वर में गाने लगा। रेनल ने उसकी ओर बहुत स्वार्थ भरी निगाह से देखा और कहने लगा, "अगर ये इस बार मर गये तो इनकी ये खालें किले में मुझे कम-से-कम पचास डालर दिलवाने में सहायता करेंगी।"

मैंने उन्हें यहीं अन्तिम बार देखा।

इस डेरे में हमें पाँच दिन हो गये थे। अब तक सुखाया हुआ मांस ढोने लायक हो गया था। भैंसों की खालें भी अगले साल के घरों के लिए बड़ी मात्रा में तैयार हो गई थीं। पर अब भी बड़ी-बड़ी बल्लियों और लट्ठों को पाने की समस्या बनी हुई थी। ये लट्ठे 'ब्लैकहिल्स' के ऊँचे जंगलों में ही मिल

सकते थे। इसलिए अब हमें उसी ओर बढ़ना जरूरी था। इन दिनों गाँव में चीजों की इतनी बहुतायत हो गई थी कि कोई भी तंगी महसूस नहीं करता था। हालांकि खाल और जीभ पर शिकारी का अधिकार होता था, पर तो भी बाकी मांस को कोई भी ले सकता था। इस प्रकार कमजोर, बूढ़े और लूले-लंगड़े भी अपना गुजर कर लेते थे। नहीं तो, उन्हें भूखों ही मरना पड़ता।

पच्चीस जुलाई को, दोपहर के काफी देर बाद, डेरा टूटा और एक बड़े गड़बड़झाले में पड़कर हम सब लोग एक बार फिर घोड़ों पर चढ़ कर या पैदल ही मैदानों पर बढ़ने लगे। अभी हम कुछ ही दूर बढ़ पाये थे कि सब बूढ़े आदमी, जो सारे रास्ते भर सबसे आगे पैदल ही चलते आये थे, धरती पर एक घेरा बाँधकर बैठ गये। परिवारों ने अपने मकान, ठीक तरतीब में, उनके चारों ओर खड़े करने शुरू कर दिये। इस प्रकार एक घेरे में डेरा तैयार हो गया। इस बीच बूढ़े लोग उसी तरह बैठे हुए तम्बाकू पीते और बातें करते रहे। मैंने अपने घोड़े की लगाम रेनल को सौंपी और उनके साथ ही जा बैठा। वे लोग बहुत खुलकर बातें कर रहे थे। उन में वह गम्भीरता नहीं दिखाई दे रही थी, जो कि ऐसे मौकों पर अथवा किसी ऐसे गोरे आदमी के सामने उन में पायी जाती है। इसके विपरीत वहाँ खूब हँसी-मजाक होता रहा।

जब पहली बार की चिलम बुझ गई तो मैं उठा और अपने मेज़बान के डेरे पर आ गया। यहाँ मैं झुक कर अभी बारूद और गोलियों के थैले को उतार ही रहा था कि बिल्कुल पास ही एक बहुत तेज और भयंकर युद्ध की पुकार सुनाई देने लगी। मेज़बान की पत्नी ने अपने सबसे छोटे बच्चे को गोद में खींच लिया और घर से बाहर भागी। मैं भी उसके पीछे-पीछे गया और देखा कि सारा गाँव डर के कारण चीखता और चिल्लाता गड़बड़ में उलझ गया है। गाँव के बीचों-बीच बैठे हुए बूढ़ों का घेरा भी उठ गया था। उस दिशा में कुछ आगे बढ़कर मैंने गुस्से से भरी एक भीड़ देखी। उसी समय मैंने रेमंड और रेनल की आवाज़ पहचानी। वे मुझे ही बुला रहे थे। मैंने देखा कि रेनल के हाथ में बंदूक थी और वह एक छोटी-सी धारा के दूसरे किनारे पर खड़ा हुआ था। वह मुझे और रेमंड को अपने साथ आ मिलने के लिए बुला रहा था। रेमंड अपनी शाही चाल में उस ओर ही जा रहा था।

अपने को इस गड़बड़ से बचाने का यही सबसे अच्छा तरीका समझ कर मैं भी उधर ही मुड़ने लगा। पर तभी साँप की-सी चमकती दो आँखों ने मुझे पास के एक घर से झाँका। बूढ़ा मेनेसीला एक हाथ में अपना धनुष बाण तथा दूसरे हाथ में कृपाण लिये घर से बाहर निकला। अब वह पूरी तरह हथियारों से सजा-बजा सामने आ गया। औरतें चीखती-चिल्लाती बच्चों को खतरे की जगह से बाहर ले जाने के लिए उतावली थीं। मैंने देखा कि कुछ लोग खतरे के मुकाबले के लिए जल्दी में जितने भी हथियार समेट सकते थे, अपने हाथों में ले जा रहे थे। डेरे के पास की एक ऊँची जमीन पर कुछ बूढ़ी औरतें जमा होकर एक गाना गा रही थीं, ताकि आने वाली बुराई को दूर भगा सकें। चश्मे के पास पहुँचते ही मुझे अपने पीछे गोली चलने की आवाज सुनाई दी। मुड़कर मैंने देखा कि गाँव के सारे योद्धा एक दूसरे के मुकाबले में दो हिस्सों में बँट गये थे और एक दूसरे पर हमला करने के लिए तैयार हो गये थे। उसी समय मुझे अपने सिर पर से गुजरती हुई किसी तेज आवाज से लगा कि यह खतरा केवल वहीं तक रुका नहीं रहेगा। इसलिये मैंने बहुत जल्दी ही चश्मे को पार किया और रेनल और रेमंड से जा मिला। वहाँ हथियारबन्द होकर हम चुपचाप इस सब झगड़े को देखते हुए परिणाम की परीक्षा में घास पर ही बैठे रहे।

सौभाग्य से यह सब झगड़ा जल्दी ही शांत भी हो गया। हमें इसकी आशा न थी। जब हमने फिर से देखा, तब ये ही लड़ने वाले फिर से एक दूसरे से मिल गये थे। अब भी कहीं-कहीं आवाजें सुनाई दे जाती थीं, पर हमला बिल्कुल बन्द हो चुका था। मैंने पाँच या छः आदमी बीच-बचाव करते देखे। इसी बीच एक आदमी ने कुछ घोषणा की, जिसे मेरे दोनों साथी अपनी बातों में उलझे रहने के कारण पूरी तरह न सुन पाये। इसीलिए मैं भी पूरी बात न समझ पाया। अब वह भीड़ छटनी शुरू हो गई। लौटते हुए योद्धाओं में से कुछ की आँखों में अब भी चमक दीख रही थी। यह झगड़ा कुछ बूढ़े लोगों के कारण समाप्त हुआ, जिन्होंने लड़ाकू दल के बीच आकर उन्हें समझाया। इन लोगों का साथ उन सिपाहियों ने भी दिया, जिनका काम इन गाँवों में पुलिस के समान माना जाता है।

मुझे यह बड़ा अजीब लगा कि इतने बाण और गोलियाँ चलीं, पर घाव

किसी को भी नहीं लगा। इसका एकमात्र कारण यही हो सकता है कि उस समय योद्धा और उसका शिकार—दोनों ही—बराबर हिलते रहे थे। लगभग सारे ही गाँव वाले इस झगड़े में शामिल हो गये थे। गाँव भर में कुल मिला कर पाँच या छः बंदूकें ही थीं। मैंने कुल आठ या दस गोलियों की ही आवाजें सुनी थीं।

लगभग पौन घंटे में ही सब कुछ शांत हो गया। अब फिर गाँव के बीचों-बीच योद्धाओं का एक दल बैठा हुआ था। इस बार मैं इसके बीच न गया, क्योंकि मैंने दूर से ही देख लिया कि इस बार हुक्का उल्टी दिशा में चल रहा था। इससे साफ था कि यह बात समझौते के लिए हो रही थी। ऐसे समय मेरा जाना बुरा ही माना जाता। जब मैं गाँव में फिर आया, तो इस समय भी गाँव में कुछ हलचल थी और अँधेरा छाया हुआ था। कुछ शोक भरी आवाजें, चीखें और रोना हर घर से उठते हुए लग रहे थे। मैं ठीक से नहीं जान सका कि इसका सम्बन्ध हाल की गड़बड़ से था या किसी पुरानी लड़ाई में मारे गये किसी सम्बन्धी के लिए शोक प्रगट करने से था।

इसी समय लड़ाई के बारे में अधिक पूछना उचित न था। बहुत देर बाद ही मुझे इस बात का कारण पता चल पाया। डाकोटा जाति में अनेक प्रकार के समाज और बिरादरियाँ पायी जाती हैं। इन में से कुछ अंधविश्वासों के कारण, कुछ युद्ध के प्रेम के कारण और कुछ सामाजिक बातों के कारण बनती हैं। इन में से एक जाति 'शर-भंजक' कहलाती है। अब ये लोग इधर-उधर बिखरे हुए हैं। इस के चार आदमी इसी गाँव में रहते थे। उन्हें माथों पर लटकते सजे हुए बालों के कारण आसानी से पहचाना जा सकता था। ये बाल आगे की ओर इस तरह बँधे होते थे, जिस से वे और भी ऊँचे और भयंकर लगते थे। इन का मुखिया 'पागल भेड़िया' नाम का एक बहुत बलवान और डीलडौल वाला युवक था। वह बहुत ही साहसी और भयंकर था। मैंने उसे सदा ही सबसे अधिक खतरनाक युवक माना था। हालाँकि वह मुझे जब-तब दावत के लिए अपने डेरे पर बुलाता था, पर तो भी मैं उसके यहाँ कभी निहत्था नहीं गया। एक बार इस युवक को एक और आदिवासी के सुन्दर घोड़े को हथियाने की चाह जगी। इसने उसके स्वामी 'लम्बे भालू' को एक दूसरा बराबर का घोड़ा भेंट देना चाहा। डाकोटा जाति के रिवाज के अनुसार

किसी भेंट को स्वीकार करने का मतलब उसके मुकाबले की दूसरी भेंट देने से होता है। दूसरे युवक को पता था कि इस की निगाह उसके घोड़े पर है। उसने तब भी चुपचाप बिना कुछ कहे भेंट स्वीकार कर ली और अपने घर के सामने उस घोड़े को बांध लिया। उसने कई दिन बीत जाने पर भी अपना घोड़ा भेंट में नहीं दिया। इस पर 'पागल भेड़िया' अधीर हो उठा। यह देख कर कि उसकी भेंट किसी भी काम में न आई, वह अपने घोड़े को दुबारा मांगने लगा। इसीलिए आजकी शाम डेरा गाड़ने के बाद, वह दूसरे युवक के घर पर गया और अपने घोड़े को खोल कर ले आया। इस पर दूसरा युवक आदिवासियों में आमतौर पर फूट पड़ने वाले पागलपन से भर गया और उसने घोड़े पर अपने चाकू से तीन भयानक घाव कर दिये। बिजली की भांति तेजी से लौट कर 'पागल भेड़िये' ने भी अपना धनुष पूरी ताकत से तानकर दुश्मन की छाती पर लगा दिया। घबराहट में भी शांत बना हुआ दूसरा आदिवासी हाथ में खून से सना चाकू लिये ऐसे ही खड़ा रहा। इसी बीच उसके मित्र और सम्बन्धी खतरे को पहचान कर उसकी सहायता के लिये दौड़े। उधर 'पागल भेड़िये' के तीनों साथी भी अपने भाई की मदद को आ गये। उनके दोस्त भी इकट्ठे हो गये। और, इस प्रकार चारों ओर एक गड़बड़-सी मच गई।

जिन सिपाहियों ने इस लड़ाई को शांत करने में सहायता पहुंचाई थी, उनका स्थान इन गांवों में बहुत महत्व का होता है। यह काम बड़े मान का माना जाता है और बड़े साहसी लोगों को ही सौंपा जाता है। उनको यह अधिकार बाकायदा चुनाव के बाद ही मिलता है। यह चुनाव गांव के बूढ़े और खास योद्धा मिलकर करते हैं। इस प्रकार गांव में सबसे बड़ी जिम्मेवारी इन लोगों पर आ पड़ती है। बड़े-से-बड़ा सरदार भी अपने किसी छोटे-से-छोटे आदमी को, बदले का खतरा उठाये बिना, मार नहीं सकता। परन्तु, इन सिपाहियों को अपनी जिम्मेवारी के निभाने में ऐसा करने की भी छूट होती है।

—:०:—

१७ : ब्लैक हिल्स

दो दिन तक हम पूर्व की ओर बढ़ते रहे। तब हमारे सामने ब्लैक हिल्स की चोटियाँ उठने लगीं। इनकी ढलानों के नीचे होते हुए कुछ मील दूर तक गाँव वाले बढ़ते रहे। यहाँ मदान एक दम उजाड़ था। कहीं-कहीं छोटी-मोटी पहाड़ियाँ बिखरी हुई आने लगीं। यहाँ से एक दम बाईं ओर को मुड़कर हम एक पहाड़ी घाटी में घुसे, जिसके तले में एक चश्मा बह रहा था। इसके किनारे पर ऊँची घास और छोटे पेड़ उगे हुए थे, जिनके बीच में बहुत से बीवर जन्तुओं के बनाये अनेकों बाँध दिखाई दे रहे थे। अब हम ऊँची-ऊँची चोटियों के बीच से बढ़ने लगे। हमारे दोनों ओर चट्टाने अजीब तरह से एक दूसरे पर जमी हुई थीं। कहीं भी कोई भी पेड़, झाड़ी या घास अधिकता में नहीं दिखाई दे रही थी। चंचल आदिवासी बच्चे उन चट्टानों पर होते हुए चल रहे थे। कभी-कभी वे चोटियों पर चढ़कर नीचे से गुज़रने वाले जलूस को देखने लगते। आगे बढ़ते हुए रास्ता तंग होने लगा। तब अचानक ही सामने एक घास भरी चरागाह आ गई। इसके चारों ओर पर्वत घिरे हुए थे। यहीं पर सब परिवार जमा हुए और कुछ ही देर में गाँव का गाँव खड़ा हो गया।

अभी डेरे खड़े ही हुए थे, कि सभी युवक और दूसरे लोग अपने उद्देश्य के लिए निकल पड़े। यहाँ वे बल्लियों और लट्ठों को जमा करने के लिए आये थे। गाँव के लगभग आधे लोग इस काम पर निकल गए और सामने की लम्बी घाटी में चले गये। इन घाटियों में से होते हुए हम आगे बढ़े और ऊपर की चोटियों पर निकल आये। यहाँ से दोनों ओर सीधी ढलान उतर गई थी। इन ढलानों पर अनेक, मुलायम पत्तों वाले, पेड़ लदे हुए थे। बाईं ओर ये ऊँची पहाड़ियाँ थीं और दाईं ओर दल-दल में से होता हुआ एक चश्मा बह रहा था। धारा में बीवर के बनाये बाँधों के कारण कई जगह पानी जमा हो गया था और कुछ जोहड़ बन गये थे। इस धारा के किनारे अनेकों झाड़ियाँ और बहुत से गिरे हुए पेड़ जमा थे। बीवर नाम के कारीगर जानवर के सामने

केवल पेड़ों के तने ही बाधा बन कर आ जाते हैं, नहीं तो वह किसी भी चीज को काट कर अपनी राह बना लेता है। कुछ जगह हम पेड़ों में से झुक कर चलने लगे। और कभी फिर खुली जगहों पर निकल आते। यहाँ आकर हम पूरी तेजी से बढ़ने लगे। मेरी घोड़ी जब चट्टानों पर से बढ़ने लगती, तब मेरी काठी गिरने को हो जाती। मैं ऐसे समय उतर पड़ता और इसे मजबूती से पकड़ कर चलने लगता। कुछ ही देर में सब लोग मेरे पास से होकर आगे बढ़ गये। औरतें सजधज कर सवार थीं और आदमी हँसते खेलते और अपने घोड़ों को थपथपाते बढ़ रहे थे। इसी समय चट्टानों में से दो काली पूँछ वाले हिरण उछले। रेमंड ने घोड़े पर से ही गोली दाग़ दी। दूसरी ओर से भी उसके जवाब में एक गोली चली और तब दोनों ही गूँजें मद्धम पड़ कर डूब गईं।

इसी तरह सात-आठ मील बढ़ने के बाद नज़ारा बदल गया। चारों ओर की ढलानें बहुत ऊँचे और पतले पेड़ों से ढकी हुई थीं। आदिवासियों ने तुरन्त ही दायें और बायें अपने कुल्हाड़ों से लट्ठे काटने शुरू कर दिये। इस समय मैं अकेला पड़ गया। परन्तु इन पहाड़ों में इतनी चुप्पी छाई हुई थी कि इन पेड़ों के काटने की आवाज और लोगों की बातचीत की आवाज साफ़-साफ़ सुनाई दे जाती थी।

रेनल भी आदिवासियों के समान ही बन चुका था। उसने अपने घर के लिए भैंसे तो काफ़ी मार लिये थे, पर अब लट्ठे जमा करने के काम में उसे कठिनाई अनुभव होने लगी। इस लिए उसने मुझ से रेमंड को अपने साथ देने के लिए कहा। मैंने मान लिया। तब वे दोनों ही जंगल के सब से घने हिस्से में घुस गये और अपने काम में जुट गये। मैंने अपना घोड़ा भी रेमंड को ही सौंप दिया और खुद पहाड़ पर चढ़ने लगा। कमजोर होने के कारण मैं बहुत धीरे-धीरे, आराम से बढ़ने लगा। लगभग एक घंटे बाद से ऐसी ऊँचाई पर पहुँचा, जहाँ से यह घाटी बहुत ही छोटी और अँधेरी खाई जैसी लग रही थी। इन पहाड़ों की सब से ऊँची चोटी बहुत ऊँची और बहुत दूरी पर दिखाई दे रही थी। चारों ओर से मेरी बचपन से पहचानी चीज़ों ने मुझे घेरा हुआ था। चट्टानें, चश्मे और काई से घिरे पेड़ चारों ओर घिरे हुए थे। कहीं इन्होंने धारा का बहाव रोक लिया था, तो कहीं ये पेड़ या चट्टानों में फँसे

१५ : शिकार का पड़ाव

पौ फटने से बहुत पहले ही आदिवासियों ने अपना डेरा उखाड़ लिया। मेनेसीला के परिवार की स्त्रियाँ इस काम में सबसे आगे रहती थीं। मैंने देखा कि बूढ़ा स्वयं बुझते हुए अँगारों के पास बैठा हुआ, अपने हाथ सेंक रहा था। ठंड बहुत अधिक थी। आगे बढ़ने की तैयारियाँ बहुत गड़बड़ में और बेतरतीबी से की गई थीं। कुछ परिवार चलने लगे थे और कुछ के मकान अभी उखड़े भी न थे। इस पर वह बूढ़ा अधीर हो उठा और गाँव के बीचों-बीच जाकर वह, अपने लबादे में लिपटा हुआ, खड़ा हो गया। वह लोगों को बहुत ऊँची और तेज़ आवाज़ में कहने लगा कि जब वे सब लोग शत्रु के शिकार की ज़मीन पर हैं, तब उन्हें बच्चों का-सा व्यवहार नहीं करना चाहिए। उन्हें हमेशा की बजाय अब अधिक संगठित और चुस्त होना चाहिए। उसकी इस बात का असर तुरन्त हुआ। देरी करने वाले लोगों ने अपने घर गिराए और लादू घोड़ों को लाद लिया। सूर्य उगते तक एक-एक मर्द, औरत, बच्चा और पशु गाँव से बाहर निकल चुका था।

यह हरकत इस लिए की गई थी ताकि अच्छी और सुरक्षित जगह खोजी जा सके। इस लिए हम छोटी नदी के साथ तीन या चार मील तक आगे बढ़ गए। तब हर परिवार अपनी-अपनी जगह चुनकर एक घेरे में अपने डेरे गाड़ने में जुट गया। औरतें इस काम में जुटी रहीं और घुड़सवार बिना उतरे घोड़ों पर ही प्रतीक्षा करते रहे। सभी वीर सुबह से बहुत रद्दी किस्म के घोड़ों पर चढ़े थे। उन्होंने अपने अच्छे घोड़े आगे के लिए बचा लिए थे। इन्हें या तो वे रस्सी से बाँधकर चल रहे थे, या फिर इन्हें दूसरे बच्चे पकड़कर चल रहे थे। इस समय उन्होंने छोटी-छोटी टुकड़ियों में गाँव छोड़ना शुरू किया और पश्चिम की ओर मैदानों में तुरन्त ही निकल गए। मैंने भोजन नहीं खाया था और आगे ऐसी तपस्या करने की हिम्मत मुझ में थी नहीं। इसलिए मैं अपने मेज़बान के घर गया। तम्बू बहुत जल्दी तैयार हो गया। अपनी भूख का पता देने के लिए मैं इसके बीचों-बीच जा बैठा। तुरन्त ही मेरे सामने सूखे मांस से तैयार

किया गया एक बहुत ही उम्दा भोजन, लकड़ी के बर्तन में, रख दिया गया। इस भोजन को उत्तर के यात्री 'पेमीकन' के नाम से और डाकोटा लोग 'वास्ना' के नाम से कहते हैं। इसमें से मुट्ठी भर लेकर तुरंत ही मैं भी चल पड़ा और, अन्तिम शिकारियों के पास की पहाड़ियों में छिप जाने से पहले ही, मैं यहाँ पहुँच गया। अपनी घोड़ी पर चढ़कर मैंने भी उनका पीछा किया। मेरे अन्दर ताकत तो न थी, पर तो भी मैं जैसे-तैसे खुद को घोड़ी की पीठ पर सम्भाले रहा। पहाड़ की चोटी से मैंने सामने के एक उजाड़ मैदान को देखा। इस पर, पास और दूर, नंगे घुड़सवारों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ तेजी से चल रही थीं। जल्दी ही मैंने सबसे पास की एक टुकड़ी का साथ पा लिया। थोड़ी ही देर में—एक मील के सफर में ही—वे सब एक बड़े झुंड के रूप में इकट्ठे हो गए। चारों ओर उतावली और जल्दबाजी दिखाई दे रही थी। हर शिकारी अपने घोड़े पर चाबुक चला रहा था, जैसे वह स्वयं सबसे पहले शिकार मारना चाहता हो। आदिवासियों में ऐसे मौकों पर यही कुछ हुआ करता है। इस दिन तो खासकर गड़बड़ थी; क्योंकि इनका बड़ा सरदार साथ नहीं था और इनमें आगे बढ़ने वाले पहरेदार कम थे। इन सैनिक पहरेदारों को आदिवासियों की 'पुलिस' कहा जा सकता है। और सब कामों के साथ-साथ शिकार की दिशा बताना भी इन्हीं का काम माना जाता है। हम दाएँ या बाएँ बिना मुड़े, सीधी दिशा में, बहुत तेज़ चाल के साथ पहाड़ियों के ऊपर-नीचे चढ़ते-उतरते बढ़ते रहे। रास्ते में सैकड़ों ही जंगली झाड़ियाँ पड़ती रहीं। डेढ़ घंटे तक ये सैनिक इसी प्रकार घोड़ों की चाल के साथ उछलते-गिरते मेरे सामने बढ़ते रहे। कोई भी कुछ न बोल रहा था। एक बार एक बूढ़े आदमी को मैंने रेमंड को कोसते हुए सुना, क्योंकि वह अपनी बन्दूक पीछे छोड़ आया था। वह भी इस लिए कि शिकार और शत्रु के इतना अधिक नज़दीक होने पर बन्दूक न होना खतरनाक ही होता है। आगे चलते हुए हमें बहुत घनी झाड़ियाँ दीखने लगीं। इनमें सभी सवार ऐसे छिप गए, जैसे धरती में डुबकी मार गए हों। यहाँ की ऊसर जमीन जगह-जगह खाइयों और घाटियों में फट गई थी। इनमें नीचे जाकर हम सब जमा हो गए और बाहर निकलने की राह खोजकर एक-एक कर चढ़ने का यत्न करने लगे। जल्दी ही हम एक चौड़ी परन्तु उथली नदी के किनारे आगए। इसके किनारे पहुँचकर बहुत से घुड़सवारों ने जमीन

पर घुटनों के बल झुककर पानी पिया और फिर से अपनी जगह पर बैठकर तेज़ी से चल पड़े।

इस बीच खोजी सिपाही आगे-आगे चलते रहे। अब हमें वे पहाड़ियों की चोटियों पर अपने कपड़े हिलाते हुए दिखाई देने लगे। यह इस बात का संकेत था कि उन्हें भैंसें दिखाई दे गए हैं। पर बाद में ये भैंसे बूढ़े निकले, जो पास के मैदान पर चर रहे थे। हमें देखते ही ये एकदम भाग निकले। बहुत देर बाद हमें वे पहरेदार फिर दुबारा इशारा करते दिखाई दिये। उनके इस इशारे को देखते ही हम आगे बढ़े। पर, वे अब दूसरी ओर उतर चुके थे और हम उन्हें देख नहीं पा रहे थे। लगता है उन्होंने असली शिकार खोज निकाला था। उत्तेजित आदिवासी अपने परखे हुए घोड़ों को पहले से भी अधिक तेज़ी से भगाने लगे। मेरी घोड़ी पहले ही बीमार और कमज़ोर पड़ चुकी थी। अब वह बहुत दुःख अनुभव करने लगी। पसीने के मारे इसकी बगलों का बुरा हाल था। एक पास की नीची पहाड़ी पर जब हम सब इकट्ठ हुए, मैंने रेनल और रेमंड को बाईं ओर से पुकारते सुना। जब मैंने उन्हें देखा तो वे बीस आदमियों के एक दल के पीछे खड़े थे। ये लोग बहुत ही छोटी जाति के लग रहे थे। ये सब रेनल की पत्नी के सम्बन्धी थे, और अन्य लोगों के साथ शिकार में हिस्सा न लेकर ये एक दूर के खड्ड में शिकार खेलना चाहते थे। वहाँ उन्होंने भैंसों का एक छोटा-सा समूह देखा था। वे चाहते थे कि वह उनके हिस्से में ही रहे। मैंने उनकी पुकार के उत्तर में रेमंड को अपने पीछे चलने के लिए कहा। वह अनमने भाव से मेरी तरफ़ चला आया। रेनल ने उसे रोकना चाहा। वह उसी की सहायता पर बढ़ना चाहता था। अब रेमंड को साथ लेकर मैं शिकारियों के मुख्य जत्थे के साथ चला। रेनल बहुत गुस्से में डूबा हुआ, अपने असभ्य सम्बन्धियों के साथ पहाड़ी के दूसरी ओर निकल गया। हमारे साथी आदिवासी अब भी सौ के लगभग थे। वे एक जत्थे के रूप में बहुत देर तक साथ चलते रहे। उनके पीछे धूल का बादल उड़ने लगा। पहाड़ की एक तलहटी में जाकर वे रुके। तब कहीं मैं उन्हें पकड़ पाया। जहाँ उनके सिपाही लोग खड़े हुए थे, वहाँ हर शिकारी बहुत तेज़ी के साथ अपने परखे हुए घोड़े से उतरा और साथ लाए हुए दूसरे घोड़े पर चढ़ गया। सारे दल में किसी के पास भी न काठी थी और न लगाम।

केवल एक खाल से ही घोड़े की पीठ को उन्होंने ढका हुआ था और बालों से बनायी हुई रस्सी को ही जबड़े के चारों ओर बाँधकर लगाम का काम चलाया था। हर घोड़े के सटा और पूँछ पर चीलों के पंख लगे हुए थे। ये सब साहस और वीरता की निशानी थे। स्वयं घुड़सवारों ने कमर के आस-पास एक छोटे-से कच्छे को छोड़कर और कोई भी कपड़ा न पहन रखा था। पाँवों में जूते अवश्य थे। उनके पास एक भारी चाबुक था, जिसका हत्था बारहसिंगे के सींग से बना हुआ था। या फिर उनके पास एक रस्सी थी, जो भैंसे की खाल से बनी थी और जिसे उन्होंने अपनी कलाई से बाँधा हुआ था। अपने हाथ में धनुष और कंधे पर तरकश लटकाए लगभग तीस शिकारी पश्चिम की ओर मुड़ गए, ताकि पहाड़ी के चारों ओर घेरा-सा बना सकें। इस प्रकार भैंसों पर दोनों ओर से एक साथ ही हमला किया जा सकता था। बाकी सब लोग कुछ देर तक प्रतीक्षा करते रहे, ताकि उनके साथी मनचाही जगहों पर पहुँच जाएँ। तब सब लोग एक साथ ही आगे बढ़े और एक पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गए। यहाँ से पहली बार भैंसें सामने के मैदान में फैली हुई दिखाई दीं।

चार-पाँच सौ की संख्या में दिखाई देने वाले ये पशु मादा भैंसें थीं, जो चौड़ी धारा के एक किनारे पर इकट्ठी हुई थीं। यहाँ घाटी एक चौड़े और गोल मैदान के रूप में फैल गई थी। धूप इस पर तप रही थी और जगह-जगह छोटी-मोटी बिखरी हुई झाड़ियाँ फैली हुई थीं। घाटी के चारों ओर कुछ उजाड़ ऊँची चोटियाँ खड़ी थीं। इनके एक दर्रे में से हमने सामने अपने साथियों को आते देख लिया। हवा उसी ओर से बह रही थी। भैंसें उन्हें पास आता देखकर हिलने लगी थीं। एक पूरे जत्थे के रूप में चलने के कारण ये बहुत धीमे-धीमे बढ़ रही थीं। मुझे इसके बाद की कुछ बातें याद नहीं। याद इतना आता है कि हम जब इनके बीच में पहुँच गए, तब चारों ओर अनेकों भैंसे मैदान पर बिखरे हुए दिखाई दिए। वे हमारे पहुँचने पर भागने लगे और नदी की रेत को पार करते हुए पहाड़ियों की ओर निकल गए। उनमें से एक बूढ़ा भैंसा पीछे रह गया। उसका एक अगला पाँव किसी चोट के कारण लंगड़ा गया था। तीन पाँव पर बढ़ते हुए उसकी शक्ल कुछ इतनी अजीब-सी लगी कि मैं उसे देखने का लोभ न रोक सका। मैं उसके पास

पहुँचा। वह मुझपर उछला। ऐसे हमले के समय वह खुद ही गिरने लगता था। मैंने निगाह उठाकर देखा तो बाकी आदिवासी मुझसे सौ गज़ से भी अधिक दूरी पर जा पहुँचे। मैंने घोड़े को एड़ लगाई और जल्दी ही उन तक पहुँच गया। यहाँ प्रत्येक सवार ने अपने घोड़े को बुरी तरह चाबुक मारी और प्रत्येक घोड़ा उछलता हुआ अलग-अलग दिशा में बिखरने लगा, ताकि सारे झुंड पर एक साथ ही हमला किया जा सके। हम लोग भैंसों पर सीधे हमले के लिए आगे बढ़े। एक ही क्षण में हम उनके बीच में जा घुसे। इस सब गड़बड़ और चीख-चिल्लाहट में मैं केवल इधर से उधर भागती हुई धूप में लुकती-छिपती, भैंसों की शक्लें ही देख पा रहा था। घुड़सवार तेज़ी से उनका पीछा कर रहे थे। हमने एक ओर से हमला किया और हमारे दूसरे साथियों ने, इस घबराए हुए जत्थे पर, दूसरी ओर से हमला कर दिया। तभी धूल उठनी बंद हो गई और गड़बड़ कुछ कम पड़ गई। हमने देखा कि भैंसें कुछ बिखरने लगी थीं, जैसे किसी केन्द्र से चारों ओर बिखर रही हों। वे अब एक-एक करके, या छोटी-छोटी टुकड़ियों अथवा कतारों में, मैदान पर भागने लगीं। आदिवासी उनका पीछा कर रहे थे। वे अपनी पूरी तेज़ी पर थे और साथ ही अपने दाएँ-बाएँ बाण छोड़ते हुए चिल्लाते जाते थे। सामने के मैदान में जहाँ-तहाँ भैंसों के शव बिखरे पड़े थे। इधर-उधर कोई न कोई घायल भैंसा भी खड़ा था, जो बाणों से छिदा पड़ा था। जब मैं उनके पास से गुज़रता, तो ऐसे घायल भैंसों की आँखें चौंक पड़तीं। वे एक बड़े बिलाव की भाँति गुर्राने लगते और तेज़ी से मेरे घोड़े पर हमला करने की कोशिश करते।

सुबह जब मैंने डेरा छोड़ा था, तब किसी खास विचार से ही! मैं और घोड़ी दोनों ही इस प्रकार के शिकार के लिए तैयार न थे। मैंने निश्चय किया था कि मैं कोरा दर्शक बनकर रहूँगा। किन्तु घोड़ों और भैंसों के इस गड़बड़ झाले में चुप रहना असम्भव हो गया। जब चार या पाँच भैंसे एक साथ मेरे सामने से, एक-एक करके, गुज़रे, तो मैंने अपनी घोड़ी को उनके पीछे लगा दिया। अब हम पानी और रेत में से होते हुए नदी के दूसरे किनारे पर चढ़े और जंगली झाड़ियों को पार करते हुए सामने के मैदान में उनका पीछा करने लगे। हालाँकि मेरी घोड़ी इसी देश की थी पर तो भी न तो इस इलाके की आदतों ने और ना ही चाबुक की मार ने उसकी चाल तेज़ की। वह

एकदम थकी हारी थी। हम इन विद्रोही पशुओं से एक इंच भी आगे न निकल सके। अन्त में वे एक ऐसी घाटी पर आ गए, जहाँ से वे कूद कर पार नहीं जा सकते थे। अब उन्हें एक दम ही बाईं ओर मुड़ने पर मजबूर होना पड़ा। मैंने पिछली भैंस के दस या बारह गज दूर तक बढ़ने में सफलता पाई। ज्यों-ही भैंस को पता चला तो वह मुड़ी और गुस्से से हमले के लिए झुकी। मैंने गोली दाग दी। उसकी गर्दन में जाकर लगी। अब वह घाटी में उतर गई, जहाँ उसकी साथिनें पहले ही नीचे उतर चुकी थीं। मैंने उन सबकी काली पीठें घाटी के तले में लुकती-छिपती देखीं। तब वे दूसरी ओर एक-एक करके चढ़ने लगीं और पहले की तरह भागने लगीं। घायल भैंस उन सबके पीछे-पीछे चल रही थी।

पीछे की ओर मुड़कर मैंने देखा कि रेमंड अपने टट्टू पर चढ़ा हुआ मेरी ही ओर आ रहा था। अब हम साथ-साथ बढ़ने लगे। हमने मैदान, घाटियों और नदी के तट पर पड़े हुए बीसियों शव देखे। अब भी बहुत दूरी पर घुड़सवार और भैंसें आपस में उलझे हुए दिखाई दे रहे थे। उनके पीछे धूल के बादल उठ रहे थे। पहाड़ की चढ़ाइयों पर, घबराए हुए पशु, तेजी से चढ़ने लगे। अब शिकारियों ने लौटना शुरू किया। जिन लड़कों ने पहाड़ी के पीछे घोड़े पकड़े हुए थे, वे सामने आ गए। भैंसों को काटने और उनकी खाल अलग करने का काम सभी जगह एक साथ शुरू हो गया। मैंने देखा कि मेरा मेजबान धारा के पार एक भैंस के पास उतरा। उसने ही इसे मारा था। उसके पास जाकर मैंने देखा कि वह एक बाण खींच रहा था। यह बाण केवल अन्तिम कोने को छोड़कर सारा ही पशु के अन्दर धँस गया था। मैंने उससे यह बाण माँग लिया। यह अब भी मेरे पास इस बात के सबूत के रूप में मौजूद है कि आदिवासी कितनी तेजी और ताकत के साथ अपने बाण चलाते हैं।

खालें और मांस घोड़ों पर लाद लिए गए। शिकारी अपने घरों की ओर चलने लगे। रेमंड और मैं भी इस दृश्य से उकता कर बीच के रेगिस्तान से होते हुए गाँव की ओर सीधा बढ़ चले। इधर कोई रास्ता बना हुआ नहीं था और न ही कोई चिह्न बने हुए थे, पर तो भी रेमंड क्षितिज पर देखता हुआ अपनी सूझ के बल पर बढ़ता जा रहा था। यहाँ चारों ओर से हिरण

उछल रहे थे। भैंसों के पास रहने के कारण वे अपनी लाज छोड़ चुके थे। उनके समूह-के-समूह चट्टानों भरी चढ़ाइयों पर चढ़ते-उतरते और चोटियों से हमारी ओर देखने लगते। अन्त में हमने वे सफ़ेद ऊँची चट्टानें और वह पुराना चीड़ का पेड़ पहचान लिया, जो हमारे डेरे के पास ही थे। अब भी हमें डेरा दिखाई न दिया। हम एक छोटी-सी पहाड़ी के ऊपर चढ़े। यहाँ से हमें मकानों का एक घेरा-सा दिखाई दिया। मकान बहुत पुराने लग रहे थे।

मैं अपने मेज़बान के घर में घुसा। तुरन्त ही उसकी स्त्री मेरे लिए भोजन और पानी ले आई। उसने मेरे लिए एक खाल भी बिछा दी, ताकि मैं लेट सकूँ। बहुत थका होने के कारण मैं सो गया। लगभग एक घण्टे बाद 'महान् काक' के आने पर मेरी नींद खुली। उसकी बाँहें अब भी खून से सनी हुई थीं। वह घर में अपनी निश्चित जगह पर बैठ गया। उसकी पत्नी ने उसके लिए अंग साफ करने के लिए पानी ला दिया। तब उसके सामने उबला हुआ मांस खाने के लिए रखा। खाते समय उसने अपने खून से भरे जूते उतारकर दूसरे नये जूते पहन लिए। खाने के बाद अपने अंगों को फैलाकर वह सो गया।

दो और तीन की टुकड़ियों में जल्दी-जल्दी शिकारी लौटने लगे। हर कोई अपना घोड़ा अपनी पत्नी को थमाकर अपने घर में ऐसी तृप्ति के साथ घुसने लगा, जैसे उसने दिन भर का काम निपटा लिया हो। औरतों ने घोड़ों की पीठों से सारे बोझ को उतारा और जल्दी ही सब घरों के आगे मांस और खालों का ढेर जमा हो गया। इस समय तक अँधेरा छाने लगा और सारे गाँवों में जगह-जगह आग चमकने लगी। मांस और खालों के इस ढेर के पास सभी औरतें और बच्चे इकट्ठे हुए और उनके सबसे अच्छे हिस्सों को देखने लगे। इसमें से कुछ मांस आग पर छड़ों के सहारे लटका कर भून लिया गया। परन्तु कई बार इस बात की भी जरूरत नहीं समझी जाती थी। रात में बहुत देर तक आग जलती रही और दावत खाने वाले चारों ओर बैठकर दावत खाते रहे।

बहुत से शिकारी हमारे मकान में बैठे हुए दिन के शिकार पर बातें करते रहे। इसी समय मेनेसीला भी आया। वह हालाँकि अस्सी साल का हो चुका था, पर तो भी उसने आज के शिकार में पूरा हिस्सा लिया था। उसने दावा किया कि उसने उस रोज़ दो भैंसें मारी थीं, और शायद तीसरी भी मार लेता

अगर कहीं आँखों में धूल घुसकर उसे धनुष एक ओर रखकर आँखें मलने पर मजबूर न कर देती। आग की चमक उसके झुरीदार चेहरे पर पड़ रही थी। वह अनेक इशारों के साथ अपनी कहानी सुनाता रहा और लोग हँसते रहे।

बूढ़ा मेनेसीला उन कुछ आदिवासियों में से था, जिन्हें मैं बिना सन्देह के विश्वास योग्य मानता था। ऐसा तो यह अकेला ही आदिवासी थी, जिससे मैंने बिना किसी लोभ के कोई भेंट या सेवा पाई थी। वह गोरे लोगों का सचमुच अच्छा मित्र था। वह उनके साथ रहने का शौकीन था और उसे उनकी भेंटों के पाने का बहुत गर्व था। उसने एक दिन मुझे बताया कि वह इस धरती पर बीवर प्राणी या गोरे लोगों को ही सबसे अधिक बुद्धिमान् मानता था। उसके विचार में वे दोनों थे भी एक ही। एक घटना उसके साथ बहुत पहले घटी थी, जिससे उसका यह विश्वास और भी पक्का हो गया था। इस विषय में उसने अपनी एक कहानी सुनानी शुरू की, जिसका अनुवाद, चिलम के कश खींचने के समय का लाभ उठाकर, रेनल मुझे सुनाता गया। वैसे तो वह बूढ़ा स्वयं ही अपने शब्द ऐसे इशारों के साथ बोल रहा था, जिससे अनुवाद की कोई आवश्यकता न रह जाती थी।

उसने बताया कि जब वह बहुत छोटा था और अभी जब उसने किसी गोरे आदमी को न देखा था, तब वह और उसके तीन-चार साथी बीवर के शिकार के लिये निकले। वह एक बहुत बड़े बीवर के घर में घुस गया, ताकि देख सके कि वहाँ क्या कुछ होता है? कुछ देर वह अपने हाथों और घुटनों के बल चला और कुछ देर उसे तैरना भी पड़ा। फिर कभी उसे लम्बा लेट-कर सरकना पड़ा। यह बहुत ही अँधेरी बनी और सटी हुई जगह थी। अन्त में उसे साँस घुटती-सी लगी। वह मूर्च्छा से घिर गया। जब उसे होश आई तब वह बाहर से आने वाली अपने साथियों की आवाज़ को पहचान पाया। उन लोगों ने उसे मरा हुआ समझकर दुःख का गीत गाना आरम्भ कर दिया था। पहले तो वह कुछ भी देख न सका, पर जल्दी ही उसने सामने कोई सफेद सी चीज़ देखी। तब उसने सामने के तीन आदमियों को साफ़-साफ़ पहचान लिया। वे एक दम गोरे थे। उनमें से एक पुरुष था और दो औरतें। वे पानी के एक काले जोहड़ के किनारे बैठे थे। वह चौंक गया और लौटने का उचित मौका जानकर बड़ी कठिनता से बाहर निकला। दिन के प्रकाश में

आते ही वह तेजी से उस स्थान की ओर गया, जहाँ उसने तीन अद्भुत प्राणी देखे थे। उसने अपनी मूंगरी से ज़मीन में छेद किया और देखने के लिए झुका। एक ही क्षण में एक बूढ़े नर बीवर की नाक निकलती हुई दिखाई दी। मेनेसीला ने उसे तुरन्त ही पकड़कर ऊपर खींच लिया। इसी छेद से दो मादा बीवर भी उसी प्रकार से बाहर निकलीं और उसने उन्हें भी पकड़ लिया। उस बूढ़े ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा, "लगता है, ये बीवर ही वे तीनों गोरे आदमी थे, जिन्हें मैंने पानी के किनारे बैठे देखा था।"

मेनेसीला को अपने गाँव की बहुत-सी पुरानी कहानियाँ और रीति-रिवाज याद थे। मैं इनमें से कुछ को ही समझ पाने में समर्थ हुआ और आदिवासियों की तरह वह भी बहुत ज्यादा अंधविश्वासी था और अपनी बातों को न सुनाने का कोई न कोई कारण खोज लेता था। कभी वह कहता, "गर्मियों में ऐसी बातें नहीं सुनानी चाहिएँ। तुम अगली सर्दियों तक हमारे साथ रुको, तो मैं जितनी बातें जानता हूँ, सभी सुना दूंगा। अगर मैं इस समय कहानियाँ सुनाने लगूं तो हमारे जो नौजवान टुकड़ियाँ बाँधकर युद्ध के लिए निकलने वाले हैं, उन्हें मौत का सामना करना पड़ेगा। इसलिए पाला पड़ने से पहले मैं कहानियाँ नहीं सुनाऊँगा।"

हम उस जगह पाँच दिन तक डेरा डाले पड़े रहे। इनमें से तीन दिन तो शिकारी लगातार काम में जुटे रहे और मांस और खालें बड़ी मात्रा में लाते रहे। वैसे गाँव में चारों ओर चिन्ता-सी छा रही थी। सभी लोग चौकन्ने थे। कुछ नौजवान सारे इलाके में, पहरेदार के रूप में, घूम आते थे। बूढ़े लोग अपशकुनों और बुरी बातों का ख्याल रखते थे, खासकर अपने बुरे सपनों का। शत्रु को यह बताने के लिए कि हम लगातार अपनी रक्षा में सावधान हैं, उन्होंने अपने यहाँ बहुत से पत्थर और लकड़ियाँ आसपास की पहाड़ियों से इस तरह जमा कर ली थीं कि दूर से देखने पर वे खड़े हुए पहरेदारों के रूप में दिखाई दें। आज भी मुझे उस सारे दृश्य की याद आ जाती है : किस तरह सफेद चट्टानें, चीड़ के पेड़, उन पहाड़ियों की तलहटी में गाँव को आधा घेरती हुई बहने वाली नदी और अपनी रंगीनी और सुगन्ध को फैलाने वाली जंगली झाड़ियाँ—वहाँ सभी ढलानों पर नज़र आ रही थीं। लगातार घर

और नदी के बीच में, अपने बर्तनों के साथ, औरतों का आना-जाना जारी था। दिन के अधिक समय डेरे में औरतों और बच्चों के अलावा कोई और न दिखाई देता था। या फिर दो तीन बूढ़े या निकम्मे आदमी ही वहाँ रह जाते थे। कुत्तों के साथ-साथ ये ही लोग डेरे में पड़े-पड़े मोटे हो रहे थे। तब भी यह डेरा काम-काज में खूब जुटा हुआ-सा दीखता था। सभी कोनों में मांस चमड़े की रस्सियों पर लटक रहा था। घर के चारों ओर खालें बिछाकर औरतें और बूढ़े आदमी उन्हें ठीक से बना रहे थे। ये उनके बाल और उन पर चिपटा हुआ मांस उतार कर उन्हें भैंसे के दिमाग की चरबी से रगड़ रहे थे, ताकि उन्हें कोमल और चिकना बनाया जा सके।

खुद पर और घोड़ी पर रहम खाकर मैंने पहले दिन के बाद से ही शिकार पर जाना बन्द कर दिया था। पिछले कुछ दिनों से मुझ में फिर से ताकत आने लगी थी। बीमारी के बाद हर आराम के मौके पर ऐसा ही होता था। जल्दी ही मैं आराम से चलने फिरने लायक हो गया। रेमंड और मैं पास के मैदानों में हिरण या किसी लड़खड़ाते भटके हुए भैंसे को मारने के लिए पैदल ही निकल जाते। इस काम में हमें कम ही सफलता मिलती। एक सुबह मैं ज्यों ही अपने डेरे से बाहर आया रैनल ने मुझे गाँव के दूसरी ओर से बुलाया और खाने के लिए निमन्त्रित किया। यह नाश्ता भी कुछ खास ही था। यह एक बहुत मोटी भैंस की पीठ के मांस से बना था। यह बहुत स्वादु था। यह आग पर पक रहा था और इसे एक मजबूत छड़ से बाँधकर लटकाया गया था। रेनल, मैंने और रेमंड ने मिलकर भुने हुए मांस को अपने चाकुओं से काटना शुरू किया और इसके चारों ओर बैठकर खाने लगे। मुझे दवाइयों के विषय में कुछ पता था, पर तो भी इस प्रकार के, नमक या रोटी के बिना खाए जाने वाले, सूखे मांस में मुझे आनन्द आने लगा। लगा जैसे इससे कुछ नुकसान न होगा।

रैनल ने कहा, "रात आने से पहले आज हमें किन्हीं अजनबियों का सामना करना पड़ेगा।"

मैंने पूछा, "तुम कैसे जानते हो ?"

"मुझे स्वप्न में ऐसा दिखाई दिया है। मुझे भी आदिवासियों की तरह स्वप्न देखने की आदत है। मेरे सम्बन्धी युवक 'तूफ़ान' ने भी यही बात स्वप्न में देखी है। इसीलिए वह और उसका छोटा भाई 'खरगोश' इस बात का

पता करने बाहर तक गए हैं।"

मैं रेनल की इस बेवकूफ़ी पर हँस पड़ा और अपने मेजबान के घर लौटकर अपनी बन्दूक उठाकर एक दो मील दूर तक मैदान में निकल गया। वहाँ मैंने एक भैंसे को अकेले ही एक घाटी के किनारे खड़े देखा। मैंने उस पर गोली दाग दी, पर वह भाग निकला। तब थका हारा मैं फिर से गाँव में लौट आया। उसी समय एक ऐसा अजब संयोग हुआ कि रेनल की भविष्यवाणी सत्य निकली। मैंने गाँव में घुसते ही जिन दो अजनबियों को सबसे पहले देखा वे थे रूलों और साराफें। ये दोनों पशु-फँसाने वाले हम से लगभग पन्द्र दिन पहले अलग हुए थे। इन दिनों ये ब्लैक हिल्स में पशु फँसाते रहे थे और अब राकी पर्वतमाला की ओर जा रहे थे। इनका इरादा एक या दो दिन में ही 'मेडिसन बो' की ओर चले जाने का था। ये कोई बहुत अच्छे या सभ्य साथी नहीं थे, पर तो भी गाँव में, हमारे थोड़े से दायरे में, इनका स्वागत होना उचित ही था। उस दिन बाकी समय हम रेनल के घर में बैठे तम्बाकू पीते रहे और गप्पें लगाते रहे। उसका घर किसी कुटिया से ज्यादा अच्छा न था। बल्लियों पर खालें तो फैली हुई थीं, पर सामने की ओर से यह बिलकुल खुला हुआ था। इसमें बहुत सी खालें फर्श पर बिछी हुई थीं। यहाँ हम धूप से बचकर बैठे रहे। हमारे चारों ओर घर का साज-समान बिखरा हुआ था। गाँव में चारों ओर शान्ति थी। शिकारी उस दिन बाहर नहीं गए थे और उनमें से अधिकांश सो रहे थे। स्त्रियाँ चुपचाप अपने कामों में जुटी हुई थीं। कुछ थोड़े से नवयुवक गाँव के बीच के एक घेरे में गेंद से एक खेल खेल रहे थे। जब वे थक गए, तो उनकी जगह कुछ लड़कियाँ इकट्ठी होकर हँसी-मज़ाक का एक खेल खेलने लगीं। इनसे कुछ दूर, मकानों के घेरे में, कुछ बच्चे और लड़कियाँ भैंसों की खालों में छिपी अपनी साथिन से खेल रही थीं। कभी यही खेल सांचो-पांचा नाम के प्रसिद्ध व्यक्ति को भी प्रिय रहा था। दूर मैदान में कुछ नंगे बच्चे इधर-उधर कोई छोटा-मोटा खेल खेल रहे थे, या फिर छोटे-छोटे पक्षियों का पीछा, अपने छोटे से धनुष-बाण लेकर, कर रहे थे। अपने हाथ में पड़ जाने वाले पक्षियों का वे बुरा हाल बना रहे थे। हमारे पास के ही डेरे से एक सुन्दर गृहस्वामिनी हमारे लिए वास्ना का एक बड़ा बर्तन भर कर ले आई। जब मैंने उसे इसके बदले में कांच की एक हरी अँगूठी दी तो

वह आनन्द में डूब गई। ऐसी अँगूठियाँ मैं ऐसे मौके पर देने के लिए अपनी उँगलियों में पहने रहता था।

सूर्य छिप गया, पर अब भी आधा आकाश लाल-सा बना हुआ था। डूबते सूर्य का प्रकाश धारा के पानी पर और आसपास की झाड़ियों पर भी पड़ रहा था। कुछ युवक गाँव से निकले, पर थोड़ी ही देर बाद वे फिर लौट आए। इनके साथ सैकड़ों की संख्या में, हर आयु, आकार और रंग के, घोड़े मौजूद थे। शिकारियों ने अपना-अपना घोड़ा चुन लिया और उसकी हालत जाँचकर उसे लम्बी रस्सियों के साथ अपने-अपने मकान के आगे बाँध लिया। आधे ही घंटे में सब हलचल शान्त हो गई और फिर से चारों ओर शान्ति छा गई। इस समय तक अँधेरा हो चला था। पतीलियाँ चूल्हों पर चढ़ा दी गई थीं और चारों ओर, अपने बच्चों के साथ जमा होकर, औरतें हँसी-मजाक कर रही थीं। गाँव के बीचों-बीच एक और किस्म का घेरा बना हुआ था। यहाँ बूढ़े लोग और प्रसिद्ध योद्धा अपने-अपने सफेद लबादों को पहने हुए बैठे थे। चिलम सबके बीच में घुमाई जा रही थी। वे बहुत हल्के ढँग से बातचीत करने में जुटे हुए थे। उनकी बातचीत में हमेशा की-सी गम्भीरता न थी। मैं भी उनके साथ, सदा की भाँति, बैठ गया। मेरे पास करीबन आधा दर्जन साँप और फुलझड़ियाँ थीं, जिन्हें मैंने लारामी धारा के किनारे टिके रहने के दिनों में बारूद से बनाया था। मैं तब तक इन्तजार करता रहा, जब तक कि मेरे पास वह जलती हुई बड़ी लकड़ी न आ गई, जिसे आदिवासी लोग अपनी चिलम सुलगाने के लिए अपने पास ही रखते हैं। इससे मैंने उन सब पटाखों और फुलझड़ियों को एक साथ ही जला दिया और सब लोगों के बीच में हवा में उड़ा दिया। वे सब एक साथ ही आश्चर्य में चीखते हुए, तंगी-सी महसूस करने लगे और उछल पड़े। कुछ देर बाद उनकी हिम्मत लौटने की हुई। उनमें से कुछ ने जले हुए कागजों आदि को देखकर अपनी उत्सुकता मिटानी चाही। तब से मुझे उन लोगों ने 'आग का जादूगर' समझना शुरू कर दिया।

डेरे में प्रसन्नता-भरी आवाजों की एक हल्की सी गूँज भरी हुई थी। साथ ही एक और प्रकार की आवाजें भी आ रही थीं। एक बड़े भारी घर में बीचों-बीच आग जल रही थी और उसके पास से एक बहुत दुःख भरी आवाज

आ रही थी। ऐसे लगता था, मानो भेड़िए चिल्ला रहे हों। वहाँ पर एक लगभग नंगी औरत घुटनों के बल बाहर बैठी जोर से चिल्ला रही थी और अपनी टाँगों पर चाकू से घाव कर रही थी। उसकी टाँगें लहू-लुहान हो चुकी थीं। इस परिवार का एक युवक पिछले साल शत्रु ने इसी दिन कत्ल कर दिया था। आज उसके ही सम्बन्धी उसका अफसोस कर रहे थे। इसके अलावा और भी आवाजें सुनी जा सकती थीं। ये आवाजें गाँव से बहुत दूर से, अन्धेरे में से, आ रही थीं। ये आवाजें उन युवकों की थीं, जो अगले कुछ ही दिनों में युद्ध के दल के रूप में जाने वाले थे और इस समय पहाड़ी की चोटी पर खड़े होकर 'महान् आत्मा' को अपने पराक्रम में सहायता देने के लिए पुकार रहे थे। जब मैं इन्हें सुन रहा था, तभी हँसते हुए रूलों ने मेरा ध्यान एक दूसरे कोने की ओर खींचा। एक घर के सामने एक औरत खड़ी हुई एक पीले कुत्ते पर घृणा प्रकट कर रही थी, जो अपने पंजों के बीच में नाक टिकाए हुए बैठा था। उसकी सुस्ताती हुई आँखें औरत के चेहरे की ओर लगी हुई थीं, मानों वह आदरपूर्वक उसकी बात सुनना चाहता हो, और बात खतम होते ही सो जाने की पूरी तैयारी भी कर चुका हो। वह कह रही थी—

"तुम्हें अपने किए पर शर्म आनी चाहिए। मैंने तुम्हें अच्छी तरह खाना दिया है और बचपन से ही तुम्हें अच्छी तरह पाला है। आज तुम चिल्लाना सीख गए हो, पर उस समय तुम्हें चलना भी न आता था। जब तुम बड़े हुए मैंने तुम्हें एक अच्छा कुत्ता समझा। तुम काफ़ी मजबूत और सभ्य रहे, खासकर जब तुम्हारी पीठ पर बोझ लादा जाता। तुम घोड़ों की टाँगों के बीच से होकर, यात्रा के समय, कभी नहीं गुजरे। परन्तु इस पर भी तुम सदा ही दिल के काले रहे। जब भी झाड़ियों में से कोई खरगोश बाहर आता, सबसे पहले तुम उसकी ओर भाग पड़ते और दूसरे कुत्ते तुम्हारे पीछे भाग निकलते। तुम्हें पता होना चाहिए कि इन मैदानों में ऐसा करना बहुत भयंकर होता है। ऐसे समय अगर तुम अचानक ही अकेले किसी घाटी में पहुँच जाते और कोई भेड़िया तुम पर हमला कर बैठता तो तुम क्या करते ? निश्चय ही तुम मारे जाते। अपनी पीठ पर बोझ लादे कोई भी कुत्ता ठीक से नहीं लड़ सकता। आज से कोई तीन दिन पहले फिर तुम उसी तरह भाग निकले और तुमने वे सारे लकड़ी के खूँटे गिरा दिए, जिन्हें मैं घर के तम्बू कसने के काम में लाती थी।

अब तुम्हीं देखो, यह सारा तम्बू ढीला पड़ गया है। इससे बढ़कर आज रात तुमने मांस में से बड़ा-सा टुकड़ा चुरा लिया, जो आग पर मेरे बच्चों के लिए भुन रहा था। मैं तुम्हें बता दूँ कि तुम दिल के काले हो और इसलिए तुम्हें मरना ही पड़ेगा।"

यह कहकर वह औरत घर में गई और पत्थर की एक बड़ी कुल्हाड़ी ले आई। उसकी एक ही चोट से उसने कुत्ते को मार डाला। उसका यह भाषण ध्यान देने लायक है। इसमें आदिवासियों की एक विचित्र विशेषता छिपी हुई है। उन लोगों की दृष्टि में नीचे दर्जे के पशुओं में भी किसी की बात को समझने की ताकत और बुद्धि होती है। अपनी परम्पराओं के अनुसार इनमें से बहुतों से वे अपना सम्बन्ध मानते हैं। वे लोग स्वयं को रीछों, भेड़ियों, हिरणों और कछुओं से उत्पन्न मानते हैं।

बहुत देर हो जाने के कारण गांव पार करके मैं अपने डेरे पर आ गया। अन्दर घुसकर मैंने देखा कि बीच की आग मद्धम पड़नी शुरू हो चुकी थी। इसके पास ही, अपनी पुरानी जगह पर, 'महान् काक' सो रहा था। उसका बिस्तर बहुत आरामदेह था। जमीन पर बहुत-सी खालें बिछाकर, और हिरण की खालों का तकिया बनाकर, यह तैयार किया गया था। उसकी पीठ की तरफ़ बांसों और सरकंडों से बना हुआ एक खास ढांचा था, जिसका सहारा वह बैठते समय ले सकता था। इन सबके ऊपर उसके सिरहाने पर धनुष और तरकश लटके हुए थे। उसकी हँसमुख और चौड़े चेहरे वाली पत्नी ने अब तक भी अपना काम ठीक से नहीं निपटाया था। वह अब भी घर में बर्तनों और सूखे मांस की गांठों आदि को खींचती फिर रही थी। दुर्भाग्य से इस मकान में ये दो प्राणी ही नहीं रहते थे, बल्कि वहाँ कम से कम छः बच्चे भी इधर-उधर बिखर कर अजब तरह से सोते थे। मेरी काठी मकान के सबसे अगले हिस्से में पड़ी हुई थी और इसके सामने एक खाल बिछी हुई थी। मैं यहीं कम्बल में लिपट कर सो गया। यदि मैं बहुत अधिक थका हुआ न होता, तो पास के मकान से आने वाली आवाज मेरी नींद तोड़ देती। वहाँ आदिवासी ढोल बजा रहे थे और साथ-साथ तेज हुंकारे भरते जा रहे थे। कम-से-कम बीस आदमी एक साथ ही कुछ गा रहे थे। पास में ही पूरी रस्मों के साथ जुआ खेला जा रहा था। खिलाड़ी दांवों पर अपने आभूषणों, घोड़ों, पोशाकों

तथा हथियारों तक को लगा रहे थे। इस प्रकार का भयंकर जुआ केवल सभ्य संसार का ही अधिकार नहीं है। मैदानों और जंगलों के लोग अपनी कठिन जिन्दगी की उकताहट को दूर करने के लिये इस प्रकार के उत्तेजना भरे खेल खेलना अधिक पसन्द करते हैं। मैं पूरी तरह सो चुका था, पर तो भी हल्की-हल्की आवाज मेरे कानों में आती रही। सुबह होने तक यह सब कुछ इसी तरह चलता रहा। रात में एक बच्चा सरकता हुआ मुझ तक आ गया और एक दूसरा मेरे कम्बल में घुस कर तिरछा होकर पड़ गया। मैंने अपने सिरहाने रखी एक छड़ी से इन दोनों बच्चों को दूर भगाया और फिर से सो गया। ये बच्चे दिन भर या तो सोते रहते हैं या फिर खाते रहते हैं। इसीलिए ये बेचन हो जाते हैं रात में कम से कम चार-पांच बार इसी तरह मुझे इन्हें हटाना पड़ता था। मेरे मेजबान ने एक और आफत खड़ी की हुई थी। सब आदिवासियों के समान वह भी कुछ रस्मों को नियमित रूप में करता था, क्योंकि युद्ध, प्यार, शिकार या और किसी मौके पर इन रस्मों के करते रहने से उन्हें सफलता मिलने की उम्मीद रहती है। इन कामों को वे लोग 'इलाज या टोना' मानते हैं। उन्हें ये रस्में सोते हुए स्वप्न में दिखाई देती हैं। कई बार ये बहुत बुरी होती हैं। कुछ आदिवासी इन सपनों के अनुसार चिलम पीते हुए उसे जमीन पर कई बार ठोकते हैं। दूसरे कुछ लोग यह कहते हैं कि उनकी हर बात का उलटा अर्थ लिया जाना चाहिए। शाँ ने मुझे एक बार बताया था कि वह एक ऐसे बूढ़े आदिवासी से मिला था, जिसका यह कहना था कि यह दुनिया तबाह हो जाएगी, अगर उस से मिलने वाले प्रत्येक गोरे आदमी को वह अपने हाथ से ठंडे पानी का प्याला न पिलाये। इस प्रकार के विधानों के विषय में मेरा मेजबान बहुत अभागा रहा। उसे स्वप्न के समय आत्माओं ने बताया कि उसे एक खास गाना हर रोज आधी रात के समय गाना होगा। हर रोज, आधी रात के समय, उसका यह उकता देनेवाला गाना या मन्त्र पढ़ना मेरी नींद भगा देने का कारण बनता था। मैं उसे चौकड़ी मारकर सीधा बैठे हुए देखता। वह जैसे-तैसे काम निपटाने की भावना से उस भयानक विधि को पूरा कर रहा होता था। रात में इन आवाजों के अलावा इससे भी अधिक बुरी कुछ आवाजें सुनाई दे जाती थीं। सूर्य छिपने से अगली प्रातः तक गाँव भर के सारे कुत्ते सैकड़ों की संख्या में इकट्ठे होकर भौंकते और चीखते

रहते। मैंने इस प्रकार की भयंकर आवाज कहीं नहीं सुनी थी। शायद ऐसी आवाज केवल अरकंसास की पहाड़ियों के भेड़ियों के इकट्ठा होकर चिल्लाने पर ही सुनी थी। भेड़ियों की आवाज फिर भी किसी लय में बँधकर चलती है, कुत्तों की यह आवाज तो बिल्कुल ही बेसुरी और बेमेल थी। बहुत दूर से आने वाली यह आवाज एक डर-सा पैदा कर देती थी। अगर इसको सुनते हुए कोई सो जाए, तो यह भयंकर आवाज बहुत बुरी साबित होती है। इसके शुरू में एक बहुत लम्बी और ऊँची आवाज आती है और तब कोने-कोने से आवाज उठने लगती है। इस प्रकार गाँव के चारों ओर ये आवाजें गूँजने लगती हैं। कुछ देर तेज होकर यह आवाज शान्त हो जाती है।

सुबह आई और मेरा मेजबान दूसरे शिकारियों के साथ ही निकल गया। यहाँ उचित ही होगा, अगर हम उसके पति और पिता के रूप पर भी एक निगाह डाल लें। वह और उसकी पत्नी अधिकांश आदिवासियों की तरह अपने बच्चों के बहुत शौकीन थे। वे उनमें जरूरत से ज्यादा उलझते थे और उनके अपराधों पर, बहुत कम मौकों पर ही, दंड देते थे। उनके बच्चे न तो अपनी जिम्मेवारियों को पहचानते थे और न उनकी आज्ञा मानते थे। इस प्रकार की शिक्षा के कारण ही उन बच्चों में नियंत्रण और काबू से बाहर रहने की भयंकर आदत पड़ जाती है। हमारे मेजबान से अधिक बच्चों को प्यार करने वाला पिता कोई और न होगा। उसका एक बच्चा दो फुट से भी छोटा था। यह अपने पिता को सबसे अधिक प्यारा था। घर के बीचों-बीच एक खाल बिछाकर वह स्वयं उसपर बैठ जाता और इस बच्चे को अपने सामने सीधा खड़ा कर लेता। तब उसके सामने युद्ध के नाच के समय गाए जाने वाले कुछ शब्द गाने लगता। वह बच्चा, जो अभी खड़ा होकर अपने को सम्भाल भी न सकता था, अपनी टाँगें उठाकर पिता की आवाज के साथ घूमने लगता। इस पर मेरा मेजबान खुशी और आनन्द के मारे मस्त हो जाता और मेरी प्रशंसा और प्रसन्नता को पाने के लिए मेरी ओर मुड़कर देखने लगता। पति के रूप में वह कम दयालु न था। इस मकान में रहने वाली उसकी पत्नी उसकी सच्ची साथिन बनी हुई थी। वह उसके बच्चों और घरेलू चीजों का अच्छी तरह ध्यान रखती थी। वह भी उसे बहुत चाहता था। जहाँ तक मैं समझ पाया, वे कभी लड़ते भी नहीं थे। इस पर भी उसका अधिक प्यार

अगले दिन डेरे में किसी नये अतिथि के कारण कुछ घबराहट-सी छा गई। यह आदिवासी अकेला ही अपने परिवार के साथ, अरकंसास के इलाके से, आ रहा था। लोगों के घरों के पास से गुजरते हुए यह बहुत ही शान के साथ निकला। उसने लोगों को बताया कि वह गोरे लोगों के लिए कोई खास ख़बर लेकर आया है। इसके तुरन्त बाद उसकी औरतों ने उसका डेरा गाड़ दिया। तब उसने छोटे बच्चे को भेज कर सब गोरे लोगों को, और खास-खास आदिवासियों को, दावत पर बुलाया। सब अतिथि इकट्ठे बैठ गये। घर बहुत अधिक घुटा हुआ और गर्म लग रहा था। स्टेबर नाम के इस आदिवासी ने राह में एक बूढ़े भैंसे को मारा था। आज इसी के मांस की दावत दी गई थी। इसके साथ कुछ जंगली शहतूत और चरबी उबाल कर अलग से रखे गये थे। भोजन सब को बाँटा गया। कुछ क्षण सब चुप रहे। तब सबने ही अपने बर्तन उलटा दिये, ताकि अपने मेजबान का धन्यवाद किया जा सके। इसके बाद स्टेबर ने तख्ता सामने रख कर तम्बाकू तैयार किया और कुछ चिलमें सुलगा कर सब के बीच घुमाईं। इसके बाद वह अपनी जगह पर सीधा बैठ गया और बहुत अधिक हाव-भाव जता कर अपनी बात सुनाने लगा। मैं उसकी वह सारी बात नहीं बताऊँगा, जिसमें आदिवासियों की कहानी की तरह इधर-उधर की सैकड़ों बातें मिली हुई थीं। उसकी बातों का सार यह था :—

वह इन दिनों अरकंसास में ही था। वहाँ गोरे लोगों की कम-से-कम छः बहुत बड़ी-बड़ी सैनिक टुकड़ियाँ जमा थीं। उसने कभी सोचा भी न था कि सारी दुनिया में कुल मिला कर भी इतने अधिक गोरे लोग रह रहे होंगे। उन सबके पास बहुत बड़े घोड़े, लम्बे चाकू और छोटी बंदूकें थीं। उनमें से कुछ ने लड़ाई की बहुत ही अच्छी पोशाकें पहनी थीं। इससे हमें पता चला कि सैनिकों और स्वयंसेवकों के बहुत से दल उन पहाड़ियों से गुज़रे थे। स्टेबर ने खुद बहुत बड़े-बड़े गोरे लोगों के सफेद तम्बुओं को बैलों पर तने हुए देखा था। साफ़ था कि ये गाड़ियाँ थीं, न कि तम्बू। इनमें सैनिकों की रसद जा रही थी। इसके कुछ ही देर बाद हमारे मेजबान को एक आदिवासी मिला। उसने बताया कि एक दिन सभी मैक्सिको निवासी भैंसों के शिकार पर गये हुए थे। अमरीकन लोग खाइयों में छिप गये। जब मैक्सिको वाले लोगों के सारे बाण समाप्त हो गये, तब अमरीकनों ने गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं

और युद्ध का नारा बोलकर वे बाहर निकल आये। उन्होंने सभी शत्रुओं को मार डाला। हमें इस बात से इतना ही पता लगा कि मैक्सिको और अमरीका में एक छोटी-सी लड़ाई छिड़ गई थी और उसमें अमरीका की जीत हुई थी। जब हम कुछ दिन बाद प्यूब्लो पहुँचे तो हमें पता चला कि अरकंसास की ओर जनरल कीर्नी और मातामोरा की ओर जनरल टेलर गये थे।

उस शाम सूर्य छिपने के समय हमारे तम्बुओं के पास ही कुछ आदिवासी अपने घोड़ों की चाल परखने के लिए जमा हो गये। इनमें सभी प्रकार के लोग थे। कुछ कैलिफोर्निया के इलाके के थे। शेष में से कुछ अमरीकी, कुछ पर्वतों के इलाके के, और कुछ मैदानों के जंगली कबीलों के लोग थे। उनमें सफ़ेद, काले, लाल, सलेटी और सभी दूसरे रंगों के लोग मिले-जुले थे। सब की नजरें बड़ी जंगली और चौंकी हुई थीं। इस बात में वे नगर-निवासी सभ्य लोगों से एक दम भिन्न थे। जो लोग अपनी तेज़ी और उत्साह के लिए प्रसिद्ध थे, उन्होंने अपने घोड़ों की गर्दन और पूँछ में चील के पंख अटकाए हुए थे। पाँच या सात डाकोटा लोग भी, ऊपर से नीचे तक सफ़ेद पोशाक पहने हुए, वहाँ जमा थे। कुछ 'शिएने' लोग भी वहाँ जमा थे। उन्होंने मैक्सिकोवासियों की भाँति पोशाकें पहनी हुई थीं। इन आदिवासियों के साथ ही मिले-जुले कनाडावासी भी खड़े थे, जो बिसोनेत के नौकर थे। ये लोग जंगलों में रहने और घर की बजाय डेरे डाल कर सोने में अधिक आनन्द मानते थे। कठिनाइयों, खतरों और मुसीबतों के बीच ये लोग खुश रहते थे। इनकी खुशी कभी कम नहीं पड़ती और दुनियाँ में इन से अधिक लापरवाह होकर जीना कोई और नहीं जानता था। इनके अलावा कुछ दोगले लोग भी इनके बीच में थे। एन्टोनी इनमें से ही एक था। उसने ढीला-ढाला पाजामा और हलकी सूती कमीज पहनी हुई थी। उसने सिर पर रूमाल के साथ अपने काले बाल पीछे की ओर बांधे हुए थे। उसकी छोटी-छोटी आँखें शरारत भरी और चमकती दिखाई देती थीं। उसका घोड़ा हलके पीले रंग का था। वह उसकी चाल को भी दूसरे घोड़ों के साथ परखना चाहता था। इसलिए उसने अपनी काठी परे रख दी और उसकी जगह भैंसे की खाल लपेट कर उस पर सवार हो गया। मैदान खाली कर दिया गया और एक साथ ही वह और उसका आदिवासी साथी तेज़ी से घोड़े दौड़ाने लगे। आदिवासी ढंग के अपने चाबुक

बरतते हुए वे तेज़ी से आँखों से ओझल हो गये। इसी समय एन्टोनी फिर से वापिस आया। वह जीत गया था और अपने घोड़े को थपथपा रहा था।

आधी रात के समय मैं कपड़ों में लिपटा हुआ सो रहा था। इसी समय रेमंड ने आकर मुझे जगाया। उसने बताया कि इस समय कुछ ऐसा नज़ारा सामने था, जिसे मैं देखना पसंद करूँगा। मैंने डेरे की तरफ़ निगाह डाली और देखा कि आग के चारों ओर बहुत से आदिवासी जमा थे। उन सब के बीच में से एक अजीब से गाने की आवाज़ आ रही थी। बीच-बीच में चिल्लाने की आवाज भी आती थी। मैं भी कपड़े पहन कर बाहर निकला और उस जगह तक गया। आदिवासियों का यह काला जमाव इतना घना था कि उस में से छन कर आने वाली आग की रोशनी भी अब दिखनी बन्द हो गई थी। मैं जब उनके बीच से बढ़ने लगा, तो उनके एक मुखिया ने बढ़कर मुझे समझाया कि इन मौकों पर किसी भी गोरे को उनके बीच में नहीं जाना चाहिये। मैं दूसरी तरफ एक ऐसी जगह खड़ा हो गया, जहाँ से हर हरकत देखी जा सकती थी। यहाँ 'मज़बूत-दिल' नाम के वर्ग के लोग अपना नाच कर रहे थे। ये लोग युद्ध के प्रेमी होते हैं तथा 'डाकोटा' और 'शिएने' दोनों ही जातियों से मिल कर बनते हैं। इन समाज में केवल सबसे मज़बूत लोगों को ही शामिल किया जाता है। इनका सबसे बड़ा असूल यह है कि केवल वही आदमी प्रशंसा के लायक है, जो किसी काम को एक बार शुरू करने के बाद उससे मुड़े नहीं। आदिवासियों के ऐसे समाजों की एक-एक प्रतिनिधि आत्मा होती है। इस वर्ग की प्रतिनिधि आत्मा 'लोमड़ी' मानी जाती थी। गोरे लोग कभी लोमड़ी को ऐसा महान् स्थान नहीं देंगे। पर आदिवासियों की आदतों से इसका मेल खा जाता है। ये नाचने वाले आग के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे। उनकी शक्लें कभी चमक उठतीं और कभी छाया के कारण काली पड़ जातीं। वे इस नाच में पूरी तरह लोमड़ी की हरकतों की नकल कर रहे थे। बीच-बीच में एक तेज हुंकार भी उठाई जाती। तब कुछ दूसरे युवक बीच में उछल आते। उनके चेहरे आसमान की ओर उठे होते और वे पैर पटकते हुए अपने हथियारों को हवाई दुश्मनों पर चलाने लगते। लगता था, जैसे वे किसी शैतान के अवतार हों।

हम इस जगह दोपहर तक रुके। तब हम दोनों साथी और तीनों नौकर प्यूब्लो की ओर चल पड़े। वह यहाँ से लगभग तीन सौ मील की दूरी पर था। हमें इस यात्रा में पन्द्रह दिन लग जाने का अंदाजा था। इस बीच हमें एक भी मनुष्य से मिलने की उम्मीद न थी। अगर कोई मिलता ही तो वह हमारा शत्रु होता। और, उसके लिए हमारे पास एक ही इलाज था—हमारी बंदूकें।

पहले दो दिन तक कोई विशेष बात न घटी। तीसरे दिन सुबह एक बुरी घटना घटी। हम लोग मैदान के एक खड्ड में, चश्मे के किनारे, डेरा डाले पड़े थे। देस्लारियर पौ फटने से बहुत पहले ही जाग चुका था। नाश्ता तैयार करने से पहले उसने सभी घोड़े चरने के लिए खुले छोड़ दिये। चारों ओर ज़मीन कुहरे से ढकी हुई थी। जब हम लोग जागे, पशु दिखने बन्द हो गये थे। बहुत देर खोजने के बाद हम उनके निशान ढूँढ पाये और उनके जाने का रास्ता खोज पाये। वे सब लारामी किले की ओर ही एक विद्रोही बूढ़े खच्चर के पीछे-पीछे चल पड़े थे। हालाँकि उन सबके पाँवों में रस्सियाँ बँधी थीं, तब भी हमारे पहुँचने से पहले वे तीन मील तक निकल गये थे।

दो या तीन दिन तक हम एक उजाड़ रेगिस्तान से गुज़रते रहे। रास्ते में हरियाली के रूप में केवल घास के ही कुछ गुच्छे इधर-उधर धूप से उलझे हुए दिखाई दे जाते थे। यहाँ अनेक विचित्र जन्तुओं और सरकने वाले जानवरों की बहुतायत थी। बड़ी-बड़ी टिड्डियाँ और घास के कीड़े यहाँ बहुत अधिक और बड़े-बड़े मिल रहे थे। ये हमारे घोड़ों के पाँवों से कूदते रहते थे। घास में बहुत-सी छिपकलियाँ भी इधर-उधर, बिजली के समान तेज़ी से भागती फिर रही थीं। इन में सब से अजीब जन्तु सींगों वाला मेंढक था। मैंने ऐसे एक मेंढक को पकड़ कर देस्लारियर को दे दिया। उसने उसको एक जूते में बन्द कर दिया। इसके लगभग एक महीने बाद जब मैंने उसे खोल कर देखा, तो वह अभी ज़िन्दा था। तब मैंने उसे भैंसे की खाल के एक पिंजरे में बन्द कर दिया और गाड़ी में लटका दिया। इस तरह वह बस्तियों तक ठीक तरह से पहुँच सका। वहाँ से एक सन्दूक में बन्द करके उसे हमने बोस्टन भेजा। यहाँ उसे एक शीशे के डिब्बे में रख दिया गया। वह कुछ महीनों तक अपने देखने वालों का जी ललचाता रहा और, तब सर्दियों के

दिनों में एक सुबह वह मरा हुआ पाया गया। अब वह एक म्यूजियम में एक बोतल में रखा हुआ है। वह भूखा रहने के कारण मरा था। छः महीने तक उसने कुछ भी न खाया था, हालाँकि उसके प्रशंसक उसके सामने उम्दा चीजें रखा करते थे। यहाँ हम ने कुछ और किस्म के ही जन्तु देखे। चारों ओर मैदानी कुत्ते बहुत अधिक पाये जा रहे थे। स्थान-स्थान पर यह कठोर और शुष्क भूमि, उन कुत्तों की मांदों से खोदी हुई मिट्टी से मीलों दूर तक भरी नजर आती थी। अपनी माँदों के किनारे तक आकर ये हमें देखकर भौंकने लगते। इनकी केवल नाक ही बाहर निकली हुई दिखाई देती। हमें देखने के तुरन्त बाद वे फिर अन्दर ही छिप जाते। इनमें से कुछ बहादुर कुत्ते बाहर निकल कर अपनी माँदों पर बैठे-बैठे भौंकते। उनकी हर चीख के साथ उनकी पूँछ भी उठ जाती। जब खतरा उनके पास तक आ जाता तो वे अपना मुँह फेर लेते और अपनी एड़ियाँ हवा में उछालने लगते। तब तुरन्त, पलक झपकते ही, अपनी माँद में घुस जाते। शाम के समय अगर बारिश आने को होती, और अगर न भी आती तब भी, वे बाहर मैदान में इकट्ठे हो जाते। हमने उन्हें इसी तरह किसी एक प्यारे कुत्ते के चारों ओर बैठे हुए देखा। वे सब तनकर बैठते और उनकी पूँछें जमीन पर फैली रहतीं। उनकी चख-चख और चिल्लाहट इस तरह से होती, मानों वे किसी एक साँझी बात पर विचार कर रहे हों। जिसके घर के पास ये सब इकट्ठे होते, वह सबसे ऊँचाई पर बैठता और अपने अतिथियों को देखता रहता। इस बीच कुछ कुत्ते आसपास भागते रहते, ताकि किसी आने वाले दुश्मन को पहचान सकें। इनके सबसे बड़े दुश्मन मैदानी साँप होते हैं। मेरे विचार में कुत्त अपनी ओर से यही सोचते हैं कि वे साँपों को चुपचाप अपने बिलों में धूप सेंकने और इसी मैदान पर रहने देकर अपना एहसान उनपर करते हैं। ये साँप किसी भी दुश्मन को देखते ही बिल में छिप जाते हैं। छोटे-छोटे उल्लू भी यहाँ रहते हैं और वे भी कुत्तों के आसपास ही अपनी जगह चुन लेते हैं। मैं नहीं समझ पाया कि उनका यह साथ किस तरह निभता है।

पाँचवें दिन बहुत दोपहर बाद हमने एक बहुत बड़ी धारा दूर से देखी। पर जब हम इस तक पहुँचे, तो हमारी निराशा का ठिकाना न रहा। यह रेत का एक बड़ा भारी फैलाव मात्र था। लगता था, कभी यहाँ बहने वाली

नदी बिल्कुल सूख गई थी। हम अलग-अलग होकर इसके साथ-साथ दोनों दिशाओं में बढ़े। अब भी हमें कहीं पानी न मिला और न ही कोई गीली जगह दिखाई दी। बहुत बड़े-बड़े पेड़ किनारे पर अवश्य खड़े थे, पर वे भी मानों इस सूखे की शिकायत कर रहे थे। बिजली और तूफ़ान ने उन्हें बहुत नुकसान पहुँचाया था। एक सबसे ऊँचे पेड़ की मुरझाई हुई शाखा पर लगभग आधा दर्जन कौवे बैठे हुए शोर कर रहे थे। मानों वे किसी अपशकुन की सूचना दे रहे हों। हमारे लिए चलने के सिवा और कोई चारा न था। सबसे नजदीक पानी हमें प्लाट नदी की दक्षिणी धारा में ही मिल सकता था, जो यहाँ से दस मील दूर थी। हम आगे बढ़े, किन्तु उदास और निराश होकर! चारों ओर रेगिस्तान एक समुद्र की भाँति फैला हुआ था।

आकाश सुबह से ही हलके-हलके कुहरे और धुँध से घिरा हुआ था। अब पश्चिम की ओर बादल बहुत अधिक जमा होने शुरू हो गये थे और काफ़ी ऊपर तक फैल गये थे। ये बादल ऊपर की ओर उठते हुए एक नुकीली चोटी-सी का रूप धारण कर गये थे। मैंने इसे कुछ देर बाद फिर देखा। यह पहले जैसी ही थी। थोड़ी देर बाद चारों ओर से धुँध और बादल उठने लगे और इधर-उधर फैल गये, परन्तु यह नुकीली चोटी बिना हिले-डुले वहाँ ही खड़ी रही। मैंने समझा कि निश्चय ही यह किसी पहाड़ की चोटी होनी चाहिए। पर, मैं कुछ निश्चय न कर सका, क्योंकि यह बहुत अधिक ऊँची थी। बाद में पता चला कि यह रॉकी पर्वतमाला की एक बहुत ऊँची चोटी थी, जो 'लौंग की चोटी' के नाम से प्रसिद्ध थी। बढ़ते हुए अंधकार ने इसे फिर हमारी आँखों से ओझल कर दिया। फिर हम इसे कभी दुबारा न देख सके। इसका कारण यह था कि अगले कुछ दिन तक इसी प्रकार की धुँध चारों ओर छाई रही।

देर बहुत हो गई थी। इसलिए हम अपने सीधे रास्ते से हटकर नदी के सबसे नजदीक किनारे पर आ गये। इस अँधेरे में रास्ता खोजना बहुत कठिन था। एक ओर रेमंड चल रहा था और दूसरी ओर हेनरी। दोनों ने ही चिल्लाकर बताया कि सामने एक गहरी घाटी आ गई है। हम चारों ओर झाड़ियों और घिरते हुए अँधेरे में आगे बढ़े। यहाँ हमारे लिए एक भी कदम बढ़ना मुश्किल था। हम लगभग घिसटकर चलने लगे और कठिनता से इस

घाटी के पार हुए। यहाँ से आगे एकदम ढलान थी, जिस पर हमने यह बिना जाने ही कि वह कितनी गहरी है, उतरना शुरू कर दिया। अब सूखी टहनियों के टूटने की आवाजें आने लगीं। हमारे सिर के ऊपर हमें कुछ बड़ी छायादार चीजें दिखाई देने लगीं और सामने की ओर हलका-सा चमकता हुआ पानी दिखाई देने लगा। रेमंड का घोड़ा एक पेड़ के साथ जा टकराया। हेनरी ने उतर कर ज़मीन टटोली और बताया कि यहाँ घोड़ों के लिए हरी घास काफी है। हम सब अपने घोड़ों को पहले पानी तक ले गये और तब, उनमें से दो-तीन बुरे घोड़ों को बाँधने के बाद, बाकी सबको चरने के लिए खुला छोड़कर हम भी सोने के लिए वहीं लेट गये। सुबह हमने पाया कि हम प्लाट् नदी के दक्षिणी किनारे पर थे। यहाँ बहुतसी झाड़ियाँ और ऊँची घास उगी हुई थी। रात की बुरी यात्रा का बदला हमने बहुत भारी नाश्ता करके चुकाया और आगे के लिए चल पड़े। अभी कुछ ही कदम चले होंगे कि मैंने देखा शॉ ने अपनी बंदूक तानकर पास में किसी चीज़ पर निशाना दाग़ दिया। देस्लारियर भी नीचे कूद पड़ा और न दिखाई देने वाले शत्रु पर चाबुक फटकारता हुआ नाचने लगा। तब उसने झुककर अपने चाबुक से एक बहुत बड़े फनियर साँप को खींचकर बाहर निकाला। इसके फण शॉ की गोली ने बुरी तरह कुचल दिये थे। उसने इसे कुछ दूरी पर खड़े होकर लटकाया। इस साँप की पूँछ जमीन को छू रही थी। यह साँप लगभग बाँह जितना मोटा रहा होगा। इस समय से लेकर प्यूब्लो पहुँचने तक हमने ऐसे चार या पाँच साँप प्रायः हर रोज ही मारे होंगे। इस मामले में शॉ सबसे आगे बढ़ा हुआ था। वह जब भी किसी साँप को मारता उसकी पूँछ अपनी गोलियों के थैले में भर लेता। यह थैला कुछ ही दिन में इन छोटी और बड़ी पूँछों से भर गया। हर बार देस्लारियर अपने चाबुक से साँपों को घसीटकर वैसी ही प्रशंसा पा लेता। एक बार उसने इसी प्रकार से डेढ़ हाथ लम्बे एक साँप को खींचकर निकाला, जिसकी पूँछ के अन्त में एक छोटी-सी कुण्डली थी।

हमने प्लाट् नदी का यह दक्षिणी मोड़ पार किया। इसके परले किनारे पर हमें अरापाहो लोगों के एक बहुत बड़े डेरे के निशान मिले। यहाँ लगभग तीन सौ घरों के चूल्हों की बुझी हुई राख दिखाई दी। इस जगह को छोड़कर वे कुछ महीने पहले ही चले गये थे। लगता है कि यहाँ वे बहुत दिन टिककर

रहे थे। कुछ मील और आगे चलकर हमें आदिवासियों के हाल के निशान मिले। एक ऐसी भी पैड़ मिली, जो दो या तीन घरों के इधर से दो दिन पहले ही गुज़रने की बात बताती थी। हमने एक जूते के विशेष निशान देखे, जिसकी एड़ी में एक खास जोड़ लगा हुआ था। इन निशानों ने हमारे दिल में घबराहट भर दी। इन लोगों की संख्या हमारे समान ही थी। दोपहर के समय हमने एक बड़े भारी किले की दीवारों की छाया में आराम किया। यह किला आज से कुछ साल पहले बनाया गया था। यह बिलकुल एकांत में था। बहुत समय से अब इसका उपयोग नहीं हो रहा था। यह गिरने भी लगा था। बिना पकाई ईंटों की दीवारें नीचे से ऊपर तक चिर गई थीं। हमारे घोड़े इसके दरवाजे से ही डरकर लौट आए। इसके किवाड़ टूट-फूट गये थे। अन्दर के घेरे में जंगली घासें उग आई थीं। कभी अन्दर बने हुए कमरों में बहुत से व्यापारी, कनाडा-निवासी, आदिवासी-औरतें और सेवक रहा करते थे। अब ये सब कमरे भी खाली पड़े थे। यहाँ से लगभग बारह मील परे एक और उजाड़ किले के दर्शन हमें हुए। हमने रात को इसके पास डेरा डाला।

अगली सुबह बहुत सवेरे ही हमें एक और बात पता चली। हम अरापाहो की अभी हाल में छोड़ी गई एक बस्ती के पास से गुजरे। यह लगभग पचास घरों की बस्ती थी और इसकी आगें अब भी पूरी तरह बुझी नहीं थीं। यह साफ़ था कि वे लोग अभी हमसे दो घण्टे पहले ही यहाँ से गये होंगे। उनका रास्ता हमारे रास्ते को एकदम काटकर हमारे बाईं ओर कुछ दूरी पर स्थित, पहाड़ों की ओर निकल गया था। उनमें औरतें और बच्चे भी थे। इसलिए उनसे मुकाबले का खतरा और भी कम रह गया था। हेनरी ने बहुत गम्भीरता से उनके डेरे और रास्ते के चिह्नों को देखा। मैंने पूछा, "अगर हम उन्हें मिल जाते ?"

वह बोला, "क्यों ? हम उनसे हाथ मिलाकर दोस्ती कर लेते और उन्हें अपनी तमाम चीज़ें दे देते। इस तरह वे हमें शायद न मारते। शायद, वे हमें लूटते भी नहीं। शायद, हम उनके आने से पहले ही घाटी में छिप जाते या नदी के किनारे छिपकर उनसे लड़ने की तैयारी करते।"

दोपहर के समय हम 'चैरी' नाम की नदी के किनारे पहुँचे। यहाँ बहुत

से जंगली फल, अलूचे, बेरियाँ और ककरौंदे आदि लगे हुए थे। यह नदी भी औरों की भाँति लगभग सूखी हुई थी। हमें अपने घोड़ों और खुद के लिए गड्ढे खोदकर पानी निकालना पड़ा। दो दिन तक हम इस धारा के किनारे किनारे बढ़ते रहे। तब इसे पार कर हम उन ऊँची चोटियों के पार जाने लगे, जो प्लाट् नदी को अरकं सास से अलग करती हैं। यहाँ नज़ारा बिलकुल ही बदल गया था। अब जले हुए मैदानों की बजाय हमें घाटियों और पहाड़ों में में गुज़रना पड़ रहा था जहाँ बहुत सी झाड़ियाँ और चीड़ के पेड़ उगे हुए थे। हमने इस एकांत इलाके में ही सोलह अगस्त की रात बिताई। इस समय तेज़ तूफ़ान आने वाला था। सूरज बड़े-बड़े बादलों में खून के से लाल रंग का बनकर छिप गया। इन सब बातों के बाद भी हमने अपना तम्बू ठीक से नहीं गाड़ा और बहुत थके होने के कारण ज़मीन पर, बिना छत के ही, सो गये। आधी रात के समय आँधी आई। तब हमने अँधेरे और घबराहट में अपना तम्बू खड़ा किया। सुबह मौसम फिर से साफ़ हो गया। बर्फ से ढकी हुई एक चोटी सामने बहुत दूरी पर दिखाई देने लगी थी।

अब हमें चीड़ के पेड़ों के एक भारी और लम्बे रास्ते से होकर गुज़रना पड़ा। यहाँ शाखाओं में से बहुत बड़ी काली गिलहरियाँ उछल रही थीं। इस जंगल के परले पार से हमने फिर से मैदान की ओर निगाह डाली। हमें लगा जैसे वह एक लम्बे-चौड़े तसले के रूप में बदल गया हो। हमसे एक मील की दूरी पर सामने कोई एक काला-सा धब्बा घूमता हुआ दिखाई दे रहा था। निश्चय ही यह भैंसा रहा होगा। हेनरी ने अपनी राइफल सम्भाली और सामने की ओर भाग निकला। भैंसे के बाईं ओर एक छोटा-सा चट्टानी किला था। हेनरी इसके पीछे से छिपकर बढ़ने लगा। तभी हमने गोली छूटने की हल्की-सी आवाज़ सुनी। एक भैंसा बहुत अधिक घायल हालत में हम से तीन सौ गज़ की दूरी पर एक गोल चक्कर के रूप में घूमता भाग रहा था। मैं और शॉ आगे बढ़ गये और हमने पास जाकर उसकी बगलों में पिस्तौलें दाग दीं। इस पर भी वह एक दो बार तेज़ी से दौड़ा। पर, तब वह बिल्कुल गिर पड़ा। उसने क्षण भर अपने शत्रुओं की ओर क्रोध भरी आँखों से देखा और तब एक ओर मुड़कर ठंडा पड़ गया। पतला और गठीला होकर भी वह किसी भी बड़े और भारी भैंसे की बजाय अधिक भारी था। उसके मुँह और

नथुनों से खून और झाग बह रहे थे। वह अन्तिम साँसें लेता अपने पाँव धरती पर पटक रहा था। उसके दोनों पासे बहुत भारी साँस से बोझिल होकर उठ गिर रहे थे। उसकी आँखों की चमक एकदम मन्द पड़ गई और वह मुर्दा बनकर पड़ गया। हेनरी उस पर झुका और अपने चाकू से उसका मांस काटकर उसने बताया कि उसका मांस खाने के लायक नहीं है। इस प्रकार अपने सामान में और कुछ जोड़ने में हम असफल रहे। इसपर निराशा होनी स्वाभाविक थी। इसे यहीं छोड़कर हम आगे बढ़े।

दोपहर बाद हमने अपने दाईं ओर पहाड़ों को बहुत ऊँचा उठते देखा। पहाड़ों की तलहटी की ओर अपने चाबुक का इशारा करते हुए देस्लारियर एकदम चीख उठा, "आदिवासी ! आदिवासी !" डरे हुए चेहरे से वह उधर ही देख रहा था। हमने देखा पहाड़ों की तलहटी में कुछ काले निशान से इधर-उधर घूमते नजर आ रहे थे, मानों घुड़सवार हों। मैं, शॉ और हेनरी कुछ दूर तक पता लगाने के लिए निकल गये। पास जाकर हमने देखा कि जिन्हें हमने आदिवासी समझा था, वे आदमी न होकर, चीड़ के पेड़ों की चोटियां बहुत दूर से ऊपर उठी हुई ऐसी ही लगती थीं, जैसे कुछ घुड़सवार घूम रहे हों।

हमने खाई और खड्डों में ही डेरा डाला। उन में से होकर एक नाला बह रहा था। सूर्य उगने से पहले ही सामने की बर्फ से ढकी चोटियाँ लाल हो उठीं। हम जब आगे बढ़े तो सामने का नजारा बहुत ही सुन्दर हो उठा था। हमारी दाईं ओर सात-आठ मील दूर, बहुत सी चोटियाँ ऊँची उठी हुई थीं, मानों वे धरती फाड़कर आकाश की ओर अचानक ही चल पड़ी हों। उनकी चोटी और तलहटी के बीच में बहुत-से बादल समाए हुए थे और हवाओं के कारण इधर-उधर दौड़ रहे थे। कुछ समय के लिए कोई भी ऊँची चोटी इनसे ढक जाती। इस बादल के हटते ही हमें पर्वत के भयंकर जंगल, बड़ी-बड़ी चट्टानें, बर्फ से लदी जगहें, खाइयाँ और काले खड्ड, अचानक ही, सामने दीख जाते और बादल के आने पर फिर से ढक जाते।

एक दिन बाद हमने कुछ दूर के इन पहाड़ों का रास्ता पार कर लिया। इसी समय इन पर एक बादल उतरा और एक गूँज चारों ओर फैल गई। थोड़ी देर में चारों ओर अँधेरा छा गया और मूसलाधार बारिश होने लगी।

हम लोग एक पुराने पेड़ के नीचे छिप गये और इस बवंडर के गुज़र जाने की प्रतीक्षा करने लगे।

जिधर से बादल इकट्ठे हुए थे, उधर से ही वे हटने भी लगे। थोड़ी ही देर में सारे पहाड़ धूप में नहाने लगे। लगता था जैसे इस जंगल में पूर्व के देशों का प्यार सच्चा रूप धारण करके जग पड़ा हो। थोड़ी देर बाद सारा आसमान नेपल्स के नीले आकाश की तरह या काप्री की सुनहरी चोटियों को नहलाने वाले सागर के समान नीला हो उठा। बाईं ओर का आकाश अब भी स्याही के समान काला था। पर, दोनों ओर इन्द्रधनुष भी निकले हुए थे, हालाँकि बादल और बिजली अब भी अपना खेल दिखा रहे थे।

उस साँझ और अगली सुबह हम 'उबलते सोते' नाम की धारा के पास से ही गुज़रते रहे। इसका यह नाम उन उबलते हुए सोतों के कारण पड़ा है, जिनका पानी इसमें आता है। जब हम दोपहर को रुके, तब हम से प्यूब्लो कुल सात-आठ मील की दूरी पर रह गया था। आगे चलते हुए हमने फिर देखा कि किसी घुड़सवार के ताजा निशान बता रहे थे, कोई हमें देखने आया था। उसने हमारा आधा चक्कर काटा और फिर पूरी तेज़ी से किले की ओर लौट गया। वह हमसे इतना अधिक क्यों सकुचाया ? हम नहीं पहचान पाये ! एक घंटे बाद हम उस पहाड़ी के किनारे पहुँच गये, जहाँ से हमें सामने का दृश्य लुभाने लगा। यहाँ अरकंसास नदी नीचे की घाटी में पेड़ों और अमराइयों में से होती हुई बह रही थी। उसके दोनों ओर मक्का के खेत और हरी चरागाहें फैली हुई दिखाई दे रही थीं। इन पर पशु चर रहे थे। सामने ही यहाँ के किले की, मिट्टी से बनी, दीवारें उठी हुई थीं।
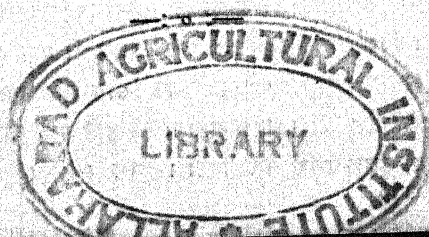
२१ : प्यूब्लो और बेंट का किला

हम प्यूब्लो के बड़े दरवाज़े पर पहुँचे। यह बहुत ही पुराने तरीके का बना हुआ एक रद्दी किस्म का किला था। सच यह है कि यह किला न होकर एक चौकोना घेरा था, जो मिट्टी की दीवारों से घिरा हुआ था। यह दीवारें जगह-जगह टूटी और गिरी हुई थीं। इसके चारों ओर के छोटे-छोटे बुर्ज भी टूट चुके थे। लकड़ी का बना दरवाज़ा चौखटों से इतना ढीला जड़ा हुआ था कि इसके खींचने या बन्द करने में इसके गिरने का ख़तरा रहता था। दो या तीन मैक्सिकोवासी, अपने चौड़े टोपों और बढ़े हुए बालों वाले चेहरे को लिए, इसके सामने ही नदी के किनारे आराम कर रहे थे। हमें पहुँचता हुआ देखकर वे वहाँ से गायब हो गए। जब हम दरवाज़े तक पहुँचे तो एक छोटे कद का चुस्त आदमी हमसे बाहर मिलने आया। यह हमारा पुराना मित्र रिचर्ड ही था। यह, लारामी किले से ताओस व्यापार करने आया था, परन्तु जब वह इस किले पर पहुँचा तो उसे लगा कि अगला युद्ध उसे आगे बढ़ने नहीं देगा। इसलिए उसने यहाँ तब तक रुकने का निश्चय किया, जब तक सारा देश पूरी तरह जीत न लिया जाए। उसने हमें उस जगह के लायक पूरा सम्मान देने का निश्चय किया था। हमसे अच्छी तरह हाथ मिलाकर वह हमें अन्दर ले गया।

यहाँ हमने सान्ताफ़े की ओर जाने वाली बड़ी भारी व्यापारी गाड़ियों को एक साथ खड़े पाया। कुछ आदिवासी, स्पेनी औरतें और मैक्सिकोवासी यहीं पर सुस्ताते हुए घूम रहे थे। वे इस जगह के अनुरूप ही, दीन-हीन बने हुए थे। रिचर्ड हमें किले के सरकारी हिस्से में ले गया। यहाँ एक छोटा-सा मिट्टी से बना हुआ कमरा था। अन्दर से सफ़ाई बहुत अच्छी थी। इसमें एक तरफ क्रास का निशान टँगा था। इसके साथ ही एक शीशा और कुमारी माता की तस्वीर भी टँगी थी। इन सबके साथ ही एक जंग खाई हुई बड़ी पिस्तौल भी टँगी थी। यहाँ कुर्सियाँ तो नहीं पड़ी थीं, पर उनकी जगह बहुत सी पेटियाँ इधर-उधर रक्खी थीं। इससे परे एक और कमरा था, जो

कुछ कम सजा हुआ था। यहाँ तीन या चार स्पेनी लड़कियाँ केक पका रही थीं। इनमें से एक बहुत खूबसूरत थी। उन्होंने ज़मीन पर एक मेज़-पोश सा बिछा दिया। तब उन्होंने बहुत ही अच्छा खाना हमारे सामने रक्खा। चारों ओर कुछ भैंसों की खालें तकियों के रूप में रख दी गईं, ताकि आने वाले मेहमान बैठ सकें। हमारे अलावा दो या तीन अमरीकन भी वहाँ ठहरे हुए थे। हम लोग आस-पास बैठकर समाचार पूछने लगे। रिचर्ड ने बताया कि दो-तीन सप्ताह पहले जनरल कीर्नी की सेना सान्ताफ़े की ओर हमला करने के लिए बैंट के किले से गई है। उसने यह भी बताया कि उसने अन्तिम समाचार यह सुना है कि वे सेनाएँ उस शहर की बाहरी सीमाओं तक पहुँच चुकी हैं। एक अमरीकन ने हमारे सामने एक अखबार रक्खा, जिसमें 'पॉलो आल्तो' और 'रेसाका देला पालूमा' की लड़ाइयों का विवरण दे रखा था। हम इन बातों पर बहस कर रहे थे कि दरवाज़े में हमें एक ऊँचे कद के आदमी की छाया पड़ती दिखाई दी, जो जेबों में अपने हाथ डाले, घुसने से पहले कमरे का अन्दाज़ा ले रहा था। उसने खड्डी के बुने कपड़े के भूरे रंग का पाजामा पहना हुआ था। यह उसके पाँव की लम्बाई से बहुत छोटा था। उसकी कमर-पेटी से पिस्तौल और खुखरी लटक रही थी। उसका सिर और एक आँख पट्टी से ढकी हुई थी। पूरी तरह चारों ओर निगाह डालकर वह झुकता हुआ अन्दर आया और एक पेटी पर बैठ गया। उसके बाद आठ या दस आदमी, उसकी तरह ही, उसके पीछे-पीछे आए और बहुत ढीले-ढाले तरीके से चारों ओर पेटियों पर बैठ गए और हमें घूरने लगे। हमें तुरन्त ही ओरेगन के प्रवासियों की याद ताज़ा हो आई। पर इनकी आँखों में कुछ चमक भी थी और होठ कुछ दबे हुए थे। इससे साफ़ था कि ये लोग उनसे अलग किसी और जाति के हैं। उन्होंने तुरन्त ही हमसे सवाल पूछने शुरू कर दिए। वे हमारे आने के स्थान, उद्देश्य और लक्ष्य-स्थान आदि को जानना चाहते थे।

जिस आदमी की आँख पर पट्टी बँधी थी, उसके साथ कुछ ही दिन पहले एक बहुत बुरी दुर्घटना हुई थी। वह नदी तक पानी लेने जा रहा था। रास्ते में उसे छोटी-छोटी झाड़ियों को हटा कर आगे बढ़ना पड़ा। इसी समय उसे अचानक ही एक रीछ का सामना करना पड़ गया, जो अभी-अभी एक भैंसे को मार चुका था। इस समय वह आराम से लेटा हुआ था। भालू अपनी

पिछली टाँगों के बल पर उठ खड़ा हुआ। उसने अचानक बाधा डालने वाले को ऐसी बुरी चोट पहुँचाई कि उसका पंजा इसके सारे माथे को नोच गया। बहुत कठिनता से इसकी एक आँख बच गई। सौभाग्य से उस समय भालू अपने भरपेट भोजन के कारण तृप्त था और वह बिगड़ा हुआ नहीं था। इस आदमी के पीछे आने वाले साथियों ने तुरन्त ही शोर मचा दिया और भालू भाग गया।

ये लोग मोर्मन लोगों के एक दल के ही थे। ये और प्रवासियों से घबरा कर कुछ देर के लिए पीछे ही रुक गए थे, ताकि प्रवासी आगे निकल जाएँ। इसी कारण ये लोग लारामी किले में उस समय तक न पहुँच सके, जब तक कैलिफोर्निया की ओर जाना सम्भव हो सकता था। वे बहुत देर से पहुँचे। इस लिए जब इन्होंने यह सुना कि अरकंसास के इलाके में अच्छी ज़मीन मिल सकती है, तो ये लोग रिचर्ड के साथ इधर चले आए और इस किले से आधा मील दूर ही रहकर सर्दियाँ बिताने का इरादा कर चुके थे।

सूर्य छिपने के समय हमने रिचर्ड से विदाई ली। दरवाज़े से निकल कर हमने अरकंसास की छोटी सी घाटी की ओर देखा। हमारी आँखों के लिए यह सुन्दर नज़ारा और भी सुन्दर हो उठा क्योंकि बहुत दिनों से ये आँखें रेतीले और उजाड़ इलाके देखने की आदी हो चुकी थीं। यहाँ बहुत ऊँचे-ऊँचे पेड़ नदी के दोनों किनारों पर उगे हुए थे। दोनों ओर बहुत बड़ी हरियाली भरी चरागाहें फैली हुई थीं। धूप से रंगे हुए हरे टीले इस घाटी में जगह-जगह छाए हुए थे। पशुओं को लेकर एक मैक्सिकोवासी घुड़सवार किले के दरवाज़े की ओर आ रहा था। कुछ दूरी पर हमारा सफेद तम्बू बहुत ही सुहावना लग रहा था। इसे हमारे आदिवासियों ने चरागाह में एक पेड़ के नीचे गाड़ा था। जब हम वहाँ पहुँचे तो हमने देखा कि रिचर्ड ने एक मैक्सिको-वासी को हरा मक्का और सब्जियाँ देकर हमारे लिए भेजा है और हमें चारों ओर के खेतों में से अपनी मनपसंद का माल चुन लेने का निमंत्रण भी दिया है।

यहाँ के निवासी हम से भी ज्यादा किन्हीं और ग्राहकों से प्रतिदिन घबराते रहते थे। हर साल जब उनकी मक्का पकनी शुरू होती, तो अरापाहो जाति के हज़ारों लोग इस किले के आस-पास आ जाते। मुट्ठी भर गोरे

आदमी इन असभ्य और जंगली लोगों के हाथ में पड़ जाते। इससे बचने के लिए उन्होंने एक रास्ता ढूँढ निकाला। बहुत उदारता के साथ उन्होंने इन लोगों से हाथ मिलाकर मित्रता जताई और उन्हें बताया कि अगर वे चाहें तो सारी फसल उन्हीं की हो जायगी। अरापाहो लोगों ने उनका कहना मानकर उनकी सहायता करनी शुरू की और बहुत उदारतापूर्वक फसलें बटोरने में उन्हें मदद देने लगे। साथ ही वे अपने घोड़े खेतों में छोड़ देते। आदिवासी लोग एक बात को अच्छी तरह समझते थे। वे खेतों में काफ़ी सारा अनाज छोड़ देते थे, ताकि अगले साल खेती करने के लिए गोरे लोगों का लोभ बना रहे और वे स्वयं भी अगले साल फिर से इस अनाज का आनन्द उठा सकें।

संसार के इस कोने में मनुष्य जाति तीन हिस्सों में बँटी हुई है : गोरे, आदिवासी और मैक्सिकोवासी। इनमें से मैक्सिकोवासियों को 'गोरा' नहीं कहा जाता।

वह साँझ गरम होने पर भी अगली सुबह बहुत ही खराब और भयंकर निकली। सारी सुबह लगातार वर्षा होती रही। बादल पेड़ों तक झुक आए थे। हम नदी पार करके मोर्मन लोगों के खेतों की ओर निकल गए। जब हम धारा पार कर रहे थे, तभी दूसरी ओर से कुछ पशु फँसाने वाले, घोड़ों पर चढ़े हुए, नदी में उतरे। उनकी हिरण की खाल से बनी कमीजें बारिश से भीगी हुई थीं और उनके अंगों से बुरी तरह चिपटी हुई थीं। उनके चेहरों से, बन्दूकों के कोनों से और घोड़े की काठी के पीछे बँधे हुए जालों से बुरी तरह पानी चू रहा था। उनकी और उनके घोड़ों की शक्लें बहुत दुःखों और कष्टों से भरी हुई लग रही थीं। उन्हें देखकर हमें हँसी आ गई। हम भूल गए कि कई बार हमारी हालत इससे भी अधिक बुरी रही थी।

लगभग आधा घंटा सवारी करने के बाद हमने पेड़ों के पास रुकी हुई मोर्मन लोगों की सफ़ेद गाड़ियों को देखा। उनके कुल्हाड़े काम में लगे हुए थे। जब हम पास आए तो उन लोगों ने अपना काम छोड़ दिया और हमारे चारों ओर पेड़ों के तनों पर ही बैठ गए। उन्होंने तुरन्त ही परमात्मा और धर्म के विषय में विचार करना शुरू कर दिया। उन्हें इस बात की शिकायत थी कि सभ्य कहलाने वाले बहुत से लोगों ने उनसे बुरा व्यवहार किया था। उन्हें नवाहो के

अपने मन्दिर के नष्ट किए जाने का भी बड़ा अफसोस था। उनके साथ घंटा भर रहकर हम फिर अपने खेमों में लौट आए। हमें इस बात की प्रसन्नता थी कि बस्तियों से ऐसे धर्मान्ध लोग निकल आए हैं।

अगली सुबह हम बेंट के किले की ओर निकल पड़े। रेमंड का व्यवहार पिछले कुछ दिनों से अच्छा नहीं रहा था। इसलिए हमने प्यूब्लो पहुँचते ही उसे छुट्टी दे दी थी। अब हमारा दल कुल मिलाकर चार आदमियों का रह गया था। हमें अपना अगला रास्ता भी पूरी तरह पता नहीं था। बेंट के क़िले और बस्तियों के बीच में लगभग छह सौ मील का अन्तर है। यह रास्ता इन दिनों सबसे अधिक ख़तरनाक था, क्योंकि जनरल कीर्नी की सेना के गुज़रने के बाद से ख़ूँखार और भयानक आदिवासियों के बहुत से दल इन इलाकों के कुछ हिस्सों में जमा हो गए थे। वे इतनी अधिक संख्या में इकट्ठे हो गए कि कोई बड़े-से-बड़ा दल भी उधर से गुज़रे तो उनकी निर्दयता और दुश्मनी का इनाम बिना पाए वह आगे नहीं बढ़ सकता था। इस समय के अख़बार इस हालत का पूरा अन्दाज़ा देते हैं। अनेक आदमी मारे गए और घोड़े तथा खच्चर बहुत बड़ी संख्या में छीन लिए गए। अभी कुछ ही दिन पहले मुझे एक नवयुवक मिला, जो सर्दियों में सान्ताफे से बेंट के किले की ओर आया था। वहाँ उसने लगभग सत्तर आदमियों का एक दल देखा। वे लोग अकेले बस्तियों की ओर लौटने को तैयार न थे, बल्कि किन्हीं और लोगों के आ मिलने का इन्तज़ार कर रहे थे। यह कायरता उनकी मूर्खता की ही सूचना देती है, पर इससे यह भी पता चल जाता है कि उस समय देश में कितनी अधिक बेचैनी और ख़तरे से डर की भावना छाई हुई थी। जब हम अगस्त के महीने में वहाँ पर थे, तब ख़तरा इतना अधिक नहीं बढ़ा था। पास-पड़ोस में कोई इतनी ध्यान बँटाने वाला चीज थी भी नहीं! हमने यह भी समझ लिया था कि अगर हम आधी सर्दियाँ भी इन्तज़ार में बिता दें, तब भी साथ चलने वालों का कोई दल न मिलेगा। रिचर्ड ने हमें बताया था कि जिन लोगों ने हमसे बेंट के क़िले में मिलने का वायदा किया था, वे लोग पहले ही आगे जा चुके थे। इस लिए हमारे लिए रास्ते का सब से अच्छा दोस्त केवल हमारा भाग्य ही रह गया था। हमने अपने अच्छे भाग्य का लाभ उठाना चाहा और उसपर भरोसा करके हेनरी और देस्लारियर को लेकर हम लोग चल पड़े। हमने सोच लिया कि

भी इस गाँव का कोई भी निवासी गोरे लोगों का स्वागत करके प्रसन्न ही होता। इससे उसे अपना अतिथि-प्रेम दिखाने का मौका मिलता।

उसकी पत्नी ने हमारे लिये अतिथि की निश्चित जगह पर एक खाल बिछाई। यह जगह सबसे अगले हिस्से में थी। हमारी काठियाँ अन्दर लाई गईं। अभी हम पूरी तरह बैठे भी न थे कि हमें देखने के लिये आदिवासियों की भीड़ जमा हो गई। 'महान् काक' ने चिलम निकाली और उसमें तम्बाकू और शोंगसाशा मिला कर भरा। अब यह चिलम बारी-बारी से होकर हर एक के हाथ में जाने लगी और बातों का सिलसिला जारी हुआ। इसी बीच एक औरत हमारे सामने लकड़ी के एक बर्तन में भैंसे का उबला हुआ मांस रख गई। हमें स्वागत में दी जाने वाली यही अकेली चीज़ न थी। इसके बाद एक एक आदिवासी आकर हमें अपने-अपने घर में, अलग-अलग किस्म की दावत के लिये, बुलाने लगा। आधे घंटे से भी अधिक देर तक हम घर-घर जाकर हर-एक के बनाये मांस का स्वाद लेते रहे और उनकी सुलगाई चिलमों में से एक दो कश खींचते रहे। बहुत देर से तूफ़ान आने के आसार दीख रहे थे। अब यह तूफ़ान बुरी तरह आ टूटा। हम रेनल के घर में आ गये। यह जगह घर कहलाने लायक न थी, क्योंकि इसे बहुत कम और पुरानी खालों से ढका गया था। यह एक ओर से खुली हुई थी। हम एक ओर बैठ गये। आदिवासी हमारे चारों ओर जमा हो गये।

मैंने जान बूझ कर पूछा, "यह कड़क किस कारण होती है ?"

रेनल ने उत्तर दिया, "मुझे यकीन है कि आकाश में एक बड़ा-सा पत्थर घूम जाता है।"

मैंने कहा, "हो सकता है ! पर मैं इन आदिवासियों का ख्याल जानना चाहता हूँ।"

इस पर उसने मेरा प्रश्न उन्हें समझा दिया। उनमें कुछ देर वाद-विवाद हुआ। उनकी राय एक न थी। अन्त मेनेसीला या 'लाल पानी' नाम के आदमी ने ऊपर की ओर आँखें उठाकर अपने मुरझाये चेहरे से, एक कोने में ही बैठे-बैठे, उत्तर दिया। उसने बताया कि वह इस कड़क के बारे में सदा से ही जानता है। यह एक बहुत बड़ा काला पक्षी है। उसने इसे एक बार स्वप्न में भी देखा है। यह ब्लैक-हिल्स से उड़ता हुआ आता है। यह आवाज़ इसके

पंखों की होती है। जब वह एक झील के पानी पर अपने पंख फड़फड़ाता है, तब पानी से ही यह बिजली और कड़क पैदा होती है।

एक और बूढ़ा आदमी बोल उठा, "यह कड़क बहुत बुरी है। पिछली गर्मियों में इसने मेरे एक भाई की जान ले ली थी।"

मेरे कहने पर रेनल ने उससे इसका कारण पूछा। वह बूढ़ा आदमी एकदम चुप होकर बैठ गया। उसने निगाह तक न उठाई। कुछ देर बाद मुझे यह पता चला कि यह दुर्घटना कैसे हुई थी ? जो आदमी मारा गया था वह एक ऐसे समुदाय में से था, जिसे यह विश्वास था कि वे लोग बिजली की कड़क से लड़ाई कर सकते हैं। जब भी उन्हें लगता था कि आँधी आ रही है, तो वे उसका मुकाबला करना चाहते। तब उनमें से बिजली से युद्ध करने वाले लोग, अपने धनुष, बाण और बन्दूकें आदि लेकर, जादू भरे ढोल और बाँसुरी आदि के साथ, बाहर निकल जाते और बादल पर आग बरसाने लगते। इसके साथ ही वे चीखते-चिल्लाते, और ढोल पीटने लगते। यह सब वे बादलों को डराने के लिए करते। एक दिन ढलती दोपहर के समय एक बड़ा भारी काला बादल उठा और थोड़ी ही देर में चारों ओर छाने लगा। ये लोग पहाड़ की एक चोटी पर अपने पूरे सामान के साथ चढ़ गये और उसे रोकने की कोशिश करने लगे। पर, बादल गरजने से न रुका। बहुत तेज चमक के साथ बिजली कौंधने लगी। यह बिजली उस दल के एक आदमी पर गिरी और उसे इसने मार डाला। कारण यह था कि वह अपना नुकीला लम्बा भाला इसकी ओर ताने हुए था। उसके मरने पर बाकी सब लोग, डरे हुए, अपने घरों की ओर वापिस आ गये।

मेरे मेज़बान 'कोंगरा तोंगा' या 'महान् काक' के घर में उस रात एक बहुत अच्छा नज़ारा देखने में आया। बहुत-से आदिवासी, अपनी नंगी काली शक्लों में, घर के बीचों-बीच हल्की जलती हुई आग के चारों ओर घेरा डालकर बैठे हुए थे। सुलगी हुई चिलम बारी-बारी सबके हाथों में जा रही थी। इसी समय एक स्त्री ने भैंसे की थोड़ी-सी चरबी आग पर डाल दी। इससे आग भड़क उठी। यह लपट बहुत ऊँची उठी। इस में सभी बैठे हुए आदिवासियों के चेहरे साफ़ चमकने लगे। वे खूब भाव भरे ढंग से एक दूसरे को कहानियाँ सुना रहे थे। इस प्रकाश में चारों ओर चमड़े की पोशाकें, धनुष, तरकस और

भाले लटकते हुए दीख रहे थे। हमारी बन्दूक और बारूद की थैली भी वहाँ लटक रही थी। कुछ देर के लिए दिन का-सा प्रकाश चारों ओर फैल गया। थोड़ी देर बाद फिर यह प्रकाश मन्द पड़ गया। इस प्रकार उजाला और अँधेरा बारी-बारी से कुछ देर आने के बाद आग बिल्कुल बुझ गई और अँधेरे ने सब को ही ढँक लिया।

अगली सुबह जब मैंने डेरा छोड़ा, तो मुझे चारों ओर भौंकने और चीखने की आवाजें सुनाई देने लगीं। गाँव के आधे से अधिक कुत्ते एक साथ ही भौंकने लगे थे। वे कायर होने के कारण, मुझ पर हमला करने के लिए आगे न बढ़कर, अपनी जगह पर ही खड़े-खड़े उछल रहे थे। केवल एक छोटा-सा पिल्ला ही मुझ तक आ सका। उसके गले में चमड़े की एक रस्सी पड़ी हुई थी। वह मेरे जूतों के फ़ीतों को पकड़े हुए ही भौंकता और चिल्लाता रहा। मेरा हर उठने वाला कदम उसे झटका देता था। मुझे पता था कि सब लोग मेरी ओर देख रहे थे कि मैं डरता हूँ या नहीं? इसलिए मैं दायें या बायें बिना देखे, कुत्तों से वैसे ही घिरा हुआ, आगे बढ़ता रहा। जब मैं रेनल के घर के पास आकर बैठ गया, तो वे सब अपने-अपने घरों की ओर लौट गये। केवल एक बड़ा-सा कुत्ता मेरे आस-पास अपने दाँत दिखाता हुआ दौड़ता रहा। मैंने उसे पास बुलाया, पर वह अधिक तेज़ी से गुर्राने लगा। मैंने उसे देखा, वह मोटा और गठीला था। मैंने मन-ही-मन सोचा कि मुझे मनचाहा कुत्ता मिल गया है। मैंने जैसे उससे कहा, "मेरे दोस्त, तुम्हें यह सौदा महँगा पड़ेगा। आज ही शाम मैं तुम्हें मरवा डालूँगा।"

मेरा इरादा उस शाम को आदिवासियों को एक दावत देने का था, ताकि मैं अपने चरित्र और बड़प्पन की छाप उनके दिल पर बिठा सकूँ। इसके लिये उन लोगों में ऐसे मौकों पर सफेद कुत्ता मारकर बाँटने की प्रथा है। मैंने रेनल से सलाह की। उसने तुरन्त ही पता कर लिया कि अगले ही घर की बुढ़िया इस कुतिया की स्वामिनी थी। मैंने एक चमकीला सूती रूमाल ज़मीन पर फैलाया और कुछ केसर और दाने इस पर रखे। तब बुढ़िया को बुलाया गया। मैंने पहले कुत्ते की ओर इशारा किया और फिर इस रूमाल की ओर। वह खुशी से उछल पड़ी और रूमाल लेकर अपने मकान में चली गई। मैंने और सारे काम के लिये दूसरी दो औरतों की सेवा का

लाभ उठाया। उन्होंने कुत्ते को पंजों से पकड़ा और उसे मारकर पहले आग पर भूना और तब खाल उतारकर और काटकर उसे दो बड़ी पतीलियों में उबलने को डाल दिया। इसी बीच मैंने रेमंड को अपना बचा-खुचा आटा भैंसे की चरबी में डालने को कहा। साथ ही एक बड़ी पतीली में चाय बनाने के लिये भी कह दिया।

'महान् काक' की स्त्री भी आज की दावत के लिये घर की सफ़ाई के काम में जुट गई। मैंने अपने मेज़बान को लोगों को बुलाने का काम सौंप दिया, ताकि मुझसे कोई भूल न हो।

दावत के समय में किसी भी आदिवासी को एक घण्टा पहले सूचना देने से काम चल जाता है। हमारी इस दावत का समय दोपहर ग्यारह बजे था। इस समय रेनल और रेमंड गाँव में से होकर, उसके निवासियों से प्रशंसा पाते हुए कुत्ते के मांस की दोनों पतीलियों को उठाकर हमारे डेरे तक लाये। उन्होंने इसे मकान के बीचोंबीच रख दिया। तब वे रोटी और चाय लेने चले गये। इसी बीच मैंने नये जूते पहन लिये और अपनी पुरानी हिरण की खाल की कमीज़ की जगह एक दूसरी कमीज़ को पहन लिया। ऐसे मौकों के लिये ही मैं इसे साथ लाया था। इस समय मैंने उस्तरे से अपनी दाढ़ी-मूँछ भी बनाई, क्योंकि ऐसे समय यह सब ज़रूरी हो जाता है। इस प्रकार सज-धज कर मैं दरवाज़े पर रेनल और रेमंड के साथ बैठ गया। कुछ ही क्षण में मेहमान घर में आने लगे और एक घेरे में सटकर बैठ गये। हर एक के हाथ में लकड़ी का एक बर्तन था, जिसमें उसका भोजन परोसा जाना था। जब सब जमा हो गये, तो उनके दो पहरेदार सामने आये और भेड़ के सींगों से बनी कड़छियों से खाना परोसने लगे। बूढ़ों और सरदारों का दुगना हिस्सा दिया गया। कुत्ते का सारा मांस थोड़ी ही देर में खत्म हो गया। सबने अपने खाली बर्तन दिखाकर इस बात की सूचना दी। तब बारी बारी से रोटी बाँटी गई और अन्त में चाय परोसी गई। पहरेदार जब इसे भोजन वाले लकड़ी के बर्तनों में परोसने लगे, तो मुझे इसका रंग बड़ा अजीब-सा लगा।

मेरे पूछने पर रेनल ने बताया कि चाय कुछ कम होने से उन्होंने एक और जड़ी मिला दी थी, ताकि यह गाढ़े रंग की बन सके। सौभाग्य से

आदिवासियों को इसके स्वाद में फ़र्क मालूम नहीं पड़ा। चाय काफ़ी मीठी थी और उन्हें इतने से ही मतलब था।

दावत समाप्त होने पर भाषण करने का समय आया। 'महान् काक' ने लकड़ी के एक चौड़े फट्टे पर तम्बाकू और शोंगसाशा को मिलाकर काटा और चिलम भरकर सुलगाई। तब तक चिलम बारी-बारी से सबके हाथ में घूमने लगी। मैंने अपना भाषण शुरू किया। मेरे हर वाक्य को रेनल उन्हें समझाता जा रहा था। वे लोग बार-बार प्रसन्नता प्रगट करते थे। मुझे याद पड़ता है कि मैंने कुछ इस प्रकार की बातें कही थीं।

मैंने कहा, "मैं बहुत दूर के देश से आया हूँ, जहाँ उनकी-सी चाल से चलने पर एक साल में भी पहुँचा नहीं जा सकता।"

उन्होंने अपनी प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा, "हाऊ, हाऊ ?"

"वहाँ पर हम लोग घास की पत्तियों से भी अधिक संख्या में रहते हैं। हमारी औरतें इतनी सुन्दर हैं, जैसी आपने कभी न देखी होंगी। सभी आदमी वीर योद्धा

"हाऊ, हाऊ, हाऊ !"

मैंने जब अन्तिम शब्द कहे तब मेरी आत्मा कुछ दुःखी हुई। मैंने फिर से कहना शुरू किया।

"जब मैं वहाँ रह रहा था, तब मैंने आप लोगों के बारे में सुना कि आप कितने महान् और बहादुर जाति के लोग हैं। मैंने यह भी सुना कि आप भैंसों और शत्रु के शिकार में कितने चतुर हैं ? मैंने इन सब बातों को अपनी आँखों से देखने का निश्चय किया।"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ, हाऊ !"

"इन पहाड़ों में से घोड़े पर सवार होकर आने के कारण मैं बहुत अधिक भेंटें नहीं ला सका।"

"हाऊ।"

"पर मैं सबको थोड़ा-थोड़ा तम्बाकू देने के लिए अवश्य लाया हूँ। आप लोग पीकर देख सकते हैं कि व्यापारियों से खरीदे गये तम्बाकू के मुकाबले में यह कैसा है ?"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ ?"

"लारामी किले में मेरे पास काफ़ी सारा बारूद, गोलियाँ, चाकू और तम्बाकू पड़ा है। ये चीजें मैं आप को देना चाहता हूँ, यदि आप किले में, मेरे यहाँ से जाने से पहले, आ सकें।"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ, हाऊ ?"

रेमंड ने लगभग डेढ़ सेर तम्बाकू के छोटे-छोटे टुकड़े करके सबको बाँटना शुरू किया। इस बीच मेनेसीला या 'लाल पानी' नाम के बूढ़े सरदार ने उत्तर देना शुरू किया। यह भाषण काफ़ी लम्बा था। पर उसका सार इस प्रकार था—

"मैं भी सदा से ही गोरों से प्यार करता रहा हूँ। इस धरती पर वे लोग सब से अधिक बुद्धिमान् प्राणी हैं। मेरा विश्वास है कि वे जो कुछ चाहें कर सकते हैं। हमारे लोगों के घरों में वे जब कभी भी आते हैं तब मुझे प्रसन्नता ही होती है। यह ठीक है कि मैंने उन्हें अधिक भेंटें नहीं दीं, पर यह भी ठीक है कि मैं इस लायक ही नहीं था। आप का हमारे बीच में आना ही इस बात का सबूत है कि आप हम से प्यार करते हैं; नहीं तो आप इतनी दूर चल कर क्यों आते ?"

कुछ और लोगों ने भी इसी तरह के भाषण दिये। तब तम्बाकू पीने, हँसने और आपस में बातें करने का सिलसिला शुरू हुआ। बूढ़ा मेनेसीला बीच में ही ऊँची आवाज़ में बोल पड़ा, "इस समय सब लोग यहाँ जमा हैं। इसलिये यह मौका है कि हम लोग अगले काम-काज की बात तय कर लें। हम इन पहाड़ों पर इस लिए आये थे कि अगले साल के लिए घरों का सामान इकट्ठा कर लें। हमारे पुराने डेरे कमजोर पड़ गये हैं। अब तक हम कोई भी अच्छा शिकार नहीं कर सके। हमने नर भैंसे तो काफ़ी मार लिए हैं, पर मादा भैंसे नहीं मार पाये। नर भैंसों का चमड़ा इतना मुलायम नहीं है कि हमारी औरतें उनसे तम्बू बना सकें। मेरे विचार में 'मैडिसन बो' नाम के पहाड़ पर बहुत-सी मादा भैंसें हमें मिलेंगी। इसलिए हमें उधर ही चलना चाहिए। यह ख्याल रखना कि यह जगह उससे भी पश्चिम की ओर है, जहाँ तक हम लोग अब तक कभी गये हैं। हो सकता है कि वहाँ हमें नाग जाति के लोगों का हमला सहना पड़े। वह स्थान उनके शिकार का ही है। पर, हमें अपने नये घर भी बनाने हैं। हमारे पुराने घरों में जान नहीं रह गई है। हमें नाग लोगों

से डरना नहीं चाहिए। हमारे योद्धा बहादुर हैं और वे नाग लोगों से युद्ध के लिए तैयार भी हैं। इसके अलावा हमारे साथ तीन गोरे भी हैं। उनकी बंदूकें भी हमारे ही साथ रहेंगी।"

इस पर उन लोगों में काफ़ी बहस छिड़ गई। रेनल ने तो मुझे यह नहीं बताया कि उन लोगों ने क्या-क्या कहा? पर मैं बोलने वालों के इशारों से सब कुछ पहचान गया। इस बहस के बाद उन में से बहुत से लोग उस बूढ़े सरदार की राय से सहमत हो गये। इसके बाद कुछ देर तक शांति रही। बाद में उस बूढ़े सरदार ने बेसुरे ढंग से कुछ बोला। मुझे पता चला कि इस प्रकार मुझे धन्यवाद दिया गया था।

उसने कहा, "अब हमें चलना चाहिए और इन लोगों को आराम का मौका देना चाहिए।" इस प्रकार सब वहाँ से विदा हुए। खुली हवा में आकर कुछ देर बूढ़ा सरदार दावत की प्रशंसा में, गाँव भर में, गाता फिरा। उनका यही रिवाज था।

दिन ढलने लगा और सूरज भी छिपने लगा। इसी समय घोड़े पास के मैदानों से इकट्ठे होकर लौटने लगे और अपने-अपने स्वामियों के घरों के आगे आकर जमा हो गये। बहुत जल्दी ही उन मकानों के बीच घोड़ों का एक घेरा-सा बन गया। इधर-उधर आग जल रही थी। अँधेरे में चारों ओर बैठी सूरतें कभी-कभी चमक पड़ती थीं। मैं रेनल के पास जाकर बैठ गया। मेनेसीला का एक लड़का, जो मेरे मेजबान का भाई ही था, 'चील का पंख' नाम से मशहूर था। वह पहले ही से वहाँ बैठा था। मैंने उससे पूछा, "सुबह गाँव आगे चलेगा या नहीं?" उसने कहा, "कुछ भी निश्चय से नहीं कहा जा सकता।" उसने बताया कि बूढ़े महतो के मरने के बाद से लोग अपने को अनाथ अनुभव करने लगे हैं। उनकी हालत बिना सिर वाले शरीर की-सी है। इस बात को सुन कर मैं भी सुबह के विषय में बिना कुछ जाने ही सो गया।

पौ फटने पर मैं सुबह जब नदी तट से, जंगल पानी से निबट कर, आ रहा था, तब मैंने देखा कि कुछ घर गिराये जा रहे थे। लगता है एक-दो बड़े मुखियाओं ने आगे बढ़ने का निश्चय कर लिया था। बाकी सबने भी उनकी ही नकली करनी शुरू कर दी। अब जल्दी-जल्दी सब तम्बू गिराये जाने लगे

और कुछ ही देर में घरों की जगह केवल आदमी और घोड़े ही इकठ्ठे दिखाई देने लगे। मकानों का ढाँचा पतीलों, पत्थर के हथियारों, सींग की बनी कड़छियों, खालों और सूखे मांस के थैलों समेत जमीन पर बिखरा पड़ा था। औरतें बहुत जल्दी मचा रही थीं। बूढ़ी औरतें भी पूरे ज़ोर से चीखती फिर रही थीं। घोड़े धैर्य के साथ खड़े रहे। उन पर मकानों का सामान और बल्लियाँ आदि लादा जाता रहा। कुत्ते सुस्ती से लेटे हुए चलने के समय की इन्तज़ार कर रहे थे। हर एक योद्धा जमीन पर बैठा हुआ था। बुझती हुई आग के पास बैठा हुआ प्रत्येक योद्धा निश्चिन्त-सा लग रहा था। उसने अपने हाथ में घोड़े की खोजी रस्सी पकड़ी हुई थी।

तैयारियाँ पूरी होते ही हर परिवार ने चलना शुरू कर दिया। भीड़ जल्दी ही खिसकने लगी। मैंने उन्हें नदी पार करके दूसरी ओर के पहाड़ों की ओर बढ़ते देखा। जब सब चले गये, तब मैं भी रेमंड के साथ-साथ उनके पीछे-पीछे चला। ज्यों ही हम पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, हमें अपने सामने मील भर दूर तक आदिवासियों का फैलाव दिखाई दिया। सभी जगह उनके भालों की नोकें, धूप में, चमक रही थीं। जैसे धूप इससे अधिक अच्छी किसी चीज़ पर कभी चमकी ही न थी। इनके साथ भारी बोझ से लदे हुए लादू घोड़े थे। उन्हें कुछ समझाते हुए बूढ़ी औरतें चल रही थीं। उनकी पीठ पर कुछ बच्चे भी बैठे हुए थे। इस समूह में कुछ खच्चर और टट्टू भी थे, जिन पर कुछ हँसती हुई जवान स्त्रियाँ चढ़ी हुई थीं। हम जब भी देखते, वे प्रसन्न होतीं। छोटे बच्चे अपने हाथों में छोटे-छोटे तीर-कमान लिये हुए साथ-साथ भाग रहे थे। अनेकों कुत्ते घोड़ों की टाँगों में होते हुए दौड़ रहे थे। जवान वीर खूब सज-धज कर इस भीड़ में टुकड़ियाँ बना कर चल रहे थे। कभी-कभी वे दो या तीन सवारों की कतार बना कर तेजी से दौड़ने लगते। इस प्रकार वे अपने घोड़ों की चाल का पूरा अनुमान करना चाहते थे। बीच-बीच में सफ़ेद लबादे पहने कुछ बूढ़े लोग पैदल चलते हुए दिखाई दे जाते थे। ये लोग गाँव के बड़े और बुजुर्ग लोग थे। इन लोगों की आयु और अनुभव का सब जगह सम्मान होता था। ऊबड़-खाबड़ मैदान और खड्डों वाली पहाड़ियों पर दिखाई देने वाले ये दृश्य बहुत ही विचित्र लग रहे थे। बहुत दिन साथ रहने से मैं इन दृश्यों से बहुत अधिक परिचित हो गया था। लेकिन इसका जादू का-सा असर कभी कम

न पड़ा।

हम ज्यों-ज्यों आगे बढ़े, यह दल और भी बिखरता गया। तब हम पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे। यहाँ आकर बूढ़े लोग एक घेरे में बैठ गये। उन्होंने एक चिलम सुलगाई और सब आपस में हँसी-मजाक करने लगे। बाकी लोग भी आकर धीमे-धीमे उनके पीछे जमा होने लगे। तब वे बूढ़े लोग उठ खड़े हुए और अपने कपड़ों को समेट कर फिर से आगे बढ़ने लगे। चोटी पर चढ़ कर हमने अपने सामने एक गहरी ढलान पाई। बिना एक मिनट भी रुके सब लोग जत्थे के रूप में नीचे उतरने लगे। चारों ओर धूल उड़ रही थी और गड़बड़-सी मची हुई थी। घोड़े कई बार पैरों के बल फिसल पड़ते। औरतें और बच्चे चीखने लगते। कुचले जाने पर कुत्ते भौंकने लगते और नीचे की ओर पत्थर और मिट्टी गिरने लगते। कुछ ही देर बाद चोटी पर से हमने देखा कि यह गाँव सामने के मैदान में फिर से फैल गया था।

उस दिन दोपहर को डेरे में आराम करते हुए, मुझे फिर से पुरानी बीमारी का दौरा उठा। कुछ ही मिनटों में मेरी वह सारी शक्ति समाप्त हो गई, जो मैं पिछले हफ्तों से बटोर रहा था। मैं बहुत कमजोर हो गया। शाम के समय ही मैं 'महान् काक' के घर में सो गया और सुबह होने तक बेहोश लेटा रहा। अपने सिर पर ही खड़े एक घोड़े के हिनहिनाने और खुली धूप के आ पड़ने से मैं जाग गया। सारा गाँव उठना शुरू हो गया था और औरतें घरों को समेट रही थीं। उठ कर मैंने अपना कम्बल उतारा और अपनी पुरानी सेहत फिर से लौटती अनुभव की। अभी मैं पाँवों के बल पूरा खड़ा भी न हुआ था कि फिर से मैं काँप गया और खड़ा न रह सका। रेमंड घोड़ी और खच्चर को ले आया। मैंने ज़मीन से ही घोड़ी पर काठी रखने की कोशिश की, पर सफल न हो सका। रेमंड से मैंने कहा, "तुम इस पर काठी चढ़ाओ।" तब तक मैं पास ही खालों के एक ढेर पर बैठ गया। उसके ऐसा करने पर मैं बहुत कठिनता से उस पर चढ़ पाया। हम एक बड़े मैदान से होकर गुज़रने लगे। इस समय आदिवासियों से आगे-आगे चलते हुए मैं समय और स्थान से दूर की बहुत-सी बातों को सोचने में खो गया। अचानक ही बादल घिर आये और गरजने लगे। बादल इतने काले थे कि उनसे आने वाली तबाही का अनुमान भली भाँति हो सकता था। थोड़ी ही देर में चारों तरफ़ अँधेरा छा गया।

मैंने पीछे मुड़ कर देखा, आदिवासी रुक कर आँधी के सामने की तैयारी कर रहे थे। वे सब तरफ़ फैल गये थे।

जब से मेरी बीमारी का पहला हमला मुझ पर हुआ था, तब से वर्षा का मेरी सेहत पर बहुत बुरा असर होता था। मैंने अपने को बहुत कठिनता से घोड़े की पीठ पर सँभाला हुआ था। मेरे अन्दर इससे अधिक ताकत न थी। इस दशा में बादलों को घिरता देखकर मुझे पहली बार यह लगा कि शायद इस रेगिस्तान से मैं कभी न लौट सकूँगा। मैं अपने मन में सोचने लगा, "यह मैदान बहुत जल्दी ही काम पूरा कर देते हैं। बहुत देर तक बीमार रह कर बुरी हालत में इधर-उधर पड़े रहने की बजाय, यह अच्छा ही होगा कि मैं यहाँ समाप्त हो जाऊँ।" इसलिए जिस खाल पर मैं बैठा था उसे ही मैंने ओढ़ लिया और आँधी के आने की प्रतीक्षा करने लगा। आखिर बहुत तेजी से बादल बरसा और जिस तेजी से यह आया था उसी तेजी से मिट भी गया। थोड़ी ही देर में आकाश फिर से साफ़ हो गया। इस बीच मेरे विचारों ने अपनी पिछली ज़िंदगी को दोहरा लिया। इस वर्षा ने मेरी सेहत पर कोई बुरा असर न किया था। घंटे भर में ही हम लोगों ने डेरा डाल लिया। दूसरे कपड़े पास न होने से, मैंने रेनल से नये तरीके के कपड़े उधार लिये। कपड़े बदल कर मैं 'महान् काक' के घर की ओर आ गया, ताकि और सब कुछ भी वहाँ बदल सकूँ। वहाँ कम से कम छः स्त्रियाँ बैठी थीं, जिनमें से एक ने उठ कर मेरी बाँह थाम ली। उस समय हम दोनों के रंग में फर्क देख कर बाकी लोगों ने हँसना शुरू कर दिया।

इस दिन का हमारा यह डेरा ब्लैक हिल्स से कुछ ही दूरी पर था। इन पहाड़ियों पर देवदार के पेड़ लगे हुए थे। आदिवासियों ने इन शिकारगाहों की ओर जल्दी यात्रा करने की दृष्टि से अपना सूखे मांस का बोझ वहीं छोड़ कर आगे बढ़ने का निश्चय किया। कुछ ने अपने मकान भी वैसे ही छोड़ दिये और केवल धूप और वर्षा से बचने के लिए कुछ खालें लेकर ही वे आगे बढ़ चले। आधे से ज्यादा लोग लादू घोड़ों को लिए हुए पर्वतों की ओर चल पड़े। उन्होंने सारा सूखा मांस पेड़ों पर लटका दिया, ताकि भेड़िये और भालू इसे न पा सकें। शाम के समय सभी फिर अपने डेरों पर लौट आये। कुछ लोगों ने बताया कि उन्होंने पहाड़ों में गोली चलने की आवाज सुनी है। इस पर लोग अनेक

प्रकार के अनुमान करने लगे। मेरे विचार में शायद शॉ और हेनरी मिलने आ रहे थे। मुझे रत्ती भर भी ख्याल न था कि मेरा मित्र इस समय लारामी किले में एक बिस्तर पर पड़ा हुआ, किसी पौधे के जहर से, बीमार होगा और अपना समय तम्बाकू पीकर या शेक्सपीयर को पढ़ कर बिता रहा होगा।

अगले दिन जब हम मैदानों में आगे बढ़े तो कुछ नौजवान, स्वयंसेवकों की भाँति, आगे-आगे चले गये। बहुत देर बाद हमने पहाड़ों की चोटियों पर उन्हें अपने कपड़े हिलाते हुए देखा, जो इस बात की निशानी थी कि उन्होंने भैंसों को खोज लिया है। इसके कुछ ही देर बाद कुछ भैंसे दिखाई दिये। घुड़सवार इनके पीछे-पीछे दौड़ गये। दूर से ही हमने देखा कि एक दो भैंसे मार दिए गए। रेमंड को भी तुरन्त जोश आ गया।

वह बोला, "यह देश मेरे लायक है। काश ! मैं यहां एक महीने में जितने भी भैंसे मारूँ, यदि उतने ही सेंटलुई भी ले जा सकूँ, तब एक ही सर्दियों में मैं मालामाल हो जाऊँगा। तब मैं भी पैंपिन या दूसरे व्यापारियों जैसा धनी बन जाऊँगा। मैं तो इस इलाके को ग़रीब लोगों का स्वर्ग कहता हूँ। मुझे यहाँ जब भी भूख लगती है, तो मैं बन्दूक उठा कर निकल जाता हूँ और रुपये से खरीदे जा सकने वाले मांस से अधिक अच्छा मांस ले आता हूँ। आप अगली सर्दियों में मुझे सेंटलुई में रहता हुआ नहीं देखोगे।"

रेनल ने कहा, "अरे यह बात तुम तब कहते तो और भी अच्छा होता, जब तुम और तुम्हारी स्पेनी पत्नी भूखों मर चुके होते। तुम भी कितने पागल हो कि अपनी पत्नी को लेकर वहाँ जा बसे हो !"

मैं बोला, "क्या तुम्हारी पत्नी स्पेनी है ? मैंने तो कभी उसके बारे में नहीं सुना ? क्या तुम ने उससे विवाह किया है ?"

रेमंड ने उत्तर दिया, "नहीं, जब पादरी लोग अपनी पत्नियों से विवाह नहीं करते, तो मैं ही क्यों करता ?"

मैक्सिकन पादरियों के इस प्रकरण ने धर्म का विषय ला दिया। मैंने देखा कि मेरे ये दोनों गोरे साथी, दूसरे गोरे लोगों के समान ही, अपने होन-हार के प्रति बिलकुल बेखबर हैं। रेमंड ने कभी पोप का नाम भी न सुना था। कोई भी पादरी उसके लिए सबसे बड़ा धर्मगुरु था; भले ही वह लाम्रोस या सान्ताफे में रहता हो। रेनल ने बताया कि आज से दो साल पहले लारामी

किले में एक पादरी आया था। वह किसी मिशन पर जा रहा था। उसने वहाँ बहुत सारे लोगों से अपने अपराध स्वीकार करवाये थे। इस प्रकार वह बहुतों को मुक्ति दे गया था। रेनल ने बताया, "मैंने भी उस समय अपने लिये मुक्ति माँग ली थी। मेरा विश्वास है कि बस्तियों की ओर जाने के समय तक के लिए यह काफ़ी रहेगी।"

इसी समय वह रुका और एक दम बोल पड़ा, "देखो! देखो! 'चीता' नाम का युवक हिरण का पीछा कर रहा है।"

इसी समय अपने सफ़ेद और काले घोड़े पर चढ़ा हुआ वह युवक हिरण का पीछा करता हुआ, सामने की चोटी पर से तेज़ी से गुज़रा। उसकी यह हिम्मत केवल शिकार और वीरता के कारण ही थी; नहीं तो हिरण का पीछा करने की ताकत इन छोटे जानवरों में नहीं होती। हिरण आदिवासियों के बड़े झुंड की ओर दौड़ा, जो नीचे से ऊपर की ओर चढ़ रहा था। कुछ आवाज़ें गूँज उठीं और घुड़सवारों ने उसका पीछा किया। इस पर वह एक दम बाईं ओर को मुड़ा और इस तेज़ी से भाग निकला, कि 'चीते' तक का घोड़ा उसका पीछा न कर सका। कुछ देर के बाद हमें एक और शिकार देखने को मिला। एक बूढ़ा-सा भैंसा पास के एक खड्ड से उछल कर सामने आया और उसके पीछे-पीछे एक आदिवासी युवक भी उसी खड्ड में से बाहर आया। वह घोड़े पर बिना काठी या ज़ीन के बैठा हुआ था और अपने छोटे से घोड़े को पूरी तेज़ी से दौड़ा रहा था। वह अपने बहुत बड़े शिकार के पास आता गया। भैंसे की छोटी-सी पूँछ तनी हुई थी और उसकी जीभ जबड़ों से बाहर लटक रही थी। वह पूरी तेज़ी से भाग रहा था। एक ही क्षण में वह युवक इसकी बगल में आ पहुँचा। यह हमारा मित्र 'तूफान' ही था। उसने लगाम घोड़े की गर्दन पर ही डाल दी और अपने कंधे पर लटकते तरकश में से उसने बाण खींचा।

रेनल बोला, 'मैं सच कहता हूँ कि एक ही साल में यह लड़का इस गाँव के सबसे अच्छे शिकारियों में से एक होगा। यह लो! इसने उसे तीर मार दिया। यह दूसरा भी मारा। बूढ़े उस्ताद, तुम्हें अब पता चलेगा। तुम्हारी बगल में दो बाण धँस चुके हैं। यह लो; उसने फिर बाण मारा। यह 'तूफ़ान' अब भी हमला करता है, इसी तरह से चीखता है। हाँ बूढ़े भैंसे! एक बार

फिर कूदो। याद रखो, तुम सारे दिन भी कूदते रहो, तब भी बच न सकोगे।"

वह भैंसा बार-बार अपने हमलावर पर उछलता रहा, परन्तु घोड़ा भी बहुत चतुरता से उसके हमलों को बचाता रहा। बहुत देर बाद भैंसे में और अधिक गुस्सा बढ़ गया और उसने तूफ़ान को भागने पर मजबूर कर दिया। यह युवक घोड़े की पीठ पर एक छिपकली के समान चिपक गया और अपने घोड़े पर पूरी तेज़ी के साथ दौड़ता हुआ हमारी ओर देखता और हँसता गया। कुछ ही देर में वह फिर से भैंसे की बग़ल में आ गया। भैंसा अब तक निराश हो चुका था। उसकी आँखें उसकी सटों के बालों से उलझ गई थीं। उसके मुख और नाक से खून बह रहा था। इस प्रकार एक-दूसरे मे उलझते हुए वे दोनों पहाड़ी के दूसरी ओर ग़ायब हो गये।

कुछ और आदिवासी भी पूरी तेज़ी के साथ उसी ओर निकल गये। हम बहुत धीमे-धीमे बढ़े। बहुत जल्दी ही हमने देखा कि भैंसा दूसरी ओर मरा पड़ा था। आदिवासी उसके चारों ओर जमा होकर उसकी खाल और मांस उतार रहे थे। ये लोग अपने छोटे-छोटे औज़ारों से इस जादू के साथ काम कर रहे थे कि एक मिनट में ही वह बड़ा भारी शव कुछ छोटी-सी हड्डियों और मांस के ढेर के रूप में रह गया। आस-पास के असभ्य लोगों को देखना बहुत अच्छा नहीं लग रहा था। उनमें से कुछ लोग जांघ की बड़ी-बड़ी हड्डियों को लेकर उनके अन्दर की लाली को खा रहे थे। कुछ दूसरे लोग जिगर और दूसरे कुछ अंगों के टुकड़े खा रहे थे। लगता था कि वे भेड़ियों से भी अधिक भूखे थे। उनमें से कुछ के चेहरे खून से पुते हुए और बहुत ही डरावने लग रहे थे। मेरे मित्र 'सफेद डाल' ने मुझे भी एक लाली वाली एक हड्डी दी। उसने इसे इस तरह सफ़ाई से चीरा था कि इसका लाल हिस्सा एकदम ही बाहर आ गया था। एक दूसरे आदिवासी ने मुझे मांस का एक और टुकड़ा दिया। यह पेट के मांस में से था। मैंने इन भेंटों को नम्रता के साथ लौटा दिया। मैंने एक छोटे लड़के को देखा, जो अपने चाकू के साथ जबड़ों और गालों के पास जुटा हुआ था। उसमें से उसने कुछ खास टुकड़े निकाले, जो बहुत ही मुलायम थे। यह कहना अधिक ठीक होगा कि ऐसे समय, तुरन्त खा जाने के लिये, कुछ थोड़े से हिस्से ही प्रयोग किये जाते हैं।

उस रात वहीं डेरा डाल कर अगले दिन काफ़ी देर तक हम पश्चिम की

ओर बढ़ते रहे। उससे अगली सुबह हमें फिर से सफ़र शुरू करना पड़ा। सात जुलाई के रोज़, दोपहर के लगभग, हम वर्षा के पानी से बने कुछ जोहड़ों के पास रुके और दोपहर बाद फिर आगे चल पड़े। यह दो समय की यात्रा आदिवासियों की आदत के विरुद्ध थी। पर सभी लोग शिकार की जगह पर जल्दी पहुँचना चाहते थे, ताकि जितनी जल्दी हो सके, अधिक से अधिक भैंसे मार कर लौट सकें; क्योंकि पड़ोस बहुत ही खतरनाक था। मैं यहाँ बहुत-सी ऐसी बातें और घटनाएँ छोड़ रहा हूँ, जो इस दौरान में घटीं थीं। साँझ होते समय, उसी दिन, हम एक छोटी-सी रेतीली धारा के किनारे पहुँचे। आदिवासियों में से कोई भी इस धारा का नाम नहीं बता सका, क्योंकि वे इस इलाके से बिलकुल भी परिचित नहीं थे। यहाँ की ज़मीन इतनी उजाड़ और उखड़ी हुई-सी थी कि उनके घोड़ों के लिए यहाँ घास नहीं मिल पाई। इसलिए वे आगे से आगे बढ़ते रहे, ताकि डेरा डालने लायक जगह पा सकें। अब यह इलाका और भी जंगली बन गया था। यहाँ मैदानों में जगह-जगह घाटियाँ, खड्ड और खाइयाँ मिल रहे थे। इसलिए आदिवासी धारा के किनारे-किनारे बढ़ते रहे। इसी समय मेनेसीला नाम के बुज़ुर्ग सरदार ने ध्यान लगा कर यह जानना चाहा कि शिकार किधर मिलेगा? इसके लिए सब सरदार लोग एक घेरा बना कर घास पर बैठ गए और तम्बाकू पीते हुए बातें करने लगे। एक बूढ़े आदमी ने एक हरी टिड्डी को उठाया और उसकी ओर कुछ देर ध्यानपूर्वक देख कर वह बोला, "हमारे पिता, हमें बताओ कि हमें भैंसे पाने के लिए कल किस ओर जाना चाहिये?"

टिड्डी ने बहुत तंगी में आकर अपनी मूँछों के बाल इधर-उधर घुमाये और पश्चिम की ओर उन्हें टिका दिया। मेनेसीला ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया और बहुत खुशी से हँसने लगा। वह बोला, कि अगर अगली सुबह सब उसी तरफ़ गये तो निश्चय ही बहुत अधिक शिकार मार पायेंगे। डाकोटा लोग इस टिड्डी को भैंसे की दिशा बताने वाला कीड़ा समझते हैं।

शाम के समय हम एक हरी और ताज़ी चरागाह में आये। इसके बीच से होकर धारा बह रही थी। इसके दोनों ओर ऊँची-ऊँची नंगी चोटियाँ खड़ी थीं। आदिवासी लोग इसकी ढलान पर उतर गये। मैं सबसे पीछे था। इस लिये मैं इस जगह पर सबसे अन्त में पहुँचा। नीचे पानी के पास भाले चमक रहे

थे, पंख फड़क रहे थे और आदमी तथा घोड़े आ-जा रहे थे। पार की चरागाह पर पहले से ही आदिवासियों की एक भीड़ जमा हो रही थी। अभी सूर्य अस्त हो ही रहा था और उसकी किरणें पहाड़ों की चोटियों से होती हुई फैल रही थीं।

मैंने रेनल से कहा, "आखिर हमने डेरे के लिए एक अच्छी जगह पा ही ली?" रेनल ने उत्तर दिया, "ओह? यह तो बहुत ही अच्छी जगह है। खास कर अगर कहीं नाग जाति की कोई लड़ाकू टुकड़ी आस-पास ही हो और उनके दिमाग़ में पास की पहाड़ी की चोटी से हम पर गोलियाँ बरसाने की बात भी बैठ जाए। मैं तो ऐसी जगह पर डेरा डालने के हक में बिलकुल नहीं हूँ।"

आदिवासी डेरा डालने के लिए उत्सुक थे। एक बहुत ऊँची चोटी पर एक सैनिक साँझ की चमकती धूप में बैठ कर चारों ओर आस-पास के इलाके में देखने लगा। रेनल ने मुझे बताया कि इस बात की खोज में इनके बहुत से युवक इधर-उधर के इलाके में चले गये हैं।

अब पहाड़ की चोटी पर भी छाया पड़ने लगी। इस समय तक डेरे खड़े किये जा चुके थे। गाँव में फिर से शान्ति छा गई थी। इसी समय एकदम एक चीख सुनाई दी। मर्द, औरतें और बच्चे बहुत उतावले हो बाहर निकल आये। वे सामने की पहाड़ियों की ओर देख रहे थे, जिधर से चीखने की यह आवाज आई थी। मुझे बहुत दूरी पर कुछ काली और भारी शक्लें एक छोटी-सी पहाड़ी पर से गुजरती हुई दिखाई दीं। उनके निगाह से हटते ही कुछ और वैसी ही शक्लें आईं। ये मादा भैंसों के जत्थे थे। आखिर हम शिकार की जगह पर पहुँच चुके थे और हर बात इसकी सूचना दे रही थी कि कल का शिकार काफ़ी अच्छा रहेगा। बहुत ज्यादा थकने और हार जाने के कारण मैं 'महान् काक' के घर में ही लेट गया। कुछ देर बाद रेमंड ने आकर मुझे कुछ तमाशा देखने के लिए बाहर बुलाया। वहाँ बहुत से आदिवासी जमा होकर गाँव के पश्चिमी हिस्सों के मकानों के पास खड़े हँस रहे थे। उनसे कुछ दूरी पर मैं देख रहा था कि दो काले राक्षसों जैसी शक्लें एक-दूसरे से टकराती हुई हमारी ओर ही आ रही थीं। ये दोनों नर भैंसे थे। हवा उनकी ओर से गाँव की ओर आ रही थी। वे इतने अंधे और मूर्ख थे कि अपने शत्रुओं की ओर, बिना सोचे, बढ़े चले आ रहे थे। रेमंड ने मुझे बताया कि दो नवयुवक किनारे की घाटियों में छिप कर, हम से बीस कदम आगे बन्दूकें लिए बैठे थे। वे दोनों भैंसे धीरे-धीरे

आगे बढ़ते आ रहे थे। वे बुरी तरह झूम रहे थे। वे आदिवासी युवकों के बिलकुल पास तक चले आये। यहाँ आकर वे कुछ चौकन्ने हुए। दोनों रुक कर खड़े हो गये। वे इधर-उधर भी नहीं देख रहे थे। हमें उनकी काली गर्दन ही दिखाई दे रही थी। सींग, आँखें और नाक उन्होंने बीच में झुका ली थीं। आखिर उन दोनों में से एक ने लौटने का निश्चय किया। बहुत ही धीरे-धीरे और मस्ती के ढंग से वह घूमने लगा। अब हमें उसकी बगलें भी साफ़ दिखाई देने लगीं। इसी समय गोली दाग़ने की आवाज़ और सफ़ेद धुआँ, सामने से उठता हुआ, दिखाई दिया। वह भैंसा बहुत बुरी तरह उछला और तेज़ी से भाग निकला। इस पर इसका दूसरा साथी भी बहुत तेज़ी के साथ घूमा। पर, दूसरे आदिवासी ने इस पर बहुत ज़ोर से गोली दाग दी। तब दोनों ही भैंसे पूरी तेज़ी से भागने लगे। आधे से ज़्यादा युवक आवाज़ें कसते हुए उनके पीछे भागने लगे। पहला भैंसा जल्दी ही रुक गया और लोगों के देखते ही देखते गिर पड़ा। दूसरा कुछ कम घायल हुआ था। वह पहाड़ियों में होता हुआ भाग गया।

आधे घण्टे में ही चारों ओर पूरी तरह अँधेरा छा गया। मैं फिर से सोने के लिए लौट गया। मैं बीमार था, इसलिए मुझे अगले दिन होने वाले बड़े भारी शिकार को देखने की इच्छा और अधिक उत्तेजित करने लगी।

—:o:—

प्रतीक्षा करने लगे। पर वह न आया। इसलिए हमें उसकी ओर खुद ही चलना पड़ा। हमने आशा की थी कि हम आठ सौ के लगभग आदिवासियों से राह में मिलेंगे, परन्तु हमने केवल एक आदिवासी को अपनी ओर आते देखा। उसने हमें बताया कि गाँव वालों का इरादा बदल गया है और वे अगले तीन दिन में भी यहाँ न पहुँच सकेंगे। इस दूत को अपने साथ लेकर हम फिर से डेरे पर लौट आए और आदिवासियों की इस अस्थिरता की हँसी उड़ाने लगे। जब हम अपने डेरे के पास पहुँचे तो हमने इसे अकेला न पाया। इसके पास ही आँधी और तूफान से कमजोर पड़ा हुआ एक बड़ा सा डेरा गड़ा हुआ था। यहाँ आदमियों और घोड़ों की बहुत-सी अस्पष्ट शक्लें दिखाई दे रही थीं। कुछ रंगीन हाथ भी आगे बढ़े हुए दिखाई दे रहे थे। इसकी छत से लम्बी-लम्बी बल्लियाँ बाहर झाँकती हुई दिखाई दे रही थीं और इसके दरवाजे पर एक जादूभरी चिलम टँगी हुई थी। इसी प्रकार के जादू के कुछ और साधन भी वहाँ पड़े थे। अभी हम कुछ दूर ही थे कि हमें बहुत से रंगों और आकारों के आदमी अपने डेरे के आसपास घूमते हुए दिखाई दिए। पशु-फँसाने वाला मोरें एक दो दिन बाहर रहने के बाद लौट आया था। लगता था कि वह अपने सारे परिवार को भी साथ ले आया था। वह अपने साथ पत्नी को भी लाया था, जिस के बदले में, मूल्य के रूप में, उसे एक घोड़ा देना पड़ा था। शुरू में तो यह बात किसी को भी बहुत सस्ती लगेगी। पर, वास्तव में ऐसा सौदा होता बहुत महँगा है और इसे बहुत सोच-समझ कर ही करना चाहिए। बात यह है कि आदिवासियों की लड़की लेने का मतलब केवल कीमत देना ही नहीं होता, बल्कि बहू के सम्बन्धियों का बड़ा भारी बोझ भी उसके पति को उठाना पड़ता है। वे लोग खासकर गोरे लोगों के सिर पर मौज उड़ाने में खूब आनन्द अनुभव करते हैं। वे जोंकों की तरह चिपट कर सब कुछ चूस जाना चाहते हैं।

मोरें ने बहुत बड़ी खानदानी लड़की नहीं ढूँढी थी। उसकी बहू के सम्बन्धी ओजिल्लाला समाज में बहुत नीची हैसियत के लोग थे। ये लोग यूँ तो प्रजातन्त्र के आदर्श को मानते हैं, पर तो भी इनमें ओहदे और स्थान के हिसाब से भेद होता है। मोरें की साथिन बहुत सुन्दर भी न थी। उसे भी अपनी पत्नी को सजाना न आता था। तभी उसने हरिण की सफेद बनाई हुई

खाल के कपड़े की जगह प्रवासियों से लिए एक पुराने सूती कपड़े की पोशाक उसे पहनाई। यह उस पर बिल्कुल नहीं सज रही थी। इस सारे खैमे में सबसे अधिक काम करने वाली अस्सी वर्ष की एक बुढ़िया थी। हमने कभी भी इससे अधिक बदसूरत और काम करने वाली औरत न देखी थी। उसकी तमाम पसलियाँ झुर्रीदार खाल के नीचे से गिनी जा सकती थीं। उसका झुर्रीदार चेहरा किसी जीवित आदमी का न लग कर किसी पुरानी खोपड़ी-सा लगता था। उसमें धँसी हुई उसकी काली आँखें चमक रही थीं। उसकी बाहें इतनी पतली पड़ चुकी थीं, जैसे चाबुक की छड़ी। उसके बाल आधे काले और और आधे सफेद हो चुके थे। उलझे हुए-से वे जमीन पर लटक रहे थे। उसकी पोशाक बहुत पुरानी और फटी हुई भैंसे की खाल से बनी हुई थी, जो उसकी कमर पर पेटी से बँधी हुई थी। इस हलके से शरीर में भी बहुत ही अधिक मजबूती थी। उसने डेरा गाड़ा, घोड़े बाँधे और सारा कठिन से कठिन काम खुद ही निपटाती रही। सुबह से लेकर शाम तक वह चीखने वाले उल्लू की भाँति इधर से उधर चिल्लाती फिरती। उसका भाई 'चिकित्सक' अथवा जादूगर था। वह भी उसी की तरह मजबूत था। उसका मुँह चौड़ा था। उसकी भूख के सम्बन्ध में हमें पता चला कि वह बहुत अधिक बढ़ी हुई थी। इनके अलावा इस डेरे में एक जवान पति-पत्नी भी थे। दूल्हा बहुत ही सुस्त और आलसी था। ऐसे लोग आदिवासियों और सभ्य कहलाने वाली जातियों में सभी जगह पाए जाते हैं। वह न तो शिकार खेलने के योग्य था और न ही युद्ध के लायक। उसके चेहरे से ही यह बात साफ़ हो जाती थी। ये लोग विवाह के बाद का आनन्द मनाने के लिए अभी कुछ दिन पहले ही मिले थे। ये लोग धूप में ही बाँसों के सहारे भैंसे की खाल टाँग कर छाया कर लेते और कुछ खालें नीचे बिछा कर उस पर दिन भर बैठे रहते। मैं न जान पाया कि कभी उनमें अधिक बातचीत हो पाती थी या नहीं? शायद उनके पास बात करने के लिए कुछ अधिक मसाला था भी नहीं। ये आदिवासी इधर-उधर की बात बनाने में चुस्त होते भी नहीं हैं। इस खैमे में आधा-दर्जन से अधिक बच्चे भी थे, जो इधर-उधर खेलते हुए या पक्षियों का शिकार करते हुए अथवा रेत के छोटे-मोटे घरों को बनाते हुए खेल कूद रहे थे। कुछ दूसरे बच्चे पत्थरों से मकान बना रहे थे।

यह दिन गुज़रते ही आदिवसी आने शुरू हो गए। दो-तीन या अधिक संख्या के दल आने लगे और वहीं घास पर बैठने लगे। चौथे रोज़ लगभग दोपहर को सामने की पहाड़ी पर कुछ घुड़सवार दिखाए दिए। उनके पीछे एक बहुत बड़ा जुलूस पहाड़ी से मैदान की ओर बेतरतीबे ढंग से उतर रहा था। घोड़े, टट्टू, कुत्ते, लदी हुई गाड़ियाँ, घुड़सवार योद्धा, पैदल चलती औरतें, और बहुत से बच्चे इस समूह में शामिल थे। यह एकान्त भरा मैदान कुछ ही देर में एक चहकते डेरे के रूप में बदल गया। अनेकों घोड़े चारों ओर की चरागाहों में चरने लगे। सारा मैदान ही घुड़सवारों या घूमते हुए लोगों की हलचल से भर गया। सब से अन्त में 'बवंडर' भी आया। हम तब तक भी एक सवाल का उत्तर हम न जान पाए थे : "क्या वह युद्ध की ओर अब भी बढ़ेगा। और क्या सुरक्षापूर्वक लाबोंते कैम्प के खतरनाक मिलन-स्थल पर पहुँच सकेंगे ?"

हमें यह संदेह बना ही रहा। वे लोग मिलते थे, पर कभी कोई निश्चय न कर पाते थे। समूह के रूप में उनका काम करने का स्वभाव ही नहीं था। उनका उद्देश्य कितना ही महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, वे लोग मिल-जुल कर उसे पाने का प्रयत्न नहीं कर सकते। यह बात राजा फ़िलिप, पौंटिपक और तेकुमसे आदि सभी ने अनुभव की और इसी कारण नुकसान उठाया। कभी इन लोगों का एक नेता हुआ था, जिसने इन पर नियंत्रण किया था। पर, अब वह मर चुका था और ये लोग अपनी-अपनी मर्ज़ी के मुताबिक चलने लगे थे।

यहाँ से आगे इन आदिवासियों का यह गाँव इस सारी कहानी का खास केन्द्र रहेगा। इसलिए इन लोगों के विषय में कुछ जान लेना अधिक अच्छा रहेगा। यह जाति सेन्ट पीटर नदी से राकी पर्वतमाला तक एक विस्तृत इलाके में फैली हुई है। इस के कई स्वतन्त्र भाग हैं। उन्हें मिलाने वाली कोई भी केन्द्रीय सरकार या एक नेता नहीं है। उनकी भाषा, रीति-रिवाज और धार्मिक विश्वास ही उनके बीच एकता की कड़ी बनाते हैं। युद्ध के मौकों पर भी वे इकट्ठे नहीं होते। बहुत बार वे आपस में भी लड़ते रहते हैं। पूर्व के लोग उत्तरी झीलों के कबीलों से और पश्चिम के लोग राकी पर्वतमाला के नाग आदिवासियों से लगभग हमेशा ही लड़ते रहते हैं। जिस तरह ये लोग अलग-अलग समाजों में बँटे हुए हैं, उसी प्रकार प्रत्येक समाज कई गाँवों में बँटा हुआ

होता है। हर गाँव का एक मुखिया होता है, जो कि अपने गुणों के कारण ही आदर पाता है। कई बार यह मुखिया केवल नाममात्र का होता है और कई बार इसका अधिकार बहुत व्यापक होता है। कभी-कभी उसका यश और प्रभाव आसपास के गाँवों में फैलकर सारे समाज में छा जाता है और वह अपने सारे समाज का मुखिया बन जाता है। कुछ वर्ष हुए यह बात ओजिल्लाला जाति के साथ भी थी। कोई भी योद्धा अपने उत्साह, साहस और कारनामों के कारण सबसे ऊँचे ओहदे पर पहुँच सकता है। अगर वह किसी मुखिया का बेटा हो या उसका परिवार बहुत बड़ा और उसकी लड़ाइयों में साथ देने वाला हो, तब भी वह यह ऊँचा पद पा सकता है। पर यह बात साफ़ है, कि मुखिया के रूप में बड़े-बूढ़ों द्वारा स्वीकार कर लिए जाने पर भी, वह कभी भी अपने ओहदे या आदर के बाहरी दिखावे को प्रकट नहीं कर सकता। वह जानता है कि उसका यह ओहदा कितना अस्थिर है। उसे अपने अनिश्चित लोगों में समझौता कराना होता है। कई लोग उससे ज्यादा अच्छी तरह, अधिक औरतों और घोड़ों के साथ और अधिक सज-धज कर रहते हैं। पुराने जर्मन राजाओं की तरह वह भी अपने लोगों और सरदारों को खुश रखने के लिए अपनी ओर से कुछ न-कुछ भेंट आदि देता रहता है। इस प्रकार वह स्वयं को निर्धन बना लेता है। अगर वह उन लोगों की कृपा न पाए, तो वे लोग उसका अधिकार छीन लेते हैं और उसे कभी भी पद से हटा देते हैं। रीति-रिवाजों के अनुसार वह अपने अधिकार को प्रजा पर जमाने के लिए किसी फौज या पुलिस का सहारा नहीं ले सकता। बहुत कम बार यह हो पाता है कि बहुत छोटे परिवार का कोई व्यक्ति बड़ी ताकत पा सके। प्रायः सारा गाँव ही उसके खानदान और सम्बन्धियों से भरा होता है और यह सारा घूमने वाला समुदाय एक परिवार के रूप में ही आगे बढ़ता है।

पश्चिम के डाकोटा लोगों के कोई स्थिर गाँव नहीं हैं। शिकार और युद्ध में लगे हुए वे निरन्तर घूमते रहते हैं। उनमें से कुछ उजाड़ मैदानों पर भैंसों के शिकार को निकल जाते हैं और कुछ घोड़ों पर या पैदल ही ब्लैक हिल्स की ओर निकल कर 'पार्क्स' की ओर निकल जाते हैं। यह स्थान सुन्दर होकर भी भयानक है। भैंसों के शिकार से ही उनके जीवन की—निवास, भोजन, वस्त्र, बिस्तर और ईंधन आदि सभी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं। अपने

धनुष के लिए तांत, गोंद, धागा, रस्सी, खोजी रस्सियाँ, काठियों को ढकने के आवरण, पानी की मश्कें, नदी पार करने के लिए मश्कों की नाव और व्यापारियों से जीवन का आवश्यक सामान खरीदने के लिए कमाई का साधन आदि सब कुछ उन्हें भैंसे से ही मिल जाता है। अगर भैंसा न हो, या कम पड़ जाए, तो उनके जीवन की भी बुरी दशा हो जायगी।

युद्ध उनकी साँसों में बसता है। अपने अधिकांश पड़ौसी कबीलों के प्रति उनके दिल में घृणा भरी हुई होती है। यह घृणा खानदानी बन चुकी होती है और लगातार हमलों और बदले की भावना से भड़कती रहती है। हर गाँव में साल में कई बार 'महान् आत्मा' को प्रसन्न किया जाता है। उसके लिए उपवास किए जाते हैं, सैनिक तैयारियाँ होती हैं और तब शत्रु के विरुद्ध योद्धाओं के जत्थे निकलने शुरू होते हैं। उन की यह भयंकर उत्तेजना उनके हृदय में बहुत-सी महत्त्वाकांक्षाओं को जन्म देती है और उनकी सारी ताकत को खपा लेती है। इसके कारण ही वे लोग सुस्त बनकर एक जगह नहीं बस जाते। अगर यह उत्तेजना न हो तो वे भी पहाड़ों के शान्तिप्रिय कबीलों की भाँति गुफ़ाओं और चट्टानों में बिखरकर, जंगल के फल-फूल और पौधे खाकर, रहने लग जाएँ। पहाड़ों के पार के आदिवासी केवल आकार से ही आदमी दिखाई देते हैं। पर हर महत्त्वाकांक्षा और अभिमान से भरा हुआ डाकोटा योद्धा वीरता के अनेक गुणों से युक्त होता है। इन लोगों में अपना प्रभाव और विशेषता पाने का एकमात्र तरीका वीरता का प्रदर्शन करना ही है। अपने भ्रमों और अन्धविश्वासों के कारण वे कभी-कभी उन लोगों को अपने बीच महत्त्व दे बैठते हैं, जो या तो जादूगर के रूप में होते हैं या फिर ज्योतिषी या सिद्धपुरुष के तौर पर भविष्य की बातें करते हैं।

आइए! हमारे डेरे में भी घुसकर देखिए, अगर आप तम्बाकू के धुएँ और घुटन को सह सकते हैं। यहाँ लोग एक दूसरे से बिल्कुल सटकर एक घेरा बनाए बैठे हैं, और एक दूसरे के हाथ में चिलम बढ़ाते हुए मज़ाक कर रहे हैं। वे लोग कहानियाँ कहकर और दूसरे ढंग से खूब खुश हो रहे हैं। इनके छोट-छोटे, ताम्बे के-से रंग वाले, नंगे लड़कों और साँप-की-सी आँख-वाली लड़कियों की खुशी से हम भी भर उठते हैं। वे कुछ शब्द कहते हुए हम तक आए, जिनका अर्थ हमें बाद में पता चला कि वे हमें आकर खाने का

निमंत्रण दे रहे थे। इस पर हम उठे और डाकोटा लोगों के उस भारी-भरकम आतिथ्य को कोसते हुए चले। इन लोगों के इस सत्कार में दिन-भर में कोई भी समय खाली नहीं रहता। हमें इनकी प्रथा को मानना ही पड़ता था, क्योंकि अगर हम न मानते तो ये लोग बुरा मान सकते थे। यह बन्धन मुझे बहुत भारी लगने लगा। मैं अभी बीमारी के प्रभाव से भी छूटा न था और घूमने-फिरने लायक भी न हुआ था। मेरे लिए दिन में बीस-बीस बार भोजन करना बहुत कठिन था। इतना ज़बरदस्त स्वागत सचमुच ऐसा लगता है, जैसे कि किसी की शुभ-भावना एक साथ ही उमड़ पड़ी हो। परन्तु, अगर ऐसे लोग—इन्हीं में से कम-से-कम आधे लोग—कहीं हमें अकेले में मैदानों में, निहत्थी हालत में पा लें तो हमारे हर सामान को हम से छीन लें और हमें बाणों से घायल करके मार दें।

एक सुबह हमें एक बूढ़े आदमी के डेरे पर बुलाया गया। यह अपने गाँव का भविष्यवक्ता था। हमने उसे आधा बैठे और आधा झुके हुए पाया। वह अस्सी बरस से ऊपर का था, पर तब भी उसके बाल एकदम काले थे और उसके कन्धों पर दोनों ओर लटक रहे थे। उसका शरीर अब भी बहुत ही गठीले ढंग से बना हुआ था, जिससे उसकी पुरानी ताकत का पता चलता था। उसके चेहरे को देखकर उसकी ज़बरदस्त दिमागी ताकत का अन्दाज़ा भी होता था, जो अब भी मानी और सुनी जाती थी। इस बुज़ुर्ग के सामने ही उसका महत्त्वाकांक्षी युवक भतीजा 'महतो तातोंका' बैठा था। इनके अलावा एक-दो स्त्रियाँ भी डेरे में थीं।

इस बूढ़े मनुष्य की कहानी भी कुछ विचित्र है। उससे आदिवासियों में फैले बहुत-से अंधविश्वासों का पूरा अनुमान हो जाता है। वह भी वीरता में मशहूर खानदान का ही आदमी था। पर जब वह अभी युवक ही था, तभी अपने जीवन का अगला लक्ष्य निश्चित करने से पहले उसने भी, और लोगों की तरह एक संस्कार पूरा किया। उसने अपना चेहरा काले रंग से पोत लिया और तब ब्लैक हिल्स के सबसे भयंकर हिस्से में, एक छोटी-सी घाटी में, कुछ दिन के लिए उपवास और प्रार्थना करता हुआ लेट गया। अपनी कमजोरी की दशा में उत्तेजना के कारण, अन्य आदिवासियों की भाँति, उसने भी दिखाई देने वाले सपनों को अलौकिक वरदान समझा। उसके सामने

बार-बार हिरण की आकृति आने लगी। ओजिल्लाला लोग हिरण को बहुत ही सुन्दर और शान्तिवाली आत्मा मानते हैं। परन्तु युवा आदमियों को इस प्रकार के उपवासों में इसके दर्शन कभी-कभी ही हो पाते हैं। प्रायः लोगों को भयंकर काले भालू के ही दर्शन होते हैं, जिसे युद्ध का देवता माना गया है। वे उसे देखकर वीरता और यश की कामना से भर उठते हैं। बहुत देर बाद यह हिरण बोला। उसने इस युवक को बताया कि उसे, युद्ध के रास्ते पर न चलकर, शान्ति और चैन के रास्ते पर चलना है। आगे से उसे अपनी सलाहें देकर लोगों को दुःखों से बचाते हुए सही रास्ते पर ले चलना है। दूसरे लोग युद्धों के द्वारा यश पाएँगे, पर इसे युद्धों में यश नहीं मिलेगा। उसका यश किसी और ही बात में है।

उपवास के इन दिनों में देखा गया, यह दृश्य ही स्वप्न-द्रष्टा के जीवन के सारे मार्ग को निश्चित कर देता है। उस समय से ही इस वृद्ध ने युद्ध के इरादे को छोड़कर शान्ति की ओर अपने तमाम प्रयत्न आरम्भ कर दिए। उसने लोगों को अपने स्वप्न की बात बताई। उन लोगों ने भी उसकी बातों को सही माना और उसके जीवन के इस नए रूप को स्वीकार किया। इस बूढ़े का नाम हमें केवल फ्रेंच में ही पता चला। यह था—'लोबोन्ये'।

उसके भाई का नाम 'महतो तातोंका' था। वह उससे एकदम भिन्न था। उसका नाम, शक्ल और गुण—सभी कुछ—उसके बेटे को उत्तराधिकार में मिले थे। वह हेनरी की पत्नी का पिता भी था। यह बात हमारे लिए अच्छी सिद्ध हुई। क्योंकि इस बहाने हमारा सम्बन्ध एक बहुत वीर परिवार से हुआ, जो कि इस यात्रा के लिए बहुत ही आवश्यक बात थी। इस महतो को नायक माना जाता था। कोई भी बड़ा सरदार वीरता के विषय में उससे अधिक प्रसिद्ध न था और न ही अपने लोगों पर किसी का इतना अधिकार चलता था। उसकी आत्मा बिल्कुल निडर थी और उसका निश्चय बिल्कुल अडिग। वह जो कुछ चाहता था वही कानून के रूप में माना जाता था। वह बड़ा नम्र और सभ्य था। आदिवासियों की अपनी सभ्यता के कारण वह यह जानकर कि गोरों से मिलकर अपने लिए और अपने साथियों के लिए बहुत लाभ उठाये जा सकते हैं, वह सदा ही उनका मित्र बन जाता था। जब वह कोई भी काम करना निश्चित कर लेता था, तब वह सब योद्धाओं

को बुलाकर उस पर विचार करने का मौका देता, और जब उनकी बहस खतम हो जाती तब उन्हें अपना इरादा बता देता। सब लोग चुपचाप उसकी बात को मान लेते, क्योंकि उसकी बात को न मानने का अर्थ दुर्भाग्य का सामना करना होता। वह उन पर उसी समय हमला कर देता या उन्हें मार डालता। अगर कोई और सरदार ऐसा करता तो शायद उसे अपनी जान से ही हाथ धोना पड़ता। परन्तु, महतो इस काम को बार-बार दोहराता और किसी की हिम्मत उसके विरुद्ध कुछ करने की न पड़ती। महतो ने एक ऐसी जाति में अपने को एकच्छत्र नेता के रूप में बना लिया, जिस में सदा से ही कभी भी किसी आदमी ने अपनी इच्छा के अलावा किसी कानून को नहीं माना था। अन्त में उसका जीवन भी समाप्त हुआ। उसके बहुत से शत्रु थे, जो धैर्यपूर्वक अवसर की प्रतीक्षा करते रहे। इनमें से, अपने सम्बन्धियों के साथ, हमारा परिचित मित्र –'स्मोक' भी एक था, जो उससे हृदय से घृणा करता था। वह एक दिन अपने गाँव में, अपने घर में, बैठा हुआ था। तभी महतो उसके गाँव में अकेला ही घुसा। उसने अपने शत्रु के घर के सामने जाकर, बहुत ऊँची आवाज़ में उसे बाहर आकर लड़ने के लिए ललकारा। पर स्मोक न हिला। इस पर महतो ने उसे कायर और बूढ़ी औरत कहकर गालियाँ दीं और घर के दरवाज़े पर आकर उसके सबसे अच्छे घोड़े को मार आया। यह अपमान भी स्मोक को हिला न सका। महतो तातोंका गर्व में डूबकर चला गया। सबने उसके लिये रास्ता छोड़ दिया। पर उसके दिन नज़दीक आ चुके थे।

आज से पाँच-छः साल पहले एक दिन बहुत गर्मी पड़ रही थी। स्मोक के सम्बन्धियों के बहुत-से घर फिर कम्पनी के लोगों के चारों ओर जमा थे। कम्पनी के लोग वहाँ शराब और बहुत-सी दूसरी चीज़ों का व्यापार करने आए थे। महतो भी अपने कुछ साथियों के साथ वहीं पर आया हुआ था। अभी वह अपने डेरे में लेटा ही हुआ था कि उसके अपने साथियों और शत्रु के आदमियों के बीच एक झगड़ा उठ खड़ा हुआ। उसी समय युद्ध का बिगुल बज गया और गोलियों और बाणों की बौछार होने लगी। सारे डेरे में गड़बड़ मच गई। सरदार उठा और दोनों दलों के बीच जाकर लड़ाई रोकने के लिए कहने लगा। पर यह हमला पहले ही तैयारी के साथ किया गया था।

उसी समय दो तीन बन्दूकों की आवाज़ आई और दर्जनों धनुष एक साथ गूँज उठे। यह वीर योद्धा उसी समय घायल होकर धरती पर गिर पड़ा। रूलो उस मौके पर मौजूद था और उसने ही मुझे ये बातें बताईं। यह झगड़ा बढ़ता ही गया, जब तक कि दोनों ओर से कुछ आदमी मर न गए। जब हम इस इलाके में थे, तब भी यह झगड़ा शान्त न हुआ था।

इस प्रकार बूढ़ा महतो मर गया, किन्तु अपने पीछे वह ऐसे खानदानी योद्धाओं की एक बड़ी और अच्छी सेना छोड़ गया, जो कि उसके यश को कायम रख सकती थी और उसकी मौत का बदला ले सकती थी। लड़कियों के अलावा उसके तीस बेटे थे। जो लोग आदिवासियों की रीति और व्यवहार को जानते हैं, उनके लिए यह संख्या आश्चर्य पैदा नहीं करेगी। उनमें से हमने बहुत से देखे, जिनका रंग गहरा था और जिनके चेहरे एक खास ढाँचे में ढले हुए दीखते थे। इन्हीं में से था हमारा युवक अतिथि महतो! वह उनमें सबसे बड़ा था और कुछ के विचार में वह अपने पिता के यश को पाने का पूरा अधिकारी था। वह अभी इक्कीस वर्ष का भी नहीं दिखाई देता था। परन्तु, उसने शत्रुओं पर हमले किए थे और उनके अधिक से अधिक घोड़े और औरतें चुराई थीं। उसके मुकाबले में कोई भी युवक इतना न बढ़ सका। घोड़ों की यह चोरी इन मैदानों में किसी व्यक्ति की विशेषता मानी जाती है। औरतों की चोरी भी इसी प्रकार की महत्त्वपूर्ण बात समझी जाती है। यह कार्य अपने आप में बहुत अच्छा नहीं है। कोई भी आदमी किसी की भी औरत चुरा लेता है। अगर वह बाद में कोई उचित भेंट उसके पहले स्वामी को दे देता है तो उनके बीच की शत्रुता मिट जाती है और एक खतरा टल जाता है। परन्तु, अदला-बदली का यह सौदा सबसे हीन दर्जे का माना जाता है। केवल खतरा ही नहीं टलता, बल्कि आदमी का अपना यश भी इसमें गायब हो जाता है। महतो औरों से काफ़ी भिन्न था। उसने दर्जनों स्त्रियों को चुराकर भी उनके बदले में एक भी भेंट न दी थी। इतना ही नहीं, उसने तो अपने शत्रुओं के मुख पर, अपमान के रूप में, चाँटा तक मारा था। इस पर भी उसके मुकाबले की हिम्मत किसी में न जगी। वह अपने पिता के पद-चिह्नों पर पूरी तरह चल रहा था। हर जवान मर्द और औरत अपने-अपने तरीके से उसकी प्रशंसा करते थे। जवान मर्द युद्ध में उसका साथ देते

और औरतें उसे सबसे अधिक आकर्षक मानतीं। शायद उसकी यह निर्भीकता बहुत-से आश्चर्यों को जन्म दे सकती थी। घाटी से आने वाला कोई बाण या अँधेरे से किया गया कोई हमला किसी वीरता की निशानी नहीं होता। आदिवासियों में ऐसी बात चलती ही रहती है। पर महतो की रक्षा एक और बात भी करती थी। उसका साहस और मज़बूत इरादा ही अपने साथियों में उसे सबसे बड़ा नहीं बना रहे थे, बल्कि उसके शत्रु तक इस बात को जानते थे कि वह अकेला नहीं है। उसके तीस भाई भी हैं, जो योद्धा हैं और जवान हैं। अगर कहीं उन्होंने उस पर कोई हमला कर ही दिया, तो कई सारे दिल उनके खून के प्यासे हो उठेंगे। बदला लेने वाला उनके हर कदम पर उनका पीछा करेगा। इसलिए महतो को मारने का अर्थ होता, खुद अपने मरने की तैयारी करना।

हालांकि औरतों में वह बहुत प्रिय था, पर तो भी वह सुन्दर जवान न था। वह अपने साथियों की भाँति अच्छे कपड़े और ज़ेवर नहीं पहनता था। बल्कि, वह तो केवल लड़ाई के कारनामों के बल पर ही अपनी सफ़लता मानता था। न तो कभी, उसने चमकीले कम्बल ओढ़े और न ही चमकते हार पहने। बल्कि, वह अपने ताम्बे से नंगे बदन में ही, यश पाने के लिए, सब जगह निकल जाता था। उसकी आवाज़ बड़ी गहरी और भारी थी। छाती से निकलती हुई वह ऐसे लगती थी, जैसे कोई बाजा बज रहा हो। इस सब पर भी वह आदिवासी ही था। धूप में लेटे हुए उसे देखने पर वह अपनी एड़ियाँ हवा में उठाता हुआ और अपने भाइयों से मज़ाक करता हुआ मिलेगा। क्या ऐसे समय में वह कोई वीर नायक लग सकता है? और अब वीरता के मौके पर उसे देखो! साँझ के समय सारा गाँव उसे देखने उमड़ पड़ता है; क्योंकि कल वह दुश्मन के विरुद्ध लड़ाई पर जाने वाला है! उसके सिर के मुकुट में चील के पंख लगे हुए हैं और उनकी कतार की कतार हवा में लहरा रही है। उसकी छाती पर उसकी गोल ढाल लटक रही है, जिसपर बीच में से चारों ओर पंख ऐसे फैले हुए हैं, जैसे कोई तारा हो। उसकी पीठ पर तरकश कसा हुआ है। उसके हाथ में उसका लम्बा भाला है, जिसका लोहे का नुकीला हिस्सा डूबते सूरज की चमक से चमक रहा है। इस प्रकार, एक वीर की भाँति, चमकता हुआ वह सारे घरों के चारों ओर

घूमता है, और अपने घोड़े की चाल को खुला छोड़ता हुआ वह 'महान् आत्मा' की स्तुति के गीत गाता चलता है। उसके मुकाबले के दूसरे जवान योद्धा उसकी ओर अचरज से देखते हैं। गालों पर पराग मले सुन्दर लड़कियाँ उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखती हैं, छोटे बच्चे आनन्द के जोश में हँसने और चिल्लाने लगते हैं और बूढ़ी औरतें घर-घर में उसकी प्रशंसा गाती फिरती हैं।

हमारे आदिवासी मित्रों में महतो सबसे अच्छा था। हर घंटे और हर दिन असभ्य आदिवासियों के हर उमर और दर्जे के लोग हमारे डेरे पर आते और उसे घेर लेते। परन्तु, वह हमारे तम्बू में लेटा रहता और अपनी आँखें, हमारी सम्पत्ति को लूटे जाने से बचाने के लिए, खुली रखता।

'बवंडर' ने एक दिन हमें अपने घर पर निमंत्रित किया। दावत समाप्त हुई और हुक्का घुमाया गया। यह काफ़ी बड़ा और अच्छा था। मैंने इसकी प्रशंसा की।

बवंडर ने पूछा, "यदि तुम विदेशियों को भी यह पसन्द है तो तुम इसे रखते क्यों नहीं?"

ओजिल्लाला लोगों में इस प्रकार का हुक्का एक घोड़े की कीमत के बराबर का समझा जाता है। यह भेंट किसी सरदार या योद्धा के लिए ही उचित जँचती थी। पर, बवंडर आज अपनी उदारता में आगे बढ़ गया था। उसने मुझे वह हुक्का दिया, पर साथ ही उसे यह भी पूरा विश्वास था कि बदले में मैं भी उसे बराबर की या अधिक कीमत की कोई चीज दूँगा। आदिवासियों में भेंट देने या लेने में यह शर्त शामिल समझी जाती है। अगर यह शर्त पूरी न की जाए तो चीज़ वापिस भी माँग ली जाती है। इसलिए मैंने एक चमकदार सूती रूमाल बिछाकर उसपर बहुत-सा केसर, तम्बाकू, चाकू और बारूद बिछा दिए और तब सरदार को अपने डेरे पर बुलाकर, अपनी मित्रता का विश्वास दिलाते हुए, वे चीज़ें स्वीकार करने की प्रार्थना की। वह "हाऊ! हाऊ!" कहकर उन चीज़ों को समेटता हुआ अपगे घर की ओर प्रसन्नता के साथ चला गया।

एक दिन दोपहर के बाद कुछ घुड़सवार आदिवासियों का एक दल झाड़ियों के पीछे से एक दम सामने आया। उनके साथ एक टट्टू भी था, जिसकी पीठ पर बुरी हालत में पड़ा हुआ एक हब्शी बैठा हुआ था। उसकी

गालें और आँखें गड्ढों में धँस चुकी थीं और उसकी पुतलियाँ फैली हुई थीं। उसके होठ सिकुड़े हुए और किसी मुर्दे की भाँति फैले हुए थे। जब वे उसे हमारे डेरे के सामने लाए और उन्होंने उसे काठी से नीचे उतारा तो न वह चल सकता था और न खड़ा हो सकता था। वह कुछ दूर तक सरक कर चला। पर, तब बहुत कमज़ोरी के कारण वहीं घास पर बैठ गया। सभी घरों से निकलकर बच्चे और औरतें चीखते-चिल्लाते वहाँ घिर आए और उसके चारों ओर खड़े हा गए। वह बेचारा अपने हाथों के सहारे बैठा हुआ बड़ी निराशा से अगल-बगल में देख रहा था। वह भूख के कारण मरने ही वाला था। तैंतीस दिन तक इस मैदान में वह भूखा ही घूमता रहा। उसके पास कोई हथियार तक न था। पहनी हुई कमीज़ और पाजामे के अलावा उसके पास जूते या कोई और कपड़े न थे। रास्ता पहचानने के लिए न उसके पास बुद्धि थी और न ही उसे मैदान में पैदा होने वाली चीज़ों का पता था। वह गिरगिटों और छिपकलियों को ही इतने दिन तक खाता रहा, या फिर जंगली प्याज़ों और एक मैदानी कबूतर के घोंसले में पड़े तीन अण्डों को खाकर ही इतने दिन जिन्दा रहा। इन दिनों में उसने एक भी आदमी न देखा। इस अनन्त और निराशा भरे रेगिस्तान में घूमते हुए वह नाउमीद होकर बढ़ता रहा। और, तब चलने की ताकत न रहने पर घुटनों के बल सरकने लगा। इतनी ताकत भी खतम हो जाने पर वह लेट गया। उसने रात में सफ़र और दिन में चमकती धूप में सो जाने की बात निश्चित की। वह हमेशा स्वप्न में ही मक्का और शोरबे को देखा करता। ये ही दो चीज़ें उसे मिसूरी में अपने स्वामी के यहाँ मिला करती थीं। हमारे डेरे का हर लाल या गोरा निवासी इस बात से अचरज में डूब गया कि वह केवल भूख से ही नहीं बचा, बल्कि पड़ोस में ही बहुत अधिक पाए जाने वाले काले भालुओं से भी वह बच गया। हर रात में भौंकने वाले भेड़िए भी उसका कुछ न बिगाड़ सके।

उसके आते ही रेनल ने उसे पहचान लिया। वह एक साल पहले अपने स्वामी के यहाँ से भाग कर रिचर्ड के दल में मिल गया था, जो इस समय सीमांत से पहाड़ों की ओर आ रहा था। वह रिचर्ड के साथ मई महीने के अन्त तक रहता रहा। तब वह रेनल और कुछ दूसरे आदमियों के साथ कुछ छूटे हुए घोड़ों को ढूँढने निकला। एक तूफान में वह दूसरों से भटक गया और

आज तक उसके बारे में फिर कभी नहीं सुना गया था। उसके अनुभव की कमी और सहायता से रहित होने के कारण किसी को सपने में भी उम्मीद न थी कि वह ज़िन्दा होगा। आदिवासियों ने उसे ज़मीन पर इसी हालत में पड़ा हुआ पाया था।

वह वहाँ बैठा ऊपर की ओर देखता रहा। पर, उसमें इतनी भी हिम्मत न रह गई थी। चारों ओर खड़े आदिवासी चुपचाप उसकी ओर देखते रहे। तब देस्लारियर ने उसके लिए शोरबा बनाया। वह कुछ देर इसे बिना चखे वैसे ही बैठा रहा। बहुत देर बाद उसने इसे उठाकर होंठों से लगाया। अब वह एक-एक चम्मच करके इसे धीरे-धीरे पीने लगा। तभी, अचानक ही, उसकी भूख एक दम भड़क उठी। उसने प्याला उठाकर एक दम मुँह से लगा लिया और क्षणभर में ही सब कुछ पी गया। अब वह मांस माँगने लगा। हमने उसे सुबह तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा। पर वह इतना अधिक ज़ोर देने लगा कि अन्त में हमने उसे एक टुकड़ा दे ही दिया। उसने इसे, कुते की भाँति, चीर-चीर कर खा लिया। उसने और अधिक माँगा। पर, हमने उसे बताया कि अगर पहले-पहल वह इतना खा गया तो उसका जीवन खतरे में पड़ जाएगा। उसने यह बात मानली और यह भी कि अधिक माँगकर वह मूर्खता कर रहा है। पर, फिर भी वह और माँगने लगा। अब हमने कतई मना कर दिया, हालाँकि आदिवासी औरतें इस पर बहुत बुरा मानने लगीं। हमारी निगाह बचाते ही वे चुपचाप सूखा मांस ले आतीं और ज़मीन पर उसके पास रख जातीं। उसके लिए इतना भी काफ़ी न था। अधिक अँधेरा होने पर वह घोड़ों की टाँगों के बीच में से सरकता हुआ आदिवासियों के डेरे तक चला गया। यहाँ उसने जी भर कर खाया। सुबह वह हमारे डेरे पर फिर से लाया गया। पर, अब मिग्रास उसे घोड़े पर बिठा कर किले की ओर ले गया। अपने लोभ के परिणामों को सहने में वह जैसे-तैसे समर्थ हो गया। जब वह इस इलाके से विदा हुआ, तब उसकी हालत काफी अच्छी थी और उसे भरोसा हो चुका था कि अब उसे कोई भी चीज़ या घटना कभी मार न सकेगी।

अभी सूर्य छिपने में एक घंटा बाकी था। गाँव का नजारा देखने लायक था। योद्धा लोग घरों में शान्ति से बैठे थे, या धारा के किनारे जमा थे, या फिर घोड़ों को देखने और चराने के लिए बाहर निकल गए थे। गाँव के आधे

से अधिक लोग अपने घुटन वाले गर्म घरों को छोड़कर पानी के किनारे तक जा चुके थे। इस समय नदी में लड़के-लड़कियाँ और जवान स्त्रियाँ नहाती, तैरती, पानी उछालती और डुबकियाँ लेती देखी जा सकती थीं। वे खूब हँस-खेल रही थीं। सूर्य पूरा छिपने से पहले हमारे यहाँ नज़ारा कुछ और सुन्दर हो उठा। चारों ओर सूर्य की लाली खिल उठी। हमारे पेड़ को भी उसने छा लिया। चारों ओर टीलों पर भरे मैदान, अमराइयों और दूसरी जगहों पर भी एक शान्त सुन्दरता छा गई। यहाँ कुछ असभ्य शक्लें जमा थीं। उनकी पीठ पर तरकस और उनके हाथों में बन्दूकें, भाले और दूसरे हथियार सजे हुए थे। वे घोड़े पर बैठे हुए अपनी बाहें छाती के सामने बाँधे हुए हमारी ओर स्थिर निगाहों से देख रहे थे। कुछ लोग ऊपर से नीचे तक सिर से पांव तक भैंसे की सफेद खाल से लदे, सीधे, तने खड़े थे। कुछ दूसरे लोग घास पर ही बैठे हुए थे। उन्होंने अपने घोड़ों की लगामें हाथ में पकड़ी हुई थीं। वे नंगे बदन बैठे थे और उनकी खालों के कपड़े नीचे सरक आए थे। कुछ और भी थे, जो भीड़ के रूप में लापरवाही से खड़े थे। इनमें से एक बहुत ही गुस्सैल साथी था। इसका नाम 'पागल भेड़िया' था। इसने पीठ पर तरकश और हाथ में धनुष लिया हुआ था। अगर इसके चेहरे पर ध्यान न दिया जाता, तो यह अपोले या विष्णु का अवतार ही दिखाई देता। पश्चिम के लोगों ने जब सबसे पहले बेल्वेडेर को देखा होगा, तब उसकी आकृति उन्हें भी ऐसी ही लगी होगी।

मैदान पर जब अँधेरा छाने लगा, तब घोड़ों को पास लाकर डेरे के इर्द-गिर्द बाँध दिया गया। भीड़ धीरे-धीरे तितर-बितर होने लगी। चारों ओर आगें जलने लगीं और इनके प्रकाश में पशु-फँसाने वालों और आदिवासियों की शक्लें साफ़ दिखाई देने लगीं। हमारे पास के परिवारों में से एक परिवार प्राय: सदा ही आग जलाकर उसके चारों ओ जमा हो जाता था। इस आग के प्रकाश से उनके घर का हर कोना चमकने लगता। बुढ़िया औरतें आग के चारों ओर घूमती रहतीं और बच्चे तथा छोटी लड़कियाँ घंटों घेरा बांधे हँसती और बातें करती रहतीं। उनके प्रसन्न चेहरे दूर से ही चमकते रहते। आदि-वासियों के डेरे से हमें निरन्तर एक जैसी आवाज़ में ढोलों के पीटने की आवाज़ आती रहती और उसके साथ ही सुनाई देते उनके युद्ध-गीत, जो कि धीरे-धीरे

दूरी के कारण मंद पड़ते जाते। और, तब सुनाई देतीं उनकी लम्बी आवाज़ें। यहाँ उसका युद्ध का नृत्य एक बड़े भारी मकान में हो रहा था। कुछ रातों तक हमें असभ्य और अफ़सोस भरी आवाजें भी सुनाई देती रहीं। ये आवाज़ें भेड़ियों की दुखभरी आवाज़ों के समान ही उठती और गिरती थीं। महतो के परिवार के लोगों की ये आवाज़ें हेनरी की पत्नी का अफसोस मनाने के लिए, अपने अंगों को चाकुओं से छेदने के साथ-साथ, उठती थीं। बहुत रात बीतने पर डेरे में शान्ति छा जाती थी। अँगारों की हल्की-हल्की चमक बाकी रह जाने पर आदमी ज़मीन पर ही कम्बल ओढ़ कर सो जाते। तब घोड़ों की आवाज़ को छोड़कर और कुछ भी सुनाई न देता।

मुझे इन दृश्यों का स्मरण दुःख और आनन्द दोनों की मिली-जुली भावना के साथ हो आता है। उस समय मैं बीमारी के कारण इतना कमजोर हो गया था कि न तो ठीक तरह घूम सकता था और न ठीक से खड़ा हो सकता था। मेरी चाल शराबी के समान लड़खड़ाती और मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा जाता। सामने के पेड़ और मकान तैरते हुए नज़र आते और मैदान एक समुद्र के उतार-चढ़ाव का-सा लगने लगता। ऐसी हालत सभी जगह बुरी साबित होती है। इसलिए ऐसे इलाके में, जहाँ मनुष्य का जीवन, उसकी अपनी भुजाओं के बल पर टिका रहता है, या फिर उसके अपने मज़बूत कदमों पर टिका रहता है, यह हालत और भी बुरी साबित होती है। ऐसे मौकों पर गीली ज़मीन पर, बीच-बीच में वर्षा में भीगते हुए, सोना बहुत अच्छा नहीं रहता। कभी-कभी तो मैं अपने को बिलकुल ही खोखला अनुभव करने लगता। मुझे लगता जैसे मैं इन मैदानों से प्यार और सदा रहने के स्वप्नों का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ।

मैंने आराम और हल्के भोजन पर बल दिया। बहुत देर तक धीरज के साथ मैं डेरे पर ही टिका रहता। बहुत होता तो आदिवासियों के गाँव तक लड़खड़ाता चला जाता और चक्कर खाता हुआ आदिवासियों के घरों के बीच घूमता रहता। मुझे लगा कि यह सब भी कुछ लाभकारी नहीं था। मैं लगभग भूखा ही रहता। पाँच दिन में मैंने केवल एक बिस्कुट ही रोज खाकर गुज़र किया। उस समय मैं पहले से भी कमज़ोर हो चुका था। लगता था कि मेरे अन्दर की बीमारी भी जैसे जड़ से हिल चुकी थी। अब मैंने धीरे-धीरे

खुराक फिर बढ़ानी शुरू कर दी।

मैं अपने तम्बू के सामने सुस्ताकर स्वप्न देखता हुआ लेटा रहता और भूत और भविष्य की बातों पर सोचता रहता। इस समय कमज़ोरी और एकान्त की भावना से तंग आई हुई मेरी आँखें अचानक ही ब्लैक हिल्स की ओर घूम जातीं। पहाड़ों में शक्ति की भावना का निवास होता है और जो भी इन तक पहुँचता है, उसमें ये शक्ति की भावना, किसी न किसी रूप में, भर ही देते हैं। उस समय मुझे यह नहीं पता था कि इन पहाड़ियों के विषय में आदिवासियों के मनों में कितने भ्रम और कितनी दुःखदायी अफ़वाहें भरी हुई हैं। पर, मुझे यह इच्छा ज़रूर सताती थी कि मैं इनके दर्रों और खाली हिस्सों के अन्दर जाकर इन में छिपे आनन्दों और चीज़ों को खोज निकालूँ। इनकी तेज़ धाराओं और शान्त जंगलों को भी देखने की मेरी इच्छा थी। मुझे विश्वास था कि यह सब कुछ वहाँ छिपा हुआ है।

—:o:—

दिखाई दे रहे हैं। इस समय काफी अँधेरा और ठंड हो गई थी। हलकी-हलकी बरसात भी होनी शुरू हो गई थी। हम बाहर निकल आये और घंटा भर पीछा करने के बाद नौ घोड़ों को पकड़ लाये। उनमें से एक पर काठी और लगाम सजी हुई थी। उस पर पिस्तौलें और कम्बल आदि भी टँगे हुए थे। सुबह जब हमने यात्रा शुरू की, तो हमारा यह कारवाँ पहले से अधिक अच्छा लगने लगा। हम चलते रहे। तभी दोपहर बाद पीछे से तीन घुड़सवार दौड़ते हुए आये और उन्होंने अपने दल के सभी घोड़े वापिस माँगे। हमने उन सब को हाँ लौटा दिया, हालाँकि एलिस और जिम इस बात के विरुद्ध थे।

हमारे घोड़े इस समय तक थक चुके थे। हमने उन्हें शेष दिन-भर आराम देना तय कर लिया। दोपहर के समय हम नदी के किनारे एक घास के मैदान में उतरे। खाना खाने के बाद शॉ और हेनरी शिकार पर निकल गये। हमारे और साथी डेरे के आस-पास ही सो रहे। मैं लेट कर गाड़ी की छाया में कुछ पढ़ता रहा। ऊपर देखते ही मैंने पाया कि मुझ से लगभग एक मील दूर मैदान में एक अकेला भैंसा चर रहा है। मैं चुपचाप अपनी बंदूक लेकर उस ओर चल पड़ा। ज्यों ही मैं उसके पास तक आया, मैं ज़मीन पर सरकने लगा और उससे सौ गज के दूरी तक पहुँच गया। मैं यहाँ घास पर बैठ कर तब तक इन्तज़ार करने लगा, जब तक वह घूम कर मौत का वार सहने के लिए तैयार न हो जाए। वह काफ़ी बूढ़ा और सधा हुआ था। उस मौसम के प्यार और लड़ाइयों को वह पूरा कर चुका था। इस समय वह थका हारा, सारे समूह से अलग होकर, अपनी खोई ताकत को दुबारा हासिल करने के लिए चर रहा था। वह बहुत ही पतला पड़ चुका था। उसकी गर्दन भी झुर्रियों से भरी पड़ी थी। उसकी खाल हाथी की खाल से भी अधिक मोटी और खुरदरी हो चुकी थी। उस पर जगह-जगह कीचड़ लिपटा हुआ था। घूमते हुए उसकी एक-एक पसली साफ दिखाई दे रही थी। वह एक उदास और प्यारहीन असभ्य की भाँति भटकता हुआ नज़र आ रहा था। मुझे पहले-पहल पहुँचता देख कर उसने बहुत भयंकर नज़र से ताका। पर, वह फिर से चरने लगा, जैसे उसे मेरी परवाह ही न थी। कुछ ही देर बाद अपनी होश सँभालते ही उसने फिर से सिर उठाया और एकदम बहुत तेज़ी से मेरी ओर बढ़ा। मुझे तुरन्त ही भागने की सूझी। परन्तु इससे बहुत बुरा परिणाम निकलता।

इसलिए मैंने वैसे ही चुपचाप बैठे हुए उसकी नाक के ऊपर निशाना साधा। वह लगभग तीन चौथाई रास्ता पार कर चुका था। मैं गोली दागने ही वाला था कि वह तुरन्त रुक गया। अब मैं चैन से उसे देखने लगा। उसके अगले हिस्से पर काफी अधिक बाल उगे हुए थे। केवल उसके पाँव ही साफ़ दिखाई दे रहे थे। उसके सींग नीचे तक चीरे गये थे। उसके माथे पर भी लड़ाई के दो-तीन निशान थे। मुझे लगा कि वह लगभग पन्द्रह मिनट तक मुझे घूरता वहाँ खड़ा रहा। अपनी ओर से मैं भी चुप रहा। मैंने उससे समझौता करना चाहा। मैंने मन-ही-मन कहा, "मित्र ! अगर तुम मुझ पर हमला नहीं करोगे, मैं भी तुम्हें कुछ नहीं कहूँगा।" बहुत देर बाद लगा कि उसने अपना खूनी इरादा बदल लिया है। बहुत धीरे-धीरे उसने घूमना शुरू किया। धीरे-धीरे उसकी बगल सामने आने लगी। सब ओर कीचड़ लिपटा हुआ था। मैं अपना इरादा भूल गया और लोभ न रोक सकने के कारण मैंने गोली दाग़ दी। यह काम पिस्तौल से भी चल सकता था। वह बूढ़ भैंसा उछला, घूमा और दूर मैदान पर भाग निकला। वह कुछ दूर तक भागा। पहाड़ी पर भी कुछ दूर तक चढ़ गया। पर, अन्त में वहीं गिर कर मर भी गया। उन पहाड़ियों में ही एक और भैंसे को मार कर मैं डेरे पर लौट आया।

दोपहर के समय व्यापारी गाड़ियों का एक बहुत बड़ा समूह दिखाई दिया। इस दिन चौदह दिसम्बर थी। सारा मैदान उन सफ़ेद गाड़ियों से ही छाया हुआ दिखाई दे रहा था। कुछ लोग घोड़ों पर और कुछ पैदल ही चल रहे थे। वे सब हमारे पास की चरागाह पर रुक गये। उनके मुकाबले में हम और हमारी गाड़ी बहुत ही छोटे लगने लगे। रूज उनकी तरफ चला गया और सान्ताफे के उन व्यापारियों से कुछ बिस्कुट और कुछ शराब ले आया। मैंने उससे पूछा कि वह यह सब कहाँ से लाया है। उसने बताया कि वह बहुत से व्यापारियों को जानता है। फिर डाक्टर डाब्स भी वहीं थे। मैंने उस डाक्टर के बारे में पूछा। उसने बताया कि वह सेंट लुई का प्रसिद्ध डाक्टर था। पिछले दो दिनों से मेरी पुरानी बीमारी फिर से हरी हो गई थी। इस बार मुझे दर्द और कमजोरी बहुत अधिक हो गई थी। मेरे पूछने पर रूज़ ने बताया कि वह डाक्टर बहुत ही अच्छा इलाज करता है। उस पर विश्वास न करके भी

मैंने सोचा कि मैं उस डाक्टर से सलाह कर ही लूँ। डेरे की ओर जाकर मैंने डाक्टर को गाड़ियों की छाया में सोते पाया। उसे देखकर मुझे बहुत ही अजीब-सा लगा। मैंने बहुत महीनों बाद इस प्रकार की भद्दी शक्ल का कोई आदमी देखा था। उसका टोप गिर गया था और पीले बाल उलझे हुए-से दिखाई दे रहे थे। उसने अपनी एक बाँह को तकिया बनाया हुआ था। उसके पाजामे घुटनों पर सलवटों से युक्त थे। उसके शरीर पर घास के छोटे-छोटे टुकड़े लगे हुए थे। वह उसी घास में काफी देर से लोट-पोट होकर सुस्ता रहा था। उसके पास ही एक मैक्सिकोवासी खड़ा था। मैंने उसे इशारा करके डाक्टर को जगाने के लिए कहा। डाक्टर तुरन्त ही उछलकर सीधा बैठ गया और अपनी आँखें मलता हुआ चौंककर हँसने लगा। मुझे उसे परेशान करने पर अफसोस हुआ। मैंने उसे अपने आने का कारण बताया। उसने कुछ देर देखने के बाद बहुत गम्भीरता से बताया कि मेरा अन्दर का सारा ढाँचा ही गड़बड़ हो गया है। मैंने उसके किसी खास गड़बड़ के बारे में जानना चाहा। इस प्रश्न के उत्तर में उसने मुझे बताया कि मेरा जिगर खराब है। इसके लिए उसने मुझे दवाई देने को कहा। फिर पीछे की ओर ढकी हुई गाड़ियों में से एक में जाकर वह एक डिब्बा ले आया और उसे खोलकर मुझे उसने एक पुड़िया दी। मेरे पूछने पर उसने बताया कि वह 'कैलोमल' था।

इन हालतों में मैं कोई भी दवाई लेने को तैयार था। यह मुझे शायद कुछ लाभ ही करती। उस रात डेरे पर पहुँचकर मैंने रोटी के बदले वह जहरीली दवाई खानी ही मुनासिब समझी।

यात्रियों का वह डेरा ध्यान देने लायक था। उन्होंने हमें नदी के किनारे खास सड़क से सफर करने को मना किया, क्योंकि उसमें जान का बहुत अधिक खतरा था। इस जगह नदी मुड़ गई थी। यहाँ से एक छोटी पगडंडी निकल गई थी। यह पहाड़ी राह सीधी, मैदानों को पार करती हुई, साठ या सत्तर मील तक चली गई थी। इस पर सात या आठ मील चलने के बाद हम एक छोटी-सी धारा के किनारे पहुँचे। हमने यहीं पर डेरा डाल दिया।

हमने जगह बहुत सावधानी के साथ नहीं चुनी थी। पानी यहाँ बहुत गहराई में था और इसके किनारे बहुत अधिक ढलवाँ और ऊँचे थे। गहराई में कुछ घास भी उगी हुई थी। हमने वहीं पर अपने घोड़ों को बाँध दिया।

खुद ऊपर मैदान में ही अपना डेरा डाला। हमारे घोड़ों को भगा ले जाने या हम पर हमला करने का यहाँ सबसे अच्छा मौका था। अँधेरा होने के बाद हमनें देखा कि खाना खाते-खाते रूज़ ने हेनरी के कंधे से परे की ओर बहुत ही ध्यान के साथ कुछ देखा। दूर अँधेरे में हमने कोई एक काली-सी चीज झूमती-सी अपनी ओर आती देखी। हेनरी बाँहें फैलाकर हँसता हुआ उछला और चिल्ला पड़ा। यह हमलावर एक बूढ़ा भैंसा था, जो अपनी मूर्खता के कारण सीधा हमारे डेरे में ही धँसा चला आ रहा था। हमें उसे रोकने और भगा देने के लिए कुछ देर चिल्लाना और टोपों को उछालना पड़ा।

उस रात पूरनमासी का चाँद अपने पूरे उभार पर था। तुरन्त ही काले बादल इसे घेरने लगे। इसलिए कभी अँधेरा और कभी रोशनी हो जाती। रात आने तक चारों ओर से एक बहुत ज़ोर का तूफ़ान आया। हमारा डेरा उखड़ कर उड़ जाता, अगर हमने एक गाड़ी डेरे के साथ ही इस तेज़ी को कम करने के लिए न खड़ी कर दी होती। बहुत देर बाद तूफ़ान रुका, पर वर्षा होती रही। मैं लगभग सारी रात ही जागता हुआ। तम्बू पर पड़ने वाली वर्षा की बूँदों की आवाज़ सुनता रहा। हमारे डेरे में सिलाब भर गई थी। इससे कुछ और परेशानी हुई। बारह बजे के लगभग शॉ बाहर घुप अँधेरे में पहरा देने के लिए गया। मुनरो भी चौकन्ना था। लगभग दो घण्टे बाद शॉ चुपचाप अन्दर आया और हेनरी को छूकर उसने कुछ तेज़ आवाज़ में जल्दी ही बाहर आने को कहा। मेरे पूछने पर उसने बताया कि शायद आदिवासी उधर से निकल रहे हैं। पर, उसने मुझे लेटा रहने को कहा, जब तक वही ज़रूरत समझकर मुझे बुला न ले।

वह और हेनरी साथ-साथ ही बाहर निकल गये। मैंने भी अपनी बंदूक थैले में से निकाल ली और उसे पूरी तरह भर लिया। अधिक दर्द होने के कारण मैं फिर उसी तरह लेट गया। शॉ ने लौटकर बताया कि सब कुछ ठीक ठाक था। वह आ कर अपनी जगह लेट गया। हेनरी पहरे पर खड़ा था। सुबह उसने मुझे शाम के खतरे की बातें बताईं। मुनरो की सावधान आँखों ने बहुत दूर से ही कोई काली सी चीज़ खड्ड में घूमती हुई पहचान ली थी। घोड़ों के बीच चलने वाली यह चीज चारों हाथों-पाँवों के बल पर

चलने वाले आदमी जैसी दिखाई दे रही थी। शॉ और वह लेटे ही लेटे किनारे तक गये और अँधेरे में ही समझ लिया कि यह चीज आदिवासी ही हो सकते थे। शॉ ने लौट कर हेनरी को बुलाया। तीनों ही जगहें चुनकर लेट गये। हेनरी की आँखें ऐसे मौकों पर चौकन्नी रहती थीं। कुछ देर बाद उसने पहचान लिया कि वह चीज कुछ और नहीं, भेड़िये थे।

यह बहुत अजीब बात थी कि डेरे के इतना पास बँधे होने पर भी घोड़े ऐसी चीज के घुस आने पर कभी नहीं भड़के। लगता है भेड़ियों का उद्देश्य उनकी खोजी रस्सियों को चबाना ही रहा होगा। इस यात्रा में अनेक बार मेरे घोड़े की खोजी रस्सी रात के इन हमलावरों ने काट डाली थी।

—:०:—

२७ : बस्तियों की ओर

अगली सुबह गर्मी बहुत अधिक थी। हम सुबह से शाम तक बिना एक भी पेड़, झाड़ी और पानी को देखे बढ़ते रहे। हमारे घोड़े और खच्चरें हम से भी अधिक परेशान थे। परन्तु शाम होते ही उनकी चाल ठीक हो गई और उनके कान खड़े हो गये। पानी अब अधिक दूर नहीं था। जब हम एक चौड़ी और उथली घाटी के किनारे तक पहुँचे, तो अचानक ही एक मनचाहा नज़ारा सामने दिखाई दिया। घाटी के तले पर एक धारा चमकती हुई बह रही थी, परन्तु उसके किनारे अनेकों तम्बू गड़े हुए थे और सैकड़ों पशु चरागाहों में चर रहे थे। इन सेनाओं के अलावा बहुत सी गाड़ियों की कतारें भी सामने की ढलानों पर चलती हुई दिखाई दीं, जिनमें औरत, मर्द और बच्चे बैठे थे। इस सैनिक और घरेलू ढंग के, मिले-जुले, जलूस में बढ़ने वाले ये लोग मोर्मन जाति के थे। ये लोग कैलिफोर्निया की ओर जा रहे थे। इन्हें अपने सामने पाकर खुश होने की बजाय, हम अचरज में ही डूब गये। इनसे बच कर अपनी जगह ढूँढने के लिए हम लोग दो फर्लांग आगे निकल गये। परन्तु, यहाँ पर भी मोर्मन और मिसूरी निवासियों ने हमें घेर लिया। इन लोगों का बड़ा अफसर हमें देखने आया और कुछ देर हमारे साथ ही खेमे पर रुका रहा।

सुबह सारा इलाका धुंध से भर गया। हम लोग सदा ही जल्दी उठ जाते थे। उस दिन तैयार होने से पहले ही कुछ आदमियों की आवाजें हमें चारों ओर सुनाई देने लगीं। गुजरते हुए हमने देखा कि चारों ओर के तम्बू गिराये जा रहे थे और सेनाओं की कतारें खड़ी होनी शुरू हो गई थीं। इसी बीच औरतों और बच्चों की चीखें और मोर्मन लोगों के ढोलों और बाजों के स्वर भी इस सब में मिल-जुल गये थे।

इस समय से लेकर यात्रा के अन्त तक प्रायः हर रोज़ ही हमें किसी न किसी सैनिक टुकड़ी और सरकारी गाड़ियों के दर्शन हो जाते। ये सब सान्ताफे की ओर जाने वाली सेनाओं के लिए सामान लेकर जा रहे थे।

रुज को खतरे से हमेशा घबराहट होती थी। एक दिन वह शाम के समय

एक ऐसे भयंकर साहस में जा फँसा, जो हमारे दल के किसी और आदमी ने कभी नहीं किया था। पहाड़ी राह को छोड़ने के अगले रोज़ हमने नदी किनारे डेरा डाला। शाम के समय हमने बहुत-सी गाड़ियों को, लगभग तीन मील दूर, उसी राह पर डेरा डाले देखा। हालाँकि हमने उन्हें साफ-साफ देख लिया था, पर हमारी छोटी गाड़ी उनकी निगाह से बच गई थी। यह बात बाद में साबित भी हो गई। रूज़ को कुछ शराब की इच्छा जग पड़ी थी। इसलिए वह अपने नये बदले हुए घोड़े पर चढ़कर उन लोगों की ओर निकल गया। कुछ घंटे बीत जाने पर भी वह न लौटा। हमने समझ लिया कि वह भटक गया है या किसी आदिवासी ने उसे पहचान लिया होगा। सबके सो जाने पर मैं पहरे पर जागता रहा। बहुत रात बीतने पर बहुत दूर से मुझे एक आवाज़ प्रणाम करती सुनाई दी। रूज़ और उसका घोड़ा जल्दी ही निकल आये। वह बहुत जल्दी-जल्दी आया और उतर कर गाड़ी के पास ही बैठते हुए उसने यह कहानी सुनाई।

डेरा छोड़ते समय उसे समय का कुछ ध्यान न रहा था। जब वह उन लोगों के पास पहुँचा, तब अँधेरा पूरी तरह घिर आया था। वे लोग गाड़ियों के घेरे के बीच बैठे हुए आग सेंक रहे थे। उनकी बन्दूकें भी उनकी बगल में रखी थीं। उसने सोचा कि कोई खतरा न आने देने के लिए अधिक अच्छा होगा, वह दूर से ही चिल्लाकर अपना परिचय दे दे। इसलिए उसने बहुत ऊँची आवाज लगा कर उन्हें चौंका दिया। उसके इस चीख़ने का असर बिलकुल उलटा ही हुआ। इस प्रकार की भयंकर और भद्दी आवाज़ को सुनकर उन लोगों ने समझा कि सारे पौनी लोग एक साथ उन पर टूट पड़े हैं। घबरा कर वे उछले और बन्दूकें लिए हुए सँभल कर गाड़ियों के पीछे, या जमीन पर, लेट कर सावधान हो गये। एक ही क्षरण में बीस बन्दूकें उस डरे हुए साथी की ओर तान दी गईं। अब वह उन्हें दिखाई देने लगा था।

एक मुखिया ने कहा, "वे आ रहे हैं! जल्दी ही उस आदमी पर गोली चला दो।"

रूज़ एक दम डर कर चिल्ला उठा, "नहीं, नहीं! गोली मत चलाओ! मैं तुम्हारा मित्र अमरीकी ही हूँ।"

"क्या तुम सचमुच दोस्त हो? तब तुम इस तरह आदिवासियों जैसे क्यों

चिल्ला रहे हो ? अगर तुम आदमी हो तो सीधे से चले आओ ।"—एक आवाज़ ने चिल्ला कर कहा ।

उनके नेता ने कहा, "अपनी बन्दूकें उधर ही ताने रखो ! हो सकता है वह धोखेबाज़ हो ।"

रूज़ वहाँ पहुँचते हुए बहुत ही घबरा गया । उसकी आँखों के आगे अब भी चमकती हुई बन्दूकों के कुन्दे दिखाई दे रहे थे । अन्त में वह अपना सही रूप समझाने में सफल हो गया और उन लोगों ने उसे अपने बीच आने की छूट दे दी । उसे शराब तो न मिली, पर क्योंकि उसने स्वयं को असमर्थ और बेसहारा बताया था, इसलिए उन लोगों ने उसे चावल, बिस्कुट और मीठा आदि दे दिये ।

सुबह नाश्ते के समय उसने यह कहानी एक बार फिर से दोहरा दी । हम इस पर पूरा विश्वास करने को तैयार न थे, पर बहुत पूछने पर इसमें कोई गलती भी न निकाल सके । उनके डेरों को पार करते समय हमें इस बात की सच्चाई में पूरा विश्वास हो गया ।

एक दो दिन बाद हमें उसी प्रकार की गाड़ियों का एक और दल दिखाई दिया । हेनरी और मैं शिकार के लिए कुछ आगे निकल चले । उस दिन के बाद हमें किसी और भैंसे के टकराने की उम्मीद न थी । इसलिए हमने उस दिन के अन्तिम बार शिकार मारने की सोची, ताकि कुछ ताजा मांस मिल सके । ये भैंसे इतने बिगड़े हुए थे कि हम सारी सुबह शिकार करके भी कुछ न पा सके । दोपहर के समय जब हम 'काऊ क्रीक' के पास पहुँचे, हमने भैंसों का एक बड़ा भारी जत्था चरते हुए देखा । यहाँ नदी दोनों तरफ़ घने पेड़ों से घिरी हुई है । इसलिए पार का दृश्य नहीं दिखाई दे सकता था । जब हम इसके बहुत नज़दीक पहुँचे, तो देखा कि वह एक बहुत गहरी खाई में से होकर बह रही है । हम नीचे उतर कर बढ़ने लगे । मैंने घोड़ों को पकड़ लिया और हेनरी सरकता हुआ भैंसों की ओर बढ़ा । मैंने देखा कि वह निशाने की पहुँच में जाकर बैठ गया और बन्दूक भर कर शिकार चुनने लगा । एक मोटी भैंस पर गोली चलने ही वाली थी कि अचानक ही नदी किनारे से एक दम ही बहुत-सी गोलियों की बौछार उठ पड़ी । बीस के लगभग लम्बी-लम्बी टाँगों वाले मिसूरी-निवासी उधर उछले और भैंसों के पीछे दौड़ते हुए गायब हो गये ।

ये लोग धारा पार करके भैंसों के सौ गज़ के अन्दर ही पहुँच गये थे। शिकार का इससे अच्छा मौका कभी न मिला था। वे सभी अच्छे निशानेबाज़ थे। उन्होंने एक साथ ही गोलियाँ भी दागीं। किन्तु एक भी शिकार नहीं गिरा। सच यह है, कि जानवर मारना आसान नहीं है। उन्हें मारने के लिए उनके शरीर की बनावट को समझना बहुत जरूरी है। नया शिकारी, इसी लिए, बहुत कम सफल हो पाता है। ये सैनिक भी एक दम घबरा गये। खास कर तब जब हेनरी ने उन्हें बताया कि अगर वे लोग दस मिनट भी और चुप रहते तो वह उनके सारे दल के लिए काफ़ी मांस जुटा देता। हमारे साथियों ने इस बौछार को सुनकर यह समझा कि कुछ आदिवासियों ने हम पर हमला बोल दिया है। शॉ तेजी से यह पता करने आया कि हम अब तक ज़िन्दा हैं या नहीं?

इस नदी के पास हमें पके हुए अंगूर और अलूचे बहुत अधिकता से उगे मिले। यहाँ से कुछ दूरी पर 'लिटिल अरकंसास' के पास हमने एक अन्तिम भैंसा देखा। यह अकेला ही घूम रहा था। यहाँ से आगे सारे इलाके का ढाँचा रोज़ ही बदलता हुआ नजर आने लगा। हम अपने पीछे एक बड़ा उजाड़ और ऊबड़-खाबड़ मैदान छोड़ आये थे। वहाँ घास तक कम उगी हुई मिलती थी। हमारे सामने के मैदान यहाँ पर बहुत अधिक वनस्पतियों और फूलों से लदे हुए थे। भैंसों के स्थान पर हमें मैदानी मुर्गियाँ बहुतायत से मिलने लगीं। हमने अपनी राह बिना छोड़े ही उनमें से अनेकों मार लीं। तीन या चार दिन में हमें 'कौंसिल ग्रोव' के जंगल और चरागाह दिखाई देने लगे। इन जगहों से गुज़रते हुए हमें नींबू, सनोबर, अलूचा, अखरोट आदि अनेकों किस्म के फलों के पौधे मिलने लगे, जिन्हें देखकर हमें बहुत आनन्द मिला। अंगूर तो इस इलाके में बहुत अधिक होते थे। हम लोगों की आवाज़ और हमारी बन्दूकों की आवाज चारों ओर के शांत जंगल में जब-तब गूँज जाती थी। हम बहुत दुःख के साथ एक बार फिर से मैदान पर निकल आये। अब बस्तियाँ यहाँ से कुल सौ मील की दूरी पर रह गई थीं। यह सारा मैदान हरियाली से भरा हुआ था। जगह-जगह टीले और ऊँचे उठे हुए पेड़ दिखाई दे जाते थे। ये पेड़ किसी चश्मे या धारा के आस-पास होते थे। यह वही मैदान है, जहाँ किसी कवि या उपन्यासकार की कल्पना को बल मिलता है। हमारे रास्ते का खतरा समाप्त हो चुका था। अब हमें इस इलाके के आदिवासियों से भी कोई डर न था।

ये सभी लोग सुधार की ओर बढ़ रहे हैं। हमारा बहुत ही अच्छा भाग्य था कि हम ऐसे इलाके से बच कर चले आये थे, जहाँ पशु, सामान या अपनी जान का खतरा हमेशा ही बना रहता है। सारे रास्ते भर हमें किसी प्रकार की कोई हानि न हुई। हमारी एकमात्र हानि एक खच्चर की हुई थी, जो एक फणियर साँप के काटे जाने से मर गया था। हमारे सीमान्त पर पहुँचने के तीन हफ्ते बाद ही अरकंसास के रास्ते पर पौनी और कमांचे लोगों ने लगातार अपने उपद्रव शुरू कर दिए थे। अगले छः महीने तक हर आने-जाने वाले को उनके हमलों का सामना करना पड़ा।

अब डायमण्ड स्प्रिंग, रॉक क्रीक, एल्डर ग्रोव और दूसरे स्थान आसानी से जल्दी-जल्दी बीतने लगे। हमें 'रॉक क्रीक' पर पहुँच कर कुछ सरकारी गाड़ियाँ मिलीं, जो एक बहुत ही बूढ़े आदमी के अधिकार में चल रही थीं। उसे इस आयु में अपने घर पर आराम करना चाहिए था; परन्तु न जाने उसकी मौत उसे ऐसी विपदा में क्यों घसीट लाई? मुझे लगता है वह फिर कभी वापिस न लौट सका होगा; क्योंकि वह उसी रात एक बीमारी की शिकायत कर रहा था। वह रोज़ ही कमज़ोर होता जा रहा था। इससे कुछ दिन पहले ही भूखे भेड़ियों ने एक और बूढ़े आदमी के शरीर की दुर्गत बना दी थी।

इसके कुछ ही समय बाद हम लीवनवर्थ के किले की ओर जाने वाली एक छोटी पगडंडी पर आये। यहाँ से कुल एक दिन का ही रास्ता उस किले तक का बचता था। रूज़ ने यहाँ ही हमसे छुट्टी ली और वह तेज़ी से उस ओर निकल चला। उसकी इच्छा थी कि वह हम से पहले ही वहाँ पहुँच कर अपनी 'कमाल की सैनिक सेवा' के लिए तनखाह ले सके। इसलिए वह बहुत प्यार भरी बिदाई के बाद तुरन्त हो निकल चला। उस उदासी भरी बरसाती साँझ को हमने अपना अन्तिम डेरा डाला।

सुबह हम फिर सवार होकर आगे चले। पहली रात की तेज़ वर्षा के ाद भी यह सुबह बहुत सुहानी थी। शायद हमारे बस्ती में पहुँचने के समय की यह सुबह सर्दियों की सब से अधिक सुहानी सुबह रही होगी। रास्ते भर म कुछ-कुछ सभ्यता को अपनाने वाले शावानू लोगों के इलाके में से गुज़रे। यह इलाका उपजाऊ मैदानों और अमराइयों से भरा पड़ा था। पेड़ों के नीचे

आदिवासियों के लकड़ियों के घर बने हुए थे। हर खेत और चरागाह ज़मीन के उपजाऊ होने का सबूत दे रही थी। मक्की हवा में लहराती हुई, पकी और सूखी खड़ी थी। इसके पीले भुट्टे दूर से ही चमक रहे थे। पत्ते पीले और भूरे पड़ चुके थे। चारों ओर कोयलें और मैनाएँ झाड़ियों में उड़ रही थीं। हर चीज़ बता रही थी कि हम अपने ही सभ्य इलाकों में आ गये हैं। मिसूरी के किनारे के जंगल हमारे सामने आने लगे और हम उनके बाहर से होते हुए झाड़ियों में बनी एक राह से गुज़रे। जाते हुए भी हम इसी राह से गुज़रे थे। पर तब बसन्त थी और नज़ारा बिलकुल उलटा था। उस समय जंगली सेबों के पेड़ खूब खिले हुए थे और उन पर मोटे और लाल फल लगे हुए थे। उस समय चारों ओर ऊँची-ऊँची घास भी उगी हुई थी। बेलें गुलाबी अंगूरों से लदी हुई थीं। चारों ओर अनेक किस्म के फूल खिले हुए थे। परन्तु अब सभी कुछ उलटा था। अब चारों ओर पतझड़ का-सा नजारा था। अब हम जंगल में से होकर बढ़ने लगे। इसमें कहीं धूप और कहीं छाया, शाखाओं में से छनती हुई, पड़ रही थी। दोनों तरफ घने पत्तों के कारण किरणें धरती पर नहीं पहुँच पाती थीं, परन्तु पत्तों से छन-छन कर हरी-सी चमक अवश्य धरती पर पहुँच रही थी। पेड़ों पर से ही गिलहरियाँ हमारी ओर देखकर शोर करने लगीं। कोयलों के छोटे-छोटे बच्चे नीचे गिरे पत्तों पर सरसराते हुए चलने लगे। लाल पक्षी भी सुनहरी और नीली चिड़ियों के साथ शाखाओं पर उछलते फिर रहे थे। सुन्दरता के ये नजारे और ये आवाज़ें बहुत ही प्यारी और आनन्द देने वाली लग रही थीं। बस्तियों के ये आनन्द कितने ही लुभावने और अधिक रहे हों, हमें पीछे छूटे हुए दृश्य भी भूल नहीं पा रहे थे।

बहुत देर बाद हमने एक गोरे आदमी का निवास स्थान पेड़ों में से झाँकता-सा देखा। कुछ ही मिनट बाद हम लकड़ी के उस पुल पर से गुज़रे, जिससे होकर वैस्टपोर्ट पहुँचा जाता है। यहाँ हमें बहुत से अजीब नज़ारे देखने को मिले। पर, शायद सबसे अजीब नज़ारा तो हम लोग खुद थे, जो हर तरह से फटे-हाल और टूटे-फूटे-से लग रहे थे। शायद इन लोगों ने कभी ऐसा यात्री-दल न देखा होगा। हम अपने पुराने परिचित बूने की दूकान और फौजेल के शराबखाने के पास से होते हुए गुज़रे और दूर की एक चरा-

गाह पर रुके। यहाँ बहुत-से लोग हमारे पास आये। उन्होंने हमारे घोड़े और दूसरी चीजों को खरीदने की बात-चीत की। यह काम निपटा कर हमने एक गाड़ी किराए पर ली और अरकंसास के घाट पर चले आये। यहाँ हमें अपने पुराने मित्र कर्नल चिक के दर्शन हुए। उसने बहुत प्रेम से हमारा स्वागत किया। उसके मकान की ड्योढ़ी से हमने मिसूरी नदी की ओर निगाह डाली।

सुबह देस्लारियर हम तक आया। उसका रूप-रंग बिल्कुल ही पलटा हुआ था। उसने सारी ही पोशाक पलट ली थी। यहीं पास के जंगलों में उसका लकड़ी का घर था। लगता है वह हमें हमारे सम्मान में एक दावत और नाच पर बुलाना चाहता था। हेनरी ने अपना विश्वास प्रगट किया कि हम लोग इसे कम आकर्षक नहीं पायेंगे। यह निमन्त्रण ठीक तरह से आया था, क्योंकि उसने हेनरी से हमें बुलाने के बारे में पूरी सलाह कर ली थी। एक खास आकर्षण इसमें यह रख दिया गया था कि एक विशेष वीणा बजाने वाला वहाँ बुलाया गया था। हमने उसे बताया कि अगर शाम से पहले ही लीवनवर्थ से कोई स्टीमर न आ पहुँचा तो हम अवश्य आयेंगे। पर नाव शाम से पहले ही आ पहुँची और हमें उन उत्सवों में शामिल होना नसीब न हुआ। जब हमारी नाव नदी में बढ़ रही थी उस समय देस्लारियर घाट के पास की ही एक चट्टान पर खड़ा हुआ हमसे विदा लेने की प्रतीक्षा कर रहा था।

वह हमारी नाव को देखते ही चिल्लाया, "विदा ! मेरे मालिको, विदा ! जब कभी आप फिर से राकी पर्वतों की ओर आएँ, मैं भी आप के साथ चलूँगा; जरूर चलूँगा।"

यह कहने के साथ ही वह कूदा और अपना टोप उछालते हुए खिलखिला कर हँसने लगा। जब हमारी नाव एक मोड़ से मुड़ी, तो जो अन्तिम चीज हमारी निगाहों में आई, यह थी कि देस्लारियर जो अब भी अपना टोप उठाए चट्टान पर ही खड़ा था। हमने मुनरो और जिम से भी वैस्टपोर्ट में ही विदाई ले ली थी। हेनरी अब भी हमारे साथ था।

सेंट लुई तक की यात्रा ने आठ दिन ले लिए। इसमें से लगभग एक तिहाई समय हमारी नाव किनारे की रेत में फँसती रही। हमने आमेलिया नाम के एक स्टीमर को भी पार किया। इसमें बहुत से स्वयंसेवक छुट्टी पाकर नाचते, गाते, जुआ खेलते और लड़ते हुए घरों की ओर लौट रहे थे।

आखिर एक दिन शाम के समय हमारी नाव सेंट लुई के घाट पर आ लगी। हम वहाँ पहुँच कर अपने संदूक आदि को खोजने के लिए प्लांटर के मकान की ओर गये। हमने बहुत देर में जाना कि हमारा सामान एक कोने में ढकेल दिया गया था। सुबह दर्जी की कारीगरी के नये नमूने पहन कर जब हम एक-दूसरे से मिले तो एक-दूसरे को पहचानना भी कठिन हो गया।

अपनी विदाई से पहली शाम हम प्लांटर के मकान पर हेनरी से मिले। वह यहाँ हमसे विदाई लेने आया था। इस मौके पर वह इस प्रकार से सजा हुआ था, जिससे शहर की गलियों में मिलने वाला कोई भी आदमी उसे पहचान नहीं सकता था कि वह राकी पर्वत माला से अभी हाल में ही लौटा हुआ कोई शिकारी है। वह गहरे रंग की एक बहुत ही सुन्दर पोशाक पहने हुए था। सोलह वर्ष की आयु से ही वह घर से बाहर इन शिकारों पर जाया करता था। इसलिए उसे घर पर रहने का मौका कम ही मिल पाता था। पर, इस पर भी उसे सभ्य लोगों की तरह स्वयं को सजाने और ठीक रखने की आदत थी। उसका ऊँचा और गठीला शरीर और उसकी चाल-ढाल इस पोशाक के ही लायक थी। उसका सुन्दर चेहरा भले ही तूफ़ानों और आँधियों से कुछ बिगड़ गया हो, पर तो भी इस पोशाक में वह भद्दा नहीं लग रहा था। हमने बहुत ही दुःख के साथ उससे विदाई ली। हमने हाथ हिलाते हुए देखा कि इस समय उसके हृदय के भाव भी हमसे कम गहरे नहीं थे। शॉ ने उसे वैस्टपोर्ट में ही एक अच्छा घोड़ा दे दिया था। यहाँ मैंने अपनी बहुत ही उम्दा राइफल उसे दे दी। उसे यह हमेशा ही पसन्द रही थी और वह इसे बरतता भी रहता था। अब भी यह उसी के हाथों में है। और, शायद इस क्षण उसकी गूँज राकी पर्वत माला की चोटियों में ही कहीं समा रही होगी। अगली सुबह हमने नगर छोड़ दिया और तब पूरे पन्द्रह दिन तक रेलगाड़ी, घोड़ागाड़ी और स्टीमरों की सवारी करते हुए अपने परिचित घरों में एक बार फिर से आ पहुँचे।

—:o:—